32

काशी दर्शन

: लेखक :

धर्मसम्राट श्री स्वामी करपात्री जी महाराज
के कृपापात्र शिष्य
स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती

32

काशी-दर्शन

★

लेखक :
श्री धर्मसम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज
के कृपापात्र शिष्य
श्री १०८ स्वामी शिवानन्द सरस्वती
धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड
वाराणसी

प्रकाशक एवं लेखक :
श्री १०८ स्वामी शिवानन्द सरस्वती
धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड - वाराणसी

●

प्रथम संस्करण : १००० प्रतियाँ

संवत् २०४६ महाशिवरात्रि
२३ - २ - १९९०

मूल्य : ४०.००

पुस्तक प्राप्तिस्थान—
स्वामी शिवानन्द सरस्वती
धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड-वाराणसी

●

मुद्रक : हिमालय प्रेस, वाराणसी

ॐ नमश्चण्डिकायै:

विषय—सूची

आमुख

सर्वं मङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

किसी भी ग्रन्थ की रचना के दो कारण होते हैं। एक तो यह कि प्रतिपाद्य विषय को जिज्ञासू जानें। दूसरा यह कि यदि कोई विषय को विपरीत समझ गया है तो उस व्यक्ति को यथार्थ ज्ञान हो जाय। इसी बात को शास्त्रों में कहा गया है—"अप्रतिपत्तौ अतिप्रतिपत्तौ वा व्याख्यानं कुर्वन्ति सन्तः" इति ।

इस 'काशी दर्शन' नामक पुस्तक के भी वे ही दो प्रयोजन हैं। क्योंकि संसारिक बन्धनों से मुक्त, भौतिक पदार्थों से अनासक्त, परम तपस्वी धर्मसम्राट स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती जी (करपात्री जी) महाराज के प्रिय शिष्य स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज की लेखनी किसी विशेष स्थिति में ही व्यहृत हुई है। जिस प्रकार काशी क्षेत्रान्तरवर्ती प्रदेश में शरीर त्याग करने वाले जीव का मोक्ष होना ध्रुव सत्य है, ऐसा शास्त्र वचन है, फिर भी मनुष्य स्वाभाववश संशय होने पर भ्रम-निवारण हेतु आपने शास्त्रीय प्रमाणों से युक्त "काशी मोक्ष निर्णय" नामक ग्रन्थ रत्न इस सनातन जगत् को सादर भेंट की हैं। इसी प्रकार "काशी दर्शन" ग्रन्थ के लिखने का भी कुछ विशेष योजन अवश्य है।

"काशी दर्शन" ही क्यों ?

बार-बार प्रश्न उपस्थित होता है कि गुरूजी (लेखक) ने 'काशी दर्शन' ही क्यों लिखा ? कोई अन्य पुस्तक लिखते। किसी अन्य नाम से पुस्तक को अलंकृत करते। लेकिन इस ग्रन्थ के नामकरण मात्र से प्रतीत होता है कि गुरूजी को काशी के प्रति अटूट श्रद्धा है, अडिग भक्ति है, और है अपूर्व ममत्व। उनमें काशी के प्रति अलौकिक अनुराग

है जिसने हठात् आपको इस अवस्था में काशी के प्रति लेखनी उठाने को विवश किया है। पुनः प्रश्न उठता है कि क्या काशी के प्रति इतना ममत्व श्रद्धा भक्ति अकारण ही है ? नहीं अकारण ही नहीं है। भगवान शंकर के त्रिशूल पर स्थित, शिव-जटानिवासिनी माँ जाह्नवी के विमल प्रवाह से नित्य प्रक्षालित—'देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे! त्रिभुवन तारिणी विमल तरंगे' की सुक्ति को चरितार्थ करती हुई, सुरसरि के त्रिकोण से आवेष्टित, मुक्तिदायिनी काशी अवश्यमेव श्रद्धापूर्वक वन्दनीय है। ऐसी पुण्यभूमि के प्रति श्रद्धा-भक्ति ममत्व होना अखण्ड पुण्यों का फल एवं शिवता से ही सम्भव है।

काशी क्या है ?

श्री काशी नगरी भगवान् विश्वनाथ, सदाशिव भूतभावन, परम पावन शंकर के त्रिशूल पर स्थित है। काशी पुरी ॐ स्वरूपा है। काशी ब्रह्मस्वरूपा है। समस्त विश्व उसी का विर्वत है। अविवर्त ब्रह्म ही काशी है। प्रमाण भी मिलता है कि—

काशी ब्रह्मेति विख्याता तत् विवर्तो जगत्-भ्रमः।
अविवर्त तदेवाहुः काशीति ब्रह्मवादिनः॥

भुक्ति-मुक्तिप्रदायिनी काशी के विषय में यहाँ तक शास्त्र प्रमाण है कि—"कलिलंक्ष्यं शरोधर्मं शिवो धन्वी पुनातु माम् ॥"

अर्थात् धर्म ही बाण है, 'कलियुग' ही लक्ष्य है, (जन्म मृत्यु से मुक्त करना इसका परम लक्ष्य है।) ऐसे विशिष्ट धनुष को धारण करने वाले शिव की त्रिशूल पर स्थित काशी देहधारियों को तीनों ऋणों से मुक्त करती है। भगवान सदाशिव ने कहा है कि—

क्षेत्रे ऋणत्रयात् काशी मोचयेत् सर्वदेहिनः।
आधारभूता जीवानामाद्याप्रकृतिरुपया॥

मूर्तिरूपा चित्स्वरूपाऽविमुक्तेश्वर सेवया।
पूर्णरूपा स्वमाहात्म्यं स्वयमेव प्रकाशते॥

काशी नगरी पराशक्ति है। यह शरणागतों का उद्धार करती है। जीव समुदाय की आधार भूता अव्यय प्रकृति है। अविमुक्तेश्वर शिव-सेवा हेतु मूर्तिमती चित्स्वरूपा है। यह पूर्ण रूप से अपने महिमा को स्वयं प्रकट करती है। सेतुबन्ध टीकानुसार—"यत् ब्रह्म सर्ववेदे प्रतिपाद्य सैव काशीति, कं सुखमाशयति भोजयति स्व भक्तानिति वा" अर्थात् जो ब्रह्म सम्पूर्ण वेद प्रतिपाद्य है, वही काशी है। जो अपने भक्तों को सुख प्रदान करे, वही काशी है। "काशन्ते तनु त्यागामात्रेणानन्दरूपतया राजन्ते प्राणिनो यस्यां सा काशी" शरीर मात्र से काशी जी में प्राणी मात्र आनन्दस्वरूप ब्रह्मरूप में स्थित हो जाते हैं, वही काशी है। या स्पृष्ट्वा नृभिरात्मतत्त्वममलं दद्याध्रुव काशिका" जो जीवों को (मरणासन्न मानवों को) सदा सर्वदा स्पर्श मात्र करके ही अमल आत्मतत्त्व निश्चित रूप से प्रदान करती है, वही काशी है। यह त्रैलोक्य पावनी काशी जो प्रलयकाल में भी विद्यमान रहती है, उस काशी के सम्बन्ध में क्या कहना है। वह तो अविनाशिनी है। श्वेतवाराहकल्प में महाप्रलय के समय ऋषियों ने भगवान् विष्णु से कहा—सम्पूर्ण पृथ्वी के जलमग्न होने पर जल के ऊपर यह छत्राकार ज्योति जो परम प्रकाशमय है, जिसे आप आश्चर्य से देख रहे हैं, यह क्या है? तब भगवान् विष्णु ने कहा—

छत्राकारं परं ज्योतिर्दृश्यते गगने स्थितम्।
तदिदं परमं ज्योतिः काशीति प्रथितं बुधैः॥

(काशी रहस्य)

छत्राकार परम ज्योति जो नभ में स्थिर है, वह जो परम ज्योतिर्मय है, इसे बुधजन 'काशी' ऐसा कहते हैं। यह वही काशी है। किं अधिकम्—

"येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः॥"

जिसकी कहीं भी मुक्ति न हो उसकी काशी में मुक्ति होती है। काशी हमारी संस्कृति या धर्म सर्वस्व प्राण है। अमृतत्त्व प्रदान करने एवं भावी जन्म हेतु कर्म विनाशिका है। अविमुक्तेश्वर भगवान् शिव सदा यहाँ निवास करते हैं। इसी काशी के लिये देवता भी सदैव प्रयास रत रहते हैं। यहाँ तक कि—

अमरामरणं सर्वेवाञ्छन्तीह प्रसूतये ।
देवा मुनीन्द्रा राजानो वाञ्छन्त्यनुदिनं भुवि ॥

अर्थात् देवता, मुनीन्द्र और राजा लोगों की भी प्रतिदिन यही स्पृहा रहती है कि कब हमें काशी पुरी प्राप्त होगी। यह काशी वेदसारमय है। महोपनिषद्, सिद्धान्तसार अमृतरूप, देव-दुर्लभ, त्रिजगदोद्धारव्रतिनी यह काशी पुरी परम भूषण है। इतना ही नहीं—"ब्रह्मज्ञानेनैव मुक्तिर्नान्यथेति श्रुतेर्वचः" अर्थात् जो मुक्ति ब्रह्मज्ञान से होती है। अन्य किसी प्रकार से नहीं, ऐसा वेद कथन है। अतः "तादृशी मुक्तिरत्रैव काश्यां सद्यो न संशयः ॥" वैसी मुक्ति काशी में निःसन्देह सद्यः होती है। ऐसी काशी के प्रति गुरूजी का ममत्व क्यों न हो? एक आख्यान में भगवान् भूतनाथ शिव पार्वती जी से कहते हैं कि—

देवि ! किं बहुनोक्तेन चतुर्वर्गप्रदा भुवि ।
काशीं विना जगत्यन्या नास्ति नास्ति कलौध्रुवम् ॥

हे देवि ! किं बहुना कलियुग में चारों फलों को प्रदान करने वाली काशी को छोड़कर जगत् में कोई दूसरी भूमि नहीं है। निःसन्देह मैं सत्य कहता हूँ, यह ध्रुव है। ऐसी काशी के प्रति किसका ममत्व नहीं होगा? क्या शिशु माँ से पृथक रह सकता है? क्या बूंद धारा से पृथक हो सकती है? क्या सत्साधक साध्य से पृथक हो सकता है? क्या कमल-जल से पृथक रह सकता है? क्या कुमुदनी-चन्द्रमा के बिना प्रफुल्लित हो सकती है? अर्थात् नहीं। तब गुरूवर, जिनकी जन्म-भूमि काशी और कर्मभूमि भी काशी है, उनका ममत्व क्यों न हो काशी से? अर्थात् अवश्य होना चाहिये। जो काशी नगरी कैलाश से भी श्रेष्ठ है—

कैलाशादधिका काशी सर्वदैव प्रकाशिका ।
कैलाश शङ्करोप्येकः काश्यां सर्वेऽपि शङ्कराः ॥

कैलाश से भी काशी सर्वश्रेष्ठ है जो सदा प्रकाश करती है। कैलाश में एक शंकर और काशी में कंकक-कंकर में शंकर हैं। ऐसी काशी से गुरूवर का ममत्व स्वतः सिद्ध है। भगवान् शिव पार्वती जी से कहते हैं कि—

यथा प्रियतमा देवि मम त्वं सर्वसुन्दरी ।
तथा प्रियतमं चैतत् मे सदाऽऽनन्दकाननम् ॥

हे सुन्दरी पार्वती ! जिस प्रकार तुम सर्वसुन्दरी मुझे प्यारी हो, उसी प्रकार यह आनन्दकानन काशी भी मुझे अति प्यारी है । जब भगवान् शिव को काशी पुरी के प्रति अपूर्व अनुराग है तब गुरूजी जिनकी जन्म-भूमि काशी और कर्म-भूमि भी काशी है, वैसी मोक्ष-भूमि के प्रति गुरूजी क्यों न आसक्त हों ? भगवान् श्री रामचन्द्र जी यहाँ तक कहते हैं कि–"जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपिगरीयसी ॥" माता और मातृ-भूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर है । तब गुरूजी जिनकी जन्म-भूमि काशी और कर्म-भूमि भी काशी है, उनका काशी के प्रति ममत्व प्रकृति से ही सिद्ध है ।

इस प्रकार कार्यकारणभाववश काशी के प्रति लेखनी उठाने का मुख्य रूप से तीन कारण हैं—

(१) काशी के प्रति ममत्व (२) वेद प्रामाण्यस्थापक, श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सनातन धर्मसम्राट यतिचक्र चूड़ामणि १००८ स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती (करपात्री जी) महाराज की आज्ञा और (३) समस्त संसार के कल्याणार्थ । काशी की दर्शन यात्रा से सम्पूर्ण जगत् लाभान्वित हो, इन्हीं मुख्य उद्‌देश्यों के कारण आपने "काशी दर्शन" नामक ग्रन्थ की रचना करके अपनी लेखनी को चरितार्थ किया है ।

काशी-महिमा

ऐसी काशी जिसका रहस्य गोपनीय है, जिसकी महिमा त्रिलोक में सदैव प्रथित है, जो सभी लोकों में श्लाघनीय है, जो सभी तीर्थों में पूजनीय है, ऐसी काशी की महिमा को मैं क्षुद्र प्राणी क्या कह सकता हूँ ? जिससे मैं स्वयं अनभिज्ञ हूँ । जिस प्रकार से शिशु माँ के द्वारा प्रदत्त दूध को सहर्ष पान कर लेता है, किन्तु वह उसके ज्ञान से शून्य रहता है । वह यह नहीं जानता कि माँ क्या है ? यह दूध कहाँ से लाती है ? उसको यह भी पता नहीं कि यह दूध माँ के रक्त से ही निर्मित है । माँ आज भोजन की है कि नहीं ? उसे बिल्कुल ही ज्ञान नहीं रहता है । वह तो उदर पूर्ति के लिए मातृ-स्तन से सदा सन्निहित रहता है । आज अन्नपूर्णा अन्न देना बन्द कर दें, भगवान् शिव मुक्ति

देना वन्द कर दें, तव देखें काशी की दशा.....। तव हम काशी को काशी नहीं कहेंगे। जिस प्रकार कोई वालक पिता द्वारा प्राप्त वस्तु को केवल खाना ही जानता है। वह इतना ही कहेगा कि पिताजी ने दिया है, नहीं तो इतना भी नहीं कहेगा। पिताजी क्या हैं? वह क्या करते हैं? उसे कुछ भी ज्ञान नही। जिस प्रकार मैं काशी में रहते हुए काशी की महिमा से अनभिज्ञ हूँ। जवकि काशी को मैंने अपनी जन्म-भूमि और कर्मभूमि दोनो स्वीकार कर लिया है। काशीपति विश्वनाथ जी की कृपा और अन्नपूर्णा की गोद में सपरिवार निवास कर रहा हूँ। माँ का विस्तृत आँचल हमारे ऊपर से आच्छादित है। फिर भी मैं इन सवकी महिमा से अनभिज्ञ हूँ। क्या अपनी परमसाध्वी, सत्यव्रता, कल्मषापहारिणी, मोक्षदायिनी माँ की महिमा को एक कुपुत्र, अज्ञानी लोभी पुत्र जान सकता है? क्या अघनाशिनी सुरसरि के विमल स्निग्ध वारि को दूषित वापी में स्नान करने वाला व्यक्ति अभिव्यञ्जित कर सकता है? उसी प्रकार काशी की महिमा से मैं अपरिचित हूँ। लेकिन मेरा दोष भी नहीं है। क्योंकि—

काशी रहस्यं ऋषिभिर्गीयते तत् पृथक्-पृथक्।
तथापि तद्रहस्यन्तु को जानाति शिवादृते॥

जहाँ काशी के इस गोपनीय रहस्य को भगवान् शंकर के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता तव तो मैं संसार का एक निकृष्ट प्राणी कैसे समझ सकता हूँ? काशी के माहात्म्य को। काशी के नाम की इतनी विशेषता है कि—

वाराणसीति काशीति महामन्त्रमिदं जपन्।
यावज्जीवं त्रिसन्ध्यन्तु जातु जन्तु न जायते॥

वाराणसी या काशी ऐसा महामन्त्र को तीनों सन्ध्याओं में जो जीव जप करता है, उसका कभी जन्म नहीं होता। अर्थात् वह जन्म-मृत्यु के वन्धन से छुटकर मुक्त हो जाता है।

ऐसी काशी की दर्शन-यात्रा उनकी परिक्रमा करने से मानव के जन्म-जन्मान्तरों के कल्मष समाप्त हो जाते हैं। उसे ज्ञान की प्राप्ति होती है और ज्ञान से मुक्ति की प्राप्ति होती है तथा जीव अन्त में मुक्ति को भी प्राप्त कर लेता है।

काशी के सम्बन्ध में अभिनवशंकराचार्य गोवंश रक्षक, सनातन धर्मसम्राट, जगतवन्द्य श्री स्वामी हरिहरानन्द सरस्वतीजी (करपात्री जी) महाराज ने भी काशी को तत्त्व की दृष्टि से देखा है—"सभी तरह के उपद्रवों को दूर कर देने वाले इस संसार रूपी दुःख को दूर करने के लिये यह आनन्द-भूमि काशी ही एक मात्र उपाय है। गंगादि जलों के समान काशी आदि भूमियों की पवित्रता का उत्कर्ष शास्त्र सिद्ध ही है। काशी, काञ्ची आदि पुरियाँ मोक्षदायिका हैं। काशी में भी काशी वाराणसी, अन्तंगृही एवं विश्वेश भवन में भी पवित्रता का तारतम्य है। अतएव काशी क्रमेण, सालोक्य, सामीप्य, सारुप्य और सायुज्यप्रद है।"

(भक्ति सुधा)

सनातन धर्मानुकूल आचरणकर्ता, धर्मनिष्ठ मेरे पिता श्री कृपा मिश्र जी के भी अमर उपदेश पुनः-पुनः स्मरण हो आते हैं—"सर्वप्रथम काशीपुरी को देखकर जिस प्रकार हरिश्चन्द्र ने प्रणाम किया, उन्हीं भावनाओं में डूबता हुआ मैंने प्राकृतिक छटा से पूर्ण काशी पुरी की स्तुति की। काशी पुरी की सीमा में प्रवेश करते ही हमारे शरीर के रोग (हृदय रोग) स्वतः शान्त हो गये। भगवान् शंकर का साक्षात् दर्शन मुझे प्राप्त हुआ। काशी के कण-कण में सनातन धर्म की झलक मूर्तरूप में दृष्टिगोचर होता था। उस काशी पुरी में सर्वत्र "दर्शन" (अध्यात्म) का प्रतिविम्ब परिलक्षित होता था। काशी पारस पत्थर है जिसके स्पर्श मात्र से ही व्यक्ति (पापी) निष्पाप (जीवन-मुक्त) हो जाता है। काशी ज्योति है। काशी परम प्रकाश है।"

इस प्रकार अनेकों ज्वलन्त उदाहरण काशी के प्रति विद्यमान हैं। काशी स्व आलोक से सम्पूर्ण जगत् को आलोकित किये हुए है। काशी की महिमा अपार है, अवर्ण्य है, अचिन्त्य है और अनन्त भी।

काशी के प्रति ग्रन्थ तो मिलते थे लेकिन सामान्य व्यक्ति के लिये वह ज्ञेय नहीं था। जन साधारण हेतु अपनी अत्यन्त सरल भाषा में "काशी दर्शन" (द्वितीय भाग) नामक ग्रन्थ-सुमन आपने संसार को प्रदान किया है। जिसमें काशी की उत्पत्ति काशीवास का फल, काशी में मन्दिर-जीर्णोद्धार का फल, पंचक्रोशी यात्रा, वाराणसी यात्रा, नव-गौरी और नवदुर्गा-दर्शन यात्रा, ५६ विनायक (गणेश दर्शन) दर्शन

यात्रा आदि विषय प्रतिपादित हैं। इसके लिये मैं इस सनातन जगत् की ओर से बार-बार आपका स्तवन करता हूँ। आपका यह प्रयास निःसन्देह सनातनी जगत् द्वारा वन्दनीय है। मैं अपनी नित्य आराध्य देवी 'माँ' से प्रार्थना करता हूँ कि वे आपको सब प्रकार से स्वस्थ्य रखें ताकि आप अपना अगला पुस्तक-पुष्प भेंट कर सनातन धर्म की सेवा हेतु सहायक सिद्ध हों, पुनः सत्-पथ-प्रदर्शक देव तुल्य माता-पिता एवं गुरुजी के चरण-सरोरुह में अपना शीश अर्पित करता हूँ। पुनः—

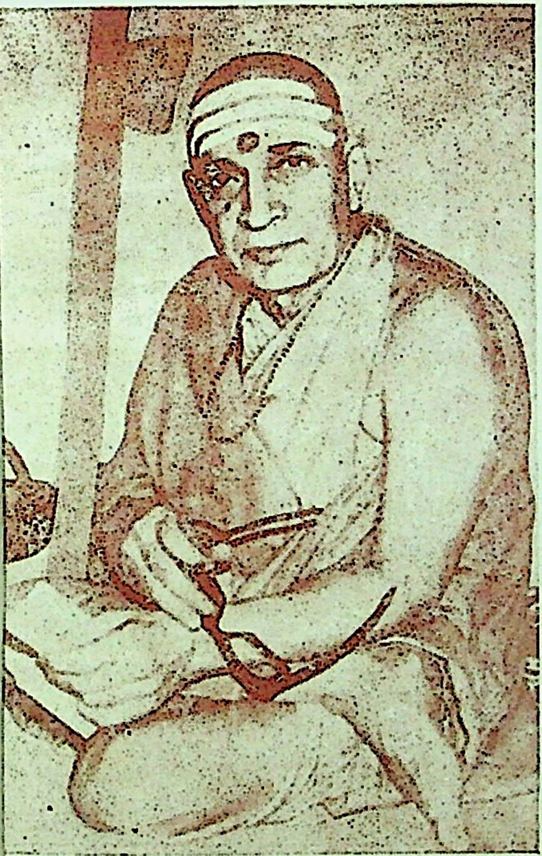
"अब मोहि भा भरोस हनुमन्ता। बिनु हरि कृपा मिलै नहीं सन्ता॥"

विभीषण जी की इस सूक्ति के अनुसार—जिनकी असीम-अनुकम्पा से उनके लिये ही सर्मपित हूँ वैसी माँ""के पद पंकज में कोटिशः स्तवन करते हुए अपने आपको सर्मपित करता हूँ। इसी कामना के साथ कि—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे पश्यन्तु भद्राणि मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥

ॐ नमश्चण्डिकायै

रमेशकुमारमिश्र 'शास्त्री'
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय
वाराणसी



धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज

आत्म निवेदन

वन्देऽहं श्री करपात्रिणां जगद्गुरुम् ।।

अनन्त श्री विभूषित सनातन धर्मसम्राट् स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती (करपात्री) जी महाराज के पादारविन्दों की असीम अनुकम्पा से "काशी दर्शन" नामक पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो गई। यह सब गुरु महाराजश्री के पदरज का फल है। इस पुस्तक में निम्नलिखित भक्तों का निःस्वार्थं सहयोग प्राप्त हुआ है—श्री रमा गोविन्द त्रिपाठी (मंत्री जी), श्री अनुरागदास जी, श्री प्रभुदयाल अग्रवाल जी (नागपुर) इन प्रिय भक्तों को मैं हृदय से आशीर्वाद देता हूँ कि आप लोग धन-कीर्ति और अलौकिक प्रतिभा को प्राप्त करें। आजीवन सुख शान्ति का अनुभव करते हुए अन्त में मोक्ष प्राप्त करें।

मैं इस पुस्तक-पुष्प को अपसे गुरुजी के चरणारविन्दों में सादर समर्पित करता हूँ।

प्रस्तुत पुस्तक को पं० श्री रामगोविन्द शुक्ल जी शास्त्री ने शुद्ध कर नूतन स्वरूप प्रदान किया है। आप जीवन प्रयत्न धन, सुख और शान्ति प्राप्त कर अन्त में मुक्ति को प्राप्त करे।

श्री चक्रधर शुक्ल शास्त्री जी, श्री घनश्याम त्रिपाठी साहित्याचार्य जी (पी-यच० डी०), श्री सन्तोष भार्गव शास्त्री जी, श्री हीरामणि त्रिपाठी शास्त्री जी के शारीरिक सहयोग हैं। आप लोग धन, सुख सम्मान प्राप्त करते हुए दीर्घायु प्राप्त करें। अन्त में मुक्ति मिले यही मेरा आशीर्वाद है।

श्रीशङ्कर चैतन्य ब्रह्मचारी जी, श्री जगदीश चैतन्य ब्रह्मचारी जी, श्री प्रकाश मिश्र जी, श्री राम सुजान मिश्र जी श्री शिवानन्द पाठक शास्त्री जी, श्री रमाशङ्कर शास्त्री जी, श्री चन्द्रमणि पाण्डेय शास्त्री, आप सभी का शारीरिक परिश्रम योगदान रहा है। आप सभी लोग जीवन पर्यन्त ऐश्वर्य प्रतिष्ठा और सुख को प्राप्त करें तथा अन्त में सबको मुक्ति मिले यही मेरा आशीर्वाद है।

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

अयोध्या के हनुमानगढ़ी में शंकर प्रसाद उपाध्याय जी के पुत्र भोलानाथ उपाध्याय हुए। भोलानाथ जी को ३५ (पैंतिस) वर्ष की अवस्था तक कोई सन्तान नहीं हुई, भगवान् की कृपा से भोलानाथ जी को वैराग्य हुआ। वे अपनी सम्पत्ति अपने पट्टीदार को देकर काशी में आ गये। ब्रह्मनाल में काशीवास करने लगे और अन्नक्षेत्र खोलकर साधु, महात्माओं एवं सन्यासियों को बना हुआ दिव्य भोजन (भिक्षा) कराते रहे। इसके साथ ही सभी वर्गों के गरीबों को प्रतिदिन प्रत्येक को एक-एक सेर अन्न देते रहे। वे सभी साधुओं, सन्तों, महात्माओं, संन्यासियों, तपस्वियों, साधकों, अनुष्ठान करने वालों और अग्निहोत्री आदि की कुटिया-कुटिया, आश्रमादि में (मठ में) जा करके पत्नी सहित दर्शन करते थे। दर्शन के पश्चात् किस महात्मा को किस वस्तु की आवश्यकता है स्वयं समझकर, स्वयं महात्माओं के पास पहुँचाते थे। इस प्रकार निष्काम सेवा करते हुए साढ़े तीन वर्ष व्यतीत हो गये। जिस दिन साढ़े तीन वर्ष पूर्ण हुआ उसी दिन प्रातः आठ बजे एक दण्डी स्वामी दण्ड और कमण्डलु हाथ में लिए हुए (वृद्ध किन्तु तेजपूर्ण प्रकाशमान मुखमण्डल, शरीर से दिव्य तेज प्रस्फुटित हो रहा था) महात्मा उस गली से जा रहे थे, जिस गली के बरामदे में भोलानाथ पत्नी सहित बृहदारण्यक उपनिषद् का पाठ कर रहे थे। उनकी दृष्टि अचानक स्वामी जी के ऊपर पड़ी। दोनों उठकर खड़े हो गये और स्वामी जी को अपने यहाँ लाने के लिये दौड़ पड़े। स्वामी जी का चरण धोकर आसन पर बैठाये और मिष्ठान्न फल आदि अर्पण किये। प्रसाद स्वरूप फल मिठाई सब लोगों को बाँटने के पश्चात् उमादेवी बोली—स्वामी जी! मुझे पुत्र नहीं है। आप मुझे पुत्र का आशीर्वाद दीजिए। स्वामी जी अपनी झोली से एक सेब निकालते हुए बोले यह फल खाओ तुम्हें भगवान् का भक्त पुत्र उत्पन्न होगा, इस प्रकार कहते हुए कुछ दूर जाकर अन्तर्ध्यान हो गये। दस महीने पश्चात् सन् उन्नीस सौ बत्तीस (१९३२) माघ शुक्ल बसन्त पञ्चमी के दिन काशी (ब्रह्मनाल) में प्रातः ८ बजे शिवनारायण बालक का जन्म हुआ। शिवनारायण जी का जीवन-चरित्त बाल्यावस्था से ही धार्मिक था। वे पूजा पाठ करते थे, मन्त्रों का जप और कीर्तन में रुचि रखते थे। उनके पिताजी का आयुर्वेदिक औषधालय था। उस औषधालय में जाकर रोगियों की सेवा करते थे। वे संन्यासी संस्कृत महाविद्यालय और ऋषि-कुल हरिद्वार में विद्या-अध्ययन किये थे। ज्ञानार्जन की उनमें अपूर्व प्रतिभा थी। जब वे अध्ययन कार्य में संलग्न थे तभी सन् १९४८ में काशी (ब्रह्मनाल) में ही उनके पिताजी शिव सायुज्य को प्राप्त हो गये। पिताजी के अन्तिम संस्कार करने के पश्चात् वे माताजी और माता-पिता जी के गुरुजी की सेवा में संलग्न हो गये। वे धर्म का पालन करते रहे।

प्रचार करने लगे। धर्मशाला, मन्दिर और जलाशयादि का जीर्णोद्धार करने तथा कराने लगे। प्रतिदिन कथा सुनते और सत्संग करते थे। उनकी कीर्तन भजन आदि में अपूर्व रुचि थी, त्रिकाल सन्ध्योपासन में संलग्न रहते थे। अतिथि सेवा करना उनका परमलक्ष्य था। कभी हरिद्वार, चित्रकूट, वृन्दावन, अयोध्या आदि तीर्थस्थलों में जाकर माताजी के साथ रहते थे। वे १९५० में योग सीखने के लिए हरिद्वार में योगानन्दजी के पास गये। वे गुरुजी की आज्ञा से ब्रह्मगायत्री का पुरश्चरण करने लगे। काशी, हरिद्वार तथा अयोध्या में एक-एक पुरश्चरण पूर्णकर (चौथा) पुरश्चरण गण्डकी नदी के तट पर विधिपूर्वक पूर्ण किये। सन् १९५५ में गुरु श्री आत्मानन्द सरस्वती जी ब्रह्मलीन हो गये। वे माता जी की सेवा और निष्काम सेवा तथा कथा सत्संग एवं भगवान के भजन में लीन रहने लगे। सन् १९६२ में पूज्य माताजी ने स्वामी करपात्री जी महाराज के शरण में ले गईं और उन्हें अर्पित किया। पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज की कृपा से नैष्ठिक ब्रह्मचारी की दीक्षा प्राप्त हुई और तभी से आपका नाम शिवचैतन्य ब्रह्मचारी पड़ा और आप कृतकृत्य हो गये। सन् १९६२ में अक्षय तृतीया के दिन काशी (ब्रह्मनाल) में माताजी का शिवसायुज्य हो गया। माताजी के अन्तिम संस्कार के पश्चात् आप वैराग्य प्राप्त कर हिमालय में घोर तपस्या करने चले गये। सन् १९७५ में एक दिन आप बदरी आश्रम (बदरी नारायण) में सोये हुए थे। आप स्वप्न में काल भैरव जी का दर्शन कर रहे थे। मन्दिर में कोई भी नहीं था। पुजारी बाहर बैठे थे। आपके बगल में एक जटाधारी महात्मा ने खड़े होकर कहा कि तुम काशी चले आओ। स्वप्न के पश्चात् आप जग कर स्नानादि करके बदरीनारायणजी का दर्शन करके काशी के लिये प्रस्थान कर दिये। काशी आने के पूर्व आप सम्पूर्ण भारत, काश्मीर, नेपाल इत्यादि के मन्दिरों और तीर्थस्थलों का दर्शन कर चुके थे। भैरव जयन्ती के दिन गङ्गा में स्नान कर रहे थे। पास में ही श्री शिवशंकर कमीशनर और रामप्रसाद कलक्टर (जिलाप्रभारी) दोनों काशी की यात्रा करने की बात करते रहे थे। उन दोनों को लेकर आप पं० वैद्यनाथ त्रिपाठी जी के पास गये। काशी दर्शन यात्रा समिति बनी। प्रत्येक रविवार को दर्शन यात्रा प्रारम्भ हो गयी। सन् १९७९ वसन्त पञ्चमी के दिन अनन्त श्री विभूषित पूज्य चरण धर्मसम्राट् अभिनव शङ्कराचार्य स्वामी श्री करपात्री जी की कृपा से सन्यास ग्रहण कर काशी निवास तथा काशीस्थल समस्त देवी-देवताओं के दिव्य दर्शन-पूजन करते हुए अपना अमूल्य समय व्यतीत करने लगे।

काशी की उत्पत्ति कब और कैसे ?

पुराणों में काशी की उत्पत्ति के सम्वन्ध में प्रमाण मिलता है कि चौदह् कल्प पहले प्रलय के पश्चात् जव सृष्टि आरम्भ हुई तव भग-वान् ने सवसे पहले पशु-पक्षी, मृग आदि जन्तुओं को उत्पन्न किया। प्राणियों की उत्पत्ति करने के पश्चात् भगवान् को संतोष न हुआ पुन: उन्होंने मनुष्यों को उत्पन्न किया। मनुष्य को देखकर भगवा प्रसन्न हो गये। जव मानव उत्पन्न तव पृथ्वी पर चारों ओर फै गये। जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार से वे अनेकों प्रकार के कर्म कर लगे। भगवान् शंकर जी कैलाश में वैठे हुये थे। तभी करुणा के साथ भगवान् विश्वनाथ जी कहने लगे। हे प्रभो! प्राणियों का कल्या कैसे होगा ? क्या कल्प-कल्पान्तर जन्म-जन्मान्तर तक प्राणी रोग ग्रसित रहेंगे। क्या वे सभी प्राणी दु:ख, कष्ट और संकट में तड़ रहेंगे ? जन्म और मृत्यु रूपी महान कष्ट से तड़पते हुये मनुष्यों मुक्ति कैसे मिलेगी ? विश्वनाथ भगवान् की प्राणियों के प्रति द से युक्त वचन सुनकर भवानी जी विश्वनाथ भगवान् जी से प्र करती हैं कि हे विश्वनाथ जी मृत्यु लोक में रहने वाले प्राणियों कैसे कल्याण होगा ? वे प्राणी जन्म-मृत्यु रूपी भव सागर से कै मुक्त होंगे ? तव भगवान् विश्वनाथ जी ने कहा हे भवानी! मृत्यु लो के रहने वाले प्राणियों का कैसे कल्याण होगा और इनको कैसे मु मिलेगी ? मैं इस विपय से अत्यन्त चिन्तित हूँ। हे भवानी! मैं मृत् लोक में सभी जीवधारियों व प्राणी मात्र को मुक्ति देने के लिये मुक्ति क्षेत्र खोलना चाहता हूँ। इस पर भवानी प्रसन्न होकर कहती हैं कि हे स्वामी! मृत्यु लोक में आप कहाँ मुक्ति-क्षेत्र खोलना चाहते हैं तव विश्वनाथ भगवान् कहने लगे हे भवानी! भारतवर्ष के मध्य काश्य नाम की एक महानगरी है। उसी काश्य नाम की महानगरी मैं जन्म-मृत्यु रूपी महान् कष्ट में फँसे हुए प्राणियों को मुक्ति देने लिये मुक्तिक्षेत्र खोलूंगा। हे भवानी! जैसे देवताओं के लिए कैला है वैसे ही मृत्यु लोक के प्राणियों को मोक्ष देने के लिये काश्य (काशी शिव लोक के समान काशी नाम की महापुरी प्राणी मात्र को मु

देने के लिये मैं निर्माण करता हूँ। उसी समय विश्वनाथ जी ने एक ज्योतिर्मय देदीप्यमान शिव ज्योतिर्लिङ्ग को प्रकट किया।

वे उसी समय त्रिशूल को हाथ में लेकर कहने लगे हे त्रिशूल ! तुम काशी में जाओ और काशी के मध्य भाग में खड़े हो जाओ तुम्हारे तीनो लोक (त्रिकंटक) के ऊपर प्रकाशमान दिव्य शिव ज्योतिर्लिङ्ग पंचक्रोशात्मक होकर काशी में सदा निवास करेगा। मैं भी काशी पंच-क्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग में प्राणियों को मोक्ष देने के लिए सदा काशी-वास करूँगा। इतना कहकर उन्होंने अपने शिर की एक जटा को उखाड़ा। उखाड़ते ही काल भैरव प्रकट हो गये उसी समय काल-भैरव हाथ जोड़कर कहने लगे--हे प्रभो ! मेरे लिए क्या आज्ञा है ? विश्वनाथजी कहते हैं कि हे भैरव ! तुम काशी के महामन्त्री और कोतवाल वनो। और काशी की तत्काल जाकर रक्षा करो। काशी-वास करने वालों को सभी प्रकार की सुविधा प्रदान करो। उनकी सव प्रकार से रक्षा करो। काशीवासियों को कष्ट देने वाले व्यक्ति को कठोर दण्ड दो। काशी में पाप करने वाले अनाचारी, दुराचारियों को डण्डा से मारकर काशी से वाहर निकालो। काशी की निन्दा करनेवाले अभिमानियों का अभिमान चूर्ण कर उन्हें कठोर दण्ड दो।

काशीवासियों के अज्ञान को मिटाकर उनमें ज्ञान भर दो। उन्हें वैराग्य दो। उन्हें ईश्वर की अडिग भक्ति प्रदान करो। हे कालभैरव ! काशी की रक्षा करो। इस प्रकार कहने के पश्चात् विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे भैरव ! तुम काशी के अधीपति हो। यह काशी तुम्हारे ही अधीन रहेगी। विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे अन्नपूर्णे ! तुम और हम दोनों काशीवास करेंगे। तुम सभी प्राणियों को अन्न देना, आवास देना, उन्हें (सन्मार्ग) ज्ञान, भक्ति वैराग्य की ओर प्रेरित करना और मैं सभी प्राणियों को मुक्ति दूँगा। हे अन्नपूर्णे ! हमारी काशी पुरी तीनों लोकों से श्रेष्ठ होगी। त्रैलोक्य में काशी जैसी पुरी नहीं होगी। काशी में जो व्यक्ति क्षण मात्र भी वास करेगा उसको विशेष फल की प्राप्ति होगी।

काशी के दर्शन से जन्म-जन्मान्तर के पाप और इस जन्म के भी पाप समाप्त हो जायेंगे। हे ! अन्नपूर्णे ! हमारी काशी पुरी में मरने वाला प्राणी पुनः जन्म नहीं लेगा। काशी में शरीर त्याग करने वाले

प्राणियों को सारूप्य मिलेगा। पुनः वह हमारा सान्निध्य प्राप्त करके सायुज्य प्राप्त करेगा। वेदों में ब्रह्मरूपा, मुक्तिरूपा (काशी) कहेंगे। हे अन्नपूर्णे! मृत्युलोक के प्राणी अल्पायु, अल्पबुद्धि और शक्तिहीन होंगे। हे अन्नपूर्णे! प्रलय से पहले मृत्युलोक के सभी देवता और सभी तीर्थ काशी में आकर रहेंगे। प्रलय के पश्चात् सृष्टि के वाद में सभी देवता और सभी तीर्थ यथास्थान पर एक साथ रहेगें। जन्म-जन्मान्तर के पूण्य से मनुष्य तीर्थों में जाकर दान-यज्ञादि करके वहाँ वास करेंगे। जो मनुष्य कथा, साधना, ज्ञान और भक्ति का उपदेश करते हुये काशीवास करेंगे उनको अन्य क्षेत्र में स्थित प्राणियों से हजारों गुणा अधिक फल मिलेगा। हे अन्नपूर्णे! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि काशी में रहने वाला प्राणी भूखा नहीं रहेगा। इतना ही नहीं काशी में मरने वाला प्राणी भी पुनर्जन्म नहीं लेगा। मैं सवको मुक्ति प्रदान करूँगा। मृतकों की अस्थियाँ काशी की गंगा में छोड़ने पर और काशी के वाहर मरने वाले प्राणियों को काशी में जलाने पर मैं उन सभी प्राणियों को मुक्त कर दूँगा।

जो व्यक्ति विश्व में कहीं भी रहकर हमारी पूजा-अर्चना, उपासना पंचाक्षरी महामन्त्र का जप अनुष्ठानादि और मेरा स्मरण करेगा उसे मैं मुक्त कर दूँगा। यह हमारी प्रतिज्ञा है। विश्वनाथ जी अन्नपूर्णा जी से कहते हैं कि हे अन्नपूर्णे! जो मनुष्य पंचक्रोशात्मक शिव ज्योतिर्लिङ्ग का वाहर से दर्शन-यात्रा काशी की अन्तर्गृही दर्शन यात्रा आदि करेंगे उन सवको मैं मुक्त कर दूँगा। हे अन्नपूर्णे! एक वात मैं और कहना चाहता हूँ। जो मनुष्य वेद, पुराण, उपनिषदादि शास्त्रों का प्रेमपूर्वक अध्ययन-अध्यापन और सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करेगा मैं उनके पूर्वजों सहित उन्हें मुक्त कर दूँगा। हे अन्नपूर्णे! जो विश्वात्मा केवल काशी-वास करके मुक्ति प्राप्त करना चाहती है उसको काशीवास कराने वाले अन्नक्षेत्र, वस्त्रादि, दूध, मिष्ठान्न दान देने वाला जहाँ कहीं भी देह-त्याग करे उसे मैं मुक्त कर दूँगा। हे अन्नपूर्णे! हमारी काशी में जो मनुष्य जलाशय, कूण्ड, कूप, मन्दिर जीर्णोद्धार और मूर्त्ति स्थापित करेंगे और प्रेरित करके करायेंगे उन भक्तों को उनके पूर्वजों सहित मुक्ति दूँगा। निवृत मार्ग के शिवयोगी शिव भक्त तथा ज्ञानी, साधु महात्मा सन्यासियों को अन्न वस्त्र आवास आदि के सहयोग करने वाले को भी जव तक वह जीवित रहेगा ऐश्वर्य और अपनी भक्ति दूँगा। वह जहाँ भी

मरे उसे मुक्त कर दूँगा । हे भवानी ! कल महाशिवरात्रि का दिन है । मैं महाशिवरात्रि के दिन पञ्चक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग को काशी में स्थापित करूँगा ।

हे भवानी ! मृत्युलोक में सबसे श्रेष्ठ मोक्ष क्षेत्र-मेरी काशीपुरी होगी । इसकी सबसे वड़ी विलक्षणता होगी कि मृतक को भी विवाहादि सामग्रियों से सजा करके 'राम नाम सत्य है' इस प्रकार गीत गाते हुये श्मशान तक ले जाया जायेगा । इससे आश्चर्य और क्या होगा ? इस प्रकार भगवान् विश्वनाथ यहाँ काशी में सदा सर्वदा हेतु माँ अन्नपूर्णा के साथ स्थित हो गये । काशी की उत्पत्ति के सम्वन्ध में इस प्रकार का प्रमाण मिलता है ।

विश्वनाथ जी को कैलास से काशी में आये हुए यह चतुर्युगी बीत रही है । विश्वनाथ जी के कैलाश से काशी आने के पश्चात् तेरह वार प्रलय हुआ और तेरह वार सृष्टि हुई । क्योंकि चौदहवीं चतुर्युगी में विश्वनाथ जी काशी आये थे । यह अठाईसवीं चतुर्युगी है । तव से तेरह वार कलियुग आया और गया । यह कलियुग चौदहवाँ है ।

यह वात मैंने अपने परम पुज्य गुरुजी स्वामी श्री करपात्री जी महाराज से सुना था ।

तुलसीकृत रामायण के विजय टिकाकार श्री पं० विजयानन्द तिवारी जी ने भी केदार-माहात्म्य में लिखा है ।

काशी के धार्मिक स्वरूप के विचार में तो यह काशी केवल पुण्य क्षेत्र ही नहीं अपितु भगवान् श्री विश्वनाथ जी का यह प्रत्यक्ष स्थावर स्वरूप ही है । इनके दर्शन एवं स्नान करने से पाप क्षीण होते हैं और पुण्य का उदय होता है, ऐसी भागीरथी (गङ्गा) प्राणियों के पापों को नाश करने के लिए काशी तल उत्तर वाहिनी होकर बहती हैं । यह काशी कभी भी नहीं छोड़ती हैं । गङ्गा-जल विश्वनाथ (शंकर जी) को अत्यन्त प्रिय है । इसलिये शिव-पूजन में सबसे उत्तम सामग्री गङ्गा-जल ही माना गया है ।

इस बाराह कल्प में सबसे प्राचीन वैदिक वाङमय ऋग्वेद माना जाता है । ऋग्वेद में काशी माहात्म्य का वर्णन है ।

भगवती श्रुति कहती हैं कि जिस प्रकार एक कल्प में सृष्टि हुई उसी प्रकार दूसरे कल्पों में भी होती है।

काशी की सीमा

काशी की सीमा इस प्रकार है—

काशी से पूर्व में आधा गंगा जी तक है। गंगा जी से पूर्व का भाग जो पहले था उस आधे गंगा जी से पूर्व के भाग को पूर्व कल्प में श्राप पड़ा था इसलिए पुराणों में वेद व्यास जी ने नहीं लिखा। इसका वर्णन मिलता है ऋगवेद में सूक्ष्म रूप से। यह बात मैंने अपने परम पूज्य गुरुजी से सुना था। शंख इसका पृष्ठ भाग पश्चिमी भीमचण्डी सोमनाथ देहली विनायक और रामेश्वर तक पश्चिम की सीमा मानी जाती है। अन्य पुराणों में भी पश्चिम की सीमा भीमचण्डी और सोमनाथ का वर्णन मिलता है।

काशी के उत्तर की सीमा शिवपुर पृथ्वीश्वर, पाण्डेयपुर चौराहा तक और कपिलधारा तक है। उत्तर की सीमा का वर्णन यहाँ तक पुराणों में प्राप्त है।

काशी के दक्षिण की सीमा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के फाटक स्थूल महादेवेश्वर मोटे महादेव मुहल्ला में तथा चितैपुरा और कर्दमेश्व एवं देऊरा गाँव उन्मत्त भैरव तक है। दक्षिण की सीमा का वर्णन पुराणों में इस प्रकार मिलता है। इसी सीमा के अन्तर्गत काशी है।

वाराणसी की सीमा इस प्रकार है—वाराणसी के पूर्व में आधा गंगा जी तक, वाराणसी के दक्षिण में शुक्लपुर नदी तक, नारायण सी. के. पश्चिमी में मडुवाडीह थाना शालटंक विनायक, लहरतारा च्यावनेश्वर तथा पाशपाणि तक और वाराणसी के उत्तर की सीमा वरुणा नदी तक है। इसी सीमा के अन्तर्गत वाराणसी है।

सम्मतियाँ

जगद्गुरु शङ्कराचार्य १००८ द्वारकापीठाधीश्वर श्रीस्वामि-स्वरूपानन्दसरस्वतीपादानां शुभानुसंशनम्—

अनन्त श्री विभूपितानां ब्रह्मलीनस्वामिश्रीकरपात्रचरणानां धर्मधुरं वहन् परमप्रियशिष्यः स्वामि श्रीशिवानन्दसरस्वतीमहाभागः "काशी दर्शन" इति पुस्तकं विरचितवानिति पुस्तकं विलोक्य मोमोत्ति मे चेतः। सरल सहज भाषायां एतादृशविषयेषु पुस्तक-लेखनं सनातनधर्मप्रचाराय ब्रह्मलीनस्वामिनां आत्मनः प्रियाय चातीवावश्यकम्। बहुकालतः एतादृशग्रन्थानामावश्यकता प्रतिभाति स्म, तत्तु श्री शिवानन्द स्वामिभिः पूरितम्। मन्ये, एतादृश अनुष्ठानेन विश्वात्मा विश्वेश्वरः प्रसीदति। अस्यायासस्य कृते श्री स्वामिवर्याः सर्वथा धन्यवादार्हाः। प्रयासेनानेन ज्ञानं मुक्तिञ्च कामयन्तो जना बहुतोषमनुभविष्यन्तीति स बहुमानं कामये।

स्वामिस्वरूपानन्दसरस्वती

सनातनवैदिकधर्मसंस्कृतिरक्षकानां जगत्पूज्यानां श्रीमतां स्वामिकरपात्रिमहाराजानामन्तेवासिस्वामिशिवानन्दसरस्वति महाभागः विश्वस्य कल्याणार्थं "काशी दर्शन" नाम पुस्तकमिदं लिखितमस्ति। पुस्तकस्यास्य भाषा अत्यन्तसरला सुरुचिपूर्णा चास्ति। पुस्तकेऽस्मिन् विषयाणां प्रतिपादनं तर्केन बुद्धिप्रगल्भेन च भवति। श्री स्वामिमहाभागः मन्दिराणां पौराणिकस्थलानाञ्चान्वेषणे अतिकठिनं परिश्रमं करोति। अतएवायं धन्यवादार्हं अस्तीति मन्येऽहम्। पुस्तकेऽस्मिन् प्रतिपादितैः विषयैः प्रतीयते यदमुं पञ्चक्रोशात्मकायाः काश्याः दर्शनयात्राणां सम्यग्ज्ञानमस्ति।

काश्याः दर्शनयात्राभिश्च मनुष्याणां जन्मजन्मान्तरेषु प्राप्तानामघानां विनाशो भवतीति मदीयो विश्वासः। पुस्तकस्यास्य प्रकाशनेन धर्मानुरागिणः जनाः अनुप्राणिताः भविष्यन्तीति मे दृढो विश्वासः। इतिशम्

स्वामी सदानंदसरस्वती
करपात्रिधाम केदारखण्डस्थ
वाराणसी।

प्रातः स्मरणीयानां धर्मसम्राट्स्वामीश्रीकरपात्रमहाराजा-नामनन्येन शिष्येण स्वामिश्रीशिवानन्दसरस्वतीमहाराजेन "काशी दर्शन" नाम ग्रन्थरत्नं प्रकाश्य भारतीय जनमानसं काश्याः गौरवेणान्वितं विधाय नूनं बहूपकृतम् । श्री स्वामिनः पुस्तकमिदम् सरल सहज भाषायां काशी दर्शनमिति सम्यक् सामान्य जनानां कृतेऽपि उपकारकं शास्त्रान्वितं सत्यसनातनधर्मपथप्रदर्शक विद्यते इत्यत्र शंकायाः अवसरो नास्ति । काश्याः दर्शन-यात्रया सर्वाणि दुरितानि समूलानि विनश्यन्ति । यदि कश्चिदिदं ग्रन्थरत्नेमधीत्य काशीयात्रायां प्रवर्तते तदा रहस्यज्ञानेन सह तस्याभीष्टमपि सिद्धयति । अनेन ग्रंथरत्नेन धर्मप्राणाः जनाः कृतकृत्याः भविष्यन्तीति दृढ़ो मे विश्वासः ।

(डा०) लक्ष्मणचैतन्यब्रह्मचारी
धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी

वि० वेङ्कटाचलम्
पूर्व कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

शिवसंकल्प

धर्मसम्राट अभिनवशङ्कराचार्य ब्रह्मलीन स्वामी करपात्रीजी महाराज के वात्सल्यसिक्त करुणामय तपःपूत सान्निध्य में सुदीर्घकाल तक संवर्धित स्वामी शिवानंद सरस्वती जी महाराज के द्वारा प्रणीत 'काशी दर्शन' पुस्तक को मैंने ध्यानपूर्वक पढ़ा । इस ग्रंथ में काशी के विभिन्न मंदिरों का परम्पराप्राप्त प्रामाणिक वर्णन संकलित है । पुराणों तथा काशीरहस्य, शिवरहस्य आदि ग्रंथों के अनुसार काशी क्षेत्र की परिधि के अन्तर्गत प्रतिष्ठापित प्रमुख देवी-देवताओं के अधिष्ठानों के विवरणों के साथ उन-उन अधिष्ठानों के वर्तमान गाँव, मोहल्ला, सड़क, गली, मकान नम्बर आदि विस्तृत विवरण इस ग्रन्थ में दिये गये हैं । इससे निश्चित ही प्राचीन पुराण प्रसिद्ध धार्मिक स्थानों के

दर्शनाभिलाषी श्रद्धालु यात्रीगणों का बड़ा उपकार होगा। स्वामीजी महाराज ने इन समस्त स्थानों पर स्वयं जाकर, शास्त्रविहित और परम्पराप्राप्त मंत्र एवं विधान के अनुसार उन-उन देवी-देवताओं का दर्शन-पूजन आदि स्वयं संपन्न कर अपने प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर यह समग्र विवरण दिये हैं। इसलिये ग्रन्थ की व्यावहारिक उपादेयता चौगुनी हो गयी है।

मुझे विश्वास है कि धार्मिक लोगों में इस ग्रन्थ का प्रचुर प्रसार होगा और सहस्रों तीर्थ यात्री इससे लाभान्वित होंगे। इतना तो निश्चित है कि इस ग्रंथ के माध्यम से सामान्य पाठक वर्ग में काशी क्षेत्र के प्रति सहज श्रद्धा बढ़ेगी। इससे स्वामीजी का संकल्प भी चरितार्थ होगा। परिणाम स्वरूप स्वामीजी महाराज का उत्साह वर्धन होगा और इन विवरणों को और अधिक व्यापक, सुसज्जित एवं आकर्षक बनाकर धर्मप्राण जनता के समक्ष परिवर्धित संस्करण के द्वारा प्रस्तुत करेंगे। मैंने सुना है काशी में दश महाविद्याओं के भी स्थान हैं, जिनके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। ऐसे अल्पज्ञान देव स्थानों का विवरण प्रकाशित करने के लिये स्वामीजी जैसे तपस्वी की अनुभव सिद्ध लेखनी ही सक्षम होगी।

यह भी आशा करता हूँ कि व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी यह ग्रन्थ बाहरी यात्रियों के अतिरिक्त काशीवासी धर्मप्राण जनता में पञ्चक्रोशी, नवदुर्गा प्रदक्षिणा, छप्पन विनायक दर्शन आदि के प्रति नयी रुचि जागृत करेगा और उनको भी काशीवास का संपूर्णफल प्राप्त होने में सहायक सिद्ध होगा। सामान्यतया यह देखा जाता है कि लोग अपने निकटस्थ तीर्थों की महिमा को नहीं पहचान पाते हैं और अति परिचय के कारण उस पुण्यलाभ से वंचित रह जाते हैं। इस प्रकार अधिक सुलभता के कारण जिन वस्तुओं, व्यक्तियों या विभूतियों का अवमूल्यन हो जाता है, उनका वर्णन करने वाला एक रोचक पद्य स्वामी बोधेन्द्र सरस्वती के नामामृतरसायन में उद्धृत है। पद्य इस प्रकार है—

स्वनेदिष्ठं तीर्थं, जगति समकालः कवयिता,
निजस्त्रीलावण्यं, निजभवनसीमौषधिलता।

जगत्ख्यातो मन्त्रः, सकलसुलभो निष्कृतिविधि-
र्न गण्यन्ते लोकैरति परिचयाल्पीकृतगुणैः ॥

अर्थात्, अपने निकटस्थ तीर्थ, सुपरिचित समसामयिक कवि, अपनी स्त्री का सौन्दर्य, अपने घर के आँगन में उगनेवाली महौषधि, लोक प्रचलित महामन्त्र, सकलजन सुलभ प्रायश्चित्त विधान—इन सबको लोग मानते ही नहीं हैं, क्यों कि अत्यधिक परिचय के कारण इनकी महिमा घट जाती है।

तीर्थों या मन्दिरों का फल केवल उन्हीं को मिलता है, जिनमें उनकी पवित्रता या माहात्म्य के प्रति यथार्थ निष्ठा है। 'पिकनिक' की भावना से गङ्गा में नौका विहार मात्र से सन्तुष्ट होकर लौटने वालों को गङ्गा की पवित्रता से क्या लाभ हो सकता है? अथवा मन्दिर के दीवारों और स्तम्भों के शिल्प-सौन्दर्य को देखने मात्र में जिनका कुतूहल है, ऐसे पर्यटकों को देवता की प्रदक्षिणा करने से क्या पुण्य लाभ हो सकता है, जब गर्भगृह में प्रतिष्ठित शिवलिंग के प्रति उनके हृदय में कोई भावना ही नहीं है? अत एव भारत के प्राचीन मनीषियों ने लिखा है—

मन्त्रे देवे तथा तीर्थे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ॥

भावना के विना तीर्थ तीर्थ नहीं और देवता देवता नहीं हैं। इन सब में भावना ही सब कुछ है। अत एव मैं भूत भावन भगवान विश्वनाथ से ही प्रार्थना करता हूँ कि यह ग्रन्थ, पाठकों में काशी के प्रति श्रद्धा-भावना जागृत करने में सफल सिद्ध हो।

धर्मसंघ,
दुर्गाकुण्ड, वाराणसी

वेंकटाचलम्

मधूपमं काशीदर्शन पुस्तक माधुर्य्यं मास्वाद्य बहु प्रसीदामि, ऐहिकमामुष्मिकफलावाप्त्यै पुस्तकमिदं बहूपकारक मितिममास्ति मातिरिति, सितशर्करोभक्षणाद्रोगोपशान्तौ कटुकौषधोपसेवनम् न बुद्धिसहमिति। धर्मपरायणैरवश्यस्याध्ययनं विधाय मनोरथसिद्धिः समाद्यतामिति वदति दिवाकर मिश्र इति शम्।

शास्त्रार्थ महारथि दिवाकर शास्त्रिणः

१. काशीवासविधिर्यत्र काशी माहात्म्यमुत्तमम् ।
२. काशीदर्शननामाख्यं पुस्तकं लोक-प्रेरकम् ।
३. काशी-यात्रादिकश्चापि लिखितं लेखके न तु ।
४. साधुदृष्टं मया चेदं सङ्ग्राह्यं सर्वं मानवैः ।
५. काशीश्वरे परा भक्ति-र्जायते पठने न तु ।
६ एतदुक्त क्रिया-रम्भे सर्वं सौख्यम्भ विष्यति ।।

अनुमोदकः

जुषी प्रीति सेवार्थंकाल्ल्युतिकृते यो-
भवेद् वर्णराशिः सर्वै जोपणोऽयम् ।
उपाधिश्च पाण्डेयको यस्य चान्ति-
प्रसिद्धाग्निहोत्री द्विजो राममध्यः ।।

पापनि काशते इति काशी । ज्ञानगुरुः विश्वनाथः । अशरणं शरणं गङ्गा । सतां सङ्गः जीवनम् । काशी दर्शन पुण्यप्रयोजिका । महात्मानः आनन्दकाननेऽस्मिन् विहरन्तो मङ्गलमूर्तयः सन्तः साक्षात् शिव-स्वरूपाः । वीतरागा यतिचक्रचूड़ामणयः आत्मारामा आनन्दकानने ह्यस्मिन् सदानन्देन विचरन्तो लोकमङ्गलं कामयन्ते । पुण्यश्लोकाः शिव-स्वरूपा एते विश्वकल्याणमभिलषन्तो उपदेशव्याजेन ग्रन्थनिबन्धनेन वा सदा सज्जनानुपकुर्वन्ति । पूर्वान्वितमहिमानः समाहितचेताः श्री शिवानन्द स्वामिनः काशीगौरवमभिवर्द्धयन्तो नूनं राजन्ते तपस्या-दया-दाक्षिण्य मण्डिते पुण्यभूमौ श्री धर्मसंघे दुर्गाकुण्डे । समाधौ समुपलब्धं शिवतत्त्वं "काशी दर्शन" नाम्नि लघुकलेवरग्रन्थे नूनं दृश्यते । सुकृतिनः अमूल्यग्रन्थरत्नस्यास्वाध्ययनेन आत्मानमुपकरिष्यन्ति आत्मीयांश्चाऽपि । ग्रन्थेऽत्र सगर्वसारस्वतवैभवं विलसति । हं हो ! आत्मनः प्रियं चिकीर्षवो दयालवो जनाः काशीदर्शनं अधीत्य काशी-यात्राञ्चविधाय सफलयन्तु स्वाभीष्टमनोरथान । एभिः सपर्यावचोभिः श्री स्वामिपादपद्मेषु स्वप्रणतिं विधाय विरमत्येषजनः—

डा० राजनाथ त्रिपाठी
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणस्याम्

धर्म सम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के शिष्य स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज ने समस्त संसार के कल्याणार्थ अत्यन्त सुगम मार्ग काशी दर्शन यात्रा को समस्त मानस-पटल तक सरल सुबोध भाषा में काशी दर्शन नामक पुस्तक प्रतिपादित किया है। काशी की दर्शन यात्रा करने और कराने से मनुष्यों के पूर्व जन्म कृत पाप भी समूल नष्ट हो जाते हैं। स्वामी जी ने काशी के दर्शन और उसके महत्त्व को 'जनसाधारण तक पहुँचाने का कठिन प्रयास किया है। इसके लिये वे श्लाघनीय हैं। इस पुस्तक से सम्पूर्ण जगत् लाभान्वित होगा—ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

श्रीनाथ मिश्र रामायणी (व्यासजी)

हमारी काशी विश्वनाथ दर्शन यात्रा मण्डली के सदस्य इस प्रकार हैं—

१. श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी (अध्यक्ष)
२. श्री स्वामीगङ्गानन्दतीर्थ जी (संरक्षक)
३. श्री स्वामी विपिनचन्द्रानन्द सरस्वती जी (न्यायाधीश)
४. श्री वैद्यनाथ प्रसाद त्रिपाठी जी साहित्याचार्य (मन्त्री)
५. श्री शिवशंकर चौबेजी कमिश्नर (सचिव)
६. श्री राम प्रसाद जी जिलाधीश
७. श्री भारद्वाज जी (मेजर जी)

काशी दर्शन के सभी सदस्य भक्त धन, सम्मान और दीर्घायु तथा सुख एवं शान्ति को प्राप्त करें। अन्त में सब सदस्यों को मोक्ष प्राप्त हो यही मेरा आशीर्वाद है। हमारी काशी की दर्शन-यात्रा में आज भी लग-भग एक सौ १०० यात्री यात्रा में कीर्तन करते हुए एक लाइन से साथ में चलते हैं। पहले तीन सौ यात्री साथ में चलते थे।

हमारे अन्य प्रकाशन इस प्रकार है :—

१. काशीमोक्ष निर्णय
२. काशी माहात्म्य (प्रेस में)
३. काशी पंच क्रोशी आदि दर्शन यात्रा

काशी-माहात्म्य

असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम् ।
काश्यां वासः सतांसङ्गो गङ्गाम्भः शिवपूजनम् ॥ १ ॥

अर्थ—इस असार संसार में सार पदार्थ चार हैं। यथा—काशी-वास, संतों का सङ्ग, गंगाजल का सेवन तथा शिव-पूजन।

कृत्वा कर्माण्यकामानि कल्याणानीतराणि च ।
तानि क्षणात् समुत्क्षिप्य काशीसंस्थोऽमृतोभवेत् ॥ २ ॥

अर्थ—अपने जीवन काल में जीव से अनेक प्रकार के पाप और पुण्य हो जाते हैं, पर काशी में मरते ही वे सब कर्मों के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं। प्राणों के छुटते ही क्षण भर में उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। अतः—

महापापौघशमनीं पुण्योपचयकारिणीम् ।
भुक्तिमुक्तिप्रदात्रीं च को न काशीं बुधिःश्रयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—बड़े-बड़े पापों को शान्त करने वाली अनेक पुण्यों को उत्पन्न करने वाली अनेक प्रकार के सुखों को देकर अन्त में मोक्ष देने वाली काशी का ऐसा कौन बुद्धिमान होगा जो सेवन न करे ?

पेयं पेयं श्रवणपुटके रामनामाभिरामं ।
ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्मरूपम् ॥ ४ ॥
जल्पन् जल्पन् प्रकृतिविकृतौ प्राणिनां कर्णमूले ।
वीथ्यां वीथ्यामटति जटिलः कोऽपि काशीनिवासी ॥

अर्थ—कोई काशी निवासी जटाधारी ... करता है कि—

चाहिए और मन में बार-बार उसी का ध्यान करना चाहिए, जो तारक मन्त्र ब्रह्मरूप है, वह साक्षात् ब्रह्मरूप है।

यथा शुक्तौ पयोवाहाद् पतिता जलबिन्दवः ।
मुक्ताः स्युस्तथा काश्यां स्थिताः सर्वेऽपि जन्तवः ॥ ६ ॥

अर्थ—जैसे स्वाती नक्षत्र में मेघ से जितनी बूंदे शुक्ति में गिरती हैं वे सब मुक्ता (मोती) बन जाती हैं। ठीक उसी प्रकार काशी में रहने वाले और वहीं शरीर का परित्याग करने वाले सभी जन्तु मुक्त हो जाते हैं।

महादेव जी पार्वती जी से कहते हैं कि—

शुच्यग्रमात्रमपि नास्ति ममास्पदेऽस्मिन् ।
स्थानं सुरेश्वरि मृतस्य न यत्र मोक्षः ॥ ७ ॥
भूमौ जले वियति वा शुचि मेध्यतो वा ।
सर्पाग्निदस्युपविभिर्निहतस्य जन्तोः ॥ ८ ॥

अर्थ–हे देवि! मेरी इस काशी में ऐसी कोई सुई भर भी जगह नहीं है जिसमें मरने पर जीव को मुक्ति न मिले। चाहें भूमि पर मरे, चाहें जल में मरे, चाहें आकाश में मरे, पवित्र स्थान पर मरे, चाहे अपवित्र स्थान पर मरे, उस जीव को मुक्ति अवश्य ही मिल जाती है। जो लोग सर्प काटने से अग्नि में जल जाने से वज्र के गिरने से अथवा चोरों द्वारा असमय में मारे जाते हैं, उनकी अकाल मृत्यु कही जाती है और उन्हें सद्गति नहीं मिलती, परन्तु काशी में किसी प्रकार भी मरने वालों को मुक्ति अवश्य ही मिलती है।

स्थिरा काश्यामिहैवैका प्रतिज्ञा हि मया कृता ।
अत्रैव मृतमात्राणां तिरश्चामपि देहिनाम् ॥ ९ ॥
भक्तानामप्यभक्तानां पुण्यपापात्मनामपि ।
मुक्तिं दास्यामि सर्वेषां भक्तानामेव सा बहिः ॥ १० ॥

अर्थ—शिव जी कहते हैं कि मैंने दृढ़ प्रतिज्ञा की है कि इस काशी पुरी में मरने वाले सभी मनुष्य, पशु, पक्षी कीट पतंग आदि को चाहे वे भक्त हों या नहीं पुण्यात्मा हों अथवा पापात्मा अवश्य मुक्ति दूंगा। काशी से बाहर मरने वाले उन्हीं मनुष्यों को मुक्ति दूंगा जो मेरे अनन्य भक्त हैं। रामचरित मानस में तुलसीदास जी ने काशी के महिमा को प्रतिपादित किया है कि—

मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान-खानि अघहानिकर।
जहँ बस संभु भवानि सो काशी सेइअ कस न॥

अर्थ—अदृश्यार्थ के जौहरी शास्त्रों ने जिस विधान को धर्म, जिस क्षेत्र को धर्मक्षेत्र और मुक्ति और जिस काल को पुण्य काल बतलाया है उनके वैसे होने में सन्देह के लिये स्थान नहीं है।

तीर्णोऽहं कर्मपाशाद्धि कृच्छ्रात्प्रारब्ध संक्षयात्।
संसारादपि तीर्णोऽहं काशीवासफलाश्रयः॥ ११॥
(काशी रहस्य १–१५१)

कष्ट देने वाले प्रारब्ध कर्मों के क्षय होने से मैं कर्म-पाश से मुक्त हूं। काशीवास के फल के द्वारा मैं संसार से भी तर गया हूं।

न काशीकायां पतितोऽपि धर्मकृत् दुखं समाप्नोति मम प्रसादात्।
इति प्रतिज्ञा जगदीश्वरस्य महानुभावस्य शिवस्यनित्या॥१२॥
(का० र० १–१६१)

काशी में पतित भी धर्मार्थी मेरी कृपा से कभी दुःख नही पाता महा प्रभावशाली शिव की यह प्रतिज्ञा है।

काश्यां प्रदीप प्रभया प्रकाशितः पापान्धकारः खलु नाशमेति।
विश्वेशहोम्दवया सुविधया महात्मनां पुण्यकृतां कृतात्मना॥१३॥
(काशी० र० १–१६१)

काशी में प्रदीप की प्रभा से प्रकाशित पाप रूपी अन्धकार नष्ट हो

जाता है। विश्वेश्वर के द्वारा दी गयी सुविधा से पुण्यशाली अत्माभ्यासी महात्मा को भी मुक्ति मिलती है।

सुनहु तात अस मानस रोगा। जिन्हते दुख पावहिं सब लोगा ॥
मोह सकल व्याधिन कर मूला। तेहि ते पुनि उपजहिं बहु सूला ॥
काम वात कफ लोभ आपारा। क्रोध पित नित छाति जारा ॥

एक व्याधि बस नर मरहिं, ए असाधि बहु व्याधि।
पोडहिं संतत जीव कहँ, सो किमि लहई समाधि ॥
नेम धर्म आचार तप, ज्ञान जज्ञ जप दान।
भेषज पुनि कोटिह्न नहीं, रोग जाहिं हरि जान ॥

अतः वेद शास्त्रों में तीर्थों का वर्णन है। वह वर्णन इस अभिप्राय से है कि लोग तीर्थ से लाभ उठा सकें। गुण-भेद तथा तारतम्य भेद से तीर्थ भी अनेक प्रकार के हैं। उसमें से अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काञ्ची, अवन्तिका आदि हैं।

माया काशी काञ्ची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्षदायिका ॥

(१) अयोध्या (२) मथुरा (३) हरिद्वार (४) काशी (५) शिवकाञ्ची (६) उज्जैन और (७) द्वारिका ये सात पुरियाँ मोक्ष देने वाली हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में परम पुरुषार्थ मोक्ष ही है क्योंकि इनमें से मोक्ष ही नित्य है शेप सब अनित्य है। मनुष्य शरीर धारण करके दुःख के अत्यन्त निवृति के लिए यत्नशील होना सबका कर्तव्य है और दुःख की अत्यन्त निवृति अर्थात् मोक्ष बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। ज्ञान सम्मान के लिए जिन साधनों की आवश्यकता है। वे सब आजकल के स्वल्पायु स्वल्प-पुरुषार्थ कलियुगी व्यक्तियों के लिए सर्वथा असाध्य हैं। अतएव इस समय मुमुक्षुओं के लिए यही कर्तव्य है कि मोक्षदायिका पुरियों की शरण लें।

इन पुरियों में देह-त्याग करने से जीवों को दूसरे जन्म में काशी लाभ होता है। काशी में प्राणोत्कर्षण के समय करुणामय विश्वनाथ जी सप्तपुरियों में काशी की विशेषता मुमुर्षु के दक्षिण काल में

तारकोपदेश करते हैं। जिससे कि उसका ज्ञान हो जाता है और उस ज्ञान से उसकी मुक्ति हो जाती है यथा—

अन्यानि तीर्थं क्षेत्राणि काशी प्राप्तिकरानि च।
काशी प्राप्य विमुच्यन्ते नान्यथा तीर्थ कोटिभिः॥

अतः यही सिद्ध हुआ कि सात पुरियों में भी साक्षात् मुक्तिदायिका काशीपुरी है और इसी से जगत् में इतनी महिमा है।

काशी अनादि तीर्थ है।

वेदों में पुराणों में और श्रुति-स्मृतियों में रामायण एवं महाभारत आदि में काशी माहात्म्य का विस्तार से वर्णन मिलता है।

काश्यां मरणान्मुक्ति।

काशी में मरने से मुक्ति मिलती है।

अन्यानि तीर्थं क्षेत्राणि काशी प्राप्ति करानि च।

विश्व के अन्य तीर्थ क्षेत्र (सप्तपुरी) आदि में मृत्यु हुए प्राणी को वे काशी की प्राप्ति कराते हैं।

काश्यांहि काशते काशी काशी सर्वप्रकाशिका।
सा काशी विदिता येन तेन प्राप्ताहि काशिका॥
(आदि शंकराचार्यकृत विश्वनाथाष्टकं)

जन्मान्तर सहस्त्रेषु सञ्चितैः पुण्य कर्मभिः।
प्राप्ता वाराणसी रम्या प्रसादात् परमेश्वरात्॥
(काशी मोक्ष निर्णय)

अर्थ—हजारों जन्मों में मैंने अनेकों पुण्य कर्म किये। वे पुण्य धीरे-धीरे सञ्चित होते गये। उन्हीं पुण्यों के फल से परमेश्वर के प्रसाद स्वरूप कृपा से मुझे परम मनोहर काशीपुरी मिली।

जन्मानतरसहस्त्रेषु मोक्षो लभ्येत वा न वा।
इहैव लभ्यते जन्तोर्मुक्तिरेकेन जन्मना॥
(काशी मोक्ष निर्णय)

अर्थ—हजारों जन्मों में कठिन से कठिन पुरुषार्थ करने पर भी मोक्ष मिलेगा या नहीं इसमें सन्देह ही है।

काशी ही एक ऐसी विश्वनाथ भगवान् की मुक्ति-क्षेत्र महानगरी है जिसमें प्राणि को प्राण-त्याग करने मात्र से एक ही जन्म में निस्संदेह मुक्ति मिलती है।

अविमुक्तं महाक्षेत्रं सर्वदा जननी यथा ॥ २१॥
पुत्रस्य जननी लोके सर्वदा हितकारिणी।
हित कृत्सर्वं जन्तुनां काशी ह्यऽमुत्रसिद्धिदा ॥२२॥
(काशी रहस्य अ० ११)

अर्थ—काशी यह अविमुक्त मुक्ति महाक्षेत्र है और जैसे अपनी माता पुत्र का कल्याण चाहती है। माता लोक में सदा पुत्र का हित करती है। उसी प्रकार समस्त जन्तुओं का हित करने वाली काशी इस लोक और परलोक में काशी भुक्ति-मुक्ति तथा सिद्धि को देती है।

काशी क्षेत्र निवासश्च जाह्नवी चरणोदकं।
गुरुः विश्वेश्वरः साक्षात् तारकंब्रह्मनिश्चयः ॥
(मत्स्यपुराणे)

अर्थ—काशी क्षेत्र में निवास करना, गङ्गारूपी विष्णु के चरणोदक जल पीना और साक्षात् विश्वनाथ भगवान् का दर्शन ही कल्याणकारी है। विश्वनाथ गुरुदेव अन्त समय में तारक ब्रह्ममन्त्र निश्चय ही देते हैं उस प्राणी का पुनर्जन्म नही होता है।

सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम्।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥
काश्यां विराजमानस्त्वं काशिनाथेति निश्चितम्।
प्राथ्यंते काशिनाथो हि दीयतां शरणागतिम् ॥

आनन्द के साथ आनन्दकानन में निवास करने वाले जो आनन्दकन्द हैं, जो पापवृन्द का विनाश करते हैं, जो वाराणसी के नाथ होते हुए भी अनाथों के नाथ हैं उन श्री विश्वनाथ की शरण में मैं हूँ। काशी में तुम विराजमान हो अतः तुम काशीनाथ हो यह निश्चय है हम काशीनाथ से प्रार्थना करते हैं कि मुझे शरणागति दीजिए।

कृमिकीटपतंगा वा ब्राह्मणो वा बहुश्रुतः ।
मृतश्चतुर्विधो जन्तुस्त्रिनेत्रत्वमुपैतिहि ॥

अर्थ—काशी में मरने से कृमि-कीट-पतंग और (पशु-पक्षी) विद्वान् ब्राह्मण ये सभी प्रकार के प्राणी भगवान् त्रिनेत्रत्व (शिवत्व) को प्राप्त होते हैं।

यत्र कुत्रापि वा काश्यां मरणो स महेश्वरः ।
जन्तोर्दक्षिकर्णे तु मत्तारं समुपादिशेत् ॥
(मुक्तिकोपनिषद्)

अर्थ—काशी में जहाँ कहीं भी मरने पर भगवान् शंकर जी उस प्राणी के दाहिने कान में तारक मन्त्र का उपदेश देते हैं। वह प्राणी उपदेश पाते ही तत्क्षण मुक्त हो जाता है।

अतः प्रयत्न पूर्वक काशी में शरीर छोड़ने का प्रयास करें।

वाराणस्यां शिवां प्रति विश्वेश्वरस्य प्रतिज्ञाद्वयम् ।
जीवतोऽन्नं प्रददस्वं मृते मुक्तिददाम्यहम् ॥

अर्थ—विश्वनाथ जी कहते हैं 'हे शिवे अन्नपूर्णे तुम जीवित प्राणियों को अन्न प्रदान करो और मैं मृत्यु के समय सभी प्राणियों को मुक्ति दूँगा।'

ब्रह्मज्ञानं तदेवाऽहं काशीहं स्थिति भागिनाम् ।
दिशामि तारकं प्रान्ते मुच्यन्ते तु तत्क्षणात् ॥
(पद्मपुराण काशी खण्ड, काशी माहात्म्य)

अर्थ—विश्वनाथ जी स्वयं कहते हैं कि—स्वभावतः मनुष्यों के पंचेन्द्रिय चञ्चल होने से ब्रह्मज्ञान का उपदेश कहाँ हो सकता है ? इसी कारण मैं काशी में अन्त समय में ब्रह्मज्ञान का उपदेश कर सभी प्राणियों को मुक्ति देता हूँ।

कृत्वा कर्माण्यनेकानि कल्याणानीतराणि च ।
तानि क्षणात् समुत्क्षिप्य काशीसंस्थोऽमृतो भवेत् ॥
(काशी खण्ड, काशी माहात्म्य)

अपने जीवन काल में जीव से अनेक प्रकार के पाप और पुण्य हो जाते हैं, पर काशी में मरते ही काल भैरव के भय से वह सभी कर्मों के बन्धन से सब प्राणी मुक्त हो जाते हैं। प्राणियों के प्राण छूटते ही क्षण भर में उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। अतः—

महापापौघशमनीं पुण्योपचय कारिणीम्।
भुक्ति मुक्तिप्रदात्रीं च को न काशीं सुधीः श्रयेत् ॥
(काशी खन्ड)

जन्म जन्मान्तर के पापों को शान्त कर देने वाली अनेक पुण्यों को उत्पन्न करने वाली, अनेक प्रकार के पदार्थ देकर सुखों का भोग कराकर अन्त में मोक्ष और मुक्ति को देने वाली काशीवास को ऐसा कौन बुद्धिमान् होगा जो काशीवास न करे ?

विश्वेश्वरो यत्र न तत्र चित्रं धर्मार्थकामा मृतरूपरूपः।
स्वरुपः हि विश्वरूपस्तस्मान्न काशी सदृशी त्रिलोकी ॥
(काशी खण्ड अ० ३।९८)

अर्थ—विश्वनाथ भगवान् काशी में मुक्ति का क्षेत्र खोले हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने के लिए काशी में मूर्तिमान होकर साक्षात् विश्वेश्वर विराजमान हैं। काशी में मुक्ति लाभ यह कौन आश्चर्य की बात है ? क्योंकि वह विश्वनाथ अखण्ड सच्चिदानन्द साक्षात् विश्वरूप हैं। इसी से त्रैलोक्य भी काशी के समान नहीं है और इसी से यह काशी सभी तीर्थों से श्रेष्ठ है और तीनों लोकों से न्यारी है।

मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ हानिकर।
जहँ बस शंभु भवानि सो काशी सेइय कस न ॥
(तुलसीदास कृत रामचरित मानस)

सेइय सहित सनेह देह भरि।
काम धेनु कलि काशी ॥
(विनय पत्रिका)

काशी मरत जन्तु अवलोकी।
जासु नाम जपि भयउ विशोकी ॥

जासु नाम बल शंकर काशी।
देत सबहिं सम गति अविनाशी॥
(तुलसी कृत रामायण)

अधिभूत बेदन विषम होत भूतनाथ,
तुलसी विकल पाहि पचत कुपीर हौं।
मारियै तो अनायास काशीवास खास फल,
जाइये तो कृपाकरि निरुज शरीर हौं॥

× × ×

गौरीनाथ भोलानाथ भवत भवानी नाथ,
विश्वनाथ पुर फिरि आनि कलिकाल की।
शंकर से नर गिरजा सी नारि काशी बासी,
वेद कही सही शशि शेषर कृपाल की॥

काशी की महिमा

सेइय सहित सनेह देह भरि, कामधेनु कलि काशी।
समनि सोक-संताप-पाप-रुज-सकल सुमंगल-रासी ।।
मरजादा चहुंओर चरन वर सेवत सुरपुर-वासी।
तीरथ सब सुभ अंग, रोम सिवलिंग अमित अविनासी।
अंतर ऐन ऐन भल, थन फल वच्छ वेद-विश्वासी।
गल कंबल वरुना बिभाति जनु लूम लसति सरिताऽसी ।।
दंडपानि भैरव विषान मलरुचि खलगन भयदा-सी।
लोल दिनेस त्रिलोचत लोचन, करनघंटा घंटा-सी ।।
मनिकर्निका वदन ससि सुन्दर सुरसरि-सुखमा-सी।
स्वारथ परमारथ परिपूरन पंचकोसि महिमा-सी ।।
विश्वनाथ पालक कृपालु चित, लालति नित गिरजा-सी।
सिद्ध, सची सारद पूजहिं मन जोगवति रहति रमा-सी।
पंचाच्छरी प्रान, मुद माधव गव्य सुपंचनदा-सी ।।

विनय पत्रिका

काशीवास का फल

कृत्वा कर्माण्यकामानि कल्याणानीतराणि च ।
तानि क्षणात् समुत्क्षिप्य काशी संस्थोऽमृतो भवेत् ॥

अर्थ—अपने जीवन काल में जीव से अनेक प्रकार के पाप और पुण्य हो जाते हैं, पर काशी में मरते ही वह सब कर्मों के बन्धन से मुक्त हो जाता है। प्राणों के छुटते ही क्षण भर में उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। अतः—

महापापौघशमनीं पुण्योपचयकारिणीम् ।
भुक्तिमुक्तिप्रदात्रीं च को न काशीं सुधीःश्रयेत् ॥

अर्थात् बड़े-बड़े पापों को शान्त कर देने वाली अनेक पुण्यों को उत्पन्न करने वाली अनेक प्रकार के सुखों को देकर अन्त में मोक्ष देने वाली काशी का ऐसा कौन बुद्धिमान् होगा जो सेवन न करे ?

यथा शुक्तौ पयोवाहात् पतिता जलबिन्दवः ।
मुक्ताः स्युस्तथा काश्यां स्थिताः सर्वेऽपिजन्तवः ॥

अर्थ—जैसे स्वाती नक्षत्र में मेघ से जितनी बूंदे शुक्ति में गिरती हैं वे सब मुक्ता (मोती) बन जाती हैं, ठीक उसी प्रकार काशी में रहने वाले और वहीं शरीर परित्याग करने वाले सभी जन्तु मुक्त हो जाते हैं। इस प्रकार काशी वास का अनन्त गुण फल होता है।

जिह्वाग्रे वर्तते यस्य काशीत्य क्षरयुग्मकम् ।
न तस्य गर्भवासः स्यात्क्वचिदेव सुमेधसः ॥
यो मन्त्रं जपति प्रातः काशी वर्णद्वयात्मकम् ।
स तु लोकद्वयं जित्वा लोकातीतं व्रजेत्पदम् ॥

यस्तु कोटिगुणं पुण्यं, काश्यां वासयितुध्रुवम् ।
आत्मानं तारयेद्धस्ता, स्तौ द्वौ वासयिता यतः ॥

अर्थ—काशी में स्वयं वास करने वाले, काशी वास कराने वाले को (करोड़) कोटि गुना पुण्य अधिक होता है। क्योंकि काशी वास करने वाले तो केवल अपने ही को तारता है। पर वासियता अपने को तथा जिसे काशी वास कराता है उसे दोनों ही का उद्धार कर देता है। (यही बात यात्रा के विषय में भी समझनी चाहिए।)

काशीतो मृतिकान्यत्र, नेतुमिच्छति यः पुमान् ।
कुलं वै पतितं तस्य, रौरवे चाति भैरवे ॥

अर्थ—जो कोई काशी की मिट्टी (भी) बाहर ले जाना चाहता है, उसका कुल भयंकर रौरव नामक नरक में गिरता है। इस प्रकार के बहुतेरे श्रुति-स्मृति, पुराण आदि सभी ग्रन्थों में इसका माहात्म्य वर्णन मिलता है।

नव्य शिक्षितों के मत से भी सबसे प्राचीन वैदिक वाङ्मय ऋग्वेद माना जाता है। उसमें काशीवास-फल का वर्णन है।



श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

काशी-दर्शन

१

काशी पंचकोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा

देव ! देव ! महादेव ! वेदविद्या विशारद ! ।
यथा प्रदक्षिणा कार्या मनुजैर्विधिपूर्वकम् ॥ १ ॥

स्थानम्वासस्य वद नो भक्ष्यं चाऽभक्ष्यमेव च ।
पूजां सीम्निस्थितानाञ्च देवानां दानमेव च ॥ २ ॥
यथा सम्पूर्णतामेति यात्रा क्षेत्रस्य सत्तम ! ॥ ३ ॥

शृणु देवि ! महाभागे ! सर्वलोकोपकारकम् ।
तद्ब्रवीमि महेशानि ! यथावद्विधिपूर्वकम् ॥ ४ ॥

पञ्चक्रोशस्य यात्रायां विधिः सम्यगुदीर्यते ।
श्रुत्वा मनुष्यो येनाऽऽशु निष्पापः पुण्यवान् भवेत् ॥ ५ ॥

आश्विनादिषु मासेषु त्रिषु पार्वति ! सर्वदा ।
प्रदक्षिणा प्रकर्तव्या क्षेत्रस्याऽपापकाङ्क्षिभिः ॥ ६ ॥

माघादिचतुरो मासाः प्रोक्ता यात्राविधौ नृणाम् ।
पूर्वस्मिन्दिवसे ढुण्ढिम्पूजयित्वा हविष्यभुक् ॥ ७ ॥

प्रातरुत्तरवाहिन्यां स्नात्वा विश्वेशमर्चयेत् ।
पुनर्यात्रार्थमपि च शिवयोः पूजनम्भवेत् ॥ ८ ॥

मुक्तिमण्डपिकायाञ्च सम्विश्यवरवर्णिनि ! ।
प्रतिज्ञाम्महतीं कृत्वा पूजनन्तत्र तत्र ह ॥ ९ ॥

काश्याम्प्रजातवाक्काय मनोजनितमुक्तये ।
ज्ञाताज्ञातविमुक्त्यर्थम्पातकेभ्यो हिताय च ॥ १० ॥

पंचक्रोशात्मकं लिङ्गं ज्योतीरूपं सनातनम् ।
भवानीशङ्कराभ्याञ्च लक्ष्मीश्रीशविराजितम् ॥ ११ ॥

ढुण्ढिराजादिगणपैः षट्पञ्चाशद्भिरावृतम् ।
द्वादशादित्यसहितं नृसिंहैः केशवैर्युतम् ॥ १२ ॥

रामकृष्णत्रययुतङ्कूर्ममत्स्यादिभिस्तथा ।
अवतारैरनेकैश्च युतम्विष्णोः शिवस्य च ॥ १३ ॥

गौर्यादिशक्तिभिर्युक्तं क्षेत्रङ्कुर्यात्प्रदक्षिणम् ।
बद्धाञ्जलिः प्रार्थयित्वा महादेवम्महेश्वरीम् ॥ १४ ॥

पञ्चक्रोशस्य यात्राम्वै करिष्ये विधिपूर्वकम् ।
प्रीत्यर्थन्तव देवेश ! सर्वाघौघप्रशान्तये ॥ १५ ॥

इति सङ्कल्प्य मौनेन प्रणिपत्य पुनः पुनः ।
ढुण्ढिराज ! गणेशान ! महाविघ्नौघनाशनः ! ॥ १६ ॥

पञ्चक्रोशस्य यात्रार्थन्देह्याज्ञाङ्कृपया विभो ! ।
विश्वेशन्त्रिः परिक्रम्य दण्डवत्प्रणिपत्य च ॥ १७ ॥

मोदम्प्रमोदंसुमुखन्दुर्मुखङ्गणनायकम् ।
प्रणम्य पूजयित्वाऽऽदौ दण्डपाणिन्ततोऽर्चयेत् ॥ १८ ॥

कालराजञ्च पुरतो विश्वेशस्य जगद्गुरोः ।
पूजयित्वा ततो गच्छेन्मणिकर्णीम्विधानतः ॥ १९ ॥

तत्र स्नात्वा महादेवम्मणिकर्णीशमर्चयेत् ।
विनायकं सिद्धिदञ्च पुनरागत्य पूजयेत् ॥ २० ॥

मणिकर्णीतटच्छन्नं गङ्गाकेशवमच्युत ।
ललिताश्च ततः पूज्य जरासन्धेश्वरम्विभुम् ॥ २१ ॥

सोमनाथं ततः पूज्य वालभेश्वरमेव च ।
शूलटङ्केश्वरन्देवं (मा) आदिवाराहमेव च ॥ २२ ॥

दशाश्वमेधकं लिङ्गं वन्दन्तत्रैव पूजयेत् ।
सर्वेश्वरञ्च केदारन्ततो हनुमदीश्वरम् ॥ २३ ॥

सङ्गमेशन्ततः पूज्य लोलार्कम्पूजयेत्ततः ।
अर्कसंज्ञङ्गणाध्यक्षमसेस्तीरम्पुनर्व्रजेत् ॥ २४ ॥

क्षेत्रम्प्रदक्षिणी कुर्वंस्तिलमात्रन्न सन्त्यजेत् ।
दुर्गाकुण्डे ततः स्नात्वा यजेद्दुर्गविनायकम् ॥ २५ ॥

दुर्गांसम्पूज्य विधिवद्वसेत्तत्र सुखाप्तये ।
ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र मधुपायसलड्डुकैः ॥ २६ ॥

रात्रौ जागरणन्तत्र पुराणश्रवणादिभिः ।
कुर्याच्च कीर्तनम्भक्त्या परोपकरणानि च ॥ २७ ॥

जय दुर्गे महादेवि ! जय काशिनिवासिनि ! ।
क्षेत्रविघ्नहरे ! देवि ! पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥ २८ ॥

इति दुर्गाम्प्रार्थयित्वा विष्णक्सेनेश्वरन्ततः ।
पूजयित्वा कर्दमेशम्पञ्चव्रीहितिलैर्नमेत् ॥ २९ ॥

आदौ कर्दमतीर्थे तु स्नानङ्कूपावलोकनम् ।
सोमनाथम्विरूपाक्षं नीलकण्ठन्ततोऽर्चयेत् ॥ ३० ॥

तत्रवासम्विधायाऽग्नौ किञ्चिद्धोमं द्विजार्चनम् ।
श्राद्धादिकर्म कार्याणि कृत्वा मुच्येदृणत्रयात् ॥ ३१ ॥

कर्दमेश ! महादेव ! काशिवासिजनप्रिय ! ।
त्वत्पूजनान्महादेव ! पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥ ३२ ॥

प्रातः स्नात्वा कर्दमेशम्पूजयित्वा च स (द्) द्विजान् ।
नागनाथञ्च चामुण्डाम्मोक्षेशङ्करुणेश्वरम् ॥ ३३ ॥

वीरभद्रन्ततो दुर्गां विकटाख्याम्प्रपूजयेत् ।
उन्मत्तभैरवन्नीलं कालकूटन्ततोऽर्चयेत् ॥ ३४ ॥

दुर्गाञ्च विमलान्नत्वा महादेवन्ततो व्रजेत् ।
नन्दिकेशम्भृङ्गिरिटिं तत्रैव च गणप्रियम् ॥ ३५ ॥

विरूपाक्षञ्च यज्ञेशम्विमलेश्वरमेव च ।
मोक्षदं ज्ञानदञ्चैवामृतेशन्तत्र पूजयेत् ॥ ३६ ॥

गन्धर्वसागरन्तीर्त्वा भीमचण्डीन्ततो व्रजेत् ।
तत्र स्नात्वा भीमचण्डीम्पयसा स्नापयेत्सुधीः ॥ ३७ ॥

पञ्चोपचारैः सम्पूज्य ब्राह्मणान्परितोषयेत् ।
तत्र वासम्प्रयत्नेन कुर्याच्चण्डविनायकम् ॥ ३८ ॥

रविरक्ताक्षगन्धर्वान्नरकार्णवतारकम् ।
शिवं सम्पूज्य यत्नेन रात्रौ पूर्ववदाचरेत् ॥ ३९ ॥

प्रातरुत्थाय सुस्नातः प्रार्थयेद्भीमचण्डिकाम् ।
भीमचण्डि ! प्रचण्डानि मम विघ्नानि नाशय ॥ ४० ॥

नमस्तेऽस्तु गमिष्यामि पुनर्दर्शनमस्तु ते ।
ततो गच्छेदेकपादं गणङ्गत्वा सतण्डुलान् ॥ ४१ ॥

तिलांश्च विकिरेत्तत्र धनधान्यादिसम्पदे ।
ततो गच्छेन्महाभीमं भैरवम्भैरवीं शुभाम् ॥ ४२ ॥

भूतनाथञ्च सोमेशं पूजयेत्सिन्धुरोधसि ।
कालनाथङ्कपर्दीशम् कामेशञ्च गणेश्वरम् ॥ ४३ ॥

वीरभद्रञ्चारुमुखं गणनाथञ्च पूजयेत् ।
ततो गच्छेद्देहलीशम्विघ्नपूगनिवारणम् ॥ ४४ ॥
मोदकैः पृथुकैर्लाजैस्ससक्तुभिश्चेक्षुपर्वभिः ।
पूजयेच्छ्रद्धयादेवन्तन्देहलीविनायकम् ॥ ४५ ॥
तत्पार्श्वे षोडशपुनर्विघ्ननाथान् समर्चयेत् ।
उद्दण्डगणपम्पूज्य उत्कलेश्वरमेव च ॥ ४६ ॥

रुद्राण्यास्तु तपो भूमिं दृष्ट्वारामेश्वरन्व्रजेत् ।
वरणायान्ततः स्नात्वा तर्पणादि विधाय च ॥ ४७ ॥

रामेश्वरं श्वेततिलैर्बिल्वपत्रादिभिर्यजेत् ।
सोमनाथश्च तत्रैव पूजयेदिन्द्रदिग्गतम् ॥ ४८ ॥

भरतेशं लक्ष्मणेशं शत्रुघ्नेश्वरमेव च ।
द्यावा भूमीश्वरं तत्र पूजयेन्नहुषेश्वरम् ॥ ४९ ॥

तत्र वासम्प्रकल्प्याऽथ पूर्ववज्जागरादिकम् ।
कृत्वा स्नात्वाऽपि रामेशम्प्रार्थयेत्काशिवासदम् ॥ ५० ॥

श्री रामेश्वर ! रामेण पूजितस्त्वं सनातन ! ।
आज्ञान्देहि महादेव ! पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥ ५१ ॥

लिङ्गानि सुबहून्यादौ वरणापारगान्यथ ।
पूजयित्वा ततो गच्छेद्देवसङ्घनिषेवितम् ॥ ५२ ॥

देवसङ्घेश्वरे किञ्चिद्दत्वा स्थित्वा ततो व्रजेत् ।
पाशपाणिं गणेशञ्च क्षेत्रमध्ये व्यवस्थितम् ॥ ५३ ॥

पूजयित्वा बहिश्चैव पृथ्वीश्वरमथो यजेत् ।
एकोऽश्वमेधः पृथुना कृतः क्षेत्राद्बहिः पुरा ॥ ५४ ॥

स्वर्गभूमिस्तु सा ज्ञेया मोक्षभूमिस्तु मध्यतः ।
काश्याश्चतुर्द्दिशं देवि ! योजनं स्वर्गभूमिका ॥ ५५ ॥

मृतास्तत्र तु गच्छन्ति स्वर्गं सुकृतिनाम्पदम् ।
ततः सुपूयं हि सरः स्पृष्ट्वा गच्छेच्छनैः शनैः ॥ ५६ ॥

महत्क्षेत्रङ्कापिलन्तु यत्र श्रीवृषभध्वजः ।
तत्र स्नात्वा विधानेन तर्प्पयित्वा पितॄनथ ॥ ५७ ॥

श्रद्धाम्विधाय सुश्रद्धः पूजयेद् वृषभध्वजम् ।
निवसेत्तन्तु दिवसं श्रवणादि प्रकल्पयेत् ॥ ५८ ॥

वृषभध्वज ! देवेश ! पितृणाम्मुक्तिदायक ! ।
आज्ञान्देहि महादेव ! पुनर्दर्शनमस्तु ते ! ॥ ५९ ॥

प्रदक्षिणीकृत्य ततो गच्छेज्ज्वालानृसिंहकम् ।
एवम्प्रदक्षिणीकृत्य सरः कापिलमुत्तमम् ॥ ६० ॥

वरणायाश्च ततस्तीर्त्वा स्नात्वा वै सङ्गमे शुभे ।
आदिकेशवमभ्यर्च्य सङ्गमेश्वरमेव च ॥ ६१ ॥

विनायकङ्खर्वसञ्ज्ञम्पूजयित्वा ततो व्रजेत् ।
क्रोडीकृत्ययवान्शु(च्छु ?) द्धान्विकिरन्विष्णुमुच्चरन्॥६२॥

प्रह्लादेश्वरमभ्यर्च्यं त्रिलोचनमतः परम् ।
विन्दुमाधवमभ्यर्च्यं ह्रदे पञ्चनदे शुभे ॥ ६३ ॥

गभस्तीशं मङ्गलाञ्च गौरीं दृष्ट्वा ततोव्रजेत् ।
वशिष्ठवामदेवौ च पर्वतेश्वरमेव च ॥ ६४ ॥

महेश्वरं समभ्यर्च्य ततः सिद्धिविनायकम् ।
सप्तावरणगान्दिव्यान्पूजयेत् गणनायकान् ॥ ६५ ॥

पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा काशी रहस्यम् दशमोध्यायः ।

काशी प्रदक्षिणा येन कृतात्रैलोक्यपावनी।
सप्तद्वीपा साब्धिशैला भूः परिक्रामिताऽमुना॥ १॥
(नारदीय पु० अ० ६)

अर्थ—हे भवानी जिसने काशी की पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा की है उसने त्रैलोक्यपावनी सात द्वीप, सात समुद्र, सम्पूर्ण पर्वतों के सहित पृथ्वी की वह प्रदक्षिणा दर्शन कर चुका। वह पुरुष निष्पाप और पुण्यवान हुआ, कृतार्थ हुआ और वह चौरासी लाख योनि से छूट कर शिव सायुज्य मुक्ति प्राप्त करता है।

प्रत्यब्दं ये प्रकुर्वन्ति, पञ्चक्रोश प्रदक्षिणाम्।
जीवन्मुक्तास्तु ते ज्ञेया, निष्पापाः काशिवासिनः॥ २॥

अर्थ—जो मनुष्य प्रतिवर्ष पञ्चक्रोशी की प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा करते हैं वे मनुष्य जीवन्मुक्त हैं और वही काशी वासी निष्पाप हैं। (चूँकि प्रतिदिन मन, वाणी, शरीर से कुछ न कुछ पाप कर्म होते रहते हैं।)

यावज्जीवं वसेत् काश्यां, प्रत्यब्दं सुप्रदक्षिणाम्।
कुर्यादेव निरालस्या, आनन्द सदनस्थहि॥ ३॥

अर्थ—जन्म भर, जब तक काशी में वास करे, तब तक आनन्द सदन काशी की व वार्षिक पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा करे। आलस्य को छोड़ कर पञ्चक्रोशी यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

यथा कथञ्चिद्द्वेशि पञ्चक्रोश प्रदक्षिणम्।
कुर्यादेवन मासादि चिन्तयेद्धर्मकोविदः॥ ४॥
स एव शुभदः कालो यस्मिन् श्रद्धोदयोभवेत्।

अर्थ—पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा जाने के लिए वार, तिथि, मास, काल, चन्द्र और समय का विचार नहीं करना चाहिए, चूंकि पापों को नाश करने वाली और मोक्ष देने वाली पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा जाने के लिए दिन हृदय में श्रद्धा उत्पन्न हो वही शुभ दिन, शुभ काल और वही उत्तम मुहूर्त माना जाता है। प्रयत्न पूर्वक पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा करनी चाहिए।

यथा कथञ्चिद् देवेशि पञ्चक्रोश प्रदक्षिणम् ॥ ५ ॥

अर्थ—शंकर जी भवानी से कहते हैं। हे भवानी ! सभी मनुष्यों को यथाशक्ति पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा करनी चाहिए, पापों को नष्ट करने वाला इतना सहज उपाय अन्य नहीं है।

काशी की पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा सभी दुःखों को नाश करने वाली है और सभी पापों को नष्ट करने वाली है तथा पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा सभी दुःखों और संकटों को दूर करती है।

प्रदक्षिणात्रयं कृत्वा, पापं जन्मशतार्जितम् ।
विलयं प्रापयति ना, नात्र कार्या विचारणा ॥ ६ ॥

अर्थ—तीन पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा करने वाले भक्त के सौ जन्मों का पाप अवश्य छूट जाता है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए।

क्षेत्रं प्रदक्षिणी कृत्य, भवेत्पापो हि विज्वरः ॥ ७ ॥

अर्थ—पञ्चक्रोशी क्षेत्र काशी की परिक्रमा करके पापी प्राणी पाप रहित हो जाता है।

प्रायश्चित्त विहीनानां, यातनास्ति सुदारुणा ।
ज्ञानस्वरूपा काशीयं, पञ्चक्रोशे परिस्थिता ॥ ८ ॥
तस्याः प्रदक्षिणां कृत्वा, सर्व पापैः प्रमुच्यते ।

अर्थ—पाप करके प्रायश्चित्त नहीं करने पर घोर यातना (पीड़ा) होती है। लेकिन ज्ञानस्वरूप पञ्चक्रोश मात्र काशी की प्रदक्षिणा करने से सब पाप छूट जाता है।

नरयानं चाश्वतरी ह्यादि सहितो रथः।
तीर्थयात्रा ह्यशक्तानां, यान दोष करी न हि ॥६॥
(कूर्म पुराणे)

जो यात्री पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा में चलने में असमर्थ हैं, वे यात्री रिक्शा, आटो रिक्शा, कार, जीप, मिनी बस, बस आदि से पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा कर सकते हैं। इनसे यात्रा करने से दोष नहीं होता।

श्री शंकर जी भवानी जी से कहते हैं। हे भवानी ! सभी मनुष्यों को यथाशक्ति पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा करनी चाहिये। पापों को नष्ट करने वाला इतना सहज उपाय अन्य नहीं है।

काशी पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा सभी दुखों को नाश करनेवाली है और सभी पापों को नष्ट करने वाली है। अतः प्रयत्नपूर्वक पंचक्रोशी प्रदक्षिणा-दर्शन-यात्रा करनी चाहिये।

१. दण्डपाणीभ्यो नमः (म. नं. सी के. ३६।११ में) मो० ढुण्ढिराज गली।

२. ढुण्ढिराजाय नमः (म. नं. सी. के. ३५।२७ में) मो० सावित्री फाटक, अन्नपूर्णा गली। दर्शन-पूजन कर प्रार्थना करें—

ढुण्ढिराज गणेशान महाविघ्नौघनाशनः।
पञ्चक्रोशस्य यात्रार्थं देह्याज्ञां कृपया विभो ॥

३. पञ्चविनायकाय नमः (म. नं. सी. के. ३५।२१ में, मो० विश्वनाथ सभा।)

कालराजेश्वराय नमः [मो० विश्वनाथ जी ।]

४. श्री विश्वनाथाय नमः (म. नं. सी. के. ३५।१९ में मो० विश्व-नाथ गली ।)

प्रार्थना मन्त्र यह है—

पञ्चक्रोशस्य यात्राम्वै करिष्ये विधिपूर्वकम् ।
प्रीत्यर्थं तव देवेश ! सर्वाघौघ प्रशान्तये ॥

विश्वनाथ जी से प्रार्थना करें—हे विश्वनाथ भगवान् मैं समस्त पापों के प्रायश्चित्त करने के लिये और ग्रहों की शान्ति के लिये, दुःख दरिद्र और संकट को दूर करने के लिये एवं पितरों को उद्धार और मुक्ति दिलाने के लिये पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा करना चाहता हूँ, आज्ञा दें।

हे विश्वनाथ भगवान ! मैं विधिपूर्वक यात्रा करना चाहता हूँ, समस्त पाप समूहों की शान्ति के लिए, पितरों के उद्धार के लिए और दे ऋण एवं पितृ-ऋण से मुक्ति पाने के लिए और दैहिक, दैविक, भौतिक ताप की निवृत्ति के लिए, रोग और ग्रहों की शान्ति के लिए, पञ्चक्रोशी यात्रा करना चाहता हूँ, आज्ञा दें। प्रार्थना करने के पश्चात् विश्वनाथ जी के मन्दिर की तीन प्रदक्षिणा करके प्रणाम करें। बगल में स्थित—

५. मुक्ति मण्डप ज्ञानवापी तीर्थाय नमः।

संकल्प लेकर ब्राह्मण को दक्षिणा (पैसा) देकर मौन होकर चले ज्ञानवापी में रामायण सम्मेलन होते हैं और यज्ञ होते हैं।

६. मणिकर्णिका तीर्थाय नमः। (मणिकर्णिका घाट)

मणिकर्णिका घाट में स्नान करके मौन व्रत को छोड़कर वस्त्र टीका, त्रिपुण्ड, उर्द्धपुण्ड्र और रुद्राक्ष (तुलसी) माला धारण करके गङ्गा जल पञ्चोपचार से पूजन की सामग्री पैसा, कुशा और पुष्प अक्षत आदि साथ में लेकर।

पञ्चाक्षरी महामन्त्र को मनमें जप करते हुए, शिव-शिव नाम महामन्त्र का जप करते हुए। कीर्तन का महामन्त्र यह है—"हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे"। सब मिलकर एक स्वर से कीर्तन करते हुए चलते हैं। पैसा, अक्षत दरिद्रनारायण को देते हुए चलते हैं। झोले में अक्षत, पैसा, पुष्प आदि मन्दिर में चढ़ाने के लिए बाहु में लटकाये हुए, अति वृद्ध, सर झुका हुआ, सोंटा हाथ में लिए हुए मधुर स्वर से कीर्तन, सुन्दर मनोहर स्वर में करते हुए, शनैः शनैः मन्दिरों का दर्शन-पूजन करते हुए चलते हैं। मणिकर्णिका घाट से उत्तर ऊपर मणिकर्णिकेश्वर गली में।

मणिकर्णिकेश्वर का प्रमाण—स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, लिङ्ग-पुराण, पद्मपुराण में विस्तार से वर्णन है।

७. मणिकर्णिकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ८/१२ में, मो० गढ़वासी टोला)

मणिकर्णिकेश्वर के दर्शन पूजन करने वाले व्यक्ति के पाप, दुःख-कष्ट दूर होते हैं।

स्व-आत्मा स्वरूप ज्योति का दर्शन और आत्मा का ज्ञान होता है। साधक को ब्रह्मात्मा साक्षात्कार होता है। अन्त में मुक्ति मिलती है।

मणिकर्णिकेश्वर में यज्ञ होते हैं और उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र पढ़ाया जाता है। पहले वेदान्त सम्मेलन भी होता था।

उसी मार्ग से घाट के ऊपर हनुमानजी के बगल में पश्चिम दाहिनी तरफ गणेश मन्दिर में सिद्धि विनायक हैं। सिद्धि विनायक का प्रमाण काशी खण्ड के काशी रहस्य में, शिव पुराण में एवं लिङ्ग पुराण में विस्तार से मिलता है।

८. सिद्धि विनायकाय नमः (म० नं० डी० १/६७ में, मो० मणिकर्णिका घाट)

सिद्धि विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को सिद्धि मिलती

है। साधकों को अति शीघ्र ही सिद्धि को देने वाले सिद्धि विनायक हैं और सब कार्य सफल होते हैं। परिवार-द्रव्य-व्यापार से परिपूर्ण होता है, भक्ति और ज्ञान की वृद्धि होती है।

मणिकर्णिका घाट से दक्षिण मन्दिरों के दर्शन-पूजन-कीर्तन करते हुए चलते हैं।

ललिता घाट के ऊपर नेपाली पशुपतीश्वर मन्दिर के नीचे। गङ्गा केशव का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य एवं विष्णु पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

९. गङ्गाकेशव विष्णुवेनमः (म० नं० डी० १/६६ में, मो० ललिता घाट)

गङ्गा केशव के दर्शन-पूजन करने वाले भक्त को विष्णु और शिव जी की भक्ति मिलती है तथा काशी वासियों की रक्षा और काशी वास के अवसर मिलते हैं। जल में डूबने का खतरा नहीं रहता। परिवार में धन-लक्ष्मी की वृद्धि होती है। ललिता गौरी का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य में विस्तार से मिलता है।

१०. ललितागौरीदेव्यैः नमः (म० मं० डी० १/६७ में, मो० ललिता घाट)

ललिता गौरी का दर्शन-पूजन करने से विश्वनाथ, भवानी तथा काशी की भक्ति प्राप्त होती है। परिवार में विद्या, धन एवं भक्ति की वृद्धि होती है।

ललिता गौरी से दक्षिण त्रिपुरा भैरवी घाट के ऊपर शंकर जी के मन्दिर में जरासन्धेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

११. जरासन्ध्येश्वराय नमः (म० नं० डी० ५/१० बगल में, मो० त्रिपुरा भैरवी घाट)

जरासन्धेश्वर के दर्शन-पूजन से रोगी के रोग, दुःख और कष्ट शान्त होते हैं। वृद्ध को शक्ति एवं भक्ति प्राप्त होती है और शत्रु परास्त होते हैं।

जरासन्धेश्वर के दक्षिण बगल में, मान मन्दिर घाट के ऊपर, सोमनाथ मन्दिर में। सोमनाथेश्वर जी का काशी खण्ड, काशी रहस्य में विस्तार से वर्णन है।

१२. सोमनाथेश्वराय नमः (म० नं० डी० १६/३४ में; मो० मान मन्दिर घाट)

सोमनाथेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को स्थूल शरीर में शक्ति तथा विश्वनाथ एवं भवानी की भक्ति प्राप्त होती है। मनोरथ पूर्ण होते हैं और धन, जन, भक्ति की वृद्धि होती है।

दालभ्येश्वर का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य और शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त होते हैं।

१३. दालभेश्वराय नमः (म० नं० डी० १६/३२ में, मो० मान मन्दिर घाट)

दालभ्येश्वर के दर्शन, पूजा करने से स्वधर्म का पालन करने तथा सहन करने की शक्ति आती है।

द्रव्य-व्यापार, परिवार और भक्ति ज्ञान में वृद्धि होती है।

दालभ्येश्वर से दक्षिण गङ्गा किनारे से शूलटंकेश्वर। शूलटंकेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, केदार माहात्म्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

१४. शूलटंकेश्वराय नमः। मो० दशाश्वमेध घाट।

शूलटंकेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले व्यक्ति के पेट सम्बन्धी रोग शान्त होते हैं।

शूल या पेट में गैस के रोगी को शूलटङ्केश्वर का स्नान कराया हुआ निर्माल्य जल पिलाने से शूल का रोग नष्ट होता है।

दर्शन करने वाले अपने भक्तों को शूलटङ्केश्वर चारों पदार्थ प्रदान करते हैं।

किसी समय में शूलटङ्केश्वर के पास बड़े-बड़े यज्ञ और वेद, पुराण भगवद्गीता, रामायण आदि का विशाल आयोजन और सम्मेलन हुआ करता था। इस समय सूक्ष्म रूप से सम्मेलन होते हैं और प्रति-दिन कथा होती है।

शूलटङ्केश्वर के मन्दिर के ऊपर के मकान में राम मन्दिर से सटे हुए, शंकर जी के मन्दिर में वाराहेश्वर हैं। उनका प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्म-वैवर्त पुराण, वाराह पुराण में प्राप्त होता है।

१५. आदि वाराहेश्वराय नमः (म० नं० डी० १६|१११ में, मो० दशाश्वमेध घाट)

आदि वाराहेश्वर के दर्शन-पूजन करनेवाले भक्तों को विश्वनाथ, विष्णु एवं लक्ष्मी की भक्ति प्राप्त होती है तथा द्रव्य, आयु, मित्र और आत्म-ज्ञान में वृद्धि होती है।

वाराहेश्वर के दक्षिण सड़क के दक्षिण बगल में प्रयागेश्वर के मन्दिर में। वंदी देवी जी की मूर्ति है, काशी रहस्य, काशी खण्ड; देवी भागवत में वंदी देवी जी का विस्तार से वर्णन है।

१६. बन्दीदेव्यै नमः (म० नं०डी० १७/१०० में, मो० प्रयागराजघाट)

बन्दी देवी के दर्शन-पूजन जो नर-नारी करते हैं उनके दुःख-दोष-दरिद्रता दूर होती है और जो कैदी जेल में बन्द रहते हैं वे कैदी जेल से छूट जाते हैं। काशी खण्ड में इसका विस्तार से वर्णन है। इनके दर्शन-पूजन, उपासना आदि करने और मंदिर के जीर्णोद्धार करने वाले भक्तों को पुत्र-रत्न भक्ति की प्राप्ति होती है। ये काशीवासियों की कल्याण करती हैं और सबको वुद्धि देती हैं।

बन्दी देवी से नीचे घाट में, शीतला जी के मन्दिर में, दशाश्वमेधेश्वर की प्रतिमा है।

दशाश्वमेधेश्वर का प्रमाण स्कन्ध पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, काशी दर्शन-यात्रा में विस्तार से मिलते हैं।

१७. दशाश्वमेधेश्वराय नमः (म० नं० डी० १८/१९ में, मो० प्रयागराजघाट)

दशाश्वमेधेश्वर के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके स्थूल पाप शान्त होते हैं और उनके मनोरथ पूर्ण होते हैं। इसके साथ ही सन्तान, धन, पुण्य एवं भक्ति की वृद्धि होती है।

विवरण—इलाहाबाद के प्रयागराज में स्नान करने से जो फल मिलता है उससे दशगुणा काशी के प्रयागराज दशाश्वमेध घाट में, माघ मास में, स्नान करने से मिलता है।

दशाश्वमेधेश्वर से दक्षिण गङ्गा किनारे से पाण्डेय घाट दो हैं, उसके दक्षिण बगल के पाण्डेय घाट के ऊपर शंकर जी के मन्दिर में सोमेश्वर से सटे हुए, शिवालय में सर्वेश्वरजी की प्रतिमा है। सर्वेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड में, काशी रहस्य और काशी दर्शन में विस्तार से है।

१८. सर्वेश्वराय नमः (म० नं० डी० २५/७ में, मो० रङ्गामाटी क्षेत्र पाण्डेय घाट)

सर्वेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले व्यक्ति सबकी निष्काम सेवा करते हैं और समभाव रखते हैं। दर्शनार्थियों को सुख का साधन प्राप्त होता है और द्रव्य, बुद्धि की वृद्धि होती है।

केदारेश्वर का शिव पुराण, लिङ्ग पुराण, पद्म पुराण, काशी खण्ड, काशी रहस्य और केदार माहात्म्य में विस्तार से वर्णन है।

१९. केदारेश्वराय नमः (म०नं०बी० ६/१०२ में, मो० केदार घाट)

केदारेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के स्थूल पाप और ताप क्षीण होते हैं। रोग, दुःख, संकट एवं दरिद्रता दूर होती है। धन, परिवार, बुद्धि, विद्या, भक्ति और ज्ञान की वृद्धि होती है।

केदारेश्वर अपने साधक को प्रत्यक्ष फल देते हैं और भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करते हैं।

अतः प्रयत्न पूर्वक श्री केदारेश्वर के दर्शन-पूजन-उपासना और आराधना करनी चाहिए।

केदारेश्वर का वेद पुराण एवं श्रुति स्मृति में विस्तार से वर्णन है।

केदारेश्वर में बड़े-बड़े यज्ञ होते हैं और वेद-पुराण-पाठ एवं वेदान्त पाठ तथा वेद, पुराण, रामायण आदि सम्मेलन होते हैं और प्रतिदिन कथा होती है।

केदारेश्वर से दक्षिण, हरिश्चन्द्र घाट से सटे हुए दक्षिण बगल के हनुमान घाट के शंकर जी के मन्दिर में हनुमतेश्वर जी की प्रतिमा है। हनुमतेश्वर का प्रमाण काशी रहस्य, काशी खण्ड में विस्तार से प्राप्त होता है।

२०. हनुमतेश्वराय नमः (हनुमान घाट में ऊपर, म०नं०बी०४/११में है)

यह काशी खण्ड के हनुमान जी हैं। इनके दर्शन-पूजा से डाकिनी-साकिनी, भूत-प्रेत की बाधा तथा दरिद्रता नष्ट होती है। इसके साथ ही ये भक्ति, विद्या देते हैं तथा सब कार्य सफल करते हैं।

[यह सप्तपुरी में अयोध्या है और यह अयोध्या जैसी काशी की हनुमानगढ़ी है। रामेश्वर मन्दिर के बाहर बड़े हनुमान जी के नाम से संत तुलसीदास जी के करकमलों से स्थापित हनुमान जी हैं।]

हनुमतेश्वर से गङ्गा किनारे से पानी टङ्की से सटे हुये लोलार्क घाट के ऊपर दो मन्दिरों के दर्शन होते हैं। इसके सटे हुए दक्षिण बगल में गणेश मन्दिर में अर्कविनायक की दिव्य और बड़ी मूर्ति है जो उत्तराभिमुख है। अर्क विनायक का प्रमाण स्कन्ध पुराण, वृहदारण्योपनिषद्, काशी रहस्य, शिव रहस्य तथा लिङ्ग पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

२१. गणाध्यक्षे अर्क सूर्य विनायकाय नमः (म० नं० बी० २/१७ में, मो० लोलार्क कुण्ड।

लोलार्क सूर्य विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के मनोरथ निर्विघ्न सफल होते हैं और शत्रु परास्त होते हैं। सब कार्य में विजय होती है। भक्त जहाँ कहीं भी रहे अन्त में मुक्ति मिलती है, पदोन्नति द्रव्य, विद्या तथा मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

अर्क विनायक के पश्चिम बगल में लोलार्क कुण्ड के ऊपर सूर्य मन्दिर है। लोलार्क सूर्य का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य में विस्तार से मिलता है।

२२. लोलार्क सूर्याय नमः (म० नं० बी० २/३१ ए)

लोलार्क-सूर्य के दर्शन-पूजन और कुण्ड में स्नान करने से चर्म-रोग, अन्य पाप-ताप-रोग शान्त होते हैं। धन, सम्पत्ति एवं पुत्र आदि की प्राप्ति होती है। भक्तों के सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। नेत्र की ज्योति, मान-प्रतिष्ठा, व्यापार, द्रव्य और विद्या-भक्ति तथा ज्ञान की वृद्धि होती है। अर्क विनायक में प्रतिदिन कथा-यज्ञ होते हैं और वेद-पुराण-रामायण आदि सम्मेलन होते रहते हैं। श्री रामलीला भी होती है।

लोलार्क-सूर्य-कुण्ड में एतवार को स्नान करने वाले को धन, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और रोग-निवृत्ति होती है। भक्ति, ज्ञान प्राप्ति के लिए यात्री दर्शन-स्नान-पूजन करते हैं तथा मनौतियाँ मानते हैं। मनोरथ पूर्ण होने के पश्चात् पञ्च-बाजा बजाते हुए स्नान-दर्शन करने यात्री आते हैं। काशी खण्ड में स्नान-दर्शन-पूजन का बहुत महत्व लिखा है। भाद्र शुक्ल षष्टी के दिन लगभग तीन लाख यात्री स्नान-दर्शन करते हैं।

लोलार्क से दक्षिण, अस्सी मुहल्ले में अस्सी सङ्गम तीर्थ है। अस्सी घाट पर मार्जन करके गङ्गा जल साथ में लेकर अस्सी घाट के ऊपर जो शिवालय है, यात्री उनके दर्शन करते हैं। इसे ही अस्सी सङ्गमेश्वर का मन्दिर कहते हैं। इसी के समीप माया देवी हैं और उनके बगल में देवालय है। अस्सी सङ्गमेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य में विस्तार से मिलता है।

२३. अस्सी सङ्गमेश्वराय नमः (म० नं० बी० १/१७४ में, मो
अस्सी घाट)

अस्सी सङ्गमेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख-कष्ट, रो
से मुक्ति मिलती है और गरीबी दूर होती है। इसके साथ ही ऐश्व
लक्ष्मी, बुद्धि और भक्ति-ज्ञान में भी वृद्धि होती है। अस्सी संगमेश्वर
धाम में प्रति दिन कथा होती है। गीता, भागवत् तथा रामायण
वेद-पुराण सम्मेलन होते हैं।

अस्सी सङ्गमेश्वर से दक्षिण से पश्चिम नगवा, लङ्का चौराहा, मा
मन्दिर के बगल से होते हुये दुर्गाकुण्ड जाना होता है।

दुर्गा-कुण्ड तीर्थाय नमः।

कुण्ड में मार्जन करके यहाँ निवास करना हो तो दुर्गाकुण्ड में स
करके दर्शन करना चाहिए।

दुर्गा विनायक का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य और शिव पु
लिङ्ग पुराण और शिव रहस्य में विस्तार से है।

दुर्गा-कुण्ड के पूर्व दक्षिण के कोने में गणेश जी की मूर्ति है
उत्तराभिमुख है।

२४. दुर्ग विनायकाय नमः (म० नं० बी० २७/२ में,
दुर्गाकुण्ड)

दुर्ग विनायक के दर्शन-पूजा करने वाले भक्तों के दैहिक, दैविक
भौतिक आदि पाप-ताप शान्त होते हैं। सब कार्य सफल होते हैं। ये दु
और दरिद्रता आदि दुःखों को दूर करते हैं।

दुर्गा देवी जी का प्रमाण देवी भागवत, शिव पुराण, स्कन्द पु
ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिव रहस्य, मत्स्य पुराण और पद्म पुराण में विस्ता
मिलता है।

दुर्ग विनायक से पश्चिम बगल में विशाल मन्दिर में दुर्गा जी
मन्दिर है। दुर्गा जी की प्रतिमा पश्चिमाभिमुख है।

२५. दुर्गा देव्यै नमः (म० नं० बी० २७/२ में, मो० दुर्गाकुण्ड)

दुर्गा जी के दर्शन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट एवं संकट नष्ट होते हैं। ग्रहों की पीड़ा दुर्गा जी की कृपा से शान्त होती है और भक्त दुर्गति में नहीं पड़ते।

इनके दर्शन से धन, पुत्र तथा सुख के साधन प्राप्त होते हैं। पुरवासियों की ये कल्याण करती हैं।

विद्या, बुद्धि तथा आयु की वृद्धि होती है। भक्तों को अन्त समय में मुक्ति प्राप्त होती है।

अतः दुर्गा जी का प्रयत्न पूर्वक दर्शन करें। दुर्गा जी में गणेश, रुद्र, शक्ति और विष्णु यज्ञ होते हैं और दुर्गा सप्तसती का पाठ तथा रामायण आदि सम्मेलन होते हैं।

"ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र मधुपायस लड्डुकैः।"

दुर्गा जी में ब्राह्मणों को लड्डू आदि मिष्ठान्न, द्रव्यादि दक्षिणा देकर प्रणाम करें और साधुओं को जलपान दे करके दरिद्रनारायण को एक मुट्ठी लाई, पैसा देकर दुर्गा जी से प्रार्थना करें—

"जय दुर्गे महादेवी जय काशी निवासिनी।
क्षेत्र विघ्न हरे देवि पुनर्दर्शनमस्तुते॥"

इस प्रकार दुर्गा जी को नमस्कार करके काशी रहस्य के आज्ञानुसार पाँचरात्रि के पञ्च-क्रोशी-दर्शन यात्रा में दुर्गा जी में निवास किया जाता है और शिव रहस्य के अनुसार दुर्गा जी में सात रात्रि के पञ्च-क्रोशी-दर्शन-यात्रा में यात्री दुर्गा जी में वास करते हैं।

यात्री दुर्गा कुण्ड में स्नान करके दुर्गा जी का दर्शन करते हैं।

अस्सी नदी के तट पर जो यात्री रात्रि में रहते हैं उनकी यात्रा खण्डित होती है। दुर्गा जी के दर्शन-पूजन के पश्चात् नगवा के दक्षिण लंका चौराहा से पूर्व गङ्गा जी के पास में जाकर निवास करते हैं।

'क्षेत्रम्प्रदक्षिणी कुर्वंस्तिलमात्रन्न सन्त्यजेत्।'

पञ्च-क्रोशी-दर्शन-यात्रा करते समय तिल मात्र भी मार्ग की भूमि नहीं छोड़ना चाहिए। दर्शनार्थी पञ्चक्रोशी मार्ग-सड़क को छोड़कर ताओं का दर्शन करने जाते हैं। दर्शन के पश्चात् उसी मार्ग से पञ्चक्रो सड़क पर आकर यात्रा करते हैं।

दुर्गा जी से दक्षिण से पश्चिम उसी मार्ग से लङ्का चौराहा होते महामना मदन मोहन मालवीय जी की मूर्ति अर्थात् हिन्दू विश्वविद्याल फाटक के बाहर से पश्चिम कंदवा जाने वाली पञ्चकोशी सड़क से प की ओर यात्री कीर्तन करते हुए शनैः शनैः चलते हैं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के १०वें अध्याय के आज्ञानुसार पञ्चक्रोशी द यात्रा में दुर्गाजी में प्रथम दिन रात्रि विश्राम करने का विधान है।

पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा में दुर्गा जी का दर्शन-पूजन करके विश्राम के लिए, हिन्दू विश्वविद्यालय के फाटक के बाहर पश्चिम बगल में शं के मन्दिर में दक्षिणेश्वर हैं। दक्षिणेश्वर मोटे महादेव जी के न प्रसिद्ध हैं। [मोहला मोटे महादेव]

दक्षिणेश्वर के दर्शन-पूजा करके यात्री बगल के धर्मशाला में विश्राम थे। वह धर्मशाला हिन्दू विश्वविद्यालय बनने के पश्चात् विश्ववि (छड़ दीवाल) के घेरे के अन्दर हो गया उसी समय से यात्री दुर्गा जी मे रुकते हैं।

दक्षिणेश्वर का प्रमाण इस प्रकार स्कन्द पुराण में, शिव पुराण में लिङ्ग पुराण में विस्तार से मिलते हैं।

आदित्य नगर करमैताल पुर चौराहा से उत्तर आधा फर्लाङ्ग में मैनालपुर गाँव में शंकर जी के मन्दिर में जो दिव्य शिवलिङ्ग है विश्वक्सेनेश्वर हैं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण, काशी वैभव, काशी यात्रा, शिव रहस्य और दर्शन-यात्रा में विश्वक्सेनेश्वर का विस्तार से वर्णन है।

२६ विश्वक्सेनेश्वराय नमः—[करमैतालपुर गाँव में]

विश्वक्सेनेश्वर का दर्शन-पूजन करने वालों भक्तों के दुःख-द

(गरीवी), भय आदि दूर होते हैं। धन, पदोन्नति, व्यापार, मान-प्रतिष्ठा तथा भक्ति एवं ज्ञान की वृद्धि होती है। ये पुरवासियों की रक्षा करते हैं। मन्दिर के जीर्णोद्धार कराने वाला व्यक्ति सब कार्य में विजयी होता है। विश्वक्सेनेश्वर से उसी मार्ग से आदित्य नगर पञ्चक्रोशी सड़क पर आदित्य नगर से पश्चिम चितईपुर होते हुए कन्दवा।

कर्दमेश्वर में पश्चिम जाने वाली पहली गली छोड़कर दाहिनी तरफ से पश्चिम जाने वाली गली से विशाल पक्का कुण्ड (पोखरा-तालाव) है यहीं से तालाब के पश्चिम तट में विशाल कर्दमेश्वर मन्दिर का दर्शन होता है। कर्दमेश्वर नित्य-दर्शन-यात्रा प्रारम्भ।

२७ आदि कर्दमेश्वर तीर्थाय नमः

कर्दमेश्वर मन्दिर से सटा हुआ पश्चिम बगल में यह स्थान कुँआ के रूप में है।

कर्दम कूपाय नमः।

काशी रहस्य के आज्ञानुसार कर्दम कूप के जल का दर्शन करना चाहिए।

कर्दम कूप से सटे हुए पश्चिम दक्षिण बगल के शंकर जी के मन्दिर में सोमेश्वर हैं।

काशी रहस्य, त्रिस्थली, काशी खण्ड, शिव रहस्य और काशी-दर्शन-यात्रा में सोमनाथेश्वर का विस्तार से वर्णन है।

२८ सोमनाथेश्वराय नमः [कर्दमेश्वर (कंदवा गाँव) में]

सोमनाथेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले व्यक्ति को भक्ति, सुख और शान्ति प्राप्ति होती है तथा शत्रु पराजित होते हैं।

कर्दम कूप से सटे हुए उत्तर में विरुपाक्षगण के मन्दिर में विरुपाक्षगण हैं, इनका प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिवपुराण और नन्दी उप-पुराण में है।

२९ विरुपाक्षगणाय नमः [मो० कर्दमेश्वर]

विरुपाक्षगण के दर्शन करने वाले भक्तों को ये दुःख, संकट आपत्ति में

तत्काल रक्षा और ग्रामवासियों के कल्याण करते हैं। विरुपाक्षण के द
बगल के शंकर जी के मन्दिर में नीलकण्ठेश्वर हैं।

वेदों में, काशी खण्ड में, काशी रहस्य में, शिव रहस्य में; लिङ्गपुराण
शिव पुराण में, पद्मपुराण में और ब्रह्माण्ड पुराण में नीलकण्ठेश्वर
प्रमाण विस्तार से मिलते हैं।

३०. नीलकण्ठेश्वराय नमः [कर्दमेश्वर]

नीलकण्ठेश्वर के दर्शन-पूजन से घर में सुमति, सुव्यवस्था एवं घर
लक्ष्मी वास करती हैं।

नीलकण्ठेश्वर के दक्षिण बगल में जो विशाल मन्दिर का दर्शन होता
वही कर्दमेश्वर हैं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्द पुराण, लिङ्गपुराण और शिवपुराण में कर्दमे
के प्रमाण प्राप्त होते हैं।

३१. कर्दमेश्वराय नमः [मो० कर्दमेश्वर]

कर्दमेश्वर के दर्शन-पूजन, उपासना एवं आराधना करने वाले भक्तों
दुःख, चिन्ता, कष्ट और रोग दूर होते हैं। धन, जन, मित्र, सन्तान, बु
विद्या, भक्ति एवं ज्ञान की वृद्धि होती है। पुरवासियों का कल्याण होता
कर्दमेश्वर के दर्शन, पूजन, उपासना से दर्शनार्थियों के मन के अनुरू
उनके मनोरथ पूर्ण होते हैं। कर्दमेश्वर में यज्ञ और कथा होती है तथा वे
पुराण, रामायण आदि सम्मेलन होते हैं।

कर्दम ऋषि का विशेष वर्णन श्रीमद्भागवत के तृतीय स्कन्द के २१
अध्याय के ४४ श्लोक से प्राप्त होता है। कर्दम ब्रह्मर्षि साक्षात् विष्णु
रूप में अवतार लिये हुए कपिलदेव [कपिल मुनी विष्णु] ने पुत्र और स
दौहित्री से सन्यास लेने के लिए उनसे आज्ञा प्राप्त कर संन्यास ग्रहण कि
और निवृत्ति-मार्ग ग्रहण करके तपस्या करने के लिए उन्होंने काशी
आकर काशी की दर्शन-यात्रा करने के पश्चात् कंदवा गांव में अपने कर
कमलों से कर्दमेश्वर को स्थापित किया और दर्शन-पूजा करते हुए वे तपस्
करने लगे।

कुछ दिन के पश्चात् भवानी शंकर प्रगट हो गये। विश्वनाथ जी बोले-'तुम्हारी तपस्या से मैं प्रसन्न हूं, वर माँगो!' कर्दम ब्रह्मर्षि बोले—'मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। कर्दमेश्वर और कर्दमेश्वर के भक्तों को वरदान दीजिए।'

विश्वनाथ भगवान कहते हैं—

'जो नर-नारी कर्दमेश्वर के दर्शन, पूजन, अर्चन और उपासना करेंगे उन दर्शनार्थी-यात्रियों के मनोरथ पूर्ण होंगे और परिवार में धन, बुद्धि और भक्ति-ज्ञान की वृद्धि होगी।' ऐसा वरदान देकर विश्वनाथजी अन्तर्ध्यान हो गये।

कर्दमेश्वर गण मन्दिर के बाहर दालान में हैं। उनको पञ्चव्रीहि—पाँच प्रकार के (धान्य) अन्न और काला तिल चढ़ता है। कर्दमेश्वर को गंगा जल श्रीखण्ड-चन्दन, पुष्प, बिल्व-पत्र, धूप-दीप, वस्त्र, द्रव्य आदि, ऋतु फल, मिष्ठान्न, पक्वान्न आदि प्रसाद चढ़ना है।

दरिद्रनारायण को पैसा देकर कर्दमेश्वर से धर्मशाला में जाकर सफाई करके कूप जल, गंगा जल छिड़ककर, आसन बिछाकर मध्याह्न की संध्या करने के पश्चात् कर्दमेश्वर में ३१ श्लोकों से हवन करके ब्राह्मणों की पूजा तथा पितृ-तर्पण और श्राद्ध करने का विधान लिखा है। तत्पश्चात् ब्राह्मण, साधु-महात्मा और संन्यासियों को भोजन कराना चाहिए। इसके अभाव में जलपान करना चाहिए। जलपान का भी साधन न हो तो दूर से साधु, माहात्मा और ब्राह्मण को नमस्कार करें।

अपने परिवार सहित हविष्य अन्न का भोजन करें। कुछ देर विश्राम करने के पश्चात् तीन बजे से कथा श्रवण करें।

यात्रियों में जो विद्वान्, ब्राह्मण, साधु, माहात्मा और संन्यासी हों उन्हें सभी यात्रियों को कथा-श्रवण कराना चाहिए। जो कथा श्रवण कराते हैं उन विद्वानों से विश्वनाथ-भवानी प्रसन्न होते हैं।

व्यास जी का कथन है कि पुराणों की कथा श्रवण कराना चाहिए।

प्रश्न—कौन-कौन ग्रन्थों की कथा श्रवण करें ?

उत्तर—पञ्चक्रोशी माहात्म्य, पञ्चक्रोशी की महिमा, पञ्चक्रोशी-दर्शन-यात्रा करने का फल और काशी-मोक्ष-निर्णय, काशी माहात्म्य, काशी अविमुक्त की महिमा, काशी अविमुक्त माहात्म्य, वाराणसी (काशी) की महिमा।

उपर्युक्त पुस्तकें पुराणों के अंश हैं।

कथा श्रवण करने के पश्चात् स्नान, सायं संध्या करने के पश्चात् शिव-शिव नाम मन्त्र जपते हुए और कर्दमेश्वर की जय हो, जयकार करते हुए कर्दमेश्वर के दर्शन करते हैं। दर्शन के पश्चात् यात्री अपने-अपने आसनों पर बैठकर कीर्तन, जाप, ध्यान आदि करके, विश्वनाथ जी का स्मरण करते हुए शयन करें। प्रातः स्नान, संध्या, देव, ऋषि, पितृ-तर्पण, पूजा-पाठ आदि सूक्ष्म रूप से नित्य कर्म से निवृत होकर कर्दमेश्वर जी का दर्शन करके प्रार्थना करें—

कर्दमेश महादेव काशिवासि जनप्रिय।
त्वत्पूजनानमहादेव पुनर्दर्शनमस्तुते ॥

तत्पश्चात् एक स्वर से कीर्तन करते हुए यात्री-दर्शन-यात्रा प्रारम्भ करते हैं।

जिस यात्री के पास साधन (धन) हो उस यात्री को प्रत्येक पड़ाव के मन्दिर में बारह घण्टा अखण्ड कीर्तन कराना चाहिए। कीर्तन करने-कराने से यात्रा के देवता, विश्वनाथ भगवान तथा पितृगण प्रसन्न होते हैं।

वेदव्यास जी लिखते हैं—भक्त लोग कीर्तन करें, परोपकार करें तथा यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, द्रव्य और औषधि आदि का दान करें।

यात्रा में सङ्कल्प करें कि 'मैं आज से पाप कर्म नहीं करूँगा और मैं प्रति दिन एक मुट्ठी अन्न, एक पैसा दान करूँगा और वस्त्र, औषधि आदि यथाशक्ति दान दूँगा। सभी प्राणियों में करुणा और दया का भाव रखूँगा तथा निष्काम सेवा करने का आज से अभ्यास करूँगा।'

यह भी संकल्प लें कि—'आज से मैं भगवान की भक्ति करूँगा।'

यात्री मन्दिरों के जर्णोद्धार करने के भी संकल्प लेते हैं।

मन्दिर के प्रथम फाटक के बाहर फूल, माला, नारियल, लाची दाना, ऋतु फल, मिष्ठान्न तथा पूजा के समान, धार्मिक पुस्तकों की दुकान प्रयत्न पूर्वक रखना चाहिए।

कर्दमेश्वर से पश्चिम पञ्चक्रोशी सड़क से दर्शन-पूजन-कीर्तन करते हुए शनैः शनैः चलते हैं।

आगे अमरा गाँव में दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में नागनाथेश्वर हैं। इनका काशी रहस्य, काशी खण्ड, शिव पुराण और लिंग पुराण में विस्तार से वर्णन है।

१२. नागनाथेश्वराय नमः [मो० अमरा गाँव में]

नागनाथेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को नाग (साँप) का भय नहीं होता और दर्शन से भक्त के परिवारों को नाग (सर्प) नहीं काटते।

काशी रहस्य में, काशी खण्ड में और देवी भागवत् में चामुण्डा देवी का विस्तार से वर्णन है।

१३ चामुण्डा देव्यै नमः (मो० अमरा गाँव में)

चामुण्डा देवी जी के दर्शन—पूजन करने वाले भक्तों के शत्रु परास्त होते हैं। देवी अपने भक्तों के दुःख-दरिद्रता और अज्ञान को दूर करतीं तथा गाँव वालों की रक्षा करती हैं। इनके दर्शन से भूत-पिशाच, डाकिनी-शाकिनी की बाधा दूर होती है।

अष्टमी तथा मङ्गल बार के दिन प्रयत्न पूर्वक दर्शन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त नवरात्र भर अवश्य दर्शन करना चाहिए।

चामुण्डा देवी से पश्चिम दोहना गाँव में सड़क से दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में मोक्षेश्वर हैं।

मोक्षेश्वर का प्रमाण स्कन्द पुराण, काशी रहस्य, लिङ्ग पुराण, शिव-पुराण आदि में विस्तार से मिलता है।

३४. मोक्षेश्वराय नमः [मो० देहना गाँव में]

मोक्षेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट और घर कलह नहीं होता। इसके साथ ही अज्ञान दूर होता है। अन्त में मुक्ति प्राप्ति होती है। मोक्षेश्वर गाँव वालों की रक्षा करते हैं। अतः सोमवा प्रदोप के दिन दर्शन-यात्रा करें।

मोक्षेश्वर के पश्चिम बगल में दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर करुणेश्वर का मंदिर है। इसका प्रमाण—काशी रहस्य, काशी खण्ड, शि रहस्य और बृहत् काशी दर्शन-यात्रा में विस्तार से मिलता है।

३५. करुणेश्वराय नमः [मो० देहना गाँव में]

करुणेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले व्यक्तियों में सभी प्राणियों में द और करुणा की भावना उत्पन्न होती है। भक्तों के दुःख और गरीबी होती है तथा जन-धन की वृद्धि है।

करुणेश्वर के पश्चिम बगल में दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दि करुणेश्वर की मूर्ति पूर्वाभिमुख है।

वीरभद्रगण का प्रमाण ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्द पुराण और शिवपु में प्राप्त होता है।

३६. वीरभद्रगणाय नमः [देहना गाँव में]

वीरभद्रगण के जो भक्त दर्शन-पूजन करता है उसके शत्रु मित्र हो और वह व्यक्ति निर्भय हो जाता है। वीरभद्रगण गाँव वालों की रक्षा क हैं और परिवार, धन, भक्ति आदि में वृद्धि होती है।

वीरभद्रगण के पश्चिम बगल में सड़क से दाहिनी तरफ विकटाक्ष के मन्दिर में इनकी प्रतिमा है। विकटाक्ष देवी जी का प्रमाण काशी ख काशी रहस्य, काशी वैभव और बृहत् काशी-दर्शन-यात्रा में है।

३७. विकटाक्ष दुर्गा देव्यै नमः [मो० देहना गाँव में]

विकटाक्ष देवी के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को सुख-सम्पत्ति विद्या की प्राप्ति होती है।

प्रत्येक अष्टमी और मङ्गलवार के दिन इनका दर्शन किया जाता है। देवी जी के पश्चिम बगल में हनुमान जी के मन्दिर से सटा हुआ उत्तर बगल का मंदिर भैरव मन्दिर है, जो पूर्वाभिमुख है।

उन्मत्त भैरव तीर्थ के उत्तर बगल में विशाल कुण्ड (तालाब) है। उन्मत्त भैरव का काशी खण्ड, काशी रहस्य और लिङ्ग पुराण में विस्तार से वर्णन है।

३८. उन्मत्त भैरवाय नमः [मो० देऊरा गाँव में]

उन्मत्त भैरव के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख-कष्ट और चिन्ता दूर होती है; भक्त सभी कार्यों में सफलीभूत होता है। इनके दर्शन से भूत, प्रेत, शत्रु आदि कष्ट नहीं देते। इनके मन्दिर का जीर्णोद्धार कराने के पश्चात् भक्त जो भी कामना या प्रार्थना करता है प्राप्त करता है। इसके साथ ही उसके असाध्य रोग शान्त होते हैं। जेल में बन्द कैदी छूट जाते हैं और पुत्र की प्राप्ति होती है। प्रत्येक अष्टमी और मङ्गलवार के दिन इनका दर्शन किया जाता है।

उन्मत्त भैरव के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में नीलकण्ठगण की मूर्ति है, जो पूर्वाभिमुख है।

नीलकण्ठगण का प्रमाण काशी रहस्य, काशी-दर्शन-यात्रा आदि में विस्तार से प्राप्त होता है।

३९. नीलकण्ठगणाय नमः [मो० देऊरा गाँव में]

नीलकण्ठगण के दर्शन-पूजन से धन-धान्य की प्राप्ति होती है तथा गाँव वालों की रक्षा होती है।

नीलकण्ठगण के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में जो मूर्ति पूर्वाभिमुख है वही नीलकण्ठगण है।

नीलकण्ठगण का काशी रहस्य और काशी-दर्शन-यात्रा में विस्तार से वर्णन है।

४०. कालकूटगणाय नमः [मो० देऊरा गाँव में]

कालकूटगण के दर्शन-पूजन से काल का भय नहीं होता। इनके दर्शन करने वाला व्यक्ति अल्प समय में ही मनोरथ को पूर्ण करता है। इनके दर्शन-पूजन से पुरवासियों की रक्षा होती है।

कालकूटगण के पश्चिम वगल में सड़क से दाहिनी तरफ देवी के मन्दिर में विमला देवी की प्रतिमा है, जो पूर्वाभिमुख है।

विमला देवी जी का काशी रहस्य, काशी भैभव, काशी-त्रार्षिक-यात्रा आदि में विस्तृत वर्णन है।

४०. विमला दुर्गा देव्यै नमः [मो० देऊरा गाँव में]

विमला देवी के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को देवी धन-धान्य और सुख के साधन देकर सुखी बनाती हैं और पुरवासियों की कल्याण करती हैं।

अतः भक्तों को प्रत्येक अष्टमी के दिन दर्शन-पूजन करना चाहिए।

विमला देवी के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में महादेवेश्वर का लिंग है। महादेवेश्वर का प्रमाण काशी रहस्य, काशी खण्ड, शिव पुराण एवं लिंगपुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

४१. महादेवेश्वराय नमः [मो० देऊरा गाँव में]

महादेव के दर्शन-पूजन से शिव-शक्ति-गणेश और विष्णु की भक्ति प्राप्त होती है और साथ ही धन, विद्या, सुख तथा शान्ति की वृद्धि होती है।

महादेव के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शंकरजी के मन्दिर में नन्दीकेश्वर का लिंग है जिनका प्रमाण-नन्दी उप पुराण, काशी रहस्य और काशीखण्ड में विस्तृत रूप में प्राप्त होता है।

४२. नन्दीकेश्वराय नमः [मो० देऊरा गाँव मे]

नन्दीकेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाला व्यक्ति बलवान और तेजस्वी

होता है। इनके दर्शन से शत्रु परास्त होते हैं और शंकर-भवानी की भक्ति प्राप्त होती है।

नन्दीकेश्वर के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में भृंगीरीटगण की प्रतिमा है जो पूर्वाभिमुख है।

काशी रहस्य और शिव पुराण में भृंगीरीटगण का विस्तार से वर्णन है।

४३. भृंगीरीटगणाय नमः [मो० देऊरा गांव में]

भृंगीरीटगण के दर्शन-पूजन से सम्पूर्ण कार्य सफल होते हैं। ये गांव वालों की रक्षा भी करते हैं।

भृंगीरीटगण के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ गोरा गांव में शङ्कर जी के मन्दिर में गणप्रियेश्वर का लिंग है। काशी रहस्य और शिव पुराण में इनका विस्तार से वर्णन है।

४४. गणप्रियेश्वराय नमः [मो० गोरा गांव में]

गणप्रिय अपने दर्शन पूजन करने वाले भक्तों को दुःख और दरिद्रता को दूर करते हैं और पुरवासियों की रक्षा करते हैं।

गणप्रियेश्वर से पश्चिम बगल में शङ्कर जी के मन्दिर में विरुपाक्ष गण हैं, जो पूर्वाभिमुख हैं। विरुपाक्षगण का प्रमाण काशी रहस्य और शिव पुराण में है।

४५ विरुपाक्षगणाय नमः [मो० गोरागांव में] विरुपाक्षगण के दर्शन-पूजन करने वाला भक्त सब कार्य में सफल होता है और ये गांव वालों की रक्षा करते हैं। विरुपाक्षगण से पश्चिम बगल में चकमातलदेई गांव में सड़क के दाहिनी तरफ शंकरजी के मन्दिर में यक्षेश्वर हैं ।

४६ यक्षेश्वराय नमः [चकमातलदेई गांव में] यक्षेश्वर के दर्शन-पूजन से मनुष्य बुद्धिमान और चतुर होता है तथा पुरवासियों को सुख प्राप्त होता है। यक्षेश्वर के पश्चिम प्रयागपुर गांव में सड़क की दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में विमलेश्वर की प्रतिमा है। विमलेश्वर का

प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य और लिंग पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

४७ विमलेश्वराय नमः (मो० प्रयागपुर गाँव में) विमलेश्वर के दर्शन पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट और रोग शान्त होते हैं।

विमलेश्वर के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शङ्करजी मन्दिर में मोक्षेश्वर का लिंग है। मोक्षेश्वर का प्रमाण काशी रहस्य, काशी दर्शन यात्रा और शिव पुराण में विस्तृत रूप में प्राप्त होता है।

४८ मोक्षेश्वराय नमः [मो० प्रयागपुर में]

मोक्षेश्वर के दर्शन-पूजन से इस लोक मे सुख-शान्ति और अन्त मुक्ति की प्राप्ति होती है तथा शत्रु मित्र बनते हैं।

मोक्षेश्वर के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शङ्कर जी मन्दिर है जिसमें ज्ञानेश्वर का लिंग है। ज्ञानेश्वर का प्रमाण लिंग पुराण काशी रहस्य में, विस्तार से वर्णित है।

४९ ज्ञानदेश्वराय नमः (मो० प्रयागपुर गाँव में]

ज्ञानदेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले व्यक्ति को ज्ञान उत्पन्न है और मन्दिर के जीर्णोद्धार कराकर जो भक्त प्रार्थना करता है सभी कार्य सिद्ध होते हैं, नौकरी में पदोन्नति होती है एवं सर्वत्र प्राप्त होता है।

ज्ञान देश्वर के पश्चिम आसवारी गाँव में सड़क के दाहिनी तरफ श जी के मन्दिर में अमृतेश्वर हैं।

अमृतेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव पुराण, का दर्शन-यात्रा में विस्तार से प्राप्त होता है।

५०. अमृतेश्वराय नमः [मो० आसवारी गाँव में]

अमृतेश्वर के दर्शन-पूजन से रोग, दुःख और कष्ट दूर होते हैं। भ को भक्ति एवं शान्ति प्राप्त होती है।

अमृतेश्वर से पश्चिम भीमचण्डी गाँव में पहले बायीं तरफ धर्मशाला मिलेंगे, इसके आगे दाहिनी तरफ विशाल पक्का कुण्ड (पोखरा) है वही गन्धर्वसागर तीर्थ है।

५१. गन्धर्वसागर भीमचण्डी तीर्थाय नमः [मो० भीमचण्डी]

कुण्ड में स्नान करके, पूजन की सामग्री साथ में लेकर दर्शन-पूजन करते हुए चलें।

गन्धर्वसागर के पूर्व दक्षिण के कोने के शिव मन्दिर में जो पश्चिमाभिमुख हैं, नरकार्णवितार शिव गण हैं।

इनका प्रमाण काशी रहस्य, काशी-दर्शन-यात्रा, काशी-वार्षिक-यात्रा और शिव पुराण में विस्तार से मिलता है। यह शिव जी के गण हैं।

५२. नरकार्णवितार शिवाय नमः [मो० भीमचण्डी।]

इनके दर्शन-पूजन तथा उपासना करने वाले सभी मनुष्यों की आकांक्षाओं की पूर्ति होती है। परिवार में द्रव्य और भक्ति की वृद्धि होती है।

गन्धर्वसागर तीर्थ के पश्चिम दक्षिण के कोने में बड़े शिवालय में गन्धर्वेश्वर हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्द पुराण, लिंग पुराण में गन्धर्वेश्वर का विस्तार से वर्णन है।

५३. गन्धर्वेश्वराय नमः [मो० भीमचण्डी]

गन्धर्वेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों की वाणी मधुर-प्रिय-हित बोलने वाली होती है और वह सबका निष्काम सेवा करने वाला होता है।

इसके साथ ही भक्ति एवं ज्ञान की प्राप्ति होती है। गन्धर्वेश्वर के दक्षिण बगल की त्रिमुहानी के बायीं तरफ का कुँआ भीमचण्डी शक्ति तीर्थ है। इसी कुँआ से यात्री पानी पीने, भोजन आदि की व्यवस्था करते हैं।

भीमचण्डी शक्ति तीर्थाय नमः

इस शक्ति तीर्थ से पश्चिम बगल में भीमचण्डी देवी के मन्दिर से सटे

हुए पूर्व बगल में गणेश मन्दिर है। गणेश जी की प्रतिमा उत्तरा
हैं। भीमचण्ड विनायक का वर्णन काशी खण्ड के ५७वें अध्याय और
रहस्य के दशम अध्याय में विस्तार से है।

५४. भीमचण्ड विनायकाय नमः [मो० भीमचण्डी]

भीमचण्ड विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के सब
सिद्ध होते हैं और भविष्य में आने वाला दुःख, कष्ट, विघ्न-बाधा दूर
है तथा शत्रु परास्त होते हैं। दर्शन से रोग और शत्रुशान्त होते हैं।

भीमचण्ड विनायक से सटा हुआ गन्धर्व के मन्दिर में गन्धर्व की
है। जो उत्तराभिमुख है। गन्धर्व का प्रमाण काशी रहस्य, स्कन्द
शिवपुराण और पद्मपुराण में विस्तार से है।

५५. रविरक्ताक्षगन्धर्वाय नमः [मो० भीमचण्डी]

रविरक्ताक्ष गन्धर्व के दर्शन पूजन करने वाले भक्तों को सुख,
भक्ति की प्राप्ति होती है और परिवार में द्रव्य, बुद्धि आदि की
होती है।

गन्धर्व से उत्तर बगल में हनुमान जी के मन्दिर के बगल में
के मन्दिर में भीमचण्डेश्वर हैं।

काशी रहस्य, काशी खण्ड और लिङ्ग पुराण में भीमचण्डे
प्रमाण विस्तार से वर्णित है।

भीमचण्डेश्वराय नमः [मो० भीमचण्डी]

भीमचण्डेश्वर के दर्शन-पूजन से व्यक्ति बलवान, बुद्धिमान,
होता है और लक्ष्मी, सन्तति सुख की वृद्धि होती है। भीमचण्ड
दक्षिण बगल में देवीजी जी का मन्दिर है जिसमें देवी जी की मूर्ति
त्रिमुख है।

भीमचण्डी देवी जी का उल्लेख स्कन्दपुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण,
भागवत पुराण और शिवपुराण में विस्तार से है:

५६. भीमचण्डी देव्यै नमः [मो० भीमचण्डी]

भीमचण्डी देवी के दर्शन-पूजन जो करते हैं उनके शारीरिक रोग, मानसिक चिन्ता तथा दुःख, कष्ट और दरिद्रता आदि नष्ट होकर धन-सम्पत्ति, विद्या की वृद्धि होती है। परिवार में मान-प्रतिष्ठा और भक्ति-ज्ञान की वृद्धि होती है।

भीमचण्डी जी से पूर्व बगल में ग्यारह धर्मशाला हैं। धर्मशाला में जाकर सफाई करके गंगाजल का छिट्टा देकर आसन बिछाकर मध्यान्ह संध्या करने के पश्चात् साधु-महात्मा और सन्यासियों को यथाशक्ति भोजन या जलपान देकर अपने परिवार सहित हविष्य अन्न का एक समय भोजन करें। तीन बजे के पश्चात् कथा श्रवण करें, कथा श्रवण के पश्चात् स्नान संन्ध्या करके भीमचण्डी देवी जी का दर्शन करें तत्पश्चात् कीर्तन करें।

यात्री अपने-अपने इष्टदेव का ध्यान करें, ध्यान के पश्चात् विश्वनाथ जी का स्मरण करते हुए रात्रि में शयन करें।

दर्शनार्थी प्रत्येक अष्टमी के दिन गन्धर्व सागर में स्नान करके भीमचण्डी देवी का दर्शन पूजा करते हैं और एक सौ आठ परिक्रमा करते हैं। देवी जी की कृपा से यात्रियों के सब मनोरथ पूर्ण होते हैं।

दोनों नवरात्र में दर्शन-पूजन करने वालों की विशेष भीड़ होती है।

भीमचण्डी देवी को सफेद पेड़ा (कद्दू) और नारियल का बलि चढ़ता है।

जो लोग बकरे की बलि चढ़ाते हैं उनको पाप लगता है।

यात्री शुभ कार्य सम्पन्न करने के लिए एक दिन पहले भीमचण्डी देवी का दर्शन करते हैं और मनौती मानते हैं।

कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् पञ्च बाजा बजाते हुए लाल चादर की डोली बनाकर पूजा सामग्री डोली (पालकी) में रख करके कीर्तन करते हुए चलते हैं और भीमचण्डी की जय हो, की जयकार करते हुए एव हरहर

महादेव की ध्वनि करते हुए सब पंक्तिवद्ध होकर चलते हैं। भीमचण्डी शिव-शक्ति, विष्णु आदि यज्ञ होते हैं और वेद-वेदान्त-गीता एवं भागवत दुर्गा सप्तसती आदि सम्मेलन होते हैं।

भीमचण्डी देवी के दर्शन-पूजन करने के पश्चात् प्रार्थना करें। प्रार्थना मन्त्र निम्नांकित हैं—

भीमचण्डिः प्रचण्डानि, मम विघ्नानिनाशय।
नमस्तेऽस्तु गमिष्यामि, पुनर्दर्शनमस्तुते॥

× × ×

भीमचण्डि! महादेवि! सर्वराक्षसभक्षिणि!।
मुनित्राणाकरे देवि! नमस्तेऽस्तु पुनः पुनः॥

इस प्रकार प्रार्थना करके यात्री अपना-अपना सामान गाड़ी में रख करके या स्वयम् साथ में ले करके भीमचण्डी देवी से उत्तर पञ्चक्रोशी सड़क से दर्शन-पूजन करते हुए शनैः शनैः चलते हैं।

राजातलाब चौराहा से उत्तर जनसा चौराहा से उत्तर के पञ्चक्रोशी सड़क से रामेश्वरम् आगे सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर कचनार गाँव में एकपाद शिवगण को तिल और चावल चढ़ता है।

एकपाद शिवगण का प्रमाण—शिव पुराण में, काशी रहस्य में, का दर्शन-यात्रा में विस्तार से दिया हुआ है।

९७. एकपाद शिवगणाय नमः [मो० कचनार गाँव में]

एकपाद शिवगण के दर्शन-पूजा से भक्तों के दुःख-कष्ट एवं शंकट होते हैं और भक्तों के परिवार की रक्षा होती है।

एकपाद शिवगण पुरवासियों की कल्याण करते हैं और जो मनुष्य विजयी होना चाहता है वह व्यक्ति मन्दिर का जीर्णोद्धार कराने के पश्चात् प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर, जो प्रार्थना करता है वह अवश्य विजयी होता है।

एकपाद शिवगण से उत्तर आगे हर्रे का तालाब है, हरपुर गांव में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी का मन्दिर है, जिसमें महाभीम का लिंग है। महाभीम का शिव पुराण; स्कन्द पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण में विस्तार से वर्णन है।

५८. महाभीमगणाय नमः [मो० हरपुर गांव में]

महाभीम के दर्शन पूजा से व्यक्ति बलवान, विद्यावान् और बुद्धिमान् होता है और उनके भक्तों के शत्रु परास्त होते हैं।

महाभीम से उत्तर आगे हरशोत गांव में सड़क के दाहिनी तरफ पूर्व में भैरव मोहल्ला में जाने वाली गली से सड़क लगभग एक फलांग पर भैरव मन्दिर है।

भैरव तीर्थ कुआं के बगल में भैरवेश्वर के मन्दिर में दो मूर्तियां हैं जो पूर्वाभिमुख हैं।

काशी रहस्य, काशी खण्ड, शिव पुराण और लिङ्ग पुराण में भैरव का प्रमाण विस्तार से वर्णित है।

५९. भैरवाय नमः [मो० हरशोत गांव में]

६०. भैरवी देव्यै नमः [मो० हरशोत गांव में]

भैरव और भैरवी के दर्शन-पूजन और उपासना करने वालों भक्तों के दुःख, कष्ट, संकट एवं रोग तत्काल नष्ट होते हैं तथा भक्त के परिवार में द्रव्य, आयु तथा व्यापार, भक्ति की वृद्धि होती है। मन्दिर का जीर्णोद्धार करने वाला व्यक्ति शत्रु आदि से विजय पाने का अधिकारी होता है। भैरव की पूजा और दर्शन से सर्व कार्य की सिद्धि होती है और ग्राम की रक्षा होती है।

भैरव जी से उसी सड़क से उत्तर जाने पर दीनदासपुर गांव में लंगोटिया हनुमान जी के दक्षिण बगल में शंकर जी का मन्दिर है जिसमें भूतनाथेश्वर हैं जिनका काशी रहस्य, काशी खण्ड, लिङ्गपुराण आदि में विस्तार से वर्णन है।

६१. भूतनाथेश्वराय नमः [मो० दीनदासपुर में]

भूतनाथेश्वर के दर्शन-पूजा से भूत-प्रेत-पिशाच, डाकिनी, साकिनी इ
बाधा दूर होती है।

धन, सम्पत्ति, बुद्धि एवं सन्तति की प्राप्ति के साथ ही शिव-भक्ति
वृद्धि होती है।

भूतनाथेश्वर से उत्तर बगल में लंगोटिया हनुमान जी के पूर्व बगल
विशाल पक्का कुण्ड (तालाब) है जो सिन्धु सरोवर तीर्थ के नाम
प्रसिद्ध है।

६२. सिन्धु सरोवर सोमनाथ तीर्थाय नमः।

सिन्धु सरोवर तीर्थ के पश्चिम दक्षिण के कोने में ऊपर शंकर जी
मन्दिर में सिन्धु सरोवरेश्वर हैं। लंगोटिया हनुमान जी के पश्चिम बग
सोमनाथ शक्ति तीर्थ इस समय कुँआ के रूप में है। कुँआ के बगल में
शाला है।

लंगोटिया हनुमान जी से सटा हुआ उत्तर बगल के शंकर
मन्दिर में सोमनाथेश्वर का लिङ्ग है। इसका प्रमाण स्कन्द पु
ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिव रहस्य, लिङ्ग पुराण और शिव पुराण में वि
से मिलता है।

६३ सोमनाथेश्वराय नमः [मो० दीनदासपुर, लंगोटिया हनुमान]

सोमनाथेश्वर के दर्शन-पूजा करने वाले भक्तों को सुख, सम
विद्या और सन्तति एवं शान्ति प्राप्त होती है। परिवार के व्यक्ति दी
द्रव्य से परिपूर्ण, भक्ति सम्पन्न तथा ज्ञानवान होते हैं। इसके सा
ये गाँववालों के कल्याण करते हैं और अन्त में मुक्ति देते हैं।

शिव रहस्य के अनुसार सोमनाथ जी में छः रात्रि और सात रा
पञ्च-क्रोशी दर्शन-यात्रा में विश्राम किया जाता है। वृद्ध, रोगी,
तथा राजा, महाराजा सात रात्रि की पञ्च-क्रोशी दर्शन-यात्रा करते हैं।
का ऐसा विचार है कि जो व्यक्ति मन्दिर का जीर्णोद्धार करके सोमना
का नित्य दर्शन करता है ... विजयी होता है।

सोमनाथ जी में यज्ञ होते हैं, वेद, वेदान्त, रामायण आदि का सम्मेलन होता है। सोमनाथ जी का दर्शन प्रत्येक सोमवार, त्रयोदशी-प्रदोश तथा चतुर्दशी को दर्शन करना चाहिए।

सोमनाथ से उत्तर आगे जनसा गाँव में सड़क से दाहिनी तरफ शंकर जी का मंदिर है जिसमें कालनाथेश्वर लिङ्ग है। इनका प्रमाण काशी, रहस्य, काशी-दर्शन-यात्रा में विस्तार से मिलता है।

६४. कालनाथेश्वराय नमः [मो० जनसा गाँव में]

कालनाथेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को शत्रु का भय नहीं होता और द्रव्य, परिवार, भक्ति की वृद्धि होती है।

कालनाथेश्वर के उत्तर बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी का मन्दिर है जिसमें कपर्दीश्वर का लिङ्ग है। कपर्दीश्वर का विस्तृत विवरण काशी रहस्य, काशी खण्ड और काशी-दर्शन यात्रा में है।

६५. कपर्दीश्वराय नमः [मो० जनसा गाँव में]

कपर्दीश्वर के दर्शन-पूजा करने से रोग, दुःख, कष्ट दूर होते हैं और सब कार्य सफल होते हैं।

कपर्दीश्वर से उत्तर आगे चोखण्डी गाँव में रेलवे लाइन के पास में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में कामेश्वर का लिङ्ग है। कामेश्वर का लिङ्गपुराण में, काशी रहस्य, काशी खण्ड और शिव रहस्य में विस्तार से वर्णन है।

६६. कामेश्वराय नमः [मो० चोखण्डी गाँव में]

कामेश्वर के दर्शन-पूजन करने से सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। इनके मन्दिर का जीर्णोद्धार, जो भक्त करते हैं वे सब जगह विजयी होते हैं। कामेश्वर से उत्तर बगल में सड़क के दाहिनी तरफ गणेश्वर जी का मन्दिर है। गणेश्वर का प्रमाण काशी रहस्य में, शिवपुराण में और काशी खण्ड में विस्तार से प्राप्त होता है।

६७. गणेश्वराय नमः [चोखण्डी गाँव में]

गणेश्वर के दर्शन-पूजन करने से सब कार्य सफल होते हैं। गणेश्वर से उत्तर बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शिव जी का मन्दिर है, जिसमें वीरभद्रशिवगण की प्रतिमा है। वीरभद्रशिवगण का प्रमाण काशी रहस्य, लिङ्गपुराण और काशी दर्शन यात्रा में विस्तार से प्राप्त होता है।

६८. वीरभद्रशिवगणाय नमः [चौखण्डी गाँव में]

वीरभद्र जी के दर्शन-पूजन करने वाला व्यक्ति शूरवीर, बलवान और बुद्धिमान होता है और उनके दर्शन-पूजन से पुरवासियों की रक्षा होती है।

वीरभद्र जी से उत्तर बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में चारुमुख शिव की प्रतिमा है। काशी रहस्य में और काशी दर्शन यात्रा में इनका विस्तार से वर्णन है।

६९. चारुमुख शिवगणाय नमः [मो० चौखण्डी गाँव में]

चारुमुख शिव जी के दर्शन-पूजन करने वाला व्यक्ति बुद्धिमान तथा चतुर होता है और परिवार के लोगों में बुद्धि की वृद्धि होती है तथा धन की प्राप्ति होती है।

चारुमुख शिवगण के उत्तर आगे भटौली गाँव में सड़क के दाहिने तरफ गणनाथेश्वर का मन्दिर है। गणनाथेश्वर का प्रमाण काशी रहस्य, नन्दी उप पुराण और काशी दर्शन यात्रा में विस्तार से दिया गया है।

७०. गणनाथेश्वराय नमः [मो० भटौली गाँव में]

गणनाथेश्वर जी के दर्शन-पूजन से दुःख, विघ्न नहीं आता तथा धन, पुत्र आदि सुख के साधन प्राप्त होते हैं।

गणनाथेश्वर से उत्तर आगे की ओर सड़क की दाहिनी तरफ विशाल पक्का कुण्ड (पोखरा) देहली विनायक तीर्थ है। पोखरा के पूर्व तट में स्थित बड़े गणेश मन्दिर में गिरि नृसिंह विष्णु जी के बगल में देहली विनायक पूर्वाविमुख हैं।

देहली विनायक का स्कन्द पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, शिवपुराण में, लिंगपुराण में, मत्स्यपुराण में, पद्मपुराण में एवं शिव रहस्य में विस्तार से वर्णन है।

७१. देहली विनायकायनमः [मो० भटौली गाँव में]

देहली विनायक के दर्शन-पूजा करने वाले भक्तों के रिपु परास्त होते हैं और दुःख, कष्ट विघ्न, रोग आदि की चिन्ता दूर होती है।

चिन्ता और शोक-भ्रम का निःसन्देह निवारण होता है। मन्दिर का जीर्णोद्धार करके गणेश जी से जो व्यक्ति प्रार्थना करता है वह सब जगह विजयी होता है।

कोई भी शुभ कार्य करने के एक दिन पहले निर्विघ्न कार्य सम्पन्न करने के लिए देहली विनायक जी का दर्शन-पूजन किया जाता है और पार्थना की जाती है कि हे गणेश जी! मनोरथ पूर्ण होने के पश्चात् पञ्च बाजा बजाते हुए पुनः दर्शन-पूजन करूँगा।

देहली विनायक में सिन्धु सरोवर पर विश्राम करने का भी प्रमाण मिलता है। सोमनाथ में रात्रि में विश्राम करना चाहिए—लंगोटिया हनुमान जी में।

देहली विनायक के मन्दिर से सटा हुआ पश्चिम दीवाल से सटे हुए गणेश मन्दिर में षोडश गणेश जी हैं। इनके दर्शन करके देहली विनायक के उत्तर आगे लगभग दो कि० मी० भुइली गाँव में दो मन्दिर हैं। अकलेश्वर के दक्षिण बगल में स्थित सड़क के दाहिनी तरफ गणेश मन्दिर में उद्दंड विनायक हैं। इनको लड्डू और दूध चढ़ता है। उद्दण्ड विनायक का प्रमाण काशी रहस्य, काशीखण्ड और शिव रहस्य में प्राप्त होता है।

७२ उद्दण्ड विनायकाय नमः [मो० भुइली गाँव में]

उद्दण्ड विनायक का जो दर्शन पूजा करता है उसके दुश्मन शान्त होते हैं। शत्रु मित्र बन जाते हैं। दर्शन-पूजन और मन्दिरों के जीर्णोद्धार करने वाले अपने भक्तों को कष्ट देने वाले को ये दण्ड देते हैं।

उद्दण्ड विनायक से उत्तर बगल में स्थित शंकर जी के मन्दिर में हैं—उत्कलेश्वर। इनका प्रमाण काशीरहस्य में, वृहद् काशी-दर्शन यात्रा में एवं काशी वैभव में विस्तार से प्राप्त होता है।

७२ उत्कलेश्वराय नमः [मो० भुइली गाँव में]

उत्कलेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को इस लोक में धन, सु और शान्ति मिलती है। यदि काशी से बाहर शरीर छूटा (मृत्यु हुई)। उत्तम लोक की प्राप्ति होती है।

उत्कलेश्वर से उत्तर आगे हरीमपुरा गाँव में सड़क के दाहिनी त देवी के मन्दिर में पश्चिमाभिमुख रुद्राणी देवी है। देवी जी का प्रमाण काशी रहस्य में; काशी वार्षिक यात्रा में, काशी-दर्शन-यात्रा में विस्तार देखा जा सकता है।

७४ रुद्राणीदेव्यै नमः [मो० हरीमपुरा गाँव में]

तपोभूम्यै नमः [रुद्राणी देवी के पास में है]

रुद्राणी देवी का दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को धन, पुत्र, सुख की प्राप्ति होती है और शत्रु परास्त होते हैं। मन्दिर के जीर्णोद्धार के पश्चात् जो भक्त माता से प्रार्थना करता है उसके मनोरथ पूर्ण होते

रुद्राणी देवी से उत्तर रामेश्वर गाँव में दाहिनी ओर काशी विश्व गोशाला है, जिसमें ५०० गाये हैं।

७५ रामेश्वर तीर्थाय नमः। स्नान करके पूजन की सामग्री सा लेकर घाट के ऊपर रामेश्वर से सटे हुए सबसे उत्तर शंकर जी के म में सोमेश्वर लिङ्ग है। काशी रहस्य, काशीखण्ड और शिवपुराण में श्वर का प्रमाण विस्तार से प्राप्त होता है।

७६ सोमेश्वराय नमः [मो० रामेश्वर]

सोमेश्वर के दर्शन-पूजन से धन, सुख एवं शान्ति मिलती है। अ सोम लोक में वास मिलता है।

सोमेश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल में भरतेश्वर स्थित हैं। भरते का प्रमाण काशी रहस्य में, काशी खण्ड में, लिङ्गपुराण में और काशी- यात्रा में विस्तार से मिलते हैं।

७७ भरतेश्वराय नमः [मो० रामेश्वर]

भरतेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को घर में रहते हुए अनन्य भक्ति प्राप्ति होती है और धन, सम्पत्ति, सुख आदि स्वतः प्राप्त होते हैं। इसके साथ ही भाई-बन्धुओं में अत्यन्त स्नेह-प्रेम स्थापित होता है।

भरतेश्वर से सटे हुए दक्षिग वगल में स्थित शिवालय में लक्ष्मणेश्वर हैं। लक्ष्मणेश्वर का प्रमाण ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्दपुराण, शिवपुराण और लिङ्गपुराण में विस्तार से प्राप्त होते हैं।

७८ लक्ष्मणेश्वराय नमः [मो० रामेश्वरम्]

लक्ष्मणेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के शत्रु परास्त होते हैं और व्यक्ति बुद्धिमान, बलवान, तेजस्वी होता है तथा रोग भी शान्त होते हैं।

लक्ष्मणेश्वर से सटे हुए दक्षिण वगल में स्थित देवालय में शत्रुघ्नेश्वर हैं। शत्रुघ्नेश्वर का काशी रहस्य, काशी खण्ड और शिव रहस्य में विस्तार से वर्णन है।

७९. शत्रुघ्नेश्वराय नमः [मो० रामेश्वरम्]

शत्रुघ्नेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को माता, पिता और गुरु की भक्ति तथा भाई बन्धुओं में प्रेम रहता है। भक्ति की प्राप्ति होती है। शत्रु भी मित्र हो जाते हैं।

शत्रुघ्नेश्वर से सटे हुए दक्षिण वगल में स्थित शिवालय में द्यावा भूमीश्वर हैं। इनका प्रमाण काशी रहस्य, काशी दर्शन-यात्रा में प्राप्त होता है।

८०. द्यावा भूमिश्वराय नमः [मो० रामेश्वरम्]

द्यावा भूमिश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को धन, जन, भूमि की प्राप्ति होती है और भूमि सम्बन्धी वाद में विजय प्राप्त होती है।

द्यावा भूमिश्वर के सटे हुए दक्षिण बगल में नहुषेश्वर स्थित हैं। काशी रहस्य और काशी खण्ड में इनका प्रमाण प्राप्त होता है।

८१. नहुषेश्वराय नमः (मो० रामेश्वरम्)

नहुषेश्वर के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनको साधु-महात्मा जैसा मान-सम्मान और प्रतिष्ठा मिलती है। परिवार में द्रव्य, धा आदि की वृद्धि होती है।

नहुषेश्ववर से सटे हुए पश्चिम बगल में विशाल मन्दिर है, जो रामेश के नाम से प्रसिद्ध है।

रामेश्वर का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिव पु लिङ्ग पुराण एवं शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

८२. रामेश्वराय नमः (मो० रामेश्वरम्)

रामेश्वर के दर्शन-पूजन और उपासना करने वाले भक्तों को शक्ति, विष्णु और इष्टदेव की भक्ति सुलभ होती है। इसके सा सूरवीर की भांति वह सर्वत्र विजयी होता है। रामेश्वर के दर्श मानसिक ताप-कष्ट-संकट तथा अन्य रोग-चिन्ता आदि से मुक्ति मि है। रामेश्वर को श्वेत तिल-विल्व पत्र, गङ्गा जल आदि चढ़ता है। रामे को गंगाजल चढ़ाने का बहुत महत्व है।

रामेश्वर के दर्शन के पश्चात् रामेश्वर से दक्षिण बगल में सड़ पश्चिम बगल में सात धर्मशाला हैं। धर्मशाला में जाकर सफाई करके छिड़क कर, आसन बिछा कर मध्याह्न सन्ध्या करें, संध्या के प जो यात्री सम्पन्न हैं वे यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, औषधि, द्रव्य आदि से पकार करें। साधु-सन्त-महात्मा और सन्यासी भगवान् के प्राप्ति के सत्मार्ग को बताने वाले और उपदेश देने वाले, यह सभी भगवान् के रूप माने जाते हैं।

साधु-महात्माओं को भोजन या जलपान कराकर, अपने बन्धु परि सहित भोजन करें। तीन बजे के पश्चात् कथा श्रवण करें तथा श्रव पश्चात् स्नान-संध्या करके रामेश्वर की जय हो, जय हो की जय और कीर्तन करते हुए रामेस्वर के दर्शन करने जायं। दर्शन के पश् यात्री रामेश्वर की प्रार्थना करते हैं—

श्री रामेश्वर ! रामेण पूजितस्त्वं सनातन ! ।
आज्ञान्देहि महादेव ! पुनर्दर्शनमस्तुते ॥

'हे रामेश्वर भगवान ! मैं आज से पाप कर्म नहीं करूंगा, सत्कर्म करते हुए सत्शास्त्रों का श्रवण मनन और निधिध्यासन करते हुए सज्जन का सङ्ग तथा कथा श्रवण करते हुए जीवन व्यतीत करूँगा'—कहते हैं और इसके पश्चात् यात्री अपने-अपने आसन (स्थान) में जाते हैं।

रात्रि में रामेश्वर में विश्राम करें, भजन-कीर्तन, लोक-गीत आदि करते हुए, जप ध्यान करें। रात्रि में यात्री जागरण भी करते हैं। वृद्ध, रोगी, बालक विश्वनाथ भगवान् का स्मरण करते हुए शयन करें।

किंवदन्ती है कि रामचन्द्र भगवान अपने भाइयों के साथ काशी आये थे और पञ्चक्रोशी, काशी आदि की यात्रा करने के पश्चात् श्री रामचन्द्र ने अपने कर-कमलों से श्री रामेश्वर की स्थापना की।

रामेश्वर में गणेश-शिव-शक्ति और विष्णु यज्ञ होते हैं। रामतापनी-उपनिषद्, योगवासिष्ठ, रामगीता तथा रामायण आदि के सम्मेलन होते हैं। इसके साथ ही बिरहा, कौव्वाली आदि लोक-गीतों का भी आयोजन होता है।

प्राचीन मन्दिरों या श्री रामेश्वर के मन्दिर के जीर्णोद्धार आदि के कार्य करने से श्री रामेश्वर जी प्रसन्न होते हैं और धन, सम्पत्ति पुत्र और भक्ति-ज्ञान देकर भक्तों को सुखी बनाते हैं। इसके साथ ही असाध्य रोग नष्ट होते और उस व्यक्ति की सर्वत्र विजय होती है।

रामेश्वर से पश्चिम बगल में असंख्यात् तीर्थ है। वरुणा के पश्चिम तट में कर जी के मन्दिर में असंख्यात् शिव लिंगेश्वर का लिंग है। इनका प्रमाण काशी रहस्य और काशी-दर्शन यात्रा में है।

२. असंख्यात् शिवलिङ्गेश्वराय नमः [मो० रामेश्वरम्]

असंख्यात् शिव के दर्शन-पूजन करने से सब शिवलिङ्गों के दर्शन करने का फल मिलता है।

परिवार में कृषि, धन एवं वुद्धि की वृद्धि होती है। इस लोक में शांति और परलोक में (शिवलोक में) वास मिलता है।

रामेश्वर से उत्तर-पूर्व, दर्शन-पूजन-कीर्तन करते हुए शनैः शनैः गण चलते हैं। आगे करौमा चौराहा के पास शंकर जी का मन्दिर मन्दिर के पूर्व वगल से दक्षिण करौमा गाँव में देवसंन्ध्येश्वर जाते सड़क से करीब आधा किलोमीटर में मन्दिर है, जो पूर्वाभिमुख है। के पूर्व वगल में विशाल कुण्ड (पोखरा) है वही देवसन्ध्येश्वर तीर्थ देवसन्ध्येश्वर शक्ति तीर्थ कुँआ के रूप में है। देवसन्ध्येश्वर का ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्दपुराण, लिङ्गपुराण और शिवपुराण में विस्त प्राप्त होता है।

८४. देवसन्ध्येश्वराय नमः [मो० करौमा गाँव में]

देवसन्ध्येश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट, और रोग नष्ट होते हैं। परिवार, द्रव्य, अन्न, व्यापार और भक्ति में वृद्धि होती है।

निर्धन धन के लिए, असाध्य रोगी रोग की निवृति के लिए एवं पुत्र की प्राप्ति के लिए मनौती मनाते और प्रार्थना करते हैं—हे भ मेरी मनोकामना पूर्ण होगी तो मैं पञ्चक्रोशी के देवताओं के मन्दि जीर्णोद्धार करूँगा और पञ्च वाजा वजाते हुए आपके दर्शन करने आ

कार्य पूर्ण होने के पश्चात् वाजा वजाते हुए लोग दर्शन करने ऋतुफल, मिष्ठान्न, पकवान लाते हैं और चढ़ाते हैं, परिवार सहित पाकर घर जाते हैं।

जो भक्त पञ्चक्रोशी के मार्ग के मन्दिरों का जीर्णोद्धार करके सन्ध्येश्वर का दर्शन करते हैं वे सर्वत्र विजयी होते हैं। यहाँ यज्ञ होता है गीता, वेद, वेदान्त, भागवत् एवं रामायण आदि के सम्मेलन होते हैं।

देव सन्ध्येश्वर के दर्शन करके उसी मार्ग से करौमा चौमुहानी, पञ्चा सड़क से पूर्व जी० टी० रोड को पार करके उत्तर से पूर्व पञ्चक्रोशी

से आगे की ओर चलकर, आगे सड़क पार करके शिवपुर गाँव में हनुमान मन्दिर के दक्षिण बगल के तिराहे से पश्चिम बगल में, दाहिनी तरफ द्रौपदी कुण्ड है। शिव रहस्य के आज्ञानुसार शिवपुर में निवास होता है। अन्य पुराण और काशी-दर्शन-यात्रा, काशी वार्षिक यात्रा आदि में भी शिवपुर निवास का वर्णन विस्तार से मिलता है। द्रौपदी कुण्ड पहले विशाल था अब कूप के रूप में है।

द्रौपदी कुण्डाय नमः।

शिवपुर निवास के दिन यहाँ कुण्ड में से बाल्टी से जल निकाल कर स्नान या मार्जन किया जाता है।

द्रौपदी कुण्ड के बगल में द्रौपदी देवी जी का मन्दिर है। द्रौपदी देवी जी का प्रमाण ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्द पुराण, श्रीमद्भागवत् पुराण, विष्णु पुराण, शिवपुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, पद्मपुराण तथा महाभारत में विस्तार से उपलब्ध होता है।

८५. द्रौपदी देव्यै नमः [मो० शिवपुर]

द्रौपदी देवी दर्शन-पूजन करने वाले अपने भक्तों के ये दुःख, कष्ट, रोग और चिन्ता को हरती हैं तथा भक्तों को धन, पुत्र आदि सुख के साधन देकर सुखी बनाती हैं।

जो भक्त मन्दिर के जीर्णोद्धार करने के पश्चात् द्रौपदी देवी से कैदी को छुड़ाने के लिये प्रार्थना करता है, देवी की कृपा से कैदी मुक्त हो जाते हैं। वह व्यक्ति सब जगह विजयी होता है तथा शत्रु परास्त होते हैं। द्रव्य, व्यापार, परिवार, बुद्धि आदि की वृद्धि होती है।

इनके दर्शन से नारी को पतिव्रता होने का फल और विद्वान् पुत्र की प्राप्ति होती है। पुरुष को धन तथा सम्मान एवं स्थूल शरीर में निरोगता की प्राप्ति होती है। द्रौपदी देवी से सटा हुआ पूर्व के कोने में द्रौपदीश्वर का मन्दिर है।

८६. द्रौपदीश्वराय नमः [मो० शिवपुर]

द्रौपदीश्वर के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके दुःख, दरिद्रता,

व्याधि आदि से मुक्ति मिलती है। इनके दर्शन से काशी वास मिलता
द्रौपदी देवी के दक्षिण बगल में सड़क पार करते ही फाटक के अन्दर
दक्षिण बगल के शंकर जी के मन्दिर में दरवाजा के अन्दर, सामने जो
शिव लिङ्ग है वही युधिष्ठिरेश्वर हैं।

युधिष्ठिरेश्वर आदि पांच भाइयों का प्रमाण काशी खण्ड, काशी र
शिव रहस्य, लिङ्ग पुराण, महाभारत में विस्तार से प्राप्त होता है।

८७. युधिष्ठिरेश्वराय नमः [मो० शिवपुर]

युधिष्ठिरेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले मनुष्यों के दुःख, कष्ट
को तत्काल हरण करते हैं।

इनके दर्शन-पूजन से आपत्ति-संकट के समय में भी दुःख सहन क
का पालन करने की शक्ति आती है और शत्रु भी प्रशंसा करते हैं।
के जीर्णोद्धार करके जो भक्त इनका दर्शन करता है वह सब जगह
होता है। युधिष्ठिरेश्वर से सटे हुए उत्तर बगल में भीमेश्वर
मन्दिर है।

८८. भीमेश्वराय नमः [मो० शिवपुर]

भीमेश्वर के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं वे बलवान, वी
पहलवान होते हैं और माता-पिता, बड़े भाई के आज्ञा का पालन क
इनके दर्शन-पूजन करने वाले के पुत्र बुद्धिमान, तेजवान् बलवान
होते हैं।

भीमेश्वर से सटे हुए उत्तर बगल में अर्जुनेश्वर हैं।

८९. अर्जुनेश्वराय नमः [मो० शिवपुर]

अर्जुनेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को वृद्धि, विद्या, ब
शूरवीरता प्राप्त होती है। इनके दर्शन, मन्दिरों के जीर्णोद्धार कर
भक्त प्रार्थना करते हैं इससे जेल में बन्द कैदी छूट जाते हैं और वह
सर्वत्र विजयी होता है।

इसके साथ ही विद्या, लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। अर्जुनेश्वर से सटे हुए मन्दिर में नकुलेश्वर हैं।

१०. नकुलेश्वराय नमः [मो० शिवपुर]

नकुलेश्वर के दर्शन से दीन-दुखियों को धन, पुत्र, मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है और मन के अनुसार शुभ कार्य सफल होते हैं।

नकुलेश्वर से सटे हुए बगल में सहदेवेश्वर की प्रतिमा है।

११. सहदेवेश्वराय नमः [मो० शिवपुर में]

सहदेवेश्वर के जो भक्त दर्शन-पूजन करते हैं वे विद्वान्, बुद्धिमान और धैर्यवान होते हैं। दर्शन करने वाले के कुल में बुद्धिमान, विद्वान् तथा तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होता है।

सहदेवेश्वर के पूर्व बगल में शंकर जी के मन्दिर में कृष्णेश्वर हैं।

कृष्णेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, लिङ्ग पुराण में विस्तार से मिलता है।

१२. कृष्णेश्वराय नमः [मो० शिवपुर में]

कृष्णेश्वर के दर्शन-पूजन से सब कार्य सफल होते हैं। कृष्ण और शिव जी की भक्ति सुलभ है। बल, बुद्धि की वृद्धि होती है।

कृष्णेश्वर के बगल में शंकर जी के मन्दिर में परीक्षितेश्वर हैं।

१३. परीक्षितेश्वराय नमः [मो० शिवपुर में]

परीक्षितेश्वर अपने दर्शन करने वाले भक्तों को भगवान की अनन्य भक्ति, ऐश्वर्य और साधु, माहात्मा, विद्वान् ऋषि-मुनियों का सङ्ग प्राप्त कराते हैं।

परीक्षितेश्वर से सटे हुए बगल में कुन्तीश्वर हैं।

१४. कुन्तीश्वराय नमः [मो० शिवपुर में]

कुन्तीश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को दुःख, कष्ट, अपमान सहन करने की शक्ति मिलती है और निरन्तर भगवान का स्मरण करने की शक्ति तथा भगवान् की भक्ति प्राप्त होती है।

पाँच रात्रि, छः रात्रि और सात रात्रि के पञ्चक्रोशी-दर्शन-यात्र यात्री शिवपुर में निवास करते हैं।

मन्दिरों के दर्शन-पूजन करने के पश्चात्, मन्दिर के पूर्व यात्रियों के सात धर्मशाला हैं, धर्मशाला में जाकर सफाई कर, जल छिड़क कर, बि विछाकर मध्याह्न संध्या करें। तत्पश्चात् साधु-सन्त-महात्मा संन्यासियों यथा शक्ति जलपान देकर अपने परिवार सहित भोजन करके तीन घं कथा श्रवण करें। कथा श्रवण के पश्चात् स्नान और सायं संध्या करके पञ्चपाण्डवेश्वर और द्रौपदी देवी का दर्शन करने जाते हैं। दर्शन के प अपने आसन में बैठकर भजन-कीर्तन, जप, विश्वनाथ भगवान का और स्मरण करते हुए शयन करते हैं।

प्रातः स्नान-संध्या आदि नित्य-कर्म से निवृत्त होकर पाण्डवेश दर्शन-पूजन करने के पश्चात् प्रार्थना करें। प्रार्थना के पश्चात् यात्री शाला में जाते हैं और सामान गाड़ी में रखते हैं।

किंवदन्ती है कि पाँच पाण्डव और कुन्ती-द्रौपदी आदि वनवास के में काशी आये। काशी के पञ्च-क्रोशी आदि यात्रा करने के पश्चात् शि में अपने-अपने नाम के शिव-लिङ्ग स्थापित करके मन्दिर बनवाये और दिन दर्शन-पूजन, आराधना करते हुए, तपस्या करने लगे। कुछ दिन प भवानी सहित विश्वनाथ जी प्रगट हुए। युधिष्ठिर जी सर्वत्र विजयी और अमरत्व प्राप्ति होगी यह वरदान दिये।

जब तक सूर्य-चन्द्र रहेंगे तब तक तुम लोगों का इतिहास रहेगा। वरदान देकर विश्वनाथ जी भवानी सहित अन्तरध्यान हो गये।

शिवपुर में रात्रि विश्राम करने वाले यात्री पहले पञ्च पाण्डवेश्व दर्शन करके पाशपणि विनायक के दर्शन करके शिवपुर आते थे। मि छावनी बनने के बाद और शिवपुर के पुल बनने के पश्चात् वह सीधा बन्द हो गया।

काशी रहस्य के ग्यारह अध्याय के आज्ञानुसार काशीवासी और क्षेत्र संन्यासियों को पञ्चक्रोशी यात्रा, वाराणसी प्रदक्षिणा, पाशपाणि में रात्रि में विश्राम करना चाहिए। बड़ी पञ्चक्रोशी यात्रा में पाशपाणि में रात्रि में विश्राम करने का प्रमाण नहीं मिलता।

शिवपुर में गणेश, विष्णु, शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं।

'वेद, वेदान्त, भागवत एवं रामायण आदि सम्मेलन होते हैं। यात्री शिवपुर से दर्शन-पूजन, कीर्तन करते हुए शनैः शनैः चलते हैं।

धर्मशाला के पूर्व सड़क से उत्तर की ओर छहफुटी सड़क से लाश कुँआ होते हुए पञ्चक्रोशी सड़क से महावीर चौराहा में, महावीर हनुमान जी के मन्दिर के पश्चिम बगल से दक्षिण, कचहरी के पास पुल पार करते ही कैण्टूमेन्ट जाने वाली दाहिनी तरफ की सड़क से टेलीविजन स्तम्भ के पश्चिम बगल से शक्ति-मार्ग के दक्षिण बगल में, सड़क के पश्चिम बगल में पाशपाणि तीर्थ कुँआ के रूप में है। तीर्थ के बगल में, तीन मन्दिरों का दर्शन होता है। दक्षिण सटे हुए मन्दिर में पाशपाणि विनायक पूर्वाभिमुख हैं। पाशपाणि विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिवपुराण, लिङ्गपुराण तथा अन्य पुराण में भी है।

९५ पाशपाणि विनायकाय नमः।

[मो० कैन्टूमेन्ट एरिया, सदर बाजार]

पाशपाणि विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को दुःख, संकट, कार्य में विघ्न-बाधा नहीं आती और द्रव्य, विद्या, परिवार-व्यापार में वृद्धि होती है तथा शत्रु परास्त होते हैं।

पाशपाणि से उसी मार्ग से महावीर चौराहा से पूर्व पञ्चक्रोशी सड़क से पाण्डेयपुर चौराहा से पश्चिम बगल वाली सड़क से खजुरी (गाँव) नया बाजार जाने वाली सड़क से लगभग आधा किलो मीटर दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में पृथ्वीश्वर तीर्थ, मन्दिर के बगल में है। पृथ्वीश्वर का

प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य और लिङ्गपुराण में वि
से प्राप्त होता है।

१६. पृथ्वीश्वराय नमः। [मो० खजुरी बाजार]

पृथ्वीश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, संकट और
दूर होते हैं। द्रव्य, परिवार, व्यापार और भक्ति में वृद्धि होत
जो भक्त पञ्चक्रोशी के देव मन्दिर के जीर्णोद्धार करके या कराकर
श्वर का दर्शन करता है वह व्यक्ति मुकदमे में विजयी होता है
वह सभापति, मन्त्री आदि होता है तथा नेतागीरी में पारंगत होता

पृथ्वीश्वर में गणेश, विष्णु और शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं,
वेद-वेदान्त, गीता, भागवत, रामायण आदि सम्मेलन चलते हैं, ब
कीर्तन होते हैं। लोक कार्यक्रम में विरहा, कौवाली का भी आ
होता है।

वाराणसी के उत्तर में पृथु राजा ने पृथ्वीश्वर को स्थापित करके
पूजन तथा आराधना करते हुए अविमुक्त क्षेत्र के उत्तर में पहले
अश्वमेध महायज्ञ किया था उसी का नाम स्वर्गभूमि है। पृथ्वी
उसी मार्ग से पाण्डेयपुर चौराहा से पूर्व पञ्चक्रोशी मार्ग में सारङ्ग ता
जहाँ सारङ्गतालाव स्वर्गभूमि देवी तीर्थ है। स्वर्गभूमि देवी
तीर्थ कुँआ के रूप में है।

सारङ्गतालाब के तट में स्वर्गभूमि देवी जी का मन्दिर है।

यहाँ पर ठाकुर जी, राम-कृष्ण जी की मूर्ति भक्तों के साथ
पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा करती थी और स्वर्गभूमि में निवास करती थी

स्वर्गभूमि देवी जी का प्रमाण काशी रहस्य, काशी खण्ड, शिव
और काशी दर्शन-यात्रा में विस्तार से मिलता है।

स्वर्गभूमिश्वराय नमः। [मो० सारङ्गतालाब]

१७. स्वर्गभूमि देव्यै नमः। [मो० सारङ्गतालाब]

स्वर्गभूमि देवी अपने दर्शन-पूजन करने वालों भक्तों को धन, ऐश्वर्य, पुत्र और आज्ञाकारी नौकर, मित्र, देकर सुखी बनाती हैं तथा द्रव्य, बुद्धि, परिवार में भक्ति की वृद्धि करती हैं।

देवी की प्रार्थना इस प्रकार है—

स्वर्गभूमिस्तु साज्ञेया मोक्ष भूमिस्तु मध्यतः।
काश्याश्चतुर्दिशं देवि! योजनं स्वर्गभूमिका॥
मृतास्तत्र तु गच्छन्ति स्वर्गं सुकृतिनाम्पदम्।
(का० र० द० अ०)

सारङ्ग तालाब से पूर्व दीनदयालपुर गांव में दाहिनी तरफ शंकर जी मन्दिर के समीप यूपसरोवर तीर्थ है जो सोना तालाब के नाम से सिद्ध है। किंवदंती है कि यूप सरोवर तीर्थ का दर्शन और मार्जन करने पञ्चक्रोशी यात्रा का फल मिलता है।

९८ यूपसरोवर तीर्थाय नमः [मो० दीनदयालपुर]

यूपसरोवर के जो भक्त जीर्णोद्धार करते हैं उनके दुःख-संकट और साध्य रोग दूर हो जाते हैं तथा अपुत्री को पुत्र प्राप्त होता है। सरोवर के र तट के ऊपर यूपसरोवरेश्वर है।

९९ यूपसरोवरेश्वराय नमः [मो० दीनदयालपुर]

यात्री यूपसरोवरेश्वर का दर्शन कर शनैः शनैः कपिलधारा को ते हैं।

सड़क की दाहिनी तरफ कपिल तीर्थ त्रिमुहानी पर जो कुँआ है वही ती-शक्ति तीर्थ है।

पार्वती शक्ति तीर्थाय नमः।

पार्वती तीर्थ के दक्षिण बगल में दाहिनी तरफ देवी के मन्दिर में ती जी का मन्दिर है।

पार्वती देव्यै नमः [मो० कपिलधारा]

पार्वती देवी से दक्षिण पूर्व बगल में जो विशाल पक्का कुण्ड (पोखरा) ही वृषभध्वजेश्वर कपिल तीर्थ है।

१०० वृषभध्वजेश्वर कपिल तीर्थाय नमः

इस तीर्थ में स्नान करके मध्याह्न संध्या करें। यहाँ पर पि[illegible] श्राद्ध करने का विधान है। काशी खण्ड अध्याय ६२ में इसका वि[illegible] वर्णन है। कपिलधारा तीर्थ में पितृतर्पण, श्राद्ध करने से पितृ प्रसन्न [illegible] और आशीर्वाद देते हैं और धन; सन्तान की वृद्धि होती है।

विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे विष्णु! हे ब्रह्मा जी! आप स[illegible] जो लोग कपिला के दुग्ध से पूर्ण इस कपिल तीर्थ में श्रद्धा-भक्ति [illegible] पिण्डदान करेंगे उनके पितरों की पूर्ण तृप्ति होगी और सोमवार [illegible] सोमवती अमावस्या तिथि के दिन कपिलधारा तीर्थ में श्राद्ध [illegible] अक्षय फल की प्राप्ति होगी।

कपिलधारा तीर्थ के ऊपर विशाल शिवालय के दक्षिण [illegible] मन्दिर में छाङ्गवक्रेश्वरी देवी हैं।

छाङ्गवक्रेश्वरी देव्यै नमः [मो० कपिलधारा]

छाङ्गवक्रेश्वरी देवी के दर्शन-पूजन से भूत-पिशाच, डाकिनी[illegible] और ब्रह्म बाधा दूर होती है। शीतला माई (चेचक) से पीड़ि[illegible] से अक्रान्त, शरीर में दाने अर्थात् जिसके शरीर में चर्म रोग होते [illegible] रोग भी देवी के दर्शन-पूजन और प्रार्थना करने से ठीक होते हैं। [illegible] के जीर्णोद्धार करने वाले व्यक्तियों के कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं। [illegible] के बगल में कपिल तीर्थेश्वर हैं।

छाङ्गवक्रेश्वरी देवी जी के बगल के विशाल मन्दिर में वृषभ[illegible] हैं। वृषभध्वजेश्वर का प्रमाण ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्द पुरा[illegible] पुराण, शिव पुराण; नन्दी उप पुराण और शिव रहस्य में प्राप्त हो[illegible]

१०१ वृषभध्वजेश्वराय नमः [मो० कपिलधारा।]

वृषभध्वजेश्वर के दर्शन-पूजा करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट[illegible] चिन्ता तथा रोग दूर होते हैं।

दर्शनार्थियों के धन, द्रव्य, परिवार तथा व्यापार में वृद्धि हो[illegible] दर्शन से मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

वृषभध्वजेश्वर को दूध से स्नान तथा अभिषेक किया जाता है और
ऋतु फल, मिष्टान्न, पक्वान्न, हलुआ और खीर चढ़ता है। यात्री बाहर
आते हैं, तीर्थ में या गङ्गा जी में स्नान करके वृषभध्वजेश्वर के दर्शन-
जन करते हैं और अपने-अपने मनोवाञ्छित फल प्राप्त करने के लिए
गवान् से प्रार्थना करते हैं। मनोवांछित कार्य सिद्ध होने के पश्चात्
बाजा बजाते दर्शन करने आते हैं और ऋतु फल, मिष्ठान्न, द्रव्य, वस्त्र,
आदि भगवान को अर्पण करते हैं।

कीर्तन करते हैं और साधु-महात्मा तथा ब्राह्मण को जलपान कराते हैं।
अपने भाई-बन्धु तथा इष्ट-मित्रों के साथ प्रसाद पाते हैं। इसके पश्चात्
वृषभध्वजेश्वर के स्मरण करते हुए अपने अपने घर जाते हैं।

कपिलधारा में शिव-शक्ति विष्णु आदि यज्ञ होते हैं। वेद-वेदान्त
पुराण, गीता तथा रामायण आदि सम्मेलन होते हैं। आधा किलो० जव
खरीद कर साथ में रखें, दूसरे दिन खर्व जव विनायक को और आदिकेशव,
वामनकेशव को जव चढ़ता है।

मन्दिर से उत्तर बगल में आठ धर्मशाला यात्रियों को रहने के लिए
हैं, यात्री धर्मशाला में जाते हैं जहाँ जल छिड़कर आसन बिछाते हैं
और यथाशक्ति साधु-महात्मा, संन्यासियों और ब्राह्मणों को भोजन कराते
। जिन यात्रियों के पास साधु-महात्मा और संन्यासियों तथा ब्राह्मणों
को जलपान और भोजन कराने के लिए साधन न हो वह यात्री दुःखी न
हों चूँकि भगवान सर्वज्ञ हैं और सर्वत्र रहते हैं वे सब जानते हैं। अतः जो
धनी व्यक्ति को फल मिलता है वही फल रङ्क को भी मिलता है।

वृषभध्वजः देवेशः पितृणाम्मुक्ति दायकः।
आज्ञान्देहि महादेवः पुनर्दर्शनमस्तुते ॥

मन्दिर के एक प्रदक्षिणा करके प्रार्थना करके यात्री धर्मशाला में जाते हैं
और अपना सामान गाड़ी में रखते हैं। यात्री कीर्तन-दर्शन-पूजन करते हुए
कपिलधारा से शनैः शनैः चलते हैं। आगे कोटवा गाँव में सड़क के दाहिने
एक शंकर जी के मन्दिर के बगल में विष्णु मन्दिर के दरवाजा के अन्दर

दिव्य मूर्ति पूर्वाभिमुख है। ज्वाला नृसिंह विष्णु का प्रमाण काशी ए
काशीखण्ड, शिवरहस्य और वाराह पुराण में है।

१०२ ज्वालानृसिंहाय नमः [मो० कोटवा गाँव में]

ज्वालानृसिंह विष्णु अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को भ
भक्ति, विद्या, धन-धान्य देते हैं और बुद्धि, सन्तति, द्रव्य, मित्र की
करते हैं तथा गाँव वालों का कल्याण करते हैं।

१०३ वरुणा-गङ्गा-सङ्गमाय नमः

स्नान या मार्जन करके संगम घाट से ऊपर जिस विशाल मन्दि
दर्शन होता है वही आदि केशव का मन्दिर है।

मंन्दिर के भीतर जो शिवजी हैं वही वरुणा-गङ्गा और आदि केश
हैं। आदि केशवेश्वर के सम्बन्ध में काशीखण्ड, काशी रहस्य और
रहस्य में विस्तार से वर्णन है।

काशी खण्ड में आदि केशवेश्वर की स्थापना अपने कर कमलों से
केशव विष्णु के द्वारा स्थापित होने की सूचना है।

१०४ वरुणा-गङ्गा-सङ्गम आदि केशवेश्वराय नमः

सङ्गमेश्वर का प्रमाण काशी-खण्ड, काशी-रहस्य में विस्त
मिलता है।

आदि केशवेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को अपनी
और विष्णु की भक्ति, ज्ञान तथा वैराग्य देते हैं। इसके साथ ही
परिवार, मित्रों की संख्या में वृद्धि करते हैं। सङ्गमेश्वर से ऊपर
मन्दिर में विशालमूर्ति पूर्वाभिमुख है। आदि केशव विष्णु का
स्कन्ध पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, विष्णु पुराण, लिंगपुराण एवं शिवपु
विस्तार से प्राप्त होता है। आदि केशव को तुलसीदल, वस्त्र तथा वि
आदि चढ़ता है।

१०५ आदि केशव विष्णवे नमः [म० नं० ३७/५१, मो० आदि केश

आदि केशव विष्णु के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख,
दरिद्रता, रोग एवं अज्ञान दूर होते हैं, इनके दर्शन से सुख पूर्वक का

होता है। विद्या, परिवार, द्रव्य, भक्ति आदि में वृद्धि होती है। ये नगर वासियों का कल्याण करते हैं। आदि केशव से सटे हुए उत्तर बगल के विष्णु मन्दिर में ज्ञान केशव हैं।

ज्ञान केशवाय नमः।

आदि केशव से मणिकर्णिका घाट तक के देवताओं का दर्शन-पूजन का वर्णन ओंकार अन्तर्गृही और विश्वनाथ अन्तर्गृही दर्शन-यात्रा में वर्णित है।

ज्ञान केशव विष्णु के उत्तर पश्चिम के कोने में बाहर नक्षत्रेश्वर के बगल में गणेश मन्दिर में जव विनायक हैं, जो उत्तराभिमुख हैं। जव विनायक का प्रमाण काशी-खण्ड, काशी रहस्य और शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

१०६ जव खर्वं विनायकाय नमः। [म०नं०ए. ५२/५२ में, मो०आदिकेशव]

जव खर्वं विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के मनोरथ पूर्ण करते हैं और धन, पुत्र आदि की वृद्धि करते हैं। इसके साथ ही निर्विघ्न काशीवास का अवसर प्राप्त होता है। इनके दर्शन से शत्रु निर्बल होता है।

जव विनायक को लड्डू, दूब, जव, मिष्ठान्न और वस्त्र आदि चढ़ाया जाता है। आदि केशव से जो यात्री चलने में असमर्थ होते हैं और रोगी होते हैं वे नाव से मणिकर्णिका तक जाते हैं। पञ्चक्रोशी मन्दिरों के सामने से उनका नाम लेकर नमस्कार करते हैं।

१—प्रह्लादेश्वराय नमः। २—त्रिलोचनेश्वरायनमः। ३—विन्दुमाधव वैष्णवे नमः। ४—गभस्तीश्वराय नमः ५—मङ्गलागौरी देव्यै नमः। ६—वसिष्ठेश्वराय नमः। ७—वामदेवेश्वराय नमः। ८—पर्वतेश्वराय नमः।

महेश्वराय नमः कहकर नमस्कार करते हैं। आदि केशव से यात्री गंगा किनारे से शनैः शनैः दर्शन-पूजन कीर्तन हुए चलते हैं।

[श्रावण-भाद्रमास में जव खर्वं विनायक से दक्षिण ऊपर के मार्ग से वसन्त कालेज होते हुए राजघाट जी० टी० रोड से पहले चाय-पान आदि

की दुकान के बीच से एक पगडंडी रास्ता नीचे की ओर गङ्गा किनारे
है उसी मार्ग से दर्शन-पूजन, कीर्तन करते हुए चलना चाहिए।

प्रह्लादेश्वर का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिवपुराण
लिङ्गपुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

१०७. प्रह्लादेश्वराय नमः [म० नं० ए० १०/८० में, मो० प्रह्लादघा

प्रह्लादेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को शिव और
की भक्ति सुलभ कराते हैं। ये अपने भक्तों को धन, पुत्र आदि सुख
साधन देकर सुख देते हैं, साथ ही पुरवासियों का कल्याण करते हैं।

त्रिलोचन घाट के ऊपर पञ्चाक्षरेश्वर के उत्तर बगल में त्रिलोचने
मन्दिर है। त्रिलोचनेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव
और शिवपुराण में है।

१०८. त्रिलोचनेश्वराय नमः [म० नं० ए० २/८० में, मो० त्रिलोच

त्रिलोचनेश्वर के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके दुःख, कष्ट
संकट दूर होते हैं और द्रव्य, परिवार, व्यापार और भक्ति-ज्ञान में
होती है।

पञ्चगङ्गा-बिन्दुमाधव घाट के ऊपर बिन्दु विनायक और बिन्दुमाधव
के बगल में बिन्दुमाधव की दिव्य मूर्ति पूर्वाभिमुख है। बिन्दुमाधव
का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण में मिलता है।

काशी खण्ड में जगह-जगह बिन्दुमाधव विष्णु जी का विस्तार
वर्णन है।

१०९. बिन्दुमाधव विष्णवे नमः [म० नं० के० २२/३३ में,
पञ्चगङ्गा]

बिन्दुमाधव अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को धन-धान्य,
पौत्रादि से परिपूर्ण करते हैं। साथ ही शिव जी की भक्ति-ज्ञान की प्रा
होती है। दर्शन करने वाले भक्तों को ये सुखपूर्वक काशी वास कराते हैं

मंगला गौरी घाट बालाजी मन्दिर के ऊपर मंगला गौरी से सटे हुए
दिव्य शिव जी हैं, जिन्हें गभतीश्वर कहते हैं।

गभतीश्वर का वर्णन स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिव रहस्य और लिङ्ग पुराण में विस्तार से है।

११०. गभस्तीश्वराय नमः [म० नं० २४/३४ में, मो० मंगला गौरी]

गभस्तीश्वर के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके दुःख, कष्ट, दरिद्रता और चिन्ता दूर होती है और शरीर में शक्ति, नेत्रों में ज्योति बढ़ती है।

गभस्तीश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल के मन्दिर में मंगला गौरी देवी हैं। इनका प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य और देवी भागवत् में विस्तार से प्राप्त होता है।

१११. मंगला गौरी देव्यै: नमः [म० नं० २४/३४ में, मो० मंगलागौरी]

मंगला गौरी के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को देवी धन, ऐश्वर्य और सुख का साधन देकर सुखी बनाती हैं।

ये दुःख, चिन्ता, गरीबी तथा अज्ञान को दूर करती हैं। इनके दर्शन से डाकिनी-साकिनी, भूत-प्रेत सब शान्त होते हैं। मन्दिर के जीर्णोद्धार करने के पश्चात् देवी से जो प्रार्थना करते हैं वह सब पूर्ण होता है। कार्य सफल होते ही पञ्चबाजा बजाते हुए मंगला गौरी की दर्शन करने लोग आते हैं।

मंगला गौरी से दक्षिण सिन्धिया घाट से सटा हुआ उत्तर बगल का घाट वसिष्ठेश्वर का है। घाट के ऊपर बांयी तरफ शंकर जी के मन्दिर में वसिष्ठेश्वर की प्रतिमा है। वसिष्ठेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य और शिव रहस्य, योग वासिष्ठ एवं अनेक पुराणों में विस्तार से प्राप्त होता है।

११२. वसिष्ठेश्वराय नमः [म० नं० सी० के० ७/१६१ में, मो० वसिष्ठ घाट]

वसिष्ठेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्त संसार के असत्य पदार्थों में आसक्त नहीं होते और पाप कर्म को छोड़कर सत्कर्म करते तथा सज्जन, साधु-माहात्माओं का सङ्ग करते हैं तथा इस लोक में सम्पत्ति सुख और शान्ति की प्राप्ति होती है।

अन्त में मुक्ति प्राप्त होती है। अतएव इनका प्रतिदिन दर्शन करें।

वसिष्ठेश्वर से सटा हुआ दक्षिण पश्चिम बगल में फाटक के अन्दर वामदेवेश्वर हैं।

काशी खण्ड, काशी रहस्य और अन्य पुराणों में भी वामदेवेश्वर के प्रमाण मिलते हैं।

११३. वामदेवेश्वराय नमः [म० नं० सीके० ७/१६१ में, मो० वसिष्ठ घाट संकठा जी]

वामदेवेश्वर के दर्शन-पूजन से दुःख-कष्ट तथा दरिद्रता दूर होती है। इनके दर्शन से मोह-माया नहीं सताती और बुद्धि, विद्या, द्रव्य तथा भक्ति ज्ञान की वृद्धि होती है।

ब्रह्म-ऋषि वसिष्ठ वामदेव मूर्ति रूप धारण करके काशी वास करते और काशी वासियों को उपदेश देते हैं तथा काशी वासियों का कल्याण करते हैं।

सिन्धिया घाट के ऊपर दाहिनी ओर शंकर जी के मन्दिर में पर्वतेश्वर हैं।

पर्वतेश्वर का प्रमाण—काशी खण्ड में, काशी रहस्य में, काशी [illegible] यात्रा में, काशी-दर्शन-यात्रा में है।

११४. पर्वतेश्वराय नमः [म० नं० सी० के० ७/१५ में, मो० सिन्धिया घाट]

पर्वतेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले व्यक्ति के प्रारब्ध में पर्वत समान दुःख-कष्ट, विघ्न-बाधा हो तो भी दूर होते हैं और सब कार्य सफल होते हैं।

पर्वतेश्वर से दक्षिण ब्रह्महृद मणिकर्णिका पुष्करणी ब्रह्म कुण्ड के [illegible] गुफा में महेश्वर जी हैं।

वर्षा ऋतु में सिद्धि विनायक के मन्दिर के ऊपर बायीं तरफ के शिवाले में दर्शन करें।

काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य, शिवपुराण और लिङ्गपुराण में महेश्वर जी का विस्तार से वर्णन है।

११५. महेश्वराय नमः [मो० मणिकर्णिका घाट]

महेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को धन, स्त्री, पुत्र आदि सुख के साधन देकर सुखी बनाते हैं और सब प्रकार से कल्याण करते हैं।

घाट के ऊपर बाँयीं तरफ गणेश जी के मन्दिर में सिद्धि विनायक पूर्वाभिमुख हैं।

११६ सिद्धि विनायकाय नमः [मं० नं० सी० के-३३/२६, [मो० मणिकर्णिका का घाट]

सिद्धिविनायक दर्शन-पूजन करने वाले व्यक्ति को सिद्ध हो जाते हैं और उनके सब कार्य निर्विघ्न सफल होते हैं।

सिद्धि विनायक से पश्चिम ब्रह्मनाल चौमुहानी से पश्चिम ऊपर पुलस्तीश्वर से सटा हुआ दक्षिण बगल के मन्दिर में सप्तावर्ण गणेश, जो उत्तराभिमुख हैं।

सप्तावर्ण विनायक का प्रमाण काशी खण्ड में, काशी रहस्य में, काशी वार्षिक यात्रा में और काशी-दर्शन यात्रा में विस्तार से प्राप्त होता है।

११७ सप्तावर्ण विनायकाय नमः [म० नं० सी० के० ३३/३६ में, मो० ब्रह्मनाल]

सप्तावर्ण विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख-कष्ट, रोग और चिन्ता दूर करते हैं। इनके दर्शन से विघ्न-बाधा नहीं आती और पुरवासियों की रक्षा होती है। इनको शेष जव अर्पण करना चाहिए और लड्डू, दूब, ऋतु फल, मिष्ठान्न आदि चढ़ाना चाहिए।

मणिकर्णिका घाट में स्नान करके यात्री ढुंढिराज जी का दर्शन करने जाते हैं। विश्वनाथ जी को बाहर से प्रणाम करते हैं।

११८ विष्णवे नमः [अन्नपूर्णा जी में]

अन्नपूर्णा आदि का दर्शन करके।

ढुण्ढिराजाय नमः [मो० ढुण्ढिराज गली]

दण्डपाणिभ्यो नमः [मो० ढुण्ढिराज गली]

साक्षी विनायक के संबंध में बृहदारण्य उपनिषद्, ब्रह्म सूत्र, ब्रह्म वैवर्त पुराण, स्कन्द पुराण, शिव पुराण, पद्म पुराण, मत्स्य पुराण और लिंग पुराण में वर्णन है।

११९ साक्षी विनायकाय नमः (मो० साक्षी विनायक)

साक्षी विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के रोग दुःख विघ्न आदि को दूर करते हैं। अपने भक्तों को आवश्यक सुख के साधन प्राप्त कराते हैं तथा सुख पूर्वक काशी वास और अन्त में मुक्ति दिलाते हैं।

प्रतिदिन चतुर्थी तिथि को अवश्य दर्शन करें। साक्षी विनायक जयन्ती के अवसर पर हजारों यात्री दर्शन यात्रा करते हैं।

१२० द्रौपदादित्य सूर्याय नमः (मो० विश्वनाथ गली)

पञ्च विनायकाय नमः (मो० विश्वनाथ सभा)

यहाँ पाँच देवों का पुनर्दर्शन करना उचित है।

काल राजेश्वराय नमः

१२१ विश्वनाथाय नमः (मं०नं०सी० के० ३५/१९ में, मो० विश्वनाथ जी) दर्शन पूजन करें।

विश्वनाथ जी को बार-बार नमस्कार करें। तत्पश्चात् प्रार्थना करें। प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार है—

प्रदक्षिणी कृतान्देवान्स्मरेत्तत्र क्रमात्सुधीः।
जय विश्वेशः विश्वात्मन्काशी नाथ! जगद्गुरोः॥
त्वत्प्रसादान्महादेव! कृता क्षेत्रप्रदक्षिणा।
अनेक जन्म पापानि कृतानि मम शङ्करः॥
तानि पञ्चक्रोशात्मलिङ्गस्याऽस्य प्रदक्षिणात्।
त्वद्भक्ति काशिवासाभ्यां रहितः पाप कर्मणा॥
सत्सङ्ग श्रवणाद्यैश्च कालो गच्छतु नः सदा।
हर! शंभो महादेव सर्वज्ञ! सुखदायक॥

प्रायश्चित्तं सुनिर्वृत्तं पापानान्त्वत्प्रसादतः ।
पुनः पापमतिर्मास्तु धर्मबुद्धिः सदाऽस्तु मे ॥
इति जप्त्वा यथा शक्त्या दत्त्वा दानं द्विजन्मनाम् ।
बद्ध्वा करयुगम्मन्त्री मन्त्रमेतदुदीरयेत् ॥
पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं यथा शक्त्या मया कृता ।
नूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादादुमापते ॥
इति प्रार्थ्य महादेवं गच्छेद्गेहं स्वकं स्वकम् ।
न्यूनातिरिक्तदोषाणाम् परिहाराय दक्षिणाम् ॥
सङ्कल्प्य गत्वा च गृहं ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः ।
तत आगत्य च गृहं कुटुम्बैः सह भोजनम् ।
कृतात्मानन्ततो ध्यायेत् कृतकृत्यो भवेत्ततः ॥

विश्वनाथ मन्दिर के पीछे ज्ञानवापी (कूप) है ।

ज्ञानवाप्यै नमः ।

ज्ञानवापी में बैठकर सभी देवों का नाम लिया जाता है और संकल्प छोड़ कर ब्राह्मण को फल, सीधा, वस्त्र और दक्षिण यथा शक्ति देकर साधु-महात्माओं को जलपान और दरिद्र नाराबण को लाई, चना आदि तथा पैसा देने के पश्चात् यात्रा पूर्ण होती है। इस प्रकार पञ्च क्रोशी-दर्शन-यात्रा पूर्ण हुआ। जो यात्री चल सकते हैं वह काल भैरव का दर्शन करें और गुरु माता-पिता के दर्शन करें, आशीर्वाद लें। यात्री पापों का प्रायश्चित करके पाप रहित और निरपाप होकर मनुष्य विश्वनाथ भगवान का स्मरण करते हुए, अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक यात्री अपने-अपने घर जाते हैं। जिन यात्रियों के पास धन-सम्पत्ति हो वह रुद्राभिषेक, हवन और गोदान करें तत्पश्चात् ब्राह्मण, साधु-महात्मा, संन्यासियों को भोजन कराकर अपने परिवार सहित भोजन करें और जिनके पास साधन नहीं है वह गोदान करके अपने घर में कीर्तन करें।

काल भैरव काशी में रहने वाले मनुष्यों के देहपात अर्थात् मृत्यु होने के पश्चात् साक्षी विनायक से पूछते हैं कि इस जीव के पाप-पुण्य कितने हैं और इनके पापों के प्रायश्चित्त कराने के लिए क्या दण्ड देना चाहिए ? साक्षी विनायक कहते हैं मृत जीव कितना भी अपराधी हो, परन्तु जैसे; पुत्र के के अपराध को पिता क्षमा करता है वैसे ही साक्षी विनायक काल भैरव से वकालत करके जीव को पापों से मुक्ति दिलाते हैं।

साक्षी विनायक कालभैरव से कहते हैं कि इस जीव को कृपा करके भय दिखा कर पापों के प्राश्चित्त कराकर इस को मुक्ति दिला दीजिए। अतः प्रयत्न पूर्वक साक्षी विनायक का दर्शन करना चाहिए।

प्रतिदिन तर्पण करने का सूक्ष्म रूप से विधान इस प्रकार है, दाहिने हाथ में जल लेकर पंचकोशी के देवताओं के नाम लेकर जल छोड़ते हुए तर्पयामी कह कर जल छोड़ें। देवताओं के नाम इस प्रकार हैं :—

(१) ढुण्ढिराजाय नमः। (२) दण्डपाणिभ्यो नमः।
(३) अन्नपूर्णाय नमः। (४) विश्वनाथाय नमः।
(५) कालराजेश्वराय नमः। (६) पंचविनायकाय नमः।
(७) मणिकर्णिकेश्वराय नमः। (८) सिद्धिविनायकाय नमः।
(९) गंगाकेशवाय नमः। (१०) ललिता गौरी देव्यै नमः।
(११) जरासन्धेश्वराय नमः। (१२) सोमनाथेश्वराय नमः।
(१३) दालभ्येश्वराय नमः। (१४) शूलटंकेश्वराय नमः।
(१५) आदिवाराहेश्वराय नमः। (१६) वन्दी देव्यै नमः।
(१७) दशाश्वमेधेश्वराय नमः। (१८) सर्वेश्वराय नमः।
(१९) केदारेश्वराय नमः। (२०) हनुमतेश्वराय नमः।
(२१) अर्कविनायकाय नमः। (२२) लोलार्क सूर्याय नमः।
(२३) अस्सी संगमेश्वराय नमः। (२४) दुर्गाविनायकाय नमः।
(२५) दुर्गादेव्यै नमः। (२६) विश्वक्सेनेश्वराय नमः।
(२७) सोमनाथेश्व ाय नमः। (२८) विरुपाक्षगणाय नमः।
(२९) नीलकण्ठेश्वराय नमः। (३०) कर्दमेश्वराय नमः।

(३१) नागनाथेश्वराय नमः। (३२) चामुण्डादेव्यै नमः।

(३३) मोक्षेश्वराय नमः। (३४) करुणेश्वराय नमः।

(३५) वीरभद्रगणाय नमः। (३६) विकटाक्षदुर्गा देव्यै नमः।

(३७) उन्मत्त भैरवाय नमः। (३८) कालकूटगणाय नमः।

(३९) विमला दुर्गायै नमः। (४०) महादेवेश्वराय नमः।

(४१) नन्दीकेश्वराय नमः। (४२) भृङ्गीरीटगणाय नमः।

(४३) गणप्रियश्वराय नमः। (४४) विरुपाक्षगणाय नमः।

(४५) पक्षेश्वराय नमः। (४६) विमलेश्वराय नमः।

(४७) मोक्षेश्वराय नमः। (४८) ज्ञानेश्वराय नमः।

(४९) अमृतेश्वराय नमः। (५०) नरकार्णवतारणाय नमः।

(५१) गन्धर्वेश्वराय नमः। (५२) चण्डविनायकाय नमः।

(५३) रविरक्ताक्षगन्धर्वाय नमः। (५४) भीमचण्डेश्वराय नमः।

(५५) भीमचण्डी देव्यै नमः। (५६) एकपाद शिवाय नमः।

(५७) महाभीमगणाय नमः। (५८) भैरवाय नमः

(५९) भैरवीदेव्यै नमः। (६०) भूतनाथेश्वराय नमः।

(६१) सोमनाथेश्वराय नमः। (६२) सिन्धुसरोवरेश्वराय नमः।

(६३) सोमनाथाय नमः। (६४) कालानाथेश्वराय नमः।

(६५) कपर्दीश्वराय नमः। (६६) कामेश्वराय नमः।

(६७) गणेश्वराय नमः। (६८) वीरभद्रशिवगणाय नमः।

(६९) चारुमुख शिवाय नमः। (७०) गणनाथेश्वराय नमः।

(७१) देहली विनायकाय ममः। (७२) शोडषगणनाथाय नमः।

(७३) उद्दण्डविनायकाय नमः। (७४) उत्कलेश्वराय नमः।

(७५) रुद्राणी देव्यै नमः। (७६) तपोभूम्यै नमः।

(७७] सोमेश्वराय नमः। (७८) भरतेश्वराय नमः।

(७९) लक्ष्मणेश्वराय नमः। (८०) शत्रुघ्नेश्वराय नमः।

(८१) द्यावाभूमिश्वराय नमः। (८२) नहुषेश्वराय नमः।

(८३) रामेश्वराय नमः। (८४) असंख्यातशिवलिंगेश्वराय नमः

(८५) देवसन्धेश्वराय नमः। (८६) द्रौपदी देव्यै नमः।

(८७) द्रौपदीश्वराय नमः। (८८) युधिष्ठीरेश्वराय नमः।
(८९) भीमेश्वराय नमः। (९०) अर्जुनेश्वराय नमः।
(९१) नकुलेश्वराय नमः। (९२) सहदेवेश्वराय नमः।
(९३) कृष्णेश्वराय नमः। (९४) परीक्षितेश्वराय नमः।
(९५) कुन्तीश्वराय नमः। (९६) पाशपाणि विनायकाय नमः
(९७) पृथ्वीश्वराय नमः। (९८) स्वर्गभूमिश्वराय नमः।
(९९) स्वर्गभूमि देव्यै नमः। (१००) यूपसरोवरेश्वराय नमः।
(१०१) भवानी देव्यै नमः। (१०२) वृषभध्वजेश्वराय नमः।
(१०३) यूपसरोवरेश्वराय नमः (१०४) ज्वालानृसिंहाय नमः।
(१०५) वरणासंगमेश्वराय नमः। (१०६) आदिकेशव विष्णवे नमः
(१०७) जव खर्वविनायकाय नमः। (१०८) प्रह्लादेश्वराय नमः।
(१०९) त्रिलोचनेश्वराय नमः। (११०) विन्दुमाधवाय विष्णवे न
(१११) गभस्तीश्वराय नमः। (११२) मंगलागौरीदेव्यै नमः।
(११३) वसिष्ठेश्वराय नमः। (११४) वामदेवेश्वराय नमः।
(११५) पार्वतीश्वराय नमः। (११६) महेश्वराय नमः।
(११७) सिद्धिविनायकाय नमः। (११८) स्प्तावरण विनायकाय न
(११९) विष्णवे नमः। (१२०) भवानी अन्नपूर्णायै नमः
(१२१) दण्डपाणिभ्यो नमः। (१२२) भैरवाय नमः।
(१२३) ढुण्ढिराजाय नमः। (१२४) साक्षी विनायकाय नमः
(१२५) द्रोपदी आदित्य सूर्याय नमः। (१२६) विश्वनाथाय नमः।

एक दिन से सात रात्रि के पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा इस प्रकार है—

१. एक दिन की पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा शिवरात्रि के दिन हजारों आ करते हैं।

२. एक रात्रि के पञ्चक्रोशी-यात्रा में रामेश्वर में विश्राम होता है।

३. द्विरात्री के दर्शन-यात्रा में भीमचण्डी और रामेश्वर में विश्रा होता है।

४. त्रिरात्रि के पञ्च क्रोशी-दर्शन यात्रा में भीमचण्डी, रामेश्वर कपिलधारा में विश्राम होता है।

५. चार रात्रि के पञ्च-क्रोशी-दर्शन यात्रा में कर्दमेश्वर, भीमचण्डी, रामेश्वर और कपिलधारा में यात्री विश्राम करते हैं।

६. पाँच रात्रि के पञ्चक्रोशी-दर्शन-यात्रा में कर्दमेश्वर, भीमचण्डी और रामेश्वर, शिवपुर, कपिलधारा में विश्राम किया जाता है।

७. छह्रात्रि के पञ्चक्रोशी-दर्शन-यात्रा में कर्दमेश्वर, भीमचण्डी सोमनाथ, लंगोटिया हनुमान, रामेश्वर और कपिलधारा में यात्री विश्राम करते हैं।

८. सात दिन की पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा में दुर्गा जी का दर्शन करके नगवा के दक्षिण लङ्का से पूर्व विश्राम करते हैं।

क्षेत्र संन्यासियों को संकल्प लेकर पञ्चक्रोशी-दर्शन यात्रा नहीं करनी चाहिए।

पञ्चक्रोशी यात्रा के अनुभव या प्रत्यक्ष फल

पञ्चक्रोशी-दर्शन करने वाले यात्रियों को जो प्रत्यक्ष चमत्कार देखने को मिले वे इस प्रकार हैं—

जो यात्री रोगी थे वे निरोग हो गये। जो यात्री ग्रहों से पीड़ित थे उनके ग्रह शान्त हो गये और जिन यात्रियों को दुःख, कष्ट था वह दूर हो गया।

जिन यात्रियों को काशी में आवास, भोजन आदि की व्यवस्था नहीं थी सब व्यवस्था हो गयी। जो निर्धन थे वे धनी हो गये।

जो यात्री मुकदमा, नेतागीरी में परास्त होते थे वे सब विजयी हो गये।

जिन यात्रियों के घर, पट्टीदार में कलह था वह शान्त हो गया। जिन यात्रियों के घर में भूत-प्रेत, डाकिनी साकिनी की बाधाएँ थीं उनकी शान्ति हो गई।

जो यात्री पाप कर्म में रत थे और पापी थे वे पाप कर्म को छोड़कर सत्कर्म करने लगे।

जिन यात्रियों को नौकरी नहीं मिलती थी, विवाह नहीं होता। नौकरी में पदोन्नति नहीं होती थी। उनका सब कुछ हो गया।

जिन यात्री के पुत्र नहीं थे उनके पुत्र-रूप-रत्न की प्राप्ति हुई।

जो दीन-दुःखी थे वे सब धन-धान्य से सम्पन्न हो गये और वे सब या पाप कर्म छोड़कर सत्कर्म करने लगे।

अभिप्राय यह कि सभी यात्रियों के सब मनोरथ पूर्ण हुए। पञ्चक्रो दर्शन-यात्रा करने वालों के प्रति श्री विश्वनाथ जी की असीम अनुक रहती है, उनकी कृपा से पञ्चक्रोशी यात्रा कराने वाले और करने वालों यह लोक और परलोक सुन्दर गया। जो यात्री निवृत्ति मार्ग के थे उन अनन्य भक्ति और ब्रह्मात्मा का साक्षात्कार हुआ।

काशी रहस्य के नवम अध्याय में ऋषिपुत्र मण्डप का आख्यान से वर्णन करते हैं। विश्वनाथ जी ज्यैगीषव्य ऋषि से कहते हैं। म माता-पिता, भ्राता के द्वारा मना किये जाने पर भी कुसंगति को छोड़ता।

एक दिन मण्डप दो साथियों के साथ पिता के घर गया। कुष्माण्ड बोले—तुम पापों का प्रायश्चित करके घर आना उसी समय मण्डप को प क्रोशी जाने वाले यात्री मिले। वह संकल्प लेकर साधु-माहात्मा, संत और शिव-भक्तों के साथ शिव-शिव नाम मन्त्र जपते हुए हर-हर महादेव कीर्तन करते हुए यात्रियों के साथ चला। यात्रा में मण्डप के पाप कर्म, बुद्धि नष्ट हो गई। पापों को नाश करने वाली पञ्चक्रोशी-यात्रा से वासना समाप्त हो गयी। यात्रा पूर्ण होने के पश्चात् यात्रियों ने उससे कि अपने पिता को बोलावो।

पिता आ गये। पिता बोले जब तक विष्णु, सूर्य, ढुण्ढिराज और पाणि, भैरव नहीं कहेंगे तब तक मैं इन बातों पर विश्वास नहीं करूँगा। यात्री देवताओं की स्तुति करने लगे। पाँचों देवता प्रगट हो गये।

विष्णु बोले—मण्डप ने शिव-भक्त, साधु-महात्मा के संग होकर

क्षेत्र प्रदक्षिणा किया और प्रदक्षिणा करते समय जगत् गुरु श्री विश्वनाथ जी का कीर्तन करते हुए पञ्चक्रोशी यात्रा किया इससे मण्डप शुद्ध हो गया।

इसके पश्चात् श्री ढुंढिराज कहते हैं कि शिव-शिव नाम के जप से जैसे पाप नष्ट होते हैं, काशी नाम को जपने वाले मनुष्यों के पाप समूह नष्ट होते हैं। काशी के विषय में कथा-श्रवण और कीर्तन करते हुए जो पञ्च-क्रोशी प्रदक्षिणा करते हैं वे पापों से मुक्त होते हैं। दण्डपाणी जी कहते हैं—

पञ्च क्रोशात्मक सच्चिदानन्द शिवलिङ्ग की पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा करके पापी लोग पापों से शुद्ध होते हैं।

काल भैरव जी ने कहा कि मैं पापी लोगों को अनेक प्रकार से दण्ड देता हूँ। जो पापी काशी की पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा यात्रा करते हैं। उन पञ्च-क्रोशी दर्शन-यात्रा करने वाले यात्रियों के पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है। अतः मण्डप विशुद्ध हो गया है।

सूर्यनारायण जी कहते हैं—मण्डप ने पापों को हरने वाला और पापों को नाश करने वाला पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा किया और सज्जन, साधुमात्मा तथा संन्यासियों के साथ पञ्चाक्षरी महामन्त्रों और शिव नाम महामन्त्र जाप-कीर्तन करते हुए और काशी के विषय में कथा-श्रवण करते हुए इसने पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा किया। इसलिए यह मण्डप शुद्ध हो गया।

व्यभिचारिणी विशालाक्षी भी पापहारिणी पापों को नष्ट करने वाली पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा करके निष्पाप और विशुद्ध हो गई। पापी, दुराचारी, भ्रष्टाचारी तथा अत्यन्त पाप करने वाला मानव भी पञ्चक्रोशी यात्रा से पापों से छुट जाता है। ऐसी है पाप को दग्ध करने वाली यह पञ्च-क्रोशी यात्रा।

पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा जैन, बौद्ध, आर्य-समाजी, सिख एवं विश्व हिन्दू परिषद् के तथा अन्य सम्प्रदाय के लोग भी हम लोगों के साथ पञ्च-क्रोशी दर्शन यात्रा करते रहे। विश्व के अन्य राष्ट्र से आये हुए यात्री भी पञ्चक्रोशी यात्रा करते हैं।

एक सौ एक बार पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा करने के पश्चात् यह पु
लिखी गयी।

काशी क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास करने वाले व्यक्ति को पू
आधे गङ्गा तक, उत्तर में वरुणा, दक्षिण में अस्सी नदी तक, पश्चि
मडुवाडीह रहना चाहिए और विशेष कार्य में पञ्चक्रोशी के सड़क के
तक जा सकते हैं।

काशी क्षेत्र के संन्यासियों की पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा वाराणसी के
क्षिणा यात्रा हैं।

पञ्चक्रोशी यात्रा करने के लिए सबसे उत्तम और सहज आ
कार्तिक, मार्ग शीर्ष, फाल्गुन, चैत्र-वैशाख मास हैं। पञ्चक्रोशी दर्शन
उपर्युक्त मासों में सहजता से सफल होती है। मैंने इन्हीं महीनों में या
की हैं।

मेरी यात्रा के समय की मण्डलियों में प्रमुख हैं :—

मेरे गुरुवर्य अनन्त श्री विभूषित धर्मसम्राट् श्री स्वामी करपा
महाराज की काशी दर्शन यात्रा मण्डली।

गोवर्धन पीठाधीश्वर जगत् गुरु श्री शंकराचार्य स्वामी निरंजन दे
जी महाराज की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

स्वामी श्री घनश्यामानन्द तीर्थजी महाराज, मुमुक्षु भवन, काशी
यात्रा मण्डली।

श्री स्वामी सदानन्द सरस्वतीजी महाराज, करपात्र धाम, केदार
की मण्डली।

श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज, धर्मसङ्घ, दुर्गा-कुण्ड
काशी दर्शन, यात्रा मण्डली।

श्री स्वामी नृसिंहगिरि जी महा मण्डलेश्वर की दक्षिणा मूर्ति
मिश्रा पोखरा की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

श्री स्वामी गङ्गानन्द तीर्थ जी महाराज की, मुमुक्षु भवन, काशी
यात्रा-मण्डली।

श्री स्वामी गङ्गदेव, अभयानन्द आश्रम-मणिकर्णिका घाट के काशी दर्शन यात्रा की मण्डली।

काशी दर्शन-यात्रा करने वाले प्रमुख पण्डितों की मण्डलियाँ इस प्रकार हैं—

पं० बैजनाथ त्रिपाठीजी, की अस्सीघाट की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

पं० दातार शास्त्रीजी की भोसलाघाट तथा ब्रह्माघाट की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

पं० बैकुण्ठनाथ उपाध्यायजी की विश्वेश्वर गंज की काशी दर्शन यात्रा मण्डली।

चिरञ्जि लालजी की भवानी गली की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

विश्वनाथ पालन्देजी, की दुर्गाघाट की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

हनुमान घाट की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

हरी बम बाबा जी, की पीताम्बरापुरा की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

पं० कुबेरनाथ सुकुलजी की काल भैरव की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

गणेशानन्द तीर्थ जी की मुमुक्षु भवन की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

महिला मण्डलियों का विवरण निम्नांकित है :—

विद्या देवी जी (साक्षी विनायक) की काशी दर्शन यात्रा मण्डली।

गीता देवी जी (मान सरोवर) की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

ढुण्ढिराज गली की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

सीता देवी जी (लक्ष्मीकुण्ड) की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

काशी की पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा करने के लिए भारत के कोने-कोने से शंकराचार्य, महामण्डलेश्वर, साधु-महात्मा, महन्त, अधिकारी एवं तपस्वी, साधक-सिद्ध सभी अपने-अपने भक्तों को साथ में लेकर काशी की पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा करने आते हैं। लखपति, करोड़पति और राजा महाराजा काशी की पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा करने आते हैं। काशी के धनी वर्ग स्वयं पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा करते हैं। जो यात्रा करने में असमर्थ होते हैं वे कथित ब्राह्मणों द्वारा वरण करके पञ्चक्रोशी यात्रा भेजते हैं।

मेरे गुरुवर्य अनन्त श्री विभूषित धर्म-सम्राट् स्वामी करपात्री जी म
राज जी ने लोक कल्याण और काशीवासियों के कल्याण के लिए यात्र
कीं। उनकी यात्रा में उनके शिष्य एवं भक्त मण्डलियों के साथ चैत्र (
मास), वसन्त ऋतु, पञ्चमी तिथि के दिन पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा हु
की संख्या में यात्री चलते थे, विद्वान्, ब्राह्मण वेदों की स्तुति करते हुए
में चलते थे और अन्य यात्री कीर्तन करते हुए चलते थे। इसके साथ
काशी विश्वनाथ जी का जयघोष करते हुए चलते थे। मार्ग में गो, पी
वरगद तथा साधु-महात्माओं को दाहिने करके और मन्दिरों का दर्शन क
हुए चलते थे। प्रत्येक पड़ाव में अन्न क्षेत्र चलाते थे। पड़ाव में मध्याह्न
के पश्चात् स्वामी जी साधु-महात्मा और संन्यासियों को स्वयं खड़े ह
दीन-दुखियों को अन्न-वस्त्र देते थे। भोजन कराते थे।

जिन धर्मशालाओं में पड़ाव होता था उनमें ब्राह्मण तीन बजे से प्रव
करते थे। अन्त में स्वामी जी की कथा होती थी। हजारों नरनारी
और शहर से दर्शन और कथा-श्रवण करने के लिए आते थे। प्रायः
का विषय पञ्चक्रोशी यात्रा का नियम, यात्रा करने का फल, पञ्च
और उसके माहात्म्य आदि की कथा होती थी।

काशी वास करना ही मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए
विषय में स्वामी जी बराबर ध्यानाकर्षित करते थे।

मेरे गुरुवर्य स्वामी करपात्री जी महाराज की प्रेरणा से पञ्च
सड़क बनी। स्वामी जी ने जीर्णोद्धार समिति बना करके तीर्थ, कुआं,
शाला आदि का जीर्णोद्धार कराया।

काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास करने वाले शिवभक्त
काशी विश्वनाथ के भक्त माने जाते हैं।

पहले बाहर से बहुत मात्रा में विद्वान् काशी आते थे और
संन्यासियों को ढूंढ़ कर फल, वस्त्र और द्रव्य आदि देते थे। काशी
करने वाले को सहयोग देने वाले भक्तों के प्रति अन्नपूर्णा विश्वनाथ

प्रसन्न होते हैं और उसे दु:ख-कष्ट नहीं होता तथा उसके सब कार्य सफल होते हैं। अन्त में मुक्ति प्राप्त होती है।

अत: काशीवास करने वाले भक्तों के सहयोग देने वाले को इस लोक में धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है तथा गुणवान, विद्यावान, धनवान पुत्र की प्राप्ति, सुख शान्ति मिलती है। अन्त में कैवल्य मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अतएव अपने कल्याण चाहने वाले काशी में रहने वाले भक्तों को चाहिए कि बाहर से काशीवास करने के लिए आये भक्तों का और काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करने वालों को आवास, भोजन आदि की व्यवस्था करें। ऐसा करने से उनके पितृ तृप्त होते हैं और वह व्यक्ति अपने परिवार सहित संसार सागर से तर जाता है। पञ्चक्रोशी के इर्द-गिर्द के गाँवों में रहने वाले व्यक्तियों विशेषकर ग्राम प्रधानों को यह ध्यान रखना चाहिए कि उस क्षेत्र में जो धार्मिक स्थल हों उनकी समुचित देखभाल की व्यवस्था करें। यदि कोई मंदिर, स्थान, जीर्ण-शीर्ण हो गया हो तो उनका जीर्णोद्धार, मरम्मत आदि का कार्य करें-कराएँ। उनकी पवित्रता एवं शुद्धता और सुरम्यता की उचित व्यवस्था करें। गाँव में रहने वाले पञ्च-प्रधान, सभापति तथा गाँव के धनी वर्ग को सुझाव देकर गाँव से और ग्राम विकास खण्ड से सहयोग लेकर जीर्णोद्धार समिति बना कर ऐसे धार्मिक स्थलों का जीर्णोद्धार करें।

काशी में संकल्प पूर्वक क्षेत्र सन्यास लेकर काशीवास करने वाला व्यक्ति स्वयं तो मुक्त होता ही है उसका इक्कीस कुल भी उसके इस क्षेत्र संन्यास से तर जाता है। वह व्यक्ति काशी में शरीर पात होते ही मुक्त हो जाता है। काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करने वाले की शिव जी के दूत रक्षा करते हैं और आवास भोजन की भी व्यवस्था करते हैं। इसके साथ ही शिव-योगी शंकर जी के भक्तों का विद्वान, सज्जन, साधु-महात्माओं का सङ्ग होता है।

वेदान्त का श्रवण मनन निदिध्यासन करने वाले मनुष्य से भगवान विश्वनाथ प्रसन्न होते हैं और वेदान्त पढ़ने वाले और पढ़ाने वाले के प्रति शंकर जी प्रसन्न होते हैं।

काशी में मरने वाला व्यक्ति मुक्त हो जाता है। जिस मानव को सन्देह हो वह काशी मोक्ष निर्णय नामक पुस्तक देखें।

रोगी को अस्सी और वरुणा के मध्य के अस्पताल में भरती करना चाहिए। कोई भी डॉक्टर प्रारब्ध को नहीं मिटा सकता और मरने वाले व्यक्ति को डाक्टर बचा नहीं सकता। जन्म-जन्मान्तर में किए हुए बुरे कर्म के द्वारा रोग आते हैं। भोग के पश्चात् ही रोग अच्छे होते हैं। डाक्टर-वैद्य रोगी को दवा देकर राहत अवश्य दिलाते हैं, परंतु भोग को नहीं मिटा सकते। अतएव प्रयत्न करके काशी क्षेत्र (अस्सी-वरुणा के बीच) में शरीर छोड़ने का विधान करना चाहिए।

मलमास

अधिक मास में प्रतिदिन लगभग पच्चीस हजार यात्री आज भी पंच क्रोशी यात्रा करने जाते हैं। मणिकर्णिका घाट से मणिकर्णिका तक पंच क्रोशी मार्ग सड़क से पंक्तिबद्ध होकर यात्री चलते हैं। कार या जीप से भी यात्रा होती है, दर्शन होता है। हवाई जहाज से यात्रियों का दर्शन अन्य प्रकार से होता है।

पूर्व इतिहास

दुर्गा जी में रात्रि निवास का वर्णन :—

श्री काशी रहस्य के दशवें (अ० १०) अध्याय में लिखा है प्राचीन काल में दुर्गा जी का दर्शन-पूजन करने के पश्चात् यात्री हिन्दू विश्वविद्यालय के पश्चिम बगल में शंकर जी के मन्दिर में दक्षिणेश्वर दक्षिणेश्वर में रात्रि में विश्राम होता था, हिन्दू विश्वविद्यालय बनने बाद धर्मशाला विश्वविद्यालय के अन्दर हो गया उसी समय से यात्री दक्षिणेश्वर में नहीं रुकते।

वाराणसी प्रदक्षिणा-दर्शन-यात्रा

(क्षेत्र संन्यासियों की पञ्चक्रोशी यात्रा है)

वाराणसी करुणामय दिव्य मूर्ति-

हृत्सृज्य यत्र तु तनुं तनुभृत्सुखेन ।

विश्वेशदङ्महसि यत्सहसा प्रविश्य-

रूपेण तां वितनुतां पदवीं दधाति ॥

(क० ३०)

अर्थ—इस संसार में वाराणसी साक्षात् करुणामयी अलौकिक मूर्ति है, क्योंकि यहाँ प्राणिमात्र सुख पूर्वक देह त्याग कर उसी समय विश्वेश्वर के ज्ञान रूप ज्योति में प्रवेश कर तद्रूप कैवल्य पद को धारण कर लेते हैं।

किं मया वर्ण्यते देवि ह्यविमुक्त फलोदयः ।

पापिनां यत्र मुक्तिः स्यान्मृता नामैक जन्मना ।

अन्यत्र तु कृतं पापं वाराणस्यां विनश्यति ।

अर्थ—हे देवि ! मैं क्या वर्णन करूँ, जो मुक्ति देना ही तुम्हारे दर्शन का फल है, जहाँ मरे हुए पापियों की तुरन्त मुक्ति हो जाती, जैसे कि अन्य क्षेत्र का किया हुआ पाप वाराणसी में विनष्ट हो जाता है ।

येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः ।

क्षेत्रसंन्यासिनां कृते प्रदक्षिणाक्रमवर्णनम् ॥

स्नात्वा देवं समभ्यर्च्य विश्वेशम्बिकया सह ।

मोदादिपञ्चकण्ढुण्ढिं दण्डपाणिञ्च भैरवम् ॥

पूर्ववत्तीरगान्पूज्य दुर्गां सम्पूज्य यत्नतः ।

बहिरावरणन्त्यक्त्वा गणेशानान्तु सप्तकम् ॥

मध्ये प्रदक्षिणङ्कुर्याद्सिवरणयोः कृती ।

सम्मुखीभूय विविवत्पूजयेच्चाऽग्रतः स्थितान् ॥

देवा देव्यश्च फलदाः क्षेत्रपालाः प्रयत्नतः ।
एकरात्रं द्विरात्रम्वा वसेन्मध्ये त्रिरात्रकम् ॥
यत्र श्रद्धा सुमहती वसेत्तत्र न संशयः ।
प्रत्यहं दण्डपाणेस्तु पूजा कार्या प्रयत्नतः ॥
दण्डपाणे पूजनेन सिद्धा भवति नान्यथा ।
दण्डपाणेः ! यक्षपते ! क्षेत्र संन्यासिवल्लभः ॥
पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं सिद्धा मे त्वत्प्रसादतः ।
आगत्य विश्वनाथस्य पूजा कार्या च पूर्ववत् ॥
—काशी रहस्यम्

देव्युवाच

प्रत्यहं दण्डपाणेस्तु पूजा प्रोक्ता मयामघ ।
किमेतद्वद देवेश ! यात्रामुद्दिश्य शङ्कर ! ॥

भगवानुवाच

काशीम्प्राप्य वहिर्नैव गच्छेत्सर्वात्मना क्वचित् ।
मन्मुखात्सम्यगाश्रुत्य क्षेत्रसन्न्यासकृत्तमः ॥
दण्डपाणिः समभवत्तदारभ्य वरानने ! ।
कालान्तरे तदा देवि ! ऋषिभिर्नारदादिभिः ॥
पृष्टोऽहं क्षेत्रजनितपापनाशनमद्भुतम् ।
तदा सुदुर्लभन्देवि ! प्रायश्चित्तम्मया महत् ॥
उपदिष्टम्महल्लिङ्गं प्रदक्षिणमशेषतः ।
तच्छ्रुत्वा पृष्टवान् दण्डपाणिः क्षेत्रपरायणः ॥
तदा मयोपदिष्टोऽसौ महापाशुपतः कृती ।
क्षेत्रयात्रा द्वितीया मे मयोक्ता दण्डपाणये ॥

ततो दण्डपतेः पूजा कर्त्तव्या पूर्त्तिकारिणी ।
पञ्चक्रोशात्मकस्यैव लिङ्गस्य परमात्मनः ॥
प्रदक्षिणात्रयं कृत्वा जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥
क्षेत्रसन्न्यासिनामेवं क्रमः प्रोक्तो मयानघे ॥
प्रदक्षिणाया माहात्म्यं महापापहरं शुभम् ॥
(काशीरहस्य अ० ११)

पञ्चक्रोशस्य यात्रायां शक्तिर्येषां न विद्यते ।
तेषांम्पापं कथं नश्येत् क्षेत्रपापकृतां सताम् ॥
(काशी रहस्य)

काशी के पञ्चक्रोशी करने में जो लोग असमर्थ हैं, उनका पाप किस प्रकार नष्ट हो गया, यदि वह काशी क्षेत्र में पाप करे तो उनका पाप कैसे नष्ट होगा। अर्थात् असमर्थियों को चाहिए कि काशी में रहकर पाप न करें।

सम्यक् पृष्टन्त्वया देवि! महाहङ्कार नाशनम् ।
प्रायश्चित्तं न्यासिनां हि क्षेत्राघौघविनाशनम् ॥
काशी रहस्य

हे देवि! तुमने ठीक प्रश्न किया। यह प्रश्न तुम्हारा अहंकारों का नाश करने वाला है। क्षेत्र के पाप समुदायों को नष्ट करने वाला प्रायश्चित्त है।

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं वाराणस्यां विनश्यति ॥

दूसरे स्थान के किए हुए पाप काशी में नष्ट हो जाते हैं।

अविमुक्तं महाक्षेत्रं सर्वदा जननी यथा ॥
पुत्रस्य जननी लोके सर्वदाहितकारिणी ।
हित कृत्सर्वजन्तूनां काशीहाऽमुत्रसिद्धिदा ॥
(काशी रहस्य अ० ११)

देवा देव्यश्च फलदाः क्षेत्रपालाः प्रयत्नतः।
एकरात्रं द्विरात्रम्वा वसेन्मध्ये त्रिरात्रकम् ॥
यत्र श्रद्धा सुमहती वसेत्तत्र न संशयः।
प्रत्यहं दण्डपाणेस्तु पूजा कार्या प्रयत्नतः ॥
दण्डपाणे पूजनेन सिद्धा भवति नान्यथा।
दण्डपाणेः ! यक्षपते ! क्षेत्र संन्यासिवल्लभः ॥
पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं सिद्धा मे त्वत्प्रसादतः।
आगत्य विश्वनाथस्य पूजा कार्या च पूर्ववत् ॥
—काशी रहस्य

देव्युवाच

प्रत्यहं दण्डपाणेस्तु पूजा प्रोक्ता मयानघ।
किमेतद्वद देवेश ! यात्रामुद्दिश्य शङ्कर ! ॥

भगवानुवाच

काशीम्प्राप्य बहिर्नैव गच्छेत्सर्वात्मना क्वचित्।
मन्मुखात्सम्यगाश्रुत्य क्षेत्रसन्न्यासकृत्तमः ॥
दण्डपाणिः समभवत्तदारभ्य वरानने ! ।
कालान्तरे तदा देवि ! ऋषिभिर्नारदादिभिः ॥
पृष्टोऽहं क्षेत्रजनितपापनाशनमद्भुतम् ।
तदा सुदुर्लभन्देवि ! प्रायश्चित्तम्मया महत् ॥
उपदिष्टम्महल्लिङ्गं प्रदक्षिणमशेषतः ।
तच्छ्रुत्वा पृष्टवान् दण्डपाणिः क्षेत्रपरायणः ॥
तदा मयोपदिष्टोऽसौ महापाशुपतः कृती ।
क्षेत्रयात्रा द्वितीया मे मयोक्ता दण्डपाणये ॥

ततो दण्डपतेः पूजा कर्तव्या पूर्त्तिकारिणी ।
पञ्चक्रोशात्मकस्यैव लिङ्गस्य परमात्मनः ॥
प्रदक्षिणात्रयं कृत्वा जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥
क्षेत्रसन्न्यासिनामेवं क्रमः प्रोक्तो मयानघे ॥
प्रदक्षिणाया माहात्म्यं महापापहरं शुभम् ॥
(काशीरहस्य अ० ११)

पञ्चक्रोशस्य यात्रायां शक्तिर्येषां न विद्यते ।
तेषांम्पापं कथं नश्येत् क्षेत्रपापकृतां सताम् ॥
(काशी रहस्य)

काशी के पञ्चक्रोशी करने में जो लोग असमर्थ हैं, उनका पाप किस प्रकार नष्ट हो गया, यदि वह काशी क्षेत्र में पाप करे तो उनका पाप कैसे नष्ट होगा। अर्थात् असमर्थियों को चाहिए कि काशी में रहकर पाप न करें।

सम्यक् पृष्टन्त्वया देवि ! महाहङ्कार नाशनम् ।
प्रायश्चित्तं न्यासिनां हि क्षेत्राघौघविनाशनम् ॥
काशी रहस्य

हे देवि ! तुमने ठीक प्रश्न किया। यह प्रश्न तुम्हारा अहंकारों का नाश करने वाला है। क्षेत्र के पाप समुदायों को नष्ट करने वाला प्रायश्चित्त है।

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं वाराणस्यां विनश्यति ॥
दूसरे स्थान के किए हुए पाप काशी में नष्ट हो जाते हैं।

अविमुक्तं महाक्षेत्रं सर्वदा जननी यथा ॥
पुत्रस्य जननी लोके सर्वदाहितकारिणी ।
हित कृत्सर्वजन्तूनां काशीहाऽमुत्रसिद्धिदा ॥
(काशी रहस्य अ० ११)

यह काशी क्षेत्र अविमुक्त क्षेत्र काशी है जैसे अपनी माता, क्यों लोक में माता प्रत्येक परिस्थिति में पुत्र का हित करने वाली है, उसी त काशी प्रत्येक जीवों के हित करने वाली है।

पदे-पदे समाक्रान्ता ये विपद्भिरहर्निशम्।
तेषां क्वापि गतिर्नास्तितेषां वाराणसी गतिः॥

(का० खं० अ० ३२)

जो लोग पद-पद पर विपत्ति से आक्रान्त होते हैं अथवा जो पैदल काशी में चलते हैं उनकी सारी विपत्ति दूर हो जाती है। जिन अन्य क्षेत्रों में मुक्ति नहीं होती है उनकी मुक्ति देने वाली काशी है।

पञ्च-क्रोशी

यात्रा जाने के पाँच दिन पहले भगवान् के भक्तों और भाई एवं मित्रों को निमन्त्रित करना चाहिए और विद्वानों को एक दिन प नन्दी श्राद्ध करना चाहिए। यात्रा जाने के एक दिन पहले दण्डपाणि ढुण्ढिराज जी की पूजा करें।

प्रातः स्नान, संध्या और हवन, किञ्चित् दान आदि नित्य कर्म से नि होकर अन्नपूर्णा आदि के दर्शन करने के पश्चात् दण्डपाणि जी को प्र करें। इस सम्बन्ध में उपनिषद् में, स्कन्दपुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, पुराण में, शिव पुराण में एवं लिंग पुराण में विस्तार से वर्णन है।

१. दण्डपाणिभ्यो नमः (म० नं० सी० के० ३६/११ में, मो० ढुण्ढि गली)

प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार हैं—

दण्डपाणो वक्षेत्रपतेः क्षेत्रसंन्यासिवल्लभ।
पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं सिद्धामेत्वाप्रसादतः॥

२. ढुण्ढिराजाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७ में, मो० सा फाटक)

प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार हैं—

ढुण्ढिराज ! गणेशान ! महाविघ्नौघनाशनं ।
पञ्चक्रोशस्य यात्रार्थन्देह्याज्ञां कृपया विभो ॥

३. कालराजेश्वराय नमः (विश्वनाथ जी में)

४. वाराणसीश्वराय नमः विश्वनाथ जी हैं (म० नं० सी० के० ३५/१९. में, विश्वनाथगली)

प्रार्थनामन्त्र इस प्रकार है—

काश्यां प्रजातवाक्काय मनोजनितमुक्तये ।
ज्ञाताज्ञात विमुक्त्यर्थं पातकेभ्योहिताय च ॥

भावार्थ

हे विश्वनाथ भगवान् ! मैं समस्त पापों के प्रायश्चित करने के लिए और पितरों को मुक्ति दिलाने के लिए तथा अपना कल्याण करने के लिए यात्रा करना चाहता हूँ ।

५. पञ्च विनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में, मो० विश्वनाथ सभा)

ज्ञानवापी तीर्थाय नमः (संकल्प लेकर)

ब्राह्मण को सीधा (अन्न), पैसा, फल देकर यात्री मणिकर्णिका घाट जाते हैं ।

६. मणिकर्णिका तीर्थाय नमः (स्नान करके)

पञ्चोपचार से पूजन की सामग्री साथ में लेकर (गङ्गा जल, रोली, चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य, लाचीदाना, अगरबत्ती, द्रव्य (पैसा) चढ़ाने के वस्त्र आदि सामान साथ में लेकर पञ्चाक्षर महामन्त्र को मन से जपते हुए और शिव-शिव महामन्त्र का जाप करते हुए, "हरहर महादेव सम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे" एक स्वर से कीर्तन करते हुए चलते हैं ।

काशी खण्ड के ५७वें अध्याय में ५८ श्लोक से छप्पन विनायक के प्रथमावरण के आठ विनायकों को छोड़कर द्वितीयावरण के लम्बोदर आदि आठ

विनायकों को दाहिने करके इन सात विनायकों का दर्शन-पूजन करते हुए यात्री चलते हैं और प्रत्येक पड़ाव में दण्डपाणि जी की मिट्टी की मूर्ति बना कर पार्थिव (मूर्ति) की पूजा करते हैं।

मणिकर्णिका घाट से दक्षिण में यात्री दर्शन, पूजन, कीर्तन करते हुए शनैः शनैः चलते हैं।

तारकेश्वर का प्रमाण-काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य तथा शिव पुराण तथा लिङ्ग पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

७. तारकेश्वराय नमः (मो० मणिकर्णिका घाट)

तारकेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को इस लोक में सुख का साधन तथा विद्वान्, सज्जन, साधु, सन्त, माहात्माओं का सङ्ग और भक्ति-ज्ञान देकर अन्त में मुक्ति देते हैं।

काशी देवी जी का प्रमाण—वेदों, उपनिषदों, पुराणों और स्मृतियों में विस्तार से मिलता है।

८. काशी देव्यै नमः (म० नं० डी १/६७ में, मो० ललिता घाट)

काशी देवी जी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को जब तक वह जीता है तब तक उस साधक को बुद्धि-योग देकर ज्ञान की साधना कराती है।

प्रश्न—ज्ञान का साधन क्या है ?

उत्तर—वेदान्त का श्रवण, मनन, निदिध्यासन करना ही ज्ञान का साधन है।

प्रश्न—ज्ञान की स्थिति क्या है ?

उत्तर—ध्यान, धारणा, समाधि ही ज्ञान की स्थिति है और अन्त में कैवल्य मोक्ष मिलता है।

शूलटङ्केश्वर का प्रमाण—काशी खण्ड, काशी रहस्य और शिव रहस्य में विस्तार से वर्णित है।

९. शूलटङ्केश्वराय नमः (मो० दशाश्वमेध घाट)

शूलटङ्केश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले और उनके स्नान कराया हुआ चरणामृत जल पीने वाले रोगी के पेट के रोग और शूल सम्बन्धी रोग अच्छे होते हैं। दुःख-कष्ट दरिद्रता तथा चिन्ता दूर होती है। द्रव्य, परिवार, भक्ति की वृद्धि होती है।

क्षेमेश्वर का प्रमाण—काशी खण्ड में, केदार माहात्म्य में, शिव पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

१०. क्षेमेश्वराय नमः (गङ्गातीर में, क्षेमेश्वर घाट)

क्षेमेश्वर के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके सब अपराध को क्षमा करके वे भक्तों को सुख एवं शान्ति तथा भक्ति देते हैं, तथा भक्तों के योग-क्षेम की सब व्यवस्था स्वतः होती है।

केदारेश्वर का प्रमाण—स्कन्द पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, शिवपुराण में, लिङ्ग पुराण में और शिव केदार माहात्म्य में विस्तार से मिलता है।

११. केदारेश्वराय नमः (म० नं० बी० ६/१०२ में, मो० केदार घाट)

केदारेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट रोग और संकट तथा ग्रहों की पीड़ा और गरीबी दूर करते हैं। इसके अतिरिक्त जन-सन्तति, बुद्धि-विद्या तथा आयु की वृद्धि होती है। अन्त में मुक्ति मिलती है।

अस्सी सङ्गमेश्वर का प्रमाण—काशी खण्ड में, काशी रहस्य में, पद्म-पुराण में और लिङ्ग पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

अस्सी-गङ्गा-सङ्गम तीर्थाय नमः

(अस्सी घाट में मार्जन करके गङ्गाजल साथ में लेकर चलें)

१२. अस्सीसङ्गमेश्वराय नमः (म० नं० बी० १/१७४ में, मो० अस्सीघाट)

अस्सीसङ्गमेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों की गरीबी, दुःख कष्ट और रोग को दूर करते हैं और द्रव्य, व्यापार, परिवार एवं नोकरी में पदोन्नति, भक्ति तथा ज्ञान में वृद्धि करते हैं।

अस्सीसङ्गमेश्वर से जगन्नाथ मन्दिर जाने का मार्ग इस प्रकार है— अस्सी सङ्गमेश्वर के दक्षिण बगल में जगन्नाथपुरी धाम में जगन्नाथ जी का मन्दिर है, जिसमें मूर्ति उत्तराभिमुख है।

जगन्नाथ जी का तीर्थस्थली और जगन्नाथ माहात्म्य में, स्कन्द पुराण में, विष्णु पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में एवं वाराह-मत्स्यपुराण में विस्तार से वर्णन है।

१३. जगन्नाथ विष्णवे नमः (मो० अस्सी)

जगन्नाथ जी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को शिव-विष्णु की भक्ति तथा विद्वान्-सज्जन-साधु-माहात्माओं की सङ्गति और भक्ति का साधन देकर सुख देते हैं और धन, सन्तान, भक्ति और ज्ञान-विद्या में वृद्धि करते हैं।

जगन्नाथ जी काशी में क्षेत्र-संन्यास लेकर काशी वास करते हैं और सप्तपुरियों में वह क्षेत्र काशी की जगन्नाथपुरी है।

जगन्नाथपुरी से अस्सी नदी पार करके संकट मोचन होते हुए सुकुलपुरा जाने का प्रमाण नहीं मिलता।

चूंकि अस्सी और वरुणा के मध्य में यात्रा करनी चाहिए।

जगन्नाथ जी से संकट मोचन होकर जो यात्री यात्रा करते हैं उन यात्रियों की यात्रा खण्डित होती है।

अतः अस्सी नदी (नाला) पार नहीं करनी चाहिए।

जगन्नाथ जी से दुर्गा जी जाने का मार्ग इस प्रकार है—

जगन्नाथ जी से उसी मार्ग से सड़क में आते हैं। सड़क के सामने पश्चिम की गली से गोयनका गली, बनकटी हनुमान होते हुए दुर्गाकुण्ड जाते हैं। दुर्गाकुण्ड में स्नान करते हैं।

जो यात्री दुर्गा जी नहीं रुकते हैं, वे मार्जन करते हैं।

दुर्गा कुण्ड के पूर्व दक्षिण के कोने के गणेश जी के मन्दिर में दुर्गा विनायक उत्तराभिमुख हैं।

१४. दुर्गाकुण्ड तीर्थाय नमः

दुर्गा विनायक का प्रमाण---वेदों में, स्कन्द पुराण में, काशी रहस्य में और शिव रहस्य में विस्तार से है।

१५. दुर्गा विनायकाय नमः (म० नं० बी० २७/२ में, मो० दुर्गा जी) दुर्गा विनायक के दर्शन-पूजा जो भक्त करते हैं। उनके दैहिक, दैविक और भौतिक ताप शान्त होते हैं और दुःख, कष्ट, विघ्न दूर होते हैं और सब कार्य निर्विघ्न सफल होते हैं।

दुर्गा शक्ति तीर्थ दुर्गा जी के मन्दिर से सटा बाहर पश्चिम बगल में कुँआ के रूप में है।

दुर्गा जी का प्रमाण---स्कन्द पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, शिव पुराण में, लिङ्ग पुराण में और देवी भागवत में विस्तार से प्राप्त होता है।

१६. दुर्गा देव्यै नमः [म० नं० बी० २७।१ में, मो० दुर्गाकुण्ड]

दुर्गाजी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट; दरिद्रता और रोग दूर करती हैं और धन, परिवार व्यापार तथा बुद्धि और भक्ति ज्ञान में वृद्धि करती हैं। अपुत्री को दुर्गाजी के दर्शन-पूजन और अराधना से पुत्र की प्राप्ति होती है। पुरवासियों की रक्षा होती है।

दुर्गाजी का वार्षिक श्रृङ्गार होता है। उस समय विविध आयोजन होते हैं। गणेश, विष्णु, शिव-शक्ति यज्ञ होते हैं तथा वेद, वेदान्त, गीता और रामायण आदि सम्मेलन होते हैं। दुर्गा जी की मंगलवार, शनिवार, अष्टमी के दिन लाखों यात्री दर्शन करते हैं। दर्शन-पूजन करने के पश्चात् प्रथम विश्राम दुर्गाजी में यात्रा करते हैं। मन्दिर के बाहर कुँआ के आस-पास सफाई कर गंगाजल छिड़ककर आसन लगा कर मध्याह्न संध्या करें। जिन यात्री के कुल में यज्ञोपवीत धारण करने की परम्परा नहीं है वह यात्री तीनों संध्या में पञ्चाक्षर महामन्त्र का जाप करे। साधु; महात्माओं और ब्राह्मणों को यथा शक्ति मधु-मिष्ठान्न-लड्डू, (खीर) पायस आदि दिव्य भोजन कराना चाहिए। भोजन की व्यस्था न हो तो ऋतुफल, लड्डू आदि मिष्ठान्न का जलपान कराकर अपने परिवार सहित भोजन करें। तीन बजे से कथा श्रवण करें।

प्रश्न कथा श्रवण किस पुस्तक से करें ?

उत्तर—वाराणसी माहात्म्य, वाराणसी की महिमा, वाराणसी प्रदक्षिणा करने का फल और वाराणसी प्रदक्षिणा। पहले यात्रा करने वाले यात्रियों को जो-जो फल मिला है उसका वर्णन और वाराणसी में निवास करने का फल का वर्णन करते हैं। अपने पास साधन हो तो विद्वानों को साथ में लेकर यात्रा करनी चाहिए।

कथा श्रवण कराने वाले और कथा सुनने-कराने वाले से अन्नपूर्णा और विश्वनाथ जी प्रसन्न होते हैं। कथा श्रवण करने के पश्चात् स्नान सायं संध्या करके दुर्गा जी का दर्शन करें। दर्शन कर अपने अपने आसन में बैठ कर (गीत) कीर्तन, दुर्गाजी का ध्यान करके और वाराणसीश्वर विश्वनाथ जी का स्मरण करते हुए शयन करें।

दूसरे दिन प्रातः स्नान सन्ध्या आदि नित्य कर्म से निवृत होकर दुर्गा जी का दर्शन करके प्रार्थना करें। प्रार्थना का मन्त्र इस प्रकार है—

जय दुर्गे महादेवि जय काशी निवासिनी।
क्षेत्र विघ्न हरे देवि पुनर्दर्शन नमोस्तु ते ॥

प्रार्थना करके दर्शन, पूजन, कीर्तन करते हुए यात्री चलते हैं। दुर्गाजी के चौराहा से पश्चिम की सड़क से कबीर नगर कालोनी के अन्त में सड़क के किनारे नाला बहता है। उसी नाला के ऊपर सड़क से खोजवाँ, बजरडीहा कुडिया मोहल्ला होते हुए आगे बजरडीहा से सुन्दरपुर जाने वाली सड़क मिलती है। त्रिमुहानी से दाहिने उत्तर की ओर बजरडीहा चौकी से पश्चिम मडुवाडीह जाने वाली पोखरी, बड़ी पटिया, ककरमत्ता, लहरतारा मोहल्ला होते हुए मडुवाडीह रेलवे स्टेशन के दक्षिण गेट से लाइन पार करके उत्तर जाने वाली सड़क से (पहले कारखाना से रास्ता था वह रास्ता बन्द हो गया) आगे त्रिमुहानी से दो रास्ता है।

एक तो डीह मोहल्ला को गली से मडुवाडीह थाना जाते हैं दूसरा तिराहा से पश्चिम जाने वाली सड़क से आगे कारखाने के फाटक से उत्तर मडुवाडीह थाना और शालटङ्क विनायक जाने वाली सड़क

दाहिने तरफ गणेश मन्दिर में, गणेशजी की मूर्ति उत्तराभिमुख है जो शालटङ्क विनायक हैं। शालटङ्क विनायक तीर्थ मन्दिर के उत्तर बगल में विशाल कुण्ड (तालाब) है। शालटङ्क गणेश-शक्ति तीर्थ पूर्व बगल में कुँआ के रूप में है। इसका ठंढा-मीठा जल है।

शालटङ्क विनायक जी का स्कन्दपुराण में, ब्रह्म वैवर्त पुराण में, शिव रहस्य में और काशी दर्शन में विस्तार से वर्णन है।

१७. शालटङ्क विनायकाय नमः [मो० मडुवाडीह थाना के दक्षिण बगल में]।

शालटङ्क विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट और संकट तथा गरीबी एवं चिन्ता दूर करते हैं। इनकी पूजा आराधना से परिवार, व्यापार, द्रव्य तथा नोकरी में पदोन्नति होती है तथा सुमंगल की वृद्धि होती है। जो व्यक्ति मन्दिर का जीर्णोद्धार करके इनका दर्शन करता है उसके सब कार्य निर्विघ्न सफल होते हैं। मुकदमा, राजनीतिक कार्य अर्थात् प्रधान, सभापति, मन्त्री आदि जैसे पदों की प्राप्ति और नेतागिरी में सफलता प्राप्त होती है।

दर्शन-पूजन के पश्चात् मन्दिर के बाहर पश्चिम मुँह करके भीमचण्डी देव्यै नमः कहते हुए अक्षत छोड़ें।

यह द्वितीय पड़ाव है। यहाँ यात्री मन्दिर के पास में विश्राम करते हैं। इस यात्रा का आधा मार्ग पूर्ण होता है। एक रात्रि के दर्शन यात्रा में यहाँ यात्री विश्राम करते हैं।

मध्याह्न संध्या करने के पश्चात् साधु-महात्मा और संन्यासियों को जलपान या भोजन कराकरके अपने परिवार के साथ भोजन करें। तीन बजे से कथा श्रवण करें। सत्सङ्ग के पश्चात् यात्री सायं सन्ध्या करके मन्दिर में दर्शन करने जाते हैं। दर्शन के पश्चात् अपने-अपने आसन में बैठकर कीर्तन और वाराणसीश्वर विश्वनाथ जी का ध्यान करते हुये रात्रि में शयन करते हैं। प्रातः स्नान संन्ध्या आदि से निवृत्त होकर शालटङ्क विनायक के दर्शन और प्रार्थना करके दर्शन-पूजन-कीर्तन करते हुए शनैः-शनैः चलते हैं। मडुवाडीह से आदि केशव तक का मार्ग लगभग सात किलोमीटर है।

खालटङ्कविनायक से उत्तर मडुवाडीह चौराहा लहरतारा होते हुए लहरतारा में सड़क से सटा हुआ पश्चिम बगल के शंकरजी के मन्दिर में विश्वामित्रेश्वर हैं। मन्दिर के पश्चिम बगल में विशालकुण्ड (पोखरा) है यही विश्वामित्रेश्वर तीर्थ है।

विश्वामित्रेश्वर का काशी खण्ड, शिवपुराण, शिवरहस्य में विस्तार से वर्णन है।

१८. विश्वामित्रेश्वराय नमः [मो०—लहरतारा]

विश्वामित्रेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के रोग-दुःख, कष्ट और दरिद्रता को दूर करते हैं। द्रव्य-व्यापार, परिवार और विद्या, भक्ति, ज्ञान आदि में वृद्धि होती है। यहाँ पहले यज्ञ, गीता, भागवत, वेद-वेदान्त-पुराण आदि सम्मेलन होते थे। दर्शन-पूजन करने के पश्चात् पश्चिम मुँह करके सोमनाथाय नमः उच्चारण करते हुए अक्षत छोड़ें।

विश्वामित्रेश्वर से उत्तर सड़क से वाराणसी स्टेशन के पश्चिम रेलवे गेट से लाइन पार करके उत्तर कैन्टूमेण्ट जाने वाली सड़क से जोनपुर जाने वाली रेलवे लाइन के उत्तर बगल में सड़क के पश्चिम पटरी में पाशपाणि तीर्थ कुआँ के बगल में तीन मन्दिर के दर्शन होते हैं। सब से उत्तर बगल शंकर जी के मन्दिर के पश्चिम दक्षिण के कोने में कूष्माण्ड विनायक पूर्वाभिमुख हैं।

कूष्माण्ड विनायक का प्रमाण काशीखण्ड, काशी-दर्शन और शिवरहस्य में प्राप्त होता है।

२०. कूष्माण्ड विनायकाय नमः (मो० कैण्टूमेन्ट एरिया में सदर बाजार)

कूष्माण्ड विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के विघ्न संकट को दूर करते हैं। पुरवासियों का कल्याण करते हैं। जो मन्दिरों का जीर्णोद्धार करते हैं वे व्यक्ति सब जगह विजयी होते हैं।

स्कन्द पुराण में पञ्चक्रोशी यात्रा करते समय पाशपाणि विनायक में रात्रि में विश्राम करना चाहिए, ऐसा वर्णन पूर्व में आया है वह वर्णन वाराणसी

प्रदक्षिणा यात्रा के लिए लिखा गया है। पहले लोग पाशपाणि में रात्रि में विश्राम करते थे, जब से मिलिट्री छावनी बनी तभी से यात्री चौकाघाट में विश्राम करने लगें हैं। यहाँ पहले विद्वानों का चतुर्दशी के दिन शास्त्रार्थ होता था।

कूष्माण्ड विनायक से पश्चिम-उत्तर के कोने में जो मन्दिर का दर्शन होता है वह चण्डी देवी का मन्दिर है उसमें मुण्ड विनायक पश्चिमाभिमुख हैं। मुण्ड विनायक, चण्डी देवी और चण्डेश्वर तीर्थ चण्डेश्वर के मन्दिर के बगल में कुआँ के रूप हैं। मुण्ड विनायक का प्रमाण काशी खण्ड में, शिव रहस्य में और काशी-दर्शन में विस्तार से प्राप्त होता है।

२१. मुण्ड विनायकाय नमः (मो० कैन्टूमेन्ट एरिया शक्ति मार्ग में)।

मुण्ड विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, विघ्न, कष्ट दूर करते हैं। द्रव्य, व्यापार में वृद्धि, नौकरी में पदोन्नति और भक्ति में भी वृद्धि करते हैं।

चण्डी देवी का—स्कन्द पुराण, शिव पुराण, लिङ्ग पुराण, ब्रह्म पुराण तथा उपनन्दी पुराण में विस्तार से वर्णन है।

२२. चण्डी देव्यै नमः (शक्तिमार्ग कैन्टूमेन्ट एरिया में)।

चण्डी देवी अपने दर्शन पूजन करने वाले भक्तों के प्रचण्ड संकट को दूर करतीं और आपत्ति आदि से बचाती हैं। धन ऐश्वर्य प्राप्त कराकर भक्तों को सुख-सुविधा का अवसर दिलाती हैं। इनके दर्शन करने वाले व्यक्तियों को भूत, प्रेत, डाकिनी-शाकिनी शान्त होती हैं। जो भक्त मन्दिर का जीर्णोद्धार करके इनका दर्शन करते हैं उनको दुःख नहीं होता तथा उनके शत्रु परास्त होते हैं।

चण्डी देवी के पश्चिम बगल में चण्डेश्वर हैं। चण्डेश्वर का प्रमाण—शिव रहस्य, काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव पुराण, लिङ्ग पुराण तथा उपनन्दी पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

२३. चण्डेश्वराय नमः (वर्षित मार्ग)

चण्डेश्वर के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनको इस लोक में वैभव एवं सुख का साधन प्राप्त होकर सुख और भक्ति तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है और अन्त में मुक्ति लाभ होती है।

चण्डेश्वर से उत्तर की सड़क से टेलीविजन स्तम्भ के बगल से पूर्व नदेश्वर मोहल्ला में सड़क के उत्तर बगल में काशीराज विभूति नारायण सिंह जी के (नदेसरी कोठी) महल के सामने शंकर जी के मन्दिर में नन्दीश्वर हैं।

नन्दीश्वर का प्रमाण—स्कन्द पुराण, शिव पुराण, लिङ्गपुराण, उपनन्दी पुराण, काशी रहस्य और शिव रहस्य में विस्तार से मिलता है।

२४. नन्दीश्वराय नमः (म० नं० एस० १८/२४० में, मो० नदेसर)

नन्दीश्वर के दर्शन-पूजन करनेवाले व्यक्ति को ऐश्वर्य और स्थिर लक्ष्मी, बुद्धि योग और जगत में मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

नन्दीश्वर से सटी हुई नन्दी देवी हैं। नन्दीश्वर देवी जी का प्रमाण—स्कन्द पुराण में, शिव पुराण में, नन्दी उप पुराण में, काशी रहस्य में, शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

२५. नन्दीश्वरी देव्यै नमः (म० नं० एस० १८/२४० में, मो० नदेसर)

नन्दीश्वरी देवी जी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, संकट और रोग तथा भक्तों के दुर्गुण दूर करती हैं तथा ऐश्वर्य, आज्ञाकारी पुत्र दिलाकर भक्त को सुख दिलाती हैं साथ ही व्यापार, द्रव्य, भक्ति आदि की भी वृद्धि करती हैं।

वेदेश्वर का काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य, लिङ्ग पुराण और उप पुराण आदि में विस्तार से वर्णन है।

२६. वेदेश्वराय नमः (म० नं० एस० १८/२४० में, मो० नदेसर)

वेदेश्वर के जो भक्त दर्शन-पूजन करते हैं उनको बुद्धियोग और ब्रह्म विद्या की प्राप्ति होती है। उन भक्तों के पुत्र और पौत्र विद्वान् होते हैं उनको सब जगह मान, प्रतिष्ठा प्राप्त होती हैं।

नन्दीश्वर में पहले गणेश, विष्णु और रुद्र, शक्ति आदि बड़े-बड़े यज्ञ हुआ करते थे। वेद-वेदान्त, उपनिषद्, पुराण, गीता, भागवत् एवं रामायण आदि सम्मेलन होते थे।

वेदेश्वर से नदेश्वर सड़क में सड़क से पूर्व, चौराहा से उत्तर की ओर जाने वाली सड़क से पूर्व चौकाघाट पुल के नीचे से चौकाघाट सड़क से पूर्व बगल में धूपचण्डी त्रिमुहानी से उत्तर बगल के हनुमान मन्दिर में, हनुमान जी से सटा हुआ दक्षिण बगल में विकटद्विज विनायक पूर्वाभिमुख हैं।

विकटद्विज विनायक का प्रमाण—काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य, काशी-दर्शन यात्रा में विस्तार से प्राप्त होता है।

२७. विकटद्विज विनायकाय नमः (मो० चौकाघाट)।

विकटद्विज विनायक अपने दर्शन-पूजन करनेवाले भक्तों के विघ्न, दुःख कष्ट और संकट दूर करते हैं। उन भक्तों को बुद्धि, विद्या, धन की प्राप्ति होती है तथा सब कार्य सफल होते हैं। भक्ति, ज्ञान, व्यापार, परिवार की वृद्धि होती है। किसी भी शुभकार्य करने जाने के एक दिन पहले जो व्यक्ति देशी घी में बना मिष्ठान्न खोवा, बेसन और सूजी के लड्डू, दूध आदि अर्पण करते हैं उनके सब कार्य सफल होते हैं। विकटद्विज विनायक के बाहर उत्तर मुख होकर पञ्च पाण्डवेश्वराय नमः उच्चारण करते हुए अक्षत छोड़ें।

विकटद्विज विनायक से वरुणा के किनारे से आदि केशव जाने का प्रमाण नहीं मिलता। [सन् १९७२ से सन् १९७५ तक मैं भी अपनी भक्त मण्डलियों के साथ चौका घाट से वरुणा तट से यात्रा करता था। पैर फिसलने के कारण तीन बार वरुणा के जल में गिर पड़ा और कपड़े भींग गये। मैं शास्त्रों के प्रमाण को ढूंढ़ने के लिए कई पुस्तकालयों में गया, किन्तु चौका घाट से वरुणा किनारे जाने का कोई प्रमाण नहीं मिला।]

चौका घाट से पूर्व जी० टी० रोड सड़क से बकरिया कुण्ड के उत्तर बगल से वाराणसी सिटी रेलवे स्टेशन के पश्चिम रेलवे गेट से उत्तर बड़ी लाइन के नीचे से पूर्व राजघाट जाने वाली गली से राजघाट रेलवे गेट से रेलवे लाइन के पटरी से और बाद में सड़क से जाते हैं।

उत्तर कोनियाघाट जाने वाली सड़क से बड़ी लाइन के नीचे से दाहिनी तरफ राधा कृष्ण के मन्दिर में कुन्तेश्वर का दर्शन करके, रामानन्द आश्रम, तोतादरी मठ होते हुए, सड़क से बसन्त कालेज में, वैंक के पूर्व बगल में, सड़क के उत्तर पटरी में, गणेश जी के मन्दिर में, राजपुत्र विनायक पूर्वाभिमुख हैं।

राजपुत्र विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण में, उपनिषद् में, लिङ्ग पुराण में, काशी रहस्य में विस्तार से है।

राजपुत्र विनायकाय नमः।

(मं० नं० ए० ३७/४८ में, मो० बसन्त कालेज)

राजपुत्र विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के अनेक प्रकार के रोग, कष्ट, विघ्न तथा आपत्ति दूर करते हैं। इसके साथ ही भक्तों को कष्ट देने वाले शत्रु परास्त हो जाते हैं तथा द्रव्य, परिवार, मित्र, भक्ति आदि में वृद्धि होती है।

राजपुत्र विनायक के बाहर उत्तर मुख होकर वृषभध्वजेश्वराय नमः उच्चारण करते हुए अक्षत छोड़ें।

पहले यहाँ बड़े-बड़े यज्ञ होते थे और वेद वेदान्त, पुराण तथा ... और रामायण आदि सम्मेलन होते थे।

(इस भूमि पर पहले राज महल था) राजपुत्र विनायक से पूर्व बगल में चौमुहानी पर जो विशाल मन्दिर का दर्शन होता है वही आदि केशव विष्णु जी का मन्दिर है। आदि केशव का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, विष्णु पुराण में और शिव पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

२९. आदि केशव विष्णवे नमः (मो० आदि केशव)।

आदि केशव विष्णु जी के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट, दरिद्रता, रोग एवं अज्ञान दूर होते हैं। इनके दर्शन से सुखपूर्वक काशीवास होता है और विद्या, परिवार, द्रव्य और भक्ति की वृद्धि होती है।

[आदि केशव से मंगला गौरी तक ओंकारेश्वर अन्तर्गृही दर्शन यात्रा लिखा गया है]।

वरुणा-गङ्गा सङ्गमेश्वर, ज्ञान केशव और केशवादित्य सूर्य आदि का दर्शन करके आदि केशव से दक्षिण उसी मार्ग से चलें, यहाँ से जो यात्री चलने में असमर्थ होते हैं वह नाव में जाते हैं। उसी मार्ग से बसन्त कालेज होते हुए जी० टी० रोड से पहले चाय, पान आदि की दुकान के बीच से पगडण्डी रास्ता गङ्गा किनारे की ओर गयी है उसी मार्ग से सब यात्री गङ्गा किनारे से प्रह्लाद घाट जाते हैं।

प्रह्लाद घाट के ऊपर दाहिनी तरफ प्रह्लादेश्वर के मन्दिर के बगल के विष्णु मन्दिर में प्रह्लाद केशव पूर्वाभिमुख हैं।

प्रह्लाद केशव विष्णु जी का काशी खण्ड में, विष्णु पुराण में, बाराह पुराण में और काशी दर्शन में विस्तार से वर्णन है।

३० प्रह्लाद केशवाय नमः [म० नं० ए १०/८० में, मो० प्रह्लादघाट]

प्रह्लाद केशव के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके ऐश्वर्य पुत्र, मित्र और भक्ति तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही द्रव्य-विद्या और परिवार में भी वृद्धि होती है।

३१ प्रणव विनायकाय नमः।

त्रिलोचन घाट में हिरण्य गर्भेश्वर के बगल में प्रणव विनायक हैं। प्रणव विनायक के दर्शन करें।

बद्रीनारायण घाट के ऊपर विष्णु मन्दिर में बद्रीनारायण पूर्वाभिमुख हैं। बद्रीनारायण जी का स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, शिव रहस्य एवं तीर्थ-स्थली और केदार माहात्म्य में विस्तार से वर्णन है।

३२ बद्रीनारायण विष्णवे नमः [म० नं० ए० १/७२ में।]

बद्रीनारायण जी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख-दरिद्रता, संकट दूर करते हैं। इसके साथ ही शिव और विष्णु जी की भक्ति मिलती है।

परिवार और धन की वृद्धि होती है। जिन मनुष्यों को बद्रीनारायण जाने की वासना उत्पन्न होती है वह व्यक्ति बद्रीनारायण जी का दर्शन-पूजन

करके, कीर्तन करके प्रसाद पाते हैं। इससे उन यात्रियों के बद्रीनारायण जाने की वासना समाप्त होती है।

बद्रीनारायण जी से सटा हुआ उत्तर बगल के शंकर जी के मन्दिर में नरनारायणेश्वर हैं। नरनारायणेश्वर का प्रमाण—स्कन्दपुराण में, लिङ्ग पुराण में, मत्स्य पुराण और शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

३३ नरनारायणेश्वराय नमः।

[मं० नं० ए० १/७२ में, मो० बद्रीनारायण घाट]

नरनारायणेश्वर अपने-दर्शन पूजन करने वाले भक्तों को शिव और विष्णु की भक्ति सुलभ कराते हैं। भक्तों की बुद्धि में वृद्धि होती है और दुःख, कष्ट, विघ्न दूर होते हैं। धन-धान्य में वृद्धि, परिवार सुबुद्ध और सुखी होता है।

बद्रीनारायण से दक्षिण, रामघाट के शंकरजी के मन्दिर में वीररामेश्वर हैं। वीररामेश्वर का प्रमाण—स्कन्द पुराण में, काशी रहस्य में, शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

३४ वीररामेश्वराय नमः [मं. नं. के० २४/१०, रामघाट में]

वीररामेश्वर के जो भक्त दर्शन-पूजन करते हैं उनके दुःख, दरिद्रता कष्ट दूर होते हैं तथा वीर्यमान, बलवान, तेजस्वी और बुद्धिमान होते हैं साथ ही शिव और राम जी की भक्ति प्राप्त होती है।

वीररामेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड में, शिव रहस्य में, काशी दर्शन में और शिव पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

वीर रामेश्वराय नमः (मो० संकटा घाट)

३५. मणिकर्णिका तीर्थाय नमः

यहाँ स्नान करके पश्चिम ब्रह्मनाल, नीलकण्ठ और ज्ञानवापी होते हुए ज्ञानवापी के उत्तर फाटक से ढुण्ढिराज गली में, दण्डपाणि के मन्दिर में दण्डपाणीश्वर जी हैं।

३६. दण्डपाणीश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३६/११ में)

३७. दण्डपाणी भैरवाय नमः (म० नं० सी० के० ३६/११ में, मो० ढुण्ढिराज गली)

३८. साक्षीविनायकाय नमः (म० नं० डी० १०/७ में)

ढुण्ढिराज जी और अन्नपूर्णा जी के दर्शन करके विश्वनाथ जी के पूर्व, उत्तर के कोने में, वाराणसी देवी के मन्दिर में, वाराणसी देवी जी पूर्वाभिमुख हैं।

वाराणसी देवी जी का प्रमाण—स्कन्द पुराण में, पद्म पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में और अन्य पुराणों में भी मिलता है।

३९. वाराणसी देव्यै नमः (म० नं० सी० के ३५/१९)

वाराणसी देवी जी अपने दर्शन, पूजन और आराधना करने वाले भक्तों के दुःख, संकट, विघ्न, रोग, ग्रह-ग्रसित पीड़ा आदि को दूर करती हैं।

इस लोक में धन, पुत्र आदि सुख के साधन देकर सुखी बनाती हैं और अन्त में मोक्ष की भिक्षा देती हैं।

४०. कालराजेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९)

४१. वाराणसीश्वराय नमः (म० नं० सी० के ३५/१९ में, विश्वनाथ जी हैं)

प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार है—

पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं यथा शक्त्यामया कृता।
नूनंसम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाद् उमापते॥

ज्ञानवापी से संकल्प छोड़कर, यथा-शक्ति दक्षिणा (अन्न वस्त्र) देकर संकल्प बोलने वाले ब्राह्मणों के अभाव में स्वयं संकल्प लेकर यात्रा करें।

इस प्रकार क्षेत्र संन्यासियों की पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा पूर्ण हुयी।

वाराणसी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा का फल

इस यात्रा से पापों का प्रायश्चित्त होता है। पुनः पाप में वृद्धि नहीं हो पाती और पाप कर्म को छोड़कर निष्काम सेवा और सत्कर्म में प्रवृत्ति बढ़ती है। रोग नष्ट होते हैं, यात्रा से कठिन से कठिन कार्य भी सिद्ध होते हैं, शत्रु मित्र बनते हैं। यात्रियों के पितर और इष्ट देव प्रसन्न होते हैं तथा

ग्रह शांत होते हैं। यात्रियों के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं और विद्या, भक्ति-ज्ञान की प्राप्ति होती है।

× × ×

यात्री वाराणसी के ईश्वर वाराणसीश्वर विश्वनाथ भगवान् का स्मरण करते हुए अपने-अपने घर जाते हैं।

त्वदीयं वस्तु विश्वेश ! तुभ्यमेव समर्पितम् ।
हरि ॐ तत्सत्शिवार्पणमस्तु । हर-हर महादेव ॥

पितरों के कल्याण के लिए, माता, पिता, प्रपितामह, आदि पितरों के मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से यात्री स्वयं यात्रा करते हैं और जो यात्री स्वयं यात्रा नहीं करते हैं वे ब्राह्मणों को वरण करके यात्रा करने के लिये भेजते हैं। इसके साथ ही मनोरथ पूर्ण करने के लिए, कठिन-से-कठिन कार्य सिद्ध करने के लिए यात्री भगवान् से मनौती मान करके काशी की सम्पूर्ण यात्रा करते हैं अतः उनके सभी कार्य सफल होते हैं।

नवगौरी प्रदक्षिणा-दर्शन-यात्रा

नव गौरी दर्शन-यात्रा

अतः परं प्रवक्ष्यामि गौरीयात्रामनुत्तमाम् ।
शुक्लपक्षे तृतीयायां या यात्राविश्वगृद्धिदा ॥
गोप्रेक्षतीर्थे सुस्नाय मुखनिर्मालिकां व्रजेत् ।
ज्येष्ठावाप्यां नरः स्नात्वा ज्येष्ठां गौरीं समर्चयेत् ॥
सौभाग्य गौरी सम्पूज्या ज्ञानवाप्यांकृतोदकैः ।
ततः शृङ्गार गौरीञ्च तत्रैव च कृतोदकः ॥
स्नात्वा विशालगांयां विशालाक्षीं ततो व्रजेत् ।
सुस्नातो ललितातीर्थे ललितामर्चयेत्ततः ॥
स्नात्वाभवानीतीर्थे भवानीं परिपूजयेत् ।
मंगलाचततोभ्यर्च्यांविन्दुतीर्थे कृतोदकैः ॥
ततो गच्छेन्महालक्ष्मीं स्थिरलक्ष्मीसमृद्धये ।
इमां यात्रां नरः कृत्वाक्षेत्रेऽस्मिन्मुक्तिजन्मनि ॥
न दुःखैरभिभूयेत इहामुत्रापि कुत्रचित् ।

(स्कन्द पुराण, काशी खण्ड अ० १००)

मुक्ति को जन्म देने वाली काशी पुरी में जो भक्त महागौरी की प्रदक्षिणा, दर्शन-यात्रा करता है और नव गौरी दर्शन-यात्रा करने वाला व्यक्ति इस लोक में और परलोक में कहीं भी दुःख से पीड़ित नहीं होता और वह सुख-पूर्वक रहता है। एक दिन पहले गणेश जी का पूजन करके चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि से नवगौरी दर्शन-यात्रा प्रारम्भ करना चाहिए।

मुखनिर्मालिका गोप्रेक्ष तीर्थाय नमः ।

यह तीर्थ पंचगंगा के उत्तर बगल में है । गायघाट में स्नान करके त्रिपुण्ड, टीका तथा ऊर्ध्वपुण्ड्र सम्प्रदाय के अनुसार रुद्राक्ष की माला धारण करके गंगाजल पंचोपचार से पूजन की सामग्री तथा जल पात्र साथ में लेकर "हरहर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे" सबको साथ मिलकर एक स्वर से कीर्तन करते हुए चलना चाहिए । संकल्प लेकर नव गौरी दर्शन यात्रा करें । घाट के ऊपर हनुमान जी और गौरी के मन्दिर में गौरी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है ।

मुखनिर्मालिका गौरी का स्कन्द पुराण में, शिव रहस्य में, काशी दर्शन में विस्तार से वर्णन है ।

मुखनिर्मालिका गौरी देव्यै नमः

(म० नं० के० ३/४२ में, मो० गायघाट)

मुख निर्मालिका गौरी का दर्शन पूजा करने वाले व्यक्ति के दुःख, कष्ट और संकट तथा विघ्न दूर होते हैं और द्रव्य, परिवार, विद्या की वृद्धि होती है और पुरवासियों के दुःख दूर होते हैं, यहाँ शिव, शक्ति, विष्णु आदि यज्ञ होते हैं । वेद-वेदान्त, रामायण आदि के पहले सम्मेलन होते थे ।

मुखनिर्मालिका गौरी से ज्येष्ठा गौरी जाने का मार्ग इस प्रकार है—मुखनिर्मालिका गौरी से पश्चिम भैरव मोहल्ला में काल भैरवके दर्शन करके, काल भैरव से पश्चिम बुलानाला, सप्तसागर, भूत भैरव मोहल्ला होते हुए ज्येष्ठा गौरी दरवाजे के अन्दर सामने दिव्य देवी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है ।

नमस्कृत्य ज्येष्ठवापी परिष्कृता ।
सौभाग्य भाजनं भूया घोषा सौभाग्य भागपि ॥

(काशी खण्ड अ० ६२)

अर्थ—

ज्येष्ठा गौरी तीर्थाय नमः (बगल में कुआँ के रूप में है, दूसरी पञ्चगङ्गा में)

ज्येष्ठा गौरी का प्रमाण स्कन्द पुराण में, देवी भागवत् में, पद्म पुराण में और मत्स्यपुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

ज्येष्ठा गौरी देव्यै नमः (म० नं० के० ६३/२४ में, मो० भूतभैरव)

दर्शन करने वाले व्यक्ति के दुःख, संकट और रोग दूर होते हैं। विद्या. द्रव्य, परिवार तथा भक्ति, ज्ञान में वृद्धि होती है। ज्येष्ठा गौरी में गणेश, शिव-शक्ति एवं विष्णु आदि यज्ञ होते हैं। पहले वेद, पुराण, उपनिषद् एवं रामायण आदि सम्मेलन होते थे। इनके दर्शन से निर्विघ्न कार्य सफल होते हैं। ज्येष्ठा गौरी से सौभाग्य गौरी जाने का मार्ग इस प्रकार है—ज्येष्ठा गौरी से दक्षिण कर्णघण्टा, चौक, बांसफाटक होते हुए ज्येष्ठा गौरी के मन्दिर जायें वहाँ दरवाजे के अन्दर देवी की प्रतिमा पश्चिमाभिमुख है।

सौभाग्य गौरी तीर्थाय नमः (स्नान करके ज्ञानवापी में)

सौभाग्य गौरी का काशी खण्ड में, काशी रहस्य में एवं शिव रहस्य में विस्तार से वर्णन है।

सौभाग्य गौरी देव्यै नमः (म० नं० सी० के० ३८/८ में, मो० बांसफाटक)

सौभाग्य गौरी के दर्शन-पूजन करने वाली स्त्री का सौभाग्य अखण्ड रहता है और पुरुष को स्त्री वियोग नहीं होता तथा निर्विघ्न सब कार्य सफल होते हैं। लक्ष्मी, धन, सन्तति तथा बुद्धि की वृद्धि होती है।

सौभाग्य गौरी से सटे हुए दक्षिण बगल में जो दिव्य गौरी की मूर्ति है और जो पश्चिमाभिमुख है (दूसरी विश्वनाथ जी में है) वह श्रृंगार गौरी तीर्थ ज्ञानवापी में है। श्रृङ्गार गौरी का स्कन्द पुराण में, शिव पुराण में और ब्रह्मवैवर्त पुराण में विस्तार से वर्णन है।

श्रृङ्गार गौरी देव्यै नमः (म० नं०सी०के० ३।५८ में, मो० बांसफाटक)

श्रृङ्गार गौरी के दर्शन से निर्विघ्न कार्य सिद्ध होते हैं। अप्राप्त वस्तु प्राप्त होती है। धन-परिवार की वृद्धि होती है। श्रृङ्गार गौरी में शिव-शक्ति, विष्णु आदि यज्ञ होते हैं। कीर्तन-अखण्ड कीर्तन होते हैं। पहले वेद,

वेदान्त, पुराण और श्रुति-स्मृति रामायण आदि सम्मेलन होते थे। शृंगार गौरी से पूर्व विशालाक्षी गौरी हैं। विशाल तीर्थाय नमः (गंगा जी में मीर-घाट)। दरवाजे के अन्दर सामने जो दिव्य देवी की मूर्ति है और जो उत्तराभिमुख है। वह विशालाक्षी की मूर्ति है। विशालाक्षी गौरी का प्रमाण वेद, स्कन्दपुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण और उप पुराणमें विस्तार से वर्णन है।

विशालाक्षी गौरी देव्यै नमः (म० नं० डी० ३/८५ में, मो० मीरघाट)

विशालाक्षी गौरी के दर्शन-पूजन से भयंकर संकट, रोग, कष्ट दूर होते हैं और विद्या, लक्ष्मी, भक्ति एवं ज्ञान की वृद्धि होती है और अन्त में मुक्ति की प्राप्ति होती है। यहाँ शिव, शक्ति, विष्णु आदि यज्ञ होते हैं और पहले यहाँ वेद, पुराण, वेदान्त तथा रामायण आदि के सम्मेलन होते थे। विशालाक्षी गौरी से पूर्व ललिता गौरी जाने का मार्ग इस प्रकार है।

ललिता घाट में स्नान करके आगे के फाटक के अन्दर जायँ जहाँ काशी देवी के बगल में गौरी की दिव्य मूर्ति पूर्वाभिमुख है। गौरी को नमस्कार करें। ललिता गौरी का प्रमाण स्कन्द पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, देवी भागवत् पुराण में और शिव पुराण में विस्तार से मिलता है।

ललिता गौरी तीर्थाय नमः(म० नं० डी० १/६७ में, मो०ललिता घाट)
(स्नान करके, ललिता गौरी देव्यै नमः)

ललिता गौरी के दर्शन करने वाले भक्तों को सर्वदा-सदा सुख मिलता है। यह गौरी महालक्ष्मी स्वरूपा हैं। इनके दर्शन से सब मनोरथ पूर्ण होते हैं और बुद्धि, द्रव्य, परिवार तथा भक्ति की वृद्धि होती है।

ललिता गौरी से भवानी गौरी जाने का मार्ग यह है--ललिता गौरी से पश्चिम मीरघाट अन्नपूर्णा गली में, राम मन्दिर के घेरे में इनकी मूर्ति उत्तराभिमुख हैं। भवानी तीर्थाय नमः (बगल में कुँआ के रूप में है, दूसरा तीर्थ मणिकर्णिका घाट में है)। दूसरी भवानी आदि विश्वनाथ जी में पूर्वाभिमुख हैं। भवानी गौरी जी का प्रमाण वेदों में, पुराणों में, स्कन्द पुराण में ब्रह्मवैवर्त पुराण में, शिव पुराण में, उप नन्दी पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

भवानी गौरी देव्यै नमः (म० नं० डी० १९/१७ में, मो० अन्नपूर्णा गली)

भवानी गौरी के दर्शन-पूजन और नमस्कार करने वाले भक्तों को विद्या, धन, अन्न और भक्ति-ज्ञान की प्राप्ति होती है। निर्विघ्न सुख पूर्वक काशी वास तथा अन्त में ये मोक्ष की भिक्षा देती हैं। इतना ही नहीं, भवानी ब्रह्मलोक और परलोक दोनों में सुख देती हैं। भवानी के मन्दिर में विष्णु, शिव, शक्ति आदि यज्ञ और कीर्तन होते हैं। पहले वेद, पुराण, उपनिषद् और रामायण आदि सम्मेलन होते थे। भवानी गौरी का विशाल मन्दिर और कुण्ड पहले था। भवानी गौरी का मन्दिर लुप्त होने के पश्चात् यहाँ स्थापित किया गया। शिवप्रसाद पाण्डेय जी "काशी दर्शन" नामक पुस्तक में साठ पृष्ठों में इनका वर्णन करते हैं। भवानी जी की महिमा का विस्तृत वर्णन चारों वेदों में, अठारहो पुराणों में, उपपुराण में और श्रुति-स्मृति में प्राप्त होता है।

"भवानीशङ्कर आदि विश्वनाथ जी के नाम से प्रसिद्ध हैं। भवानी गौरी देव्यै नमः (म० नं० सी० के ३५/३४, मो० बांसफाटक)

दूसरी भवानी गौरी जी का मन्दिर [डी० १९/१७, मो० अन्नपूर्णा गली में है।] भवानी जी के दर्शन करने से सभी दु.ख समूल नष्ट हो जाते हैं। मनुष्य आरोग्य हो जाता है। समस्त पाप शान्त हो जाते हैं। सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। शंकर (शंकटेश्वर) के दर्शन से सब कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो जाते हैं और द्रव्य, सन्तान, व्यापार, सुख और शान्ति, मित्र एवं भक्ति-ज्ञान की वृद्धि होती है।

भवानी गौरी से मंगला गौरी जाने का मार्ग है। भवानी गौरी से पूर्व मणिकर्णिका घाट, पंचगंगा होते हुए मंगला गौरी में जायें। मंगला गौरी तीर्थाय नमः (स्नान करके मंगला गौरी घाट में) मंगला गौरी का प्रमाण—वेदों में, स्कन्द पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, शिव पुराण में,

पद्म पुराण में और उपनिषदों में विस्तार से प्राप्त होता है। मंगला गौरी की दिव्य मूर्ति पूर्वाभिमुख है।

मंगला गौरी देव्यै नमः (म० नं० के० २४/३४ में, मो० मंगला गौरी)

मंगला गौरी का दर्शन अमोघ है। इनके दर्शन से शीघ्र मनोरथ पूर्ण होते हैं। गौरी अपने भक्तों के ऐश्वर्य और सुख देती हैं तथा रोग, चिन्ता, अज्ञान को दूर करती हैं। इनके दर्शन से भूत-प्रेत, डाकिनी-साकिनी आदि के प्रकोप शान्त होते हैं। यहाँ गणेश, शिव; शक्ति, विष्णु आदि यज्ञ होते हैं। पहले वेद, वेदान्त, पुराण, रामायण आदि सम्मेलन होते थे।

मंगला गौरी से पश्चिम, चौक, गोदौलिया, लक्सा रोड, लक्ष्मीकुण्ड होते हुए, महालक्ष्मी (लक्ष्मी तीर्थ), लक्ष्मी कुण्ड में स्नान करें। दूसरा तीर्थ बगल में कुआँ के रूप में है। मंदिर में दरवाजा के अन्दर सामने जो दिव्य देवी की मूर्ति है, जो दक्षिणाभिमुख है वही महालक्ष्मी जी हैं। इनका प्रमाण वेदों में, पुराणों में, श्रुति-स्मृति आदि सद्ग्रन्थों में, स्कन्द पुराण में, विष्णु पुराण में, वाराह पुराण में, मत्स्य पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

महालक्ष्मी गौरी देव्यै नमः (म० नं० डी ५२/३४, मो० लक्ष्मी कुण्ड लक्सा रोड)

महालक्ष्मी गौरी के दर्शन-पूजन, जो भक्त करते हैं उनको स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। कार्य में विघ्न नहीं होता, दु:ख-संकट दूर होते हैं, विद्या, सन्तति, आयु तथा द्रव्य की वृद्धि होती है। दर्शनार्थियों के सब मनोरथ पूर्ण होते हैं।

महालक्ष्मी में बड़े-बड़े यज्ञ होते हैं। प्रतिदिन कथा एवं कीर्तन होते हैं। पहले यहाँ वेद, वेदान्त, पुराण, रामायण आदि सम्मेलन होते थे। नव गौरी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा करने वाले भक्तों को अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति होती है। दु:ख, रोग और संकट दूर होते हैं। मन, वाणी और द्वारा जो स्थूल पाप किये गये हैं वे पाप क्षीण होते हैं। असत् कर्म को छो

कर सत्कर्म में प्रवृत्त होता है तथा अन्त:करण शुद्ध होता है, विद्या, भक्ति एवं ज्ञान की वृद्धि होती है।

संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को यथाशक्ति दक्षिणा और सीधा देकर साधु-सन्त को फल, मिष्टान्न आदि जलपान देकर नव गौरी देवियों का स्मरण करते हुए अपने-अपने घर जाइये।

हरि ॐ, तत्सत् गौर्यार्पणमस्तु

हर हर महादेव

दर्शन यात्रा जाने के पाँच दिन पहले पट्टीदार, पड़ोसी और मित्र एवं भगवान के भक्तों को निमन्त्रण करें और उनसे आग्रह करें कि आप भी हमारे साथ सम्मिलित हो जाइए।

दूसरे दिन अभिषेक हवन करके साधु-महात्मा, ब्राह्मण और नवकन्याओं को भोजन करावें। जिनके पास साधन नहीं है वह यात्री कीर्तन करें।

दूसरी दाहिने से नव गौरी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा प्रत्येक चैत्र शुक्ल तृतीया तिथि के दिन गंगा स्नान करके गंगा जल और पंचोपचार की पूजा की सामग्री साथ में लेकर कीर्तन करते हुए ज्येष्ठा गौरी से दर्शन-यात्रा प्रारम्भ होता है।

ज्येष्ठा गौरी देव्यै नमः [म०नं० के० ६३/२४ में, मो० भूत भैरव, (काशीपुरा) दर्शन करके।]

ज्येष्ठा गौरी से पूर्व बुलानाला काल भैरव, गायघाट होते हुए मुख निर्मालिका गौरी।

मुखनिर्मालिका गौरी देव्यै नमः (म० नं० के० ३/४२ में, मो० गायघाट) दर्शन पूजा करके। मुखनिर्मालिका गौरी से दक्षिण दुर्गाघाट पंचगंगा मंगला गौरी होते हुए।

मंगला गौरी देव्यै नमः (म० नं० के० २४/३४ में मो० मंगला गौरी) मंगला गौरी से दक्षिण मणिकर्णिका घाट ललिता घाट होते हुए।

ललिता गौरी देव्यै नमः (म० नं० डी० १/६७ में मो० ललिता घाट) यहाँ दर्शन करके । ललिता गौरी से पश्चिम धर्मकूप ।

विशालाक्षी गौरी देव्यै नमः (म० नं० डी० ३/८५ में मो० मीरघाट) दर्शन करके गौरी से पश्चिम सरस्वती फाटक अन्नपूर्णा गली होते हुए।

भवानी गौरी देव्यै नमः (म० न० डी १ मो० अन्नपूर्णा गली) अन्नपूर्णा विश्वनाथ आदि का दर्शन करके। भवानीसे पश्चिम बाँस फाटक।

सौभाग्य गौरी देव्यै नमः (म०न० सी० के ३८/८ में मो० बाँसफाटक)

श्रृंगार गौरी देव्यै नमः (म०न० सी० के० ३७/८)

दर्शन श्रृंगार गौरी से पश्चिम गोदौलिया, लक्शा रोड, लक्ष्मीकुण्ड होते हुए।

महालक्ष्मी गौरी देव्यै नमः (म०न० डी ५२।३८ में मो० लक्ष्मी कुण्ड)

गौर्यार्पणमस्तु। हर हर महादेव।

दूसरी नव गौरी-दर्शन यात्रा पूर्ण हुआ, संकल्प छोड़कर गौरी जी का स्मरण करते हुए अपने-अपने घर जाइए।

नव गौरी का तर्पण विधि इस प्रकार है :

१—मुखनिर्मालिका गौरी देव्यै नमः
२—ज्येष्ठा गौरी देव्यै नमः
३—सौभाग्य गौरी देव्यै नमः
४—श्रृंगार गौरी देव्यै नमः
५—विशालाक्षी गौरी देव्यै नमः
६—ललिता गौरी देव्यै नमः
७—भवानी गौरी देव्यै नमः
८—मंगला गौरी देव्यै नमः
९—महालक्ष्मी गौरी देव्यै नमः

हर हर महादेव।

नव दुर्गा प्रदक्षिणा-दर्शन-यात्रा

शाकम्भरी स्तुवन् ध्यायन् जपन् सम्पूजयन्नमन् ।
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम् ॥

अर्थ—जो मनुष्य शाकम्भरी देवी की स्तुति ध्यान, जप, पूजा और वन्दन करता है, वह शीघ्र ही अन्न पान एवं अमृतरस अक्षय फल का भागी होता है ।

—मूर्ति रहस्यम् १७

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ।
ब्रह्मा हरश्च न वक्तुमलं बलं च ।
सा चण्डिकाऽखिलजगत्परिपालनाय ।
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥–दुर्गासप्तशती

अर्थ—जिनके अनुपम प्रभाव और बल का वर्णन करने में भगवान् शेष नाग, ब्रह्माजी तथा महादेव जी भी समर्थ नहीं हैं वे भगवती दुर्गा तथा चण्डिका सम्पूर्ण जगत का पालन एवं भक्तों के अशुभ कर्मों को नाश करती हैं ।

विश्वेश्वरी त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥–दुर्गासप्तशती

अर्थ—हे विश्वेश्वरी तुम विश्व का पालन करती हो । विश्वरूपा हो, इसलिये सम्पूर्ण विश्व को धारण करती हो । तुम भगवान् श्री विश्वनाथ जी की वन्दनीया हो, लोग भक्ति पूर्वक तुम्हारे सामने मस्तक झुकाते हैं, वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं ।

अ०—एकादश ३१

३. देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीदमातर्जगतो खिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वम् ।
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ [दुर्गा सप्तशती] ॥११।३॥

अर्थ—देवता बोले—शरणागत की पीड़ा दूर करने वाली देवि हम पर प्रसन्न होओ। सम्पूर्ण जगत् की माता प्रसन्न होओ। विश्वेश्वरि। विश्व की रक्षा करो। हे दुर्गा! तुम्ही चराचर जगत् की अधीश्वरी हो और विश्वेश्वरी हो, विश्व का कल्याण करती हो।

—एकादश :१:

४. शरणागत दीनार्त परित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ॥ [दुर्गासप्तशती]

अर्थ—शरण में आये हुए दीनों और पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सबकी पीड़ा दूर करने वाली नारायणि दुर्गा देवी नमस्कार है।

—एकादशः-१२

५. सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वितः ।
मनुष्योमत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥

अर्थ—शरत्काल में जो वार्षिक दुर्गा महापूजा की जाती है, भक्तिपूर्वक करने से मनुष्य सब बाधाओं से मुक्त तथा धन, धान्य एवं पुत्र से सम्पन्न होगा इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

—द्वादश-१३

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः ।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्य दुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ [दुर्गासप्तशती]

अर्थ—माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हो और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हो। दुःख, दारिद्रय और भय हरने वाली हे दुर्गा ! आपके सिवाय दूसरा कौन है ? जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिए सदा ही दृढ़ चित्त से सभी प्राणियों का कल्याण करती हो।

—चतुर्थ :—१७

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वत्माश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति। [दुर्गासप्तशती]

अर्थः—हे दुर्गा ! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो। और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में गये हुए हैं उन पर विपत्ति आती ही नहीं। तुम्हारी शरण में गये हुए मनुष्य दूसरों के शरण देने वाले हो जाते हैं।

—एकादशः—२९

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त वीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्नः भुवि मुक्तिहेतुः [दुर्गासप्तशती] ११/५॥

अर्थ—हे दुर्गा माता ! तुम अनन्त बलसम्पन्न वैष्णवीशक्ति हो। इस विश्व की पराभूता महामाया हो। हे दुर्गा ! तुमने इस जगत् को मोहित कर रखा है। तुम्हीं प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती हो।

एकादश—५

नव दुर्गा दर्शनयात्रा

काशी क्षेत्रे विश्वेश्वरस्य शिवा प्रति प्रतिज्ञाद्वयम् ।
जीवतोऽन्नं ददासि त्वमृते मुक्ति ददाम्यहम् ॥

अर्थ—विश्वनाथ जी अन्नपूर्णा भवानी से कहते हैं। हे भवानी काशी-वास करने वाले प्राणी को जीवन काल में (अन्न) भोजन तुम दो, और विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे भवानी! मैं अन्ततः मृत्यु के समय में सभी प्राणियों को कैवल्य मोक्ष पद दूंगा।

काश्यते प्रकाश्यते इति काशी
काश्यान् मरणान् मुक्तिः ।
काशी क्षेत्र कृतं पापं अन्तर्गृह्यां विनश्यति ।
अन्तर्गृह्या कृतं पापं पंचक्रोश्यां विनश्यति ॥

काश्यते प्रकाश्यते इति काशी--जो प्रकाशित करती है उसे काशी कहते हैं।

काश्यान् मरणान् मुक्ति :--काशी मरण से मुक्ति प्राप्त होती है जीवन मरण से छुटकारा मिलता है।

अर्थ--बाहर किये गये स्थूल पाप काशी क्षेत्र में आते ही नष्ट होते हैं और सूक्ष्म पाप काशी में रहकर स्वधर्म का पालन करते हुए यथा शक्ति यज्ञ, दान, गंगा स्नान तथा तीर्थों में स्नान, मन्दिरों के दर्शन यात्रा करने से नष्ट होते हैं। काशी में मन, वाणी, शरीर से (क्रियमाण कर्म से) जो पाप होते हैं। वह विश्वनाथ अन्तर्गृही दर्शन यात्रा करने से नष्ट होते हैं। काशी से बाहर और काशी में मन, वाणी, शरीर से पाप पहले जो हो चुके हैं, प्रारब्ध कर्म बने हैं उन्हें दान, पुण्य और यज्ञ, कीर्तन, काशीवास से और वे प्रारब्धकर्म पंचकोशी दर्शन यात्रा करने से नष्ट होते हैं। काशी के विषय में, पुराणों में, श्रुतियों में, स्मृतियों में और वेदों में, भारत के सभी शास्त्र और साहित्य दर्शन में काशी के विषय में विस्तार से लिखा है।

नवदुर्गा दर्शन यात्रा

प्रथमं शैल पुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी, तृतीयं चन्द्र घण्टेति कूष्मांण्डेति चतुर्थकम् । पचंम स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीतिच । सप्तमं कालरात्रीति महा गौरीतिचाष्टमम् ।। नवमं सिद्धिदा (प्रोक्ता)………नव दुर्गा : प्रकीर्तिता : ।।

देवी कवच में, देवी भागवत में तथा देवी तन्त्र में, दुर्गा सप्तशती में, आश्विन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि को शारदीय नवरात्र प्रारम्भ होता है । प्रातः गंगा आदि तीर्थ में स्नान करके रुद्राक्ष की माला धारण करें ।

त्रिपुण्डं मस्तकेधृत्वा वर्तुलं रक्त चन्दनम् ।
निधनेयाति वैकुण्ठे मुक्तो भवति वै जनः

त्रिपुण्ड को शिर पर धारण करके रक्त चन्दन से गोलाटीका लगाने से मरने पर व्यक्ति वैकुण्ठ जाता है और वह मुक्त हो जाता है ।

त्रिपुण्डधारण करके लाल फूल, माला, सिन्दूर, रोली, लाल वस्त्र, विल्वपत्र, ऋतु फल, मिष्ठान्न (पैसा) द्रव्य साथ में ले करके शिव-शिव नाम महामन्त्र का जप मन से करते हुए—

"हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे"

कीर्तन करते हुए दुर्गा दर्शन यात्रा चलते हैं चूंकि कीर्तन करते हुए जो यात्री चलते हैं उनको दर्शन यात्रा में विघ्न नहीं होता और असामाजिक तत्वों तथा कुत्ता आदि का भय नहीं होता है। पैर में काँटा-शीशा नहीं गड़ता, यात्रा के एक दिन पहले गणेश जी का दर्शन पूजन करना चाहिए ।

यात्रा प्रारम्भ—

विश्वनाथ जी से शैल पुत्री दुर्गा उत्तर में हैं। वाराणसी सिटी स्टेशन के उत्तर बगल में शैल पुत्री मोहल्ला में वरुणा तट पर दाहिनी तरफ फाटक के अन्दर, विशाल देवी का लाल मन्दिर में, दरवाजे के अन्दर, जो सामने दिव्य

देवी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है, वही शैल पुत्री दुर्गा हैं। तीर्थ शैल पुत्री घाट में दूसरे बगल में कुआँ के रूप में शक्ति तीर्थ है। शैल पुत्री दुर्गा और शैलेश्वर का प्रमाण वेदों में, पुराणों में, पद्म पुराण में, स्कन्द पुराण में, देवी भागवत् में और शिवपुराण आदि में विस्तार से प्राप्त होता है। 'शैल पुत्री तीर्थाय नमः' मार्जन या स्नान करके।

प्रथमं शैल पुत्री च

१. शैलपुत्री दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० ए० ४०/११ में, मो०—शैलपुत्री।)

(शैलेश्वर आदि का दर्शन करते हैं।)

शैलपुत्री दुर्गा जी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्त के दुःख को दूर करती हैं। धन, रत्न और सम्पत्ति पुत्र देकर सुखी बनाती हैं तथा पुरवासियों की रक्षा करती हैं। अन्त में मोक्ष की भिक्षा देती है।

शैल पुत्री में दुर्गा, विष्णु, शिव आदि यज्ञ होते हैं। यहाँ शिवपुराण, काशीखण्ड, दुर्गा सप्तशती, रामायण आदि सम्मेलन पहले होते थे और वर्तमान में कीर्तन तथा अखण्ड रामायण और बिरहा आदि का आयोजन होता है। शैलपुत्री दुर्गाजी के दर्शन-पूजन करने के लिए नर-नारी सब गाँवों से और विभिन्न राज्यों से आते हैं। मनौती मानते हैं। वे मनोकामना पूर्ण होते ही लाल चादर की डोली बनाकर, पूजा की सामग्री, बली के लिए नारियल, सफेद कद्दू (पेठा), ऋतु फल आदि डोली में रखकर पंचबाजा बजाते हुए शैल पुत्री दुर्गाजी का दर्शन-पूजन करने जाते हैं। दर्शन-पूजन करके जलपान करते हैं तत्पश्चात् अपने-अपने घर जाते हैं। शैलपुत्री दुर्गा से ब्रह्मचारिणी दुर्गा देवी जाने के लिये शैल पुत्री से उसी मार्ग से गोलघर, विश्वेश्वर गंज, दूधमण्डी, दुर्गाघाट, रामतारकमठ होते हुए ब्रह्मचारिणी दुर्गा जाते हैं जहाँ दाहिनी तरफ ब्रह्मचारिणी दुर्गा पूर्वाभिमुख हैं। तीर्थ दुर्गा घाट गंगाजी में है।

ब्रह्मचारिणी दुर्गा तीर्थाय नमः।

ब्रह्मचारिणी देवी का देवीभागवत्, लिङ्ग पुराण, स्कन्द पुराण, शिव रहस्य और शिव पुराण में विस्तार से वर्णन है।

द्वितीयं ब्रह्मचारिणी

२. ब्रह्मचारिणी दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० के० २२/७२ में, मो०—दुर्गाघाट)।

ब्रह्मचारिणी दुर्गा जी के दर्शन-पूजन करने से रोग शान्त होते हैं, व्यक्ति बलवान, शक्तिमान होता है और लक्ष्मी तथा विद्या की प्राप्ति होती है। तेजस्वी और तपस्वी होते हैं तथा अन्तःकरण शुद्ध होता है, धन-परिवार, आयु की वृद्धि होती है तथा दर्शनार्थियों के सब कार्य पूर्ण होते हैं। यहां विष्णु आदि यज्ञ होते हैं। पहले वेद-वेदान्त, पुराण, दुर्गा सप्तशती, गीता और रामायण आदि सम्मेलन होते थे, जिसमें अब न्यूनता आ गई है।

ब्रह्मचारिणी दुर्गा से चित्रघण्टा दुर्गा जाया जाता है। ब्रह्मचारिणी से दक्षिण ठठेरी बाजार चित्रघण्टा गली में दरवाजे के अन्दर सामने जो दिव्य देवी की मूर्ति है और जो पूर्वाभिमुख है वही चन्द्रघण्टा दुर्गाजी हैं। दुर्गा तीर्थ बगल में कुआं के रूप में है (मणिकर्णिका घाट में)।

(काशी खण्ड अ० ७०)

अनेक पातकों से युक्त हों और जो धर्मपथ का परित्याग कर दिये हों, फिर भी चित्रगुप्त उसके पापों को तब नहीं लिखता जब उसने चित्रघण्टा दुर्गा का दर्शन-पूजन किया हो।

चन्द्रचित्रघण्टा दुर्गा जी का प्रमाण शिव रहस्य, स्कन्दपुराण; देवी भागवत, शिवपुराण, लिंगपुराण आदि में विस्तार से मिलता है। चन्द्रचित्रघण्टा दुर्गा तीर्थाय नमः। (तीर्थ मणिकर्णिकाघाट पर है)।

तृतीयं चन्द्रचित्र घण्टेति

३. चन्द्रचित्रघण्टा दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० सी० के ३३/३३ में, मो०—चित्रघण्टा दुर्गा, चौक।)

चन्द्र चित्रघण्टा दुर्गा जी के दर्शन पूजन जो भक्त करते हैं उनको चन्द्र चित्रघण्टा दुर्गाजी चित्रगुप्त से सिफारिश करके नरक और दुर्गति से बचा

देती हैं। धन, रत्न और सुख-सम्पत्ति देती हैं, विद्वान् और बुद्धिमान पुत्र की प्राप्ति होती है इसके साथ ही वे काशीवासियों का कल्याण करती हैं।

चन्द्रचित्रघण्टा दुर्गाजी में दुर्गा, विष्णु, शिव आदि के यज्ञ होते हैं और वेद-वेदान्त, देवी भागवत, दुर्गा सप्तशती और रामायण आदि सम्मेलन पहले होते थे जिनमें अब न्यूनता आ गई है। किन्तु दुर्गा सप्तशती पाठ में वृद्धि होने लगी है।

चित्रचन्द्रघन्टा दुर्गा से दुर्गा जी जाने का मार्ग इस प्रकार है—चन्द्रचित्र घण्टा दुर्गाजी से दक्षिण गोदौलिया, सोनारपुरा, शिवाला चौराहा से पश्चिम, रविन्द्रपुरी कालोनी होते हुए दुर्गाकुण्ड में स्नान या मार्जन करके, दुर्गाकुण्ड के पूर्व दक्षिण के कोने में दुर्गा-विनायक का दर्शन करके, दुर्ग-विनायक के पश्चिम बगल में जो लाल रंग के विशाल मन्दिर का दर्शन होता है वही दुर्गाजी का मन्दिर है। फाटक के अन्दर सामने चांदी के सिंहासन पर जो दिव्य देवी की मूर्ति है और पश्चिमाभिमुख है वही दुर्गा जी हैं।

कूष्माण्ड दुर्गा तीर्थाय नमः।

बगल में कुआँ के रूप में शक्ति तीर्थ है।

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां भौमवारे विशेषतः।
संपूज्या सततं काश्यां दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥
प्रतिसम्वत्सरं तस्याः कार्या यात्रा प्रयत्नतः।
शारदं नवरात्रं च सकुटुम्बैः शुभार्थिभिः ॥
नवरात्रे प्रयत्नेन प्रत्यहं सा समर्चिता।
नाशयिष्यातिविघ्नोघान्सुमत्ति च प्रदास्यति ॥
दुर्गाकुण्डे नरः स्नात्वा सर्वदुर्गतिहारिणीम्।
दुर्गासम्पूज्य विधिवन्नवजन्माद्यमुत्सृजेत् ॥

(काशी खण्ड अं०-७२)

अर्थ—काशी में दुर्गतिनाशिनी दुर्गा का दर्शन और पूजन विशेष रूप से अष्टमी, चतुर्दशी और मंगलवार को प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए। प्रतिवर्ष शारदीय नवरात्र तथा चैत्र नवरात्र में कल्याण चाहने वाले व्यक्तियों को चाहिए कि वे अपने कुटुम्ब के साथ दुर्गाजी का दर्शन-यात्रा करें।

नवरात्र में प्रतिदिन दर्शन, पूजा करने वाले व्यक्तियों के विघ्न-समूह को दूर कर दुर्गाजी उसे सुमति प्रदान करती हैं।

जो व्यक्ति दुर्गाकुण्ड में स्नान कर सारी दुर्गतियों को नष्ट करने वाली दुर्गाजी की पूजा करता है उसके नव जन्मों के पाप नाश हो जाते हैं।

दुर्गाजी का प्रमाण-वेदों, पुराणों, उप-पुराणों और उपनिषद् तथा श्रुति-स्मृति में विस्तार से प्राप्त होता है।

४. कूष्माण्ड दुर्गा देव्यै नमः। [म० न० डी० २७/२ में, मो० दुर्गाकुण्ड]

दुर्गा जी के दर्शन पूजन करने वाले भक्तों के दुःख-विघ्न और बाधा दूर होते हैं। वह दुर्गति में नहीं पड़ता और धन-धान्य विद्या-बुद्धि आदि की वृद्धि तथा सत्य पुत्र की प्राप्ति होती है। दुर्गाजी ग्रामवासियों का कल्याण करती हैं, सबको अन्त समय में मुक्ति देती हैं। दुर्गाजी का वार्षिक उत्सव शृंगार भाद्र मास के कृष्ण पक्ष त्रयोदशी प्रदोष के दिन होता है।

दुर्गाजी में दुर्गा, विष्णु, शिव और शक्ति यज्ञ होते हैं। दुर्गा सप्तशती गीता, देवी भागवत, वेद-वेदान्त तथा रामायण आदि सम्मेलन होते हैं, कीर्तन, अखण्ड कीर्तन और अखण्ड रामायण होते हैं।

दुर्गाजी से बागीश्वरी जाने का मार्ग इस प्रकार है:—

दुर्गाजी से उत्तर गोदौलिया, बेनियाबाग, लोहटिया जैतपुरा होते हुए बागीश्वरी गली में फाटक के अन्दर दाहिनी तरफ, दरवाजे के अन्दर, सामने जो दिव्य देवी की मूर्ति उत्तराभिमुख है वही स्कन्दमाता बागीश्वरी के नाम से प्रसिद्ध हैं। स्कन्द माता तीर्थ पश्चिम बगल में पहले विशाल कुण्ड था। इस समय कुआँ के रूप में है।

'स्कन्दमाताबागीश्वरी तीर्थाय नमः।' [स्नान या मार्जन करें।]

तत्र चण्डी महामुण्डा भक्त विघ्नोपशान्तिदा।
बलिपूजोपहाराद्यैः पूज्यां स्वाभिष्ट सिद्धये ॥ ५ ॥

(काशी खण्ड अ० ९/७)

स्कन्दमाता—वहाँ पहुँचकर महाविघ्नों का निवारण करने वाली महा-मुण्डा चण्डी का मन्दिर है, उसमें नारियल का बलिदान, पूजा, उपहारादि सब विघ्नों की शान्ति के लिए करना चाहिए।

स्कन्दमाता बागीश्वरी देवी का स्कन्द पुराण, शिव पुराण तथा लिंग पुराण, देवी भागवत; देवी तन्त्र तथा देवी सहस्र नाम में विस्तार से वर्णन है।

पंचमं स्कन्दमातेति

५—स्कन्दमाता बागीश्वरी दुर्गा देव्यै नमः। (म० मं० जे० ६/३३ में मो० जैतपुरा)

स्कन्ध माता के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख दूर होते हैं और यशस्वी तेजस्वी होता है। उसे पुत्र धन आदि की प्राप्ति होती है, शत्रु पर विजयी होता हैं, सदा सुखी रहता है। यह दुर्गा पुरवासियों की रक्षा करती हैं और अन्त में मुक्ति का साधन देती हैं।

बागेश्वरी में दुर्गा, विष्णु, रुद्र और शिव शक्ति आदि यज्ञ होते हैं। पहले यहाँ उपनिषद् आदि भागवत, काशी खण्ड और ब्रह्माण्ड पुराण रामायण आदि सम्मेलन होते थे। कीर्तन, अखण्ड कीर्तन, अखण्ड रामायण होते हैं, लोक कार्यक्रम विरहा आदि होते हैं। दर्शन मेला लगता है तथा वार्षिक उत्सव होता है।

बागेश्वरी से कात्यायनी दुर्गा जाने के लिये बागीश्वरी से पूर्व-दक्षिण मैदागिन होते हुए, बुलानाला चौराहा के पूर्व-दक्षिण, सुड़िया गली से ठठेरी बाजार, वहाँ से दक्षिण नन्दन साहू लेन मोहल्ला में परशुरामेश्वर के दर्शन करके, पूर्व सिद्धेश्वरी मोहल्ला में आत्माविशेरेश्वर के मन्दिर में

आत्मा विरेश्वर से सटी हुई पूर्व-उत्तर के कोने में देवी का मन्दिर है जिसमें दिव्य देवी की मूर्ति पश्चिमाभिमुख है वही कात्यायनी दुर्गा जी हैं।

कात्यायनी दुर्गा तीर्थाय नमः [सिन्धिया घाट में]

कात्यायनी दुर्गा जी का काशीखण्ड में लिंगपुराण, श्रीमद्भागवत, शिव पुराण, सामवेद और अग्नि पुराण में विस्तार से वर्णन है।

षष्ठं कात्यायनीति च

६. कात्यायनी दुर्गा देव्यै नमः। [म० सं० सी० के० ७/१५८ में मो० सिन्धियाघाट]

कात्यायनी दुर्गा जी के दर्शन-पूजन करने से सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। दर्शनार्थियों के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पदार्थ प्राप्त होते हैं। उसके धन, परिवार और विद्या की वृद्धि होती है और ये उनके पापों को हरती हैं एवं आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

यहाँ दुर्गा, विष्णु, शिव आदि यज्ञ होते हैं और देवी भागवत, गीता और वेदान्त, रामायण सम्मेलन पहले होते थे अब कीर्तन, अखन्ड कीर्तन अखण्ड रामायण आदि होते हैं। कात्यायनी दुर्गा से कालरात्रि दुर्गा जाने के लिए कात्यायनी दुर्गा से दक्षिण नीलकण्ठ सरस्वती फाटक, कालिका गली होते हुए कालरात्रि जांय। फाटक के अन्दर जाने पर सामने जो दिव्य और बड़ी मूर्ति दिखाई पड़ती है, जो पूर्वाभिमुख है वही कालरात्रि दुर्गा जी की प्रतिमा है। कालरात्रि दुर्गा तीर्थ मीरघाट में है, दूसरा तीर्थ बगल में कुआँ के रूप में है।

कालरात्रि तीर्थाय नमः। [स्नान या मार्जन करें।]

कालरात्रि दुर्गा का काशीखण्ड में, वेदों में, शिवपुराण में, विष्णु पुराण में, भविष्य पुराण में, मार्कण्डे पुराण में, वाराहपुराण में, देवी भागवत् में व अन्य उपपुराणों में कालिका देवी के नाम से विस्तृत वर्णन है।

७—कालरात्रि दुर्गा देव्यै नमः। [म० मं० डी० ८/३ में, मो० कालिका गली।]

कालरात्रि दुर्गा जी के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को अकाल मृत्यु का भय नहीं होता। उसके सब कार्य सिद्ध होते हैं। धन और परिवार की वृद्धि होती है। अन्त में मुक्ति मिलती है।

कालिका देवी में बड़े-बड़े यज्ञ होते हैं अर्थात् दुर्गा, विष्णु और इन्द्र यज्ञ होते हैं। भागवत और गीता रामायण आदि के सम्मेलन पहले होते थे अब इसमें ह्रास हुआ है।

कालरात्रि दुर्गा से अन्नपूर्णा दुर्गा जाने का मार्ग इस प्रकार है। काल रात्रि दुर्गा जी से पश्चिम बगल में, अन्नपूर्णा गली में; अन्नपूर्णा महागौरी प्रसिद्ध हैं। वहाँ जाने पर फाटक के अन्दर सामने चाँदी के सिंहासन में जो दिव्य देवी की मूर्ति है और वह पश्चिमाभिमुख है। उन्हें ही महागौरी अन्नपूर्णा दुर्गाजी कहते हैं। महागौरी दुर्गातीर्थ बगल में कुआँ के रूप में है दूसरा तीर्थ मणिकर्णिकाघाट में गंगा जी में है।

अष्टोप्रदक्षिणा देवाः प्रत्यहं तुष्टितत्परैः :
अष्टाधिका प्रकर्तव्या : शतकृत्वः प्रदक्षिणाः ॥
प्रदक्षिणा कृतातेन सप्तद्वीपवतीमही।

(काशी खण्ड अ० ६।)

प्रतिदिन देवी दुर्गा की प्रसन्नता के लिए आठ प्रदक्षिणा करना चाहिए। प्रदक्षिणा महाष्टमी के दिन अवश्य करनी चाहिए।

यह प्रदक्षिणा सात दीपों वाली पर्वत-समुद्र आश्रम और कानन के साथ पृथ्वी की प्रदक्षिणा होती है। महाष्टमी के दिन व्रत रहकर रात्रि जागरण करना चाहिए।

महागौरी दुर्गा जी के स्कन्द पुराण में, वेदों में, ब्रह्म पुराण में, नारद पुराण में, मत्स्य पुराण में, उपानिषदों और श्रुतिस्मृति आदि में विस्तार से वर्णन मिलता है।

महागौरी अन्नपूर्णा दुर्गा तीर्थाय नमः।

महागौरीतिचाष्टमम्

८—महागौरी अन्नपूर्णा दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० डी० ९/१७ में, मो०—अन्नपूर्णा गली।)

महागौरी अन्नपूर्णा दुर्गा जी का दर्शन करने वाला भक्त दरिद्र नहीं होता और उसे विविध खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं। देवी काशीवासियों की रक्षा करती हैं। सबको भोजन देती हैं। काशी में स्थायीवास कराती हैं। इनकी कृपा से धन-सम्पत्ति तथा विद्या, पुत्र आदि की प्राप्ति होती है। काशी वासियों का कल्याण करती हैं तथा काशीवास करने में कोई विघ्न नहीं आता। अन्नपूर्णा अपने भक्तों को अन्त में मोक्ष की भिक्षा देती हैं। अन्नपूर्णा में दुर्गा, विष्णु, लक्ष्मी और शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं। वेदान्त, दुर्गा सप्तशती, लक्ष्मी सूक्त स्तोत्र पाठादि, देवी भागवत्, देवी गीता आदि सम्मेलन पहले होते थे और अन्न वार्षिक उत्सव के अवसर पर कीर्तन और अखण्ड रामायण होते हैं।

महागौरी दुर्गाजी से सिद्धेश्वरी दुर्गा जाने का मार्ग इस प्रकार है—अन्नपूर्णा दुर्गा जी से उत्तर चौक, बुलानाला, टाउनहाल पार्क के दक्षिण बगल से पूर्व गोलघर होते हुए दक्षिण जाने वाली सिद्धेश्वरी गली में, दाहिनी तरफ फाटक के अन्दर, ऊपर दरवाजे के सामने जो दिव्य देवीजी की मूर्ति पश्चिमाभिमुख है वही सिद्धमाता सिद्धेश्वरी दुर्गा जी हैं। सिद्धेश्वरी तीर्थ पञ्चगङ्गा घाट में है। दूसरी शक्तितीर्थ बगल में कुँआ के रूप में है। वेदों, स्कन्द पुराण, शिवपुराण, लिङ्गपुराण और शिवरहस्य, ब्रह्मवैवर्त पुराण, यजुर्वेद और देवी भागवत में इनका विस्तार से वर्णन मिलता है।

सिद्धिदा सिद्धेश्वरी दुर्गा तीर्थाय नमः [स्नान कर]

नवम् सिद्धिदा प्रोक्ता नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः

९—सिद्धिदा माता दुर्गा देव्यै नमः। [म० नं० सी के० ६/२८ में, मो० बुलानाला]

सिद्धिदा माता दुर्गा जी का दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके दुःख दूर होते हैं। तारक ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिए इनका दर्शन करना चाहिए। काशी में विघ्ननाश करने वाली सिद्धेश्वरी दुर्गा जी का दर्शन करें, सिद्धिमाता पुरवासियों की रक्षा करती हैं, और सब को सुख सम्पत्ति तथा शान्ति प्रदान करती हैं। इनके भक्त के घर में कलह नहीं होता। इनकी कृपा से व्यक्ति शत्रु पर विजय प्राप्त करता है।

सिद्धिमाता में दुर्गा, विष्णु, शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं और दुर्गा सप्तशती, वेद, वेदान्त और रामायण गीता आदि सम्मेलन पहले होते थे और अब कीर्तन, अखण्ड रामायण, वार्षिक उत्सव होते हैं जिसमें लोक कार्यक्रम में बिरहा आदि होता है।

संकल्प छोड़कर ब्राह्मणों को दक्षिणा, सन्त, महात्मा, साधुओं को जल-पान, दरिद्रनारायण को पैसा आदि देकर दुर्गा माता जी का स्मरण करते हुए अपने-अपने घर जाते हैं।

नव दुर्गा दर्शन यात्रा पूर्ण हुआ।

दुर्गार्पण मस्तु

हर-हर महादेव

जिस यात्री के पास साधन, धन, सम्पत्ति है वह यात्री अभिषेक करके हवन करने के पश्चात् साधु, सन्त ब्राह्मण और नौ कन्याओं को भोजन करावें। रात्रि में कीर्तन करें। नव दुर्गा दर्शन-यात्रा जाने की तिथि निश्चय करके पाँच दिन पहले पड़ोसी, पट्टीदार, साथी और मित्र तथा भगवान के भक्तों को आमन्त्रित करना चाहिए कि आपलोग भी इस यात्रा में सम्मिलित होवें। काशी में प्रयत्नपूर्वक समय निकालकर नव दुर्गा दर्शन यात्रा करनी चाहिए। चूँकि नवदुर्गा- दर्शन-यात्रा करने वाले भक्तों को दुर्गा माता अन्न, वस्त्र, धन तथा पुत्र-परिवार और मित्रों आदि की वृद्धि करती हैं और काशीवास में विघ्न नहीं आता। दुर्गा माता अन्त में मोक्ष की सिद्धि देती हैं अतः प्रयत्न पूर्वक नव दुर्गा दर्शन यात्रा करें।

मन्दिर में पूजा, श्रृंगार, प्रसाद की व्यवस्था और मन्दिरों का जीर्णोद्धार, कीर्तन की व्यवस्था करने वाले भक्तों के दुःख-संकट दूर होते हैं और धन, सन्तान, परिवारों की वृद्धि होती है। आश्विन और चैत्र दोनों नवरात्रों में दुर्गा जी के दर्शन, यात्रा किया जाता है वह हमारी काशी की परम्परा हैं।

दूसरी नव दुर्गा दर्शन-यात्रा

दूसरी नव दुर्गा दर्शन-यात्रा आश्विन शुक्ल पक्ष, महा अष्टमी तिथि को चैत्र के नवरात्र के महाष्टमी के दिन दाहिने से दर्शन-यात्रा प्रातः गङ्गा स्नान करके गङ्गाजल पञ्चोपचार के पूजन की सामग्री साथ में लेकर 'हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे।' इस प्रकार कीर्तन करते हुए 'शिव-शिव' नाम महामन्त्र मन से जपते हुए संकल्प लेकर यात्री घर के पास में श्री दुर्गा जी का जो मन्दिर है वहीं से दर्शन-यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए।

हमारी काशी विश्वनाथ दर्शन-यात्रा मण्डली दुर्गा जी से प्रारम्भ करती है।

१. कूष्माण्डा दुर्गा देव्यै नमः। [म०नं०बी०२७/२ में, मो० दुर्गाकुण्ड] दर्शन-पूजन करके दुर्गा जी के उत्तर गोदौलिया, चौक होते हुए चन्द्र चित्र-घण्टा दुर्गा जी जाते हैं।

२. चन्द्र चित्रघण्टा दुर्गा देव्यै नमः। [म०नं०सी के ३३/३४ में, मो० चौक] चित्रघण्टा दुर्गागली में दर्शन पूजन करके चलें। चित्रघण्टा दुर्गा से उत्तर बुलानाला चौराहा से पूर्व सिद्धिदामाता दुर्गा गली में।

३. सिद्धिदा सिद्धेश्वरी दुर्गा देव्यै नमः। [म० नं० सी के० ६/२८ में, मो० बुलानाला]

दर्शन पूजन करके जो यात्री चलने में असमर्थ हैं वह विश्राम करें, दूसरे दिन पुनः दर्शन-यात्रा प्रारम्भं करें। प्रातः सिद्धिदा माता के दर्शन

करके सिद्धिदा से उत्तर मैदागिन, दारानगर, औसानगंज, जैतपुरा होते हुए बागीश्वरी गली में।

४. स्कन्दमाता बागीश्वरी दुर्गा देव्यै नमः। [म०नं०जे० ६/३३ में, मो० जैतपुरा] बागेश्वरी दर्शन करके चलें।

स्कन्दमाता से उत्तर जी० टी० रोड पार करके सिटी स्टेशन से उत्तर शैलपुत्री दुर्गागली में।

५. शैलपुत्री दुर्गा देव्यै नमः। [म०नं०ए०४०/११ में, मो० शैलपुत्री दुर्गा जी के दर्शन पूजा करके]

शैलपुत्री दुर्गा से उसी मार्ग से दक्षिण वाराणसी, गोलगड्डा, विश्वेश्वर गंज, दुर्गाघाट होते हुए ब्रह्मचारिणी दुर्गा गली में।

६. ब्रह्मचारिणी दुर्गा देव्यै नमः। [म०नं०के० २२/७२ में, मो० दुर्गा घाट, दर्शन पूजन करके]

ब्रह्मचारिणी दुर्गा जी से दक्षिण दूध विनायक, सूत टोला। पटनी टोला संकटा जी होते हुए।

७. कात्यायनी दुर्गा देव्यै नमः। [म० नं० सी के० ७/१५८ में, मो० सिन्धियाघाट, दर्शन पूजन करके]

कात्यायनी दुर्गा से दक्षिण मणिकर्णिकाघाट, नीलकण्ठ, सरस्वती फाटक, कालिका गली होते हुए, कालरात्रि दुर्गागली में।

८. कालरात्रि दुर्गा देव्यै नमः। [म०नं०डी०८/३ में, मो०कालिकागली में दर्शन करके]

कालरात्रि दुर्गाजी से पश्चिम बगल में अन्नपूर्णाजी प्रसिद्ध हैं।

९. महागौरी अन्नपूर्णा दुर्गा देव्यै नमः। [म० नं०डी०९/१७ में, मो० अन्नपूर्णा गली, दर्शन-पूजन-प्रार्थना करके]

टिप्पणी :

प्रत्येक दुर्गा जी के पास में रहने वाले सब देवताओं का दर्शन समीपी करें। दुर्गा दर्शन-यात्रा करने के पश्चात् संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को यथा-शक्ति दक्षिणा देकर साधु सन्त महात्माओं को जलपान देकर और दुर्गा माता जी का स्मरण करते हुए अपने-अपने घर जाते हैं। दूसरी नव दुर्गा दर्शन-यात्रा समाप्त हुआ।

दुर्गार्पण मस्तु। हर-हर महादेव।

प्रतिदिन तर्पण विधि इस प्रकार है :—

१—शैल पुत्री दुर्गा देव्यै नमः।

२—ब्रह्मचारिणी दुर्गा देव्यै नमः।

३—चन्द्र चित्रघण्टा दुर्गा देव्यै नमः।

४—कूष्माण्डा दुर्गा देव्यै नमः।

५—स्कन्दमाता वागीश्वरी दुर्गा देव्यै नमः।

६—कात्यायनी दुर्गा देव्यै नमः

७—कालरात्रि दुर्गा देव्यै नमः।

८—महागौरी अन्नपूर्णा दुर्गा देव्यैं नमः।

९—सिद्धिदा माता सिद्धेश्वरी दुर्गा देव्यै नमः।

प्रतिदिन तर्पण करने वाले भक्तों के मनोरथ पूर्ण होते हैं। कार्य में विघ्न नहीं होता। सब कार्य सफल होते हैं और शत्रु मित्र बनते हैं।

अथ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥

माँ ! मैं न मंत्र जानता हूँ, न यंत्र, अहो ! मुझे स्तुति का भी ज्ञान नहीं है। न आवाहन का पता है न ध्यान का। स्तोत्र और कथा की भी जानकारी नहीं है। न तो तुम्हारी मुद्राएँ जानता हूँ और न मुझे व्याकुल होकर विलाप करना ही आता है, परन्तु एक बात जानता हूँ, केवल तुम्हारा अनुसरण—तुम्हारे पीछे चलना। जो कि सब क्लेशों को—समस्त दुःख विपत्तियों को हर लेने वाला है ॥ १ ॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥

सबका उद्धार करने वाली कल्याणमयी माता ! मैं पूजा की विधि नहीं जानता, मेरे पास धन का अभाव है, मैं स्वभाव से भी आलसी हूँ तथा मुझ से ठीक-ठीक पूजा का संपादन हो भी नहीं सकता, इन सब कारणों से तुम्हारे चरणों की सेवा में जो त्रुटि हो गयी है, उसे क्षमा करना, क्योंकि कुपुत्र का होना संभव है, किन्तु कहीं भी कुमाता नहीं होती ॥ २ ॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥

माँ ! इस पृथ्वी पर तुम्हारे सीधे-सादे पुत्र तो बहुत से हैं, किन्तु उन सब में मैं ही अत्यन्त चपल तुम्हारा बालक हूँ। मेरे जैसा चंचल कोई विरला ही होगा। शिवे ! मेरा जो यह त्याग हुआ है, यह तुम्हारे लिए कदापि उचित नहीं है, क्योंकि संसार में कुपुत्र होना संभव है, किन्तु कहीं भी कुमाता नहीं होती ॥ ३ ॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रोजायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥

जगदंब ! मातः ! मैंने तुम्हारे चरणों की सेवा कभी नहीं की, देवि ! तुम्हे अधिक धन भी समर्पित नहीं किया । तथापि मुझ जैसे अधम पर जो तुम अनुपम स्नेह करती हो इसका कारण यही है कि संसार में कुपुत्र पैदा हो सकता है । किन्तु कहीं भी कुमाता नहीं होती ॥ ४ ॥

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥५॥

गणेश जी को जन्म देने वाली माता पार्वती ! मुझे नाना प्रकार की सेवाओं में व्यग्र रहना पड़ता था । इसलिए पचासी वर्ष से अधिक अवस्था बीत जाने पर मैंने देवताओं को छोड़ दिया है· अब उनकी सेवा पूजा मुझसे नहीं हो पाती, अतएव उनसे कुछ भी सहायता मिलने की आशा नहीं है । इस समय यदि तुम्हारी कृपा नहीं होगी तो मैं अवलंबरहित होकर किसकी शरण में जाऊँगा ॥ ५ ॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जननीयं जपविधौ ॥६॥

माता अपर्णा ! तुम्हारे मन्त्र का एक अक्षर भी कान में पड़ जाय तो

उसका फल यह होता है कि मूर्ख चाण्डाल भी मधुपाक के समान मधुर वाणी का उच्चारण करने वाला उत्तम वक्ता हो जाता है। दीन मनुष्य भी करोड़ों स्वर्ण-मुद्राओं से सम्पन्न हो चिरकाल तक निर्भय विहार करता रहता है। जब मन्त्र के एक अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है तो जो लोग विधिपूर्वक जप में लगे रहते हैं उनके जप से प्राप्त होने वाला उत्तम फल कैसा होगा ? इसको कौन मनुष्य जान सकता है ? ॥ ६ ॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पट धरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहण परिपाटीफलमिदम् ॥७॥

भवानी ! जो अपने अंगों में चिता की भस्म भभूत लपेटे रहते हैं। जिनका विष ही भोजन है। जो दिगंबरधारी (नग्न रहने वाले) हैं। मस्तक पर जटा और कंठ में नागराज वासुकि को हार रूप में धारण करते हैं तथा जिनके हाथ में कपाल (भिक्षापात्र) शोभा पाता है। ऐसे भूतनाथ पशुपति भी, जो एकमात्र 'जगदीश' की पदवी धारण करते हैं, इसका कारण क्या है ? यह महत्व उन्हें कैसे मिला, यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहण की परिपाटी का फल है। तुम्हारे साथ विवाह होने से ही उनका महत्व बढ़ गया ॥ ७ ॥

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥

मुख में चन्द्रमा की शोभा धारण करने वाली माँ ! मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की भी आकांक्षा नहीं है, न विज्ञान की अपेक्षा है

न सुख की अभिलाषा, अतः तुमसे मेरी यही याचना है कि मेरा जन्म 'मृडानी' रुद्राणी, शिव, शिव भवानी—इन नामों का जप करते हुए बीते ॥ ८ ॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्ष चिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥

माँ श्यामा ! नाना प्रकार की पूजन सामग्रियों से कभी विधि पूर्वक तुम्हारी आराधना मुझसे न हो सकी। सदा कठोर भाव का चिन्तन करने वाली मेरी वाणी कौन सा अपराध नहीं किया है ! फिर भी तुम स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथ पर जो किंचित् कृपा-दृष्टि रखती हो, माँ ! यह तुम्हारे ही योग्य है। तुम्हारी जैसी दयामयी माता ही मेरे जैसे कुपुत्र को भी आश्रय दे सकती है ॥ ९ ॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥

हे माता दुर्गे ! करुणासिन्धु महेश्वरी ! मैं विपत्तियों में फँसकर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ। [पहले कभी नहीं करता रहा]। इसे मेरी शठता न मान लेना क्योंकि भूख-प्यास से पीड़ित बालक माता का ही स्मरण करते हैं ॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।

अपराधपरम्परापरं

न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥

हे जगदम्ब ! मुझ पर जो तुम्हारी पूर्ण कृपा बनी हुई है इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है, पुत्र अपराध पर अपराध क्यों न करता जाता हो, फिर भी माता उसकी उपेक्षा नहीं करती ॥११॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥

महादेवि ! मेरे समान कोई पातकी नहीं है और तुम्हारे समान दूसरी कोई पापहारिणी नहीं है, ऐसा जानकर जो उचित जान पड़े वह करो ।१२।

ध्यानम्—१

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

मैं तीन नेत्रोंवाली दुर्गा देवी का ध्यान करता हूँ, उनके श्रीअंगों की प्रभा बिजली के समान हैं। वे सिंह के कन्धे पर बैठी हुई भयकर प्रतीत होती हैं। हाथों में तलवार और ढाल लिए अनेक कन्याएं उनकी सेवा में खड़ी हैं। वे अपने हाथों में चक्र, गदा, तलवार, ढाल, बाण, धनुष, पाश और मुद्रा धारण किए हुए हैं। उनका स्वरूप अग्निमय है तथा वे माथे पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करती हैं।

ध्यानम्—२

ॐ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः
शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ।

आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा
दुर्गादुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ॥

जो सिंह की पीठ पर विराजमान हैं, जिनके मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है, जो मरकतमणि के समान कान्तिवाली अपनी चार भुजाओं में शंख, चक्र, धनुष और वाण धारण करती हैं, तीन नेत्रों से सुशोभित होती हैं, जिनके भिन्न-भिन्न अंग बांधे हुए वाजूबन्द, हार, कंकण खनखनाती हुई करधनी और रुनझुन करते हुए नूपुरों से विभूषित हैं तथा जिनके कानों में रत्नजटिल कुण्डल झिलमिलाते रहते हैं, वे भगवती दुर्गा हमारी दुर्गति दूर करने वाली हों।

दुर्गा कवच का पाठ करने से सब कार्य सफल होते हैं और धन सम्पत्ति की प्राप्ति तथा शरीर निरोग रहता है और दुर्गा चालीसा के पाठ करने से मनोरथ पूर्ण होते हैं।

श्री दुर्गा जी की आरती

जय अम्बे गौरी, जय जय श्यामे गौरी।
मैया जय मंगल करणी, मैया जय आनन्द करणी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥१॥ जय अम्बे॥
माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्जवल से दोऊ नैना, चन्द्र वदन नीको ॥२॥ जय अम्बे॥
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ॥३॥ जय अम्बे॥
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःख हारी ॥४॥ जय अम्बे॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्रदिवाकर, राजत सम ज्योति ॥५॥ जय अम्बे॥

शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ॥६॥ जय अम्बे॥
चण्ड - मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।
मधु - कैटभ दोऊ मारे, सुर भय हीन करे ॥७॥ जय अम्बे॥
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥८॥ जय अम्बे॥
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरो ।
बाजत ताल मृदंगा, और बाजे डमरू ॥९॥ जय अम्बे॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन के दुःख हरता, सुख सम्पति करता ॥१०॥ जय अम्बे॥
भुजा चार अति शोभित, वरदु अभय धारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ॥११॥ जय अम्बे॥
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
श्री माल केतु में राजत, कोटि रत्न ज्योती ॥१२॥ जय अम्बे॥
ये अम्बे जी की आरति, जो कोई नर गावैं ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावैं ॥१३॥ जय अम्बे॥

दुर्गा जी का नित्य दर्शन-यात्रा

दुर्गा कुण्डाय नमः

दुर्गा कुण्ड के पूर्व दक्षिण के कोने के गणेश मन्दिर में।
दुर्गा विनायकाय नमः [मं० नं० २७/२]

दुर्गाकुण्ड के पूर्व सटा हुआ आनन्द पार्क में स्वामी भास्करानन्द सरस्वती जी की तपोभूमि है। २०वीं शताब्दी के महान् सिद्धों में स्वामी भास्करानन्द जी सरस्वती जी महाराज प्रसिद्ध हुए। उन्होंने लाखों मनुष्यों का कल्याण किया।

भास्करेश्वराय नमः [बी २७/६७]

दुर्गा कुण्ड के पूर्व उत्तर के शङ्करजी के मन्दिर में दुर्गा कुण्डेश्वर हैं। दुर्गा कुण्डेश्वराय नमः।

बनकटी हनुमते नमः।

सिद्धेश्वराय नमः [मं० नं० बी० २७/२ में]
सन्तोषी देव्यै नमः [मं० नं० बी० २७/२ में]
शीतला देव्यै नमः [मं० नं० बी० २७/२ में]

कुटकुटेश्वराय नमः [मं० नं० बी० २७/२ में, कुटकुटेश्वर के मन्दिर में]

सूर्यकर्णेश्वराय नमः [मं० नं० बी० २७/२ में]
वाणेश्वराय नमः [मं० नं० बी० २७/२ में]
शुष्केश्वराय नमः [मं० नं० बी० २७/२ में, हनुमान जी के मन्दिर में]
महाविष्णवे नमः [मं० नं० बी० २७/२ में]
यहाँ पर नरसिंह विष्णु की मूर्ति का वर्णन मिलता है।

नरसिंह विष्णवे नमः [मं० नं० बी० २७/२ में, बगल के शिव मन्दिर में]

जाङ्गलीश्वराय नमः [मं० नं० बी० २७/२ में]

बगल में जो कुँआ है वही दुर्गा शक्ति तीर्थ है। इस कुँआ के जल पीने से उदर सम्बन्धी रोग अच्छे होते हैं। [पश्चिम फाटक के बाहर दक्षिण बगल के शिव मन्दिर में]

तिलप्राणेश्वराय नमः [मं०नं०बी०२७/१ में]

वेदेश्वराय नमः [मं०नं०बी०२७/१ में, दुर्गा जी के फाटक के बाहर मन्दिर से सटा हुआ।

उत्तर बगल के शिवालय में द्वारेश्वर के मन्दिर में विष्णवेश्वर एवम् सूर्येश्वर हैं।

द्वारेश्वराय नमः [मं०नं० बी० २७/१ में] द्वारेश्वर के मन्दिर में सूर्य और लक्ष्मी-विष्णु पश्चिमाभिमुख हैं।

मयुरवेश्वराय नमः [मं०नं०बी० २७/१ में, सटा हुआ उत्तर बगल के कृष्ण मन्दिर में]

कृष्ण जी की मूर्ति पश्चिमाभिमुख है।

कृष्णेश्वराय नमः [मं०नं०बी०२७/१ में]

दुर्गाजी से पश्चिम बगल में कोड़ी माई मोहल्ला में।

मुकुटेश्वर और वाराटा देवीजी की यह सिद्ध पीठ है।

मुकुटेश्वराय नमः।

वाराटा देव्यै नमः [म०नं० बी०२७/२]।

दुर्गाजी से उत्तर धर्म संघ के फाटक के बाहर शंकर जी के मन्दिर में, काशी के दक्षिण भाग में क्षेत्र पालेश्वर विराजमान हैं।

क्षेत्रपालेश्वराय नमः [म०नं० बी २६/११८]

गुरुधाम चौराहे के पूर्व बगल में रेणुका देवी हैं। ये काशीखण्डो का हैं।

रेणुका देव्यै नमः।

रेणुका देवी से दक्षिण बगल में विशाल शंकर जी का मन्दिर है। उसमें जो दिव्य मूर्ति है वह शालग्रामेश्वर शिव जी हैं।

शालग्रामेश्वराय नमः ।

यहाँ पाँच देव हैं । इससे सटा हुआ पूर्व बगल के शङ्कर जी के मन्दिर में पर्वतेश्वर हैं ।

पर्वतेश्वराय नमः ।

अब दुर्गा जी के बगल में स्थित देव मन्दिरों का वर्णन करते हैं । फाटक के अन्दर बांयीं तरफ गणेश मन्दिर में गणनाथेश्वर हैं ।

रुद्रभैरवाये नमः [म० नं० बी० २७/१ में]

रुद्रभैरव से दक्षिण बगल में लक्ष्मी जी का मन्दिर है । उसमें देवी की दो मूर्तियाँ हैं । इनसे सटी हुई पूर्व बगल की मूर्ति महामाया देवी हैं और पश्चिम बगल की मूर्ति लक्ष्मी जी की है ।

माहामाया देव्यै नमः [म० नं० बी० २८/१ में]

लक्ष्मी देव्यै नमः [म० नं० बी० २७/१ में]

लक्ष्मी जी के पश्चिम बगल में भैरव मन्दिर है । इसमें कालरात्रि हैं ।

कालरात्रि देव्यै नमः [म० नं० बी० २७/१ में]

अष्टभुजा देव्यै नमः [म० नं० २८/१ में]

चण्डभैरवाय नमः [म० नं० बी० २७/१ में]

वेदों में, पुराणों में और स्मृतियों में दुर्गा जी की तपोभूमि और दुर्गा जी की सिद्ध पीठ का वर्णन मिलता है । अतः यह दुर्गा जी की भूमि सिद्ध भूमि है ।

दुर्गादेव्यै नमः [म० नं० बी० २७/१ में]

दुर्गा जी के नित्य दर्शन यात्रा पूर्ण हो गया ।

□

ढुण्ढिविनायक प्रादुर्भाव वर्णनम्

स्कन्द उवाच

विश्वेशोविश्वयासार्धंमया च मुनिसत्तम ! ।
महाशाख यिशखाभ्यांनन्दिभृङ्गिपुरोगमः ॥ १ ॥

नैगमेयेनसहितो रुद्रैः सर्वत्रसम्वृतः ।
देवर्षिभिः समायुक्तसनकाद्यैरभिष्टुतः ॥ २ ॥

समस्तायतनाधीशैर्दिक्पालैरभिनन्दितः ।
तीर्थैर्दर्शिततीर्थश्च गन्धर्वैर्गीतमङ्गलः ॥ ३ ॥

कृतपूजोऽप्सरोभिश्चनृत्यहस्तकपल्लवैः ।
वियत्यनाहतैर्वाद्यैः समन्तादनुमोदितः ॥ ४ ॥

ऋषीणां ब्रह्मनिर्घोषैर्वधिरीकृतदिङ्मुखः ।
कृतस्तुतिश्चारणौघैर्विमानैरभितो वृत्तः ॥ ५ ॥

त्रिविष्टपवधूमुष्टिभ्रष्टैर्लाजैरि तस्ततः ।
अभिवृष्टो महादेवः सम्प्रहृष्टतनूरुहः ॥ ६ ॥

दत्तमाल्योपहारश्च बहुविद्याधरी गणैः ।
यक्षगुह्यकसिद्धैश्च खेचरैरभिनन्दितः ॥ ७ ॥

कृतप्रवेशशकुनो मृगैः शकुनिभिः पुरः ।
किन्नरीभिः प्रहृष्टास्यैः किन्नरैरूपवर्णितः ॥ ८ ॥

विष्णुनाचमहालक्ष्म्याब्रह्मणाविश्वकर्मणा ।
नन्दिनाऽथगणेशेनआविष्कृतमहोत्सवः ॥ ९ ॥

नागाङ्गनाभिः परितः कृतनीराजनाविधिः ।
प्रविवेश महादेवः पुरीं वाराणसीं शुभाम् ॥ १० ॥

पश्यतां सर्वदेवानामवरुह्य वृषेन्द्रतः ।
परिष्वज्य गणाधीशं प्रोवाच वृषभध्वजः ॥ ११ ॥

यदहं प्राप्तवानस्मिपुरीं वाराणसीं शुभाम् ।
मयाप्यतीवदुष्प्राप्यांसप्रसादोस्यवै शिशोः ॥१२॥
यद्दुष्प्रसाध्यंहि पितुरपित्रिजगतीतले ।
तत्सूनुना सुसाध्यं स्यादत्र दृष्टान्तता मयि ॥१३॥
अनेन गजवक्त्रेण स्वबुद्धिविभवैरिह ।
काशीप्राप्तिर्यथामेस्यात्तथाकिञ्चदनुष्ठितम् ॥१४॥
पुत्रवानहमेवास्मियच्चमेचिरचिन्तितम् ।
स्वपौरुषेणकृतवानभिलाषं करस्थितम् ॥१५॥
इत्युक्त्वात्रिपुरी हर्त्ता पुरुहूतादिभिः स्तुतः ।
परितुष्टाव संहृष्टः स्पष्टगीर्भिर्गजाननम् ॥१६॥

स्तुति—

श्री कण्ठ उवाच

जय विघ्नकृतामाद्य ! भक्तनिर्विघ्नकारक ! ।
अविघ्न विघ्न शमन महाविघ्नैकविघ्नकृत् ॥१७॥
जय सर्वगणाधीश जय सर्वगणाग्रणीः ! ।
गणप्रणतपादाब्जगणनातीतसद्गुण ! ॥१८॥
जय सर्वग ! सर्वेश सर्वबुद्धयेकशेवधे ।
सर्वमायाप्रपञ्चज्ञ सर्वकर्माग्रपूजित ॥१९॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्य जयत्वं सर्वमङ्गल ।
अमङ्गलोपशमन महामङ्गलहेतुकः ॥२०॥
जय सृष्टिकृतांवन्द्य जय स्थितिकृतानत ! ।
जय संहृतिकृत्स्तुत्य ! जय सत्कर्मसिद्धिदः ! ॥२१॥
सिद्धवन्द्यपदाम्भोज जय सिद्धिविधायक ! ।
सर्वसिद्धयेकनिलयमहासिद्धयृद्धिसूचक ! ॥२२॥
अशेषगुणनिर्माणगुणातीतगुणाग्रणीः ! ।
परिपूर्णचरित्रार्थं जयत्वं गुणवर्णित ॥२३॥

जय सर्वबलाधीश बलाराति बलप्रद ! ।
बलाकोज्ज्वलदन्ताग्रबालावालपराक्रमः ! ॥२४॥
अनन्तमहिमाधार धराधर विदारण ! ।
दन्ताग्रप्रोतदिङ्नाग जय नाग विभूषण ! ॥२५॥

ये त्वां नमन्ति करुणामयदिव्यमूर्ते सर्वैनसामपि भुवो भुवि मुक्तिभाजः।
तेषां सदैव हरसीह महोपसर्गान्स्वर्गापवर्गाविवर्गमपि संप्रददासि तेभ्यः॥
ये विघ्नराज भवताकरुणाकटाक्षैः सम्प्रेक्षिताः क्षितितले क्षणमात्रमत्र।
तेषां क्षयान्त सकलान्यपि किल्बिषाणि लक्ष्मीः कटाक्षयति तान्पुरुषोत्तमान्हि।
ये त्वां स्तुवन्ति नतविघ्नविघातदक्षदाक्षायणीहृदयपङ्कज तिग्मरश्मे!।
श्रूयन्त एव त इह प्रथिता न चित्रं चित्रं तदत्र गणपा यदहोत एव॥
ये शीलयन्ति सततं भवतोऽङ्घ्रियुग्मतं ते पुत्र पौत्र धन्य धान्य समृद्धिभाजः।
संशीलिताङ्घ्रिकमलावहुभृत्यवर्गंभूपालभोग्यकमलां विमलां लभन्ते॥
त्वंकारणंपरमकारणकारणानां वेद्योऽसिवेदविदुषां सततं त्वमेकः।
त्वंमार्गणीयमसिकिञ्चनमूलवाचां वाचामगोचर चराचर दिव्यमूर्ते॥
वेदाविदन्ति न यथार्थतयाभवन्तं ब्रह्मादयोऽपि न चराचर सूत्रधार!।
त्वं हंसिपासिविदधासिसमस्तमेकः कस्तेस्तुतिव्यतिकरोमनसाप्यगम्य !॥
त्वद्दुष्टदृष्टिविशिखैर्निहतान्निहन्मि दैत्यान्पुरान्धकजलन्धरमुख्यकांश्च।
कस्यास्ति शक्तिरिहयस्त्वदृतेपितुच्छं शाञ्छेद्विधातुमिह सिद्धिद कार्यजातम्।
अन्वेषणे ढुढिरयं प्रथितोऽस्ति धातुः सर्वार्थं ढुण्ढिततया तव ढुण्ढिनाम।
काशीप्रवेशमपि कोलभतेऽत्रदेही तोष विनातव विनायक ढुण्ढिराज ॥३३॥
ढुण्ढे प्रणम्य पुरतस्तव पादपद्मं यो मां नमस्यति पुमानिह काशिवासी।
तत्कर्णमूलमधिगम्य पुरादिशामितारकंञ्चिदत्र न पुनर्भवताऽस्ति येन॥
स्नात्वा नरः प्रथमतोमणि कर्णिकाय मुद्गूलिताङ्घ्रि युगलस्तुसचैलमाशु।
देवर्षिमानवपितॄनपि तर्पयित्वा ज्ञानोदतीर्थमभिलभ्य भजेत्ततस्त्वाम्॥
सामोदमोदक भरैर्वरधूपदीपैर्माल्यैः सुगन्धबहुलैरनुलेपनैश्च।
सम्प्रीणय्य काशिनगरीफल दानदक्षं प्रोक्तश्चाऽयमांकइह सिद्ध्यतिनैव दुःखं॥

तीर्थान्तराणि च ततः क्रम वर्जितोऽपिसंसाधयन्निह भवत्करुणाकटाक्षैः ।
दूरीकृतस्वहितघात्युपसर्गवर्गो ढुण्ढेलभेद विकलं फलमत्र काश्याम् ॥
यः प्रत्यहं नमति ढुण्ढविनायकं त्वां काश्यां प्रगेप्रतिहता खिलविघ्नसंघः ।
नो तस्य जातु जगतीतलवर्तिवस्तु दुष्प्रापमत्र च परत्र च किञ्चनापि ।
योनाम ते जपति ढुण्ढिविनायकरयतं वैजपन्त्यनुदिनं हृदि सिद्धयोऽष्टौ ॥
भोगान्विभूज्य विविधान्विबुधोपभोग्यान्निर्वाणया कमलया ध्रियते स चान्ते ।
दूरेस्थितोऽप्यहरहस्तवपादपीठं यः संस्मरेत्सकल सिद्धिद ! ढुण्ढिराज ! ॥
काशीस्थितेर विकलं सफलं लभेत नैवान्यथा न वितथां मम वाक्कदाचित् ।

जाने विघ्नानसंख्यातान्विनिहन्तुमनेकधा ।
क्षेत्रस्यास्यमहाभागनानारूपैरिहस्थितः ॥
यानियानिचरूपाणि यत्र यत्र च तेऽनघ ।
तानितत्रप्रवक्ष्यामिश्रृण्वन्त्वेतेदिवौकसः ॥४२॥
प्रथमं ढुण्ढिराजोऽसि मम दक्षिणतोमनाक् ।
आढुण्ढ्य सर्वं भक्तेभ्यः सर्वार्थान्सम्प्रयच्छसि ॥४३॥

अङ्गारवासरस्वतीमिह यैश्चतुर्थीं सम्प्राप्यमोदकभरैः परिमोदवद्भिः ।
पूजा व्यधायि विविधा तवगन्धमाल्यैस्तानत्रपुत्रविदधामिगणान् गणेश ॥४४॥
ये त्वामिह प्रतिचतुर्थिसमर्चयन्ति ढुण्ढे ! विगाढमतयः कृतिनस्त एव ।
सर्वापदां शिरसिवामपदं निधाय सम्यग्गजानन ! गजाननतां लभन्ते ॥४५॥

माघशुक्लचतुर्थ्यान्तुनक्तव्रतपरायणाः ।
ये त्वां ढुण्ढेऽर्चयिष्यन्तितेऽर्च्याः स्युरसुरद्रुहाम् ॥४६॥
विधाय वार्षिकीं यात्रां चतुर्थीं प्राप्य तापसीम् ।
शुक्लां शुक्लतिलैर्वढ्या प्राशनीयास्तलड्डुकान्नरी ॥४७॥
कार्याऽत्रप्रयत्नेनक्षेत्रसिद्धिमभीप्सुभिः ।
तस्यां चतुर्थ्यां त्वत्प्रीत्यै ढुण्ढे ! सर्वोपसर्गहृत ॥४८॥
तां यात्रां नात्र यः कुर्यान्नैवेद्यंतिललड्डुकैः ।
उपसर्गसहस्रैस्तु सहन्तव्योमगाज्ञया ॥४९॥

ह्योमं तिलाज्यद्रव्येण यः करिष्यति भक्तितः ।
तस्यां चतुर्थ्यां मन्त्रज्ञस्तस्य मन्त्रः प्रसेत्स्यति ॥५०॥
वैदिकोऽवैदिको वापि यो मन्त्रस्ते गजानन ! ।
जप्तस्त्वत्सन्निधौ ढुण्ढे ! सिद्धि दास्यति वाञ्छिताम् ॥५१॥

ईश्वर उवाच

इमां स्तुतिं मम कृतिं यः पठिष्यति सन्मतिः ।
न जातु तं तु विघ्नौघाः पीडयिष्यन्तिनिश्चितम् ॥५२॥
ढोण्ढों स्तुतिमिमां पुण्यां यः पठेद्ढुण्ढिसन्निधौ ।
सान्निध्यं तस्य सततं भजेयुः सर्वसिद्धयः ॥५३॥
इमां स्तुतिं नरो जप्त्वा परं नियतमानसः ।
मानसैरपि पापैस्तैर्नाभिभूयते कर्हिचित् ॥५४॥
पुत्रान्कलत्रं क्षेत्राणिवराश्वान्वरमन्दिरम् ।
प्राप्नुयाच्च धनं धान्यं ढुण्ढिस्तोत्रंजपन्नरः ॥५५॥
सर्वसम्पत्करं नाम स्तोत्रमेतन्मयेरितम् ।
प्रजप्तव्यं प्रयत्नेन मुक्तिकामेन सर्वदा ॥५६॥
जप्त्वा स्तोत्रमिदं पुण्यं क्वापि कार्ये गमिष्यतः ।
पुंसः पुरः समेष्यन्ति नियतं सर्वसिद्धयः ॥५७॥
अन्यच्च कथयाम्यत्र शृण्वन्त्वेते दिवौकसः ।
ढुण्ढिना क्षेत्ररक्षार्थं यत्र यत्र स्थितिः कृता ॥५८॥
काश्यां गङ्गासिसम्भेदेनामतोऽर्के विनायकः ।
दृष्टोऽर्कवासरेपुम्भिः सर्वताप प्रशान्तये ॥५९॥
दुर्गो नाम गणाध्यक्षः सर्वदुर्गतिनाशनः ।
क्षेत्रस्य दक्षिणे भागे पूजनीयः प्रयत्नतः ॥६०॥
भीमचण्डी समीपे तु भीमचण्ड विनायकः ।
क्षेत्रनैर्ऋतदेशस्थो दृष्टोहन्तिमहाभयम् ॥६१॥
क्षेत्रस्य पश्चिमेभागे सदेहलि विनायकः ।
सर्वान्निवारयेद्विघ्नान्भक्तानांनात्र संशयः ॥६२॥

क्षेत्र वायव्यदिग्भागे उद्दण्डाख्यो गजाननः ।
उद्दण्डानपि विघ्नौघान् भक्तानां दण्डयेत्सदा ॥६३॥
काश्याः सदोत्तराशायां पाशपाणिर्विनायकः ।
विनायकान्पाशयन्ति भक्त्या काशीनिवासिनाम् ॥६४॥
गङ्गावरणयोः सङ्गे रम्यः खर्वं विनायकः ।
अखर्वानपिविघ्नौघान्भक्तानां खर्वयेत्सतान् ॥६५॥
प्राच्यां तु क्षेत्र रक्षार्थं सिद्धः सिद्धिविनायकः ।
पश्चिमे यमतीर्थस्य साधकक्षिप्रसिद्धिदः ॥६६॥
बाह्यावरणग श्चैतेकाश्यामष्टौविनायकाः ।
उच्चाटयन्त्यभक्तांश्चभक्तानां सर्वसिद्धिदाः ॥६७॥
द्वितीया वरणे चैव ये रक्षन्ति विनायकाः ।
अविमुक्तमिदं क्षेत्रं तानहं कथयाम्यतः ॥६८॥
स्वर्धुन्याः पश्चिमे कूले उत्तरेऽर्कविनायकात् ।
लम्बोदरो गणाध्यक्षः क्षालयेद्विघ्नकर्दमम् ॥६९॥
तत्पश्चिमेकूटदन्त उदग्दुर्गविनायकात् ।
दुर्गो रसर्गसंहर्ता रक्षेत्क्षेत्रमिदं सदा ॥७०॥
भीमचण्डगणाध्यक्षात्किश्चिद्दीशानदिग्गतः ।
क्षेत्ररक्षोगणाध्यक्षः पूज्यः शालकटङ्कटः ॥७१॥
प्राच्यां देहुलि विघ्नेशात्कूष्माण्डाख्यो विनायकः ।
पूजनीयः सदा भक्तैर्महोत्पात प्रशान्तये ॥७२॥
उद्दण्डाख्याद्गणपतेराशुशुक्षणिदिक्स्थितः ।
महाप्रसिद्धः सम्पूज्योभक्तैर्मुण्डविनायकः ॥७३॥
पाताले तस्य देहोऽस्ति मुण्डं काश्यां व्यवस्थितम् ।
अतः सङ्गीयते काश्यां देवा मुण्ड विनायकः ॥७४॥
पाशपाणेर्गणेशानाद्दक्षिणे विकटद्विजम् ।
पूजयित्वा गणपतिगाणपत्यपदं लभेत् ॥७५॥

खर्वस्याग्नैर्ऋते भागे राजपुत्रो विनायकः ।
भ्रष्टराज्यश्च राजानंराजानं कुरुतेऽर्चितः ॥७६॥
गङ्गायाः पश्चिमे कूले प्रणवाख्योगणाधिपः ।
अवाच्यां राजपुत्राच्चप्रणतः प्रणयेद्दिवम् ॥७७॥
द्वितीया वरणे काश्यामष्टावेते विनायकाः ।
उत्सादयेयुर्विघ्नौघान्काशीस्थिति निवासिनाम् ॥७८॥
क्षेत्रे तृतीया वरणे क्षेत्र रक्षाकृतः सदा ।
ये विघ्नराजाः सन्तीह ते वक्तव्या मयाधुना ॥७९॥
उदग्वहायाः स्वधुन्या रम्ये रोधसि विघ्नराट् ।
लम्बोदरादुदीच्यान्तु वक्रतुण्डोऽघसङ्घहृत् ॥८०॥
कूटदन्ताद्गणपतेरुदीच्यामेकदन्तकः ।
सदोपसर्गसंसर्गात्पायादानन्दकाननम् ॥८१॥
काशी भयहरो नित्यमैश्यां शालकटङ्कटात् ।
त्रिमुखोनाम विघ्नेशः कपिसिंहद्विपाननः ॥८२॥
कूष्माण्डात्पूर्वदिग्भागे पञ्चास्योनाम विघ्नराट् ।
पञ्चास्यस्यन्दनवरः पाति वाराणसीं पुरीम् ॥८३॥
हेरम्बाख्यः सदाग्नेय्यां पूज्यो मुण्ड विनायकात् ।
अम्बावत्पूरयेत्कामान्सर्वेषां काशिवासिनाम् ॥८४॥
अवाच्यामर्चयेद्धीमान्सिद्ध्यै विकटदन्ततः ।
विघ्नराजंगणपतिं सर्वविघ्नविनाशनम् ॥८५॥
विनायकाद्राजपुत्रात्किञ्चिद्रक्षोदिशिस्थितः ।
वरदाख्यो गणाध्यक्षः पूज्यो भक्तवरप्रदः ॥८६॥
याम्यां प्रणवविघ्नेशाद्गणेशो मोदकप्रियः ।
पूज्यः पिशङ्गिलातीर्थे देवनद्यास्तटेशुभे ॥८७॥
चतुर्थावरणे काश्यां भक्तविघ्नविनाशकाः ।
द्रष्टव्या हृष्टचेतोभिः स्पष्टमष्टौ विनायकाः ॥८८॥

वक्रतुण्डादुदग्दिक्स्थः स्वः सिन्धो रोधसि स्थितः ।
विनायकोऽस्त्यभयदः सर्वेषां भयनाशनः ॥८९॥
कौबेर्यमेकदशनात्सिंहतुण्डो विनायकः ।
उपसर्गगजान्हन्तिवाराणसिनिवासिनाम् ॥९०॥
कूणिताक्षो गणाध्यक्षस्त्रितुण्डादीशदिक्स्थितः ।
महाश्मशानं सततं पायाद्दुष्टकुदृष्टितः ॥९१॥
प्राच्यां पश्चास्यतः पायात्पुरीं क्षिप्रप्रसादनः ।
क्षिप्रप्रसादनार्चितः क्षिप्रं सिध्यन्ति सिद्धयः ॥९२॥
हेरम्बाद्वह्निदिग्भागे चिन्तामणि विनायकः ।
भक्त चिन्तामणिः साक्षाच्चिन्तितार्थसमर्पकः ॥९३॥
विघ्नराजादवाच्यान्तुदन्तहस्तोगणेश्वरः ।
लिखेद्विघ्नसहस्राणिनृणांवाराणसीद्रुहाम् ॥९४॥
वरदाद्या तु धान्यां च यातुधानगणावृतः ।
देवः पिचिण्डिलो नाम पुरीं रक्षेदहर्निशम् ॥९५॥
दृष्टः पिलिपिलापीर्थेदक्षिणेमोदक प्रियात् ।
उद्दण्डमुण्डोहेरम्बोभक्तेभ्यः किंनयच्छति ॥९६॥
प्रावारे पञ्चमे काश्यां द्विचतुष्क विनायकाः ।
कुर्वन्तिरक्षांक्षेत्रस्ययेतानत्रब्रवीम्यहम् ॥९७॥
तीरे स्वर्गतरङ्गिण्या उत्तरे चाभयप्रदात् ।
स्थूलदन्तो गणेशानः स्थूलाः सिद्धीर्दिशेत्सताम् ॥९८॥
सिंहतुण्डादुदग्भागेकलिप्रियविनायकः ।
कलहंकारयेन्नित्यमन्योन्यंतैर्थिकद्रुहाम् ॥९९॥
कूणिताक्षात्तथैशान्याञ्चतुर्दन्तोविनायकः ।
यस्यदर्शनमात्रेणविघ्नसङ्घः क्षयेत्स्वयम् ॥१००॥
क्षिप्रप्रसादनादैन्द्र्यां द्वितुण्डोगणनायकः ।
अग्रतः पृष्ठतश्चापि बिभर्ति सदृशीं श्रियम् ॥१०१॥

तस्यसन्दर्शनात्पुंसांभवेच्छ्रीः सर्वतोमुखी ।
ज्येष्ठोनामगणाध्यक्षोज्येष्ठोभेपुत्रसम्पदि ॥१०२॥
ज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्यां सम्पूज्यो ज्येष्ठताप्तये ।
स्थितो वह्निदिशोभागे चिन्तामणिविनायकात् ॥१०३॥
दन्तहस्ताद्यमाशायांपूज्योगजविनायकः ।
तस्यसम्पूजनाद्भूवत्यागजान्ताश्रीरवाप्यते ॥१०४॥
पिचिण्डिलाद्गण पतेर्याम्शां कालविनायकः ।
भयंनकालकलितंतस्यसंसेवनान्नृणाम् ॥१०५॥
उद्दण्डमुण्डाद्गणपात्कीनाशदिशिसंस्थितम् ।
नागेशंगणपं दृष्ट्वा नागलोके महीयते ॥१०६॥
अथषष्ठावरणगाः प्रोच्यन्ते विघ्ननायकाः ।
तेषांनामश्रवादेव पुंसां सिद्धिः प्रजायते ॥१०७॥
मणिकर्णो गणपतिः प्राच्यां विघ्नविघातकृत् ।
आशाविनायको वह्न्यां भक्ताशां पूरयन् स्थितः ॥१०८॥
याम्यां सृष्टिगणेशश्च सृष्टिसंहार सूचकः ।
नैऋंत्यांयक्षविघ्नेशः सर्वविघ्नहरः परः ॥१०९॥
प्रतीच्यां गजकर्णश्च सर्वेषां क्षेमकारकः ।
चित्रघण्टोगणपतिर्वायव्यां पालयेत्पुरीम् ॥११०॥
स्थूलजङ्घ उदीच्यां च शमयेच्छमिनामघम् ।
ऐशयामैशीं पुरीं पायात्समङ्गलविनायकः ॥१११॥
यमतीर्थादुदीच्यांचपूज्योमित्र विनायकः ।
सप्तमावरणेयेचतांश्चवक्ष्येविनायकान् ॥११२॥
मोदाद्याः पञ्चविघ्नेशाः षष्ठोज्ञानविनायकः ।
सप्तमोद्वारविघ्नेशो महाद्वारपुरश्चरः ॥११३॥
अष्टमः सर्वकष्टौघानविमुक्त विनायकः ।
अविमुक्ते मम क्षेत्रे हरेत्प्रणतचेतसाम् ॥११४॥

षट्पञ्चाशद्गजमुखानेतान्यः संस्मरिष्यति ।
दूरदेशान्तरस्थोऽपिस्मृतोज्ञानमाप्नुयात् ॥११५॥
ढुण्ढिस्तुतिं महापुण्यां षट्पञ्चाशद्गजाननाम् ।
यः पठिष्यति पुण्यात्मा तस्य सिद्धिः पदे पदे ॥११६॥
इमेगणेश्वराः सर्वेंस्मतंव्यायत्रकुत्रचित् ।
महाविपत्समुद्रान्तः पतन्तं पान्तिमानवम् ॥११७॥
इतिस्तुतिं महापुण्यां श्रुत्वा चैतान्विनायकान् ।
जातुविघ्नैर्नबाध्येत पापेभ्योऽपि प्रहीयते ॥११८॥
इत्युक्त्वा देवदेवोऽपिमहोत्सवित मानसः ।
कृताभिषेको ब्रह्माद्यैस्तेभ्शोवस्थाऽभिवाञ्छितम् ॥११९॥
सम्प्रसाद्य यथायोग्यं सर्वानुचितचञ्चुरः ।
अविशद्राजसदनं विश्वकर्मं विनिर्मितम् ॥१२०॥
एवं स्तुतो भगवतादेवदेवेन विघ्नजित् ।
इत्यश्च बहुधात्मानं स चकार विनायकः ॥१२१॥
एतानि तस्य नामानि ढुण्ढिराजस्य कुम्भज ! ।
जपित्वायानि मनुजो लप्स्यते निजवाञ्छितम् ॥१२२॥
अन्येऽपिस्तत्रवैभेदातस्यढुण्ढेर्गणेशितुः ।
भक्तैः समर्चिताभक्त्याह्यसंख्याताः सहस्रशः ॥१२३॥
भगीरथगणाध्यक्षो हरिश्चन्द्रविनायकः ।
कपर्दीरुद्रोगणपतिस्तथाविन्दुविनायकः ॥१२४॥
इत्याद्यास्तत्र विघ्नेशाः प्रतिभक्तप्रतिष्ठिताः ।
तेषामप्यर्चनात्पुंसां जायन्ते सर्वसम्पदः ॥१२५॥
श्रुत्वाध्यायामिमं पुण्यं नरः श्रद्धासमन्वितः ।
सर्वविघ्नान्समुत्सृज्यलभतेवाञ्छितम्पदम् ॥१२६॥

छप्पन विनायक प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा

छप्पन विनायक दर्शन यात्रा जाने के एक दिन पहले गणेश जी की पूजा करें। प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर गणाध्यक्ष अर्क-विनायक तीर्थ जाने का क्रम इस प्रकार है--विश्वनाथ जी से दक्षिण लोलार्क घाट, अर्क विनायक तीर्थ, पानी के टंकी के दक्षिण सटा हुआ बगल में लोलार्क घाट में स्नान करके, शुद्ध वस्त्र पहिन कर, रुद्राक्ष की माला धारण कर, त्रिपुण्ड टीका (अर्द्धपुण्ड) लगा कर, पंचोपचार पूजन की सामग्री (दूब, बेसन, खोवा और सूजी के लड्डू, विल्वपत्र, पुष्प, धूप, द्वीप, नैवेद्य द्रव्य गंगा-जल और रस्सी, जल पात्र यथा रोरी, वस्त्र आदि साथ में लेकर अपने लिए जल पान करने और भोजन की सामग्री साथ में) लेकर "शिव-शिव" नाम महा मन्त्र का जाप करते हुए। "हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे"। सबको मिल कर एक स्वर से कीर्तन करते हुए चलना चाहिए। संकल्प लेकर दर्शन यात्रा प्रारम्भ करें। घाट के ऊपर जो मन्दिर का दर्शन होता है वही अर्क विनायक का मन्दिर है। इस मन्दिर के अन्दर सामने, जो दिव्य बड़ी गणेश जी की मूर्ति उत्तराभिमुख है वही गणाध्यक्ष अर्क विनायक हैं। अर्क विनायक का प्रमाण यजुर्वेद, काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य, लिंग पुराण, स्कन्द पुराण तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

अर्क विनायक तीर्थायनमः

१. अर्क (सूर्य) विनायकाय नमः [म० नं० बी० २/१७ मो० लोलार्क घाट (कुण्ड)]

अर्क विनायक के दर्शन पूजन करने वाले भक्तों के मनोरथ निर्विघ्न पूर्ण होते हैं और सब कार्य सफल होते हैं। काशी वास में विघ्न नहीं आता और द्रव्य, विद्या, परिवार तथा नौकरी में पदोन्नति तथा मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। दरिद्रता नहीं रहती तथा शत्रु पर विजय प्राप्त होती

है। दर्शन पूजन करने वाले यात्री जहाँ कहीं भी रहें अन्त समय में मुक्ति दिलाते हैं। अर्क विनायक का पद (मेजर का है) मुक्ति पुरी काशी में अर्क विनायक रक्षा करते हैं अतएव प्रतिदिन प्रत्येक चतुर्थी के दिन दर्शन करना चाहिए।

अर्क विनायक में गणेश, विष्णु और शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं। पहले पुराण, वेद, काशी खण्ड, गणेश उपनिषद्, काशी रहस्य और तुलसी कृत रामायण आदि सम्मेलन होते थे और आजकल अखण्डकीर्तन, अखण्ड रामायण का पाठ आदि किया जाता है। अर्क विनायक में (पहले) व्याकरण, न्याय और वेदान्त आदि का शास्त्रार्थ भी होता था तथा उसमें जो विजयी होता था वह सर्वत्र विजयी होता था।

ढुण्ढिराज जी स्वयम् छप्पन विनायक के शरीर धारण करके काशी की रक्षा करते हैं और काशी की निन्दा करने वाले, काशी में रहने वाले अर्थात् काशी वास करने वाले साधु सन्त-महात्मा और सन्यासियों को सताने वाले या कष्ट देने वाले, मन्दिर-मूर्तियों का खण्डन करने वाले, सनातन धर्म का विरोध करने वाले, साधु सन्त और ब्राह्मणों की निन्दा और तीर्थ गंगा तथा विष्णु शिव और गौरी की निन्दा करने वाले और काशी 'मरणान्मुक्ति' के विषय में तथा अन्य शास्त्रों के विषय में खण्डन-मण्डन करने वाले को काशी से बाहर निकाल देते हैं। काशी के ज्योतिषियों, पंडितों, विद्वनों से निवेदन यह है कि कम से कम पचास वर्ष पूर्व के पचांग देख कर काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य, शिव पुराण और लिंग पुराण को देखकर काशी के प्रत्येक देवताओं का वार्षिकोत्सव और दर्शन पूजन की तिथि निश्चय करके पंचाग में लिखने का कष्ट करें। इससे ज्योतिषी और उसके परिवारों का निश्चय ही कल्याण होगा और सनातनी भक्तों को अपने धर्म की सही जानकारी मिलेगी। स्कन्द पुराण में एक जगह इस प्रकार लिखा है कि जो धर्मप्रचारक ज्योतिषी आदि अपने पंचाग में काशी के विषय में और काशी के देवताओं के विषय में प्रत्येक वार्षिकोत्सव, दर्शन उत्सव की तिथि निश्चय करके शुद्ध और सही नहीं लिखता

वह ज्योतिषी काशी में धन सम्पत्ति होते हुए भी दुखी, चिन्तित और अशान्त रहता है। उसके कार्य में विघ्न, घर में कलह और स्त्री-पुत्र आज्ञा का पालन नहीं करते।

काशी के बाहर से आने वाले पापी काशी में आने के पश्चात् अपने सभी पाप कर्म को छोड़कर अन्न, द्रव्य का दान करें, चन्द्रायन आदि व्रत करें और काशी का दर्शन यात्रा करें तथा 'शिव-शिव' महामन्त्र का निरन्तर जाप करे इससे पापी पाप से मुक्त होता है। वेदान्त का श्रवण-मनन, निदिध्यासन करें और अर्क विनायक को प्रत्येक रविवार के दिन यथाशक्ति मीठा, दूध का प्रसाद चढ़ा कर ब्राह्मणों को दूध का पान कराने, यथाशक्ति दक्षिणा देने से परिवार में कलह नहीं होता, दुख संकट दूर होते हैं और नौकरी में उन्नति, विद्या द्रव्य तथा बुद्धि की वृद्धि होती है।

अर्क विनायक से पश्चिम दुर्ग विनायक हैं। अस्सी चौराहा से पश्चिम दुर्गाकुण्ड होते हुए दुर्ग विनायक दुर्गाकुण्ड के पूर्व दक्षिण के कोने में गणेश मन्दिर है। जिसमें फाटक के अन्दर सामने, जो दिव्य विशाल गणेश जी की मूर्ति उत्तराभिमुख है वही दुर्ग विनायक हैं। दुर्ग विनायक तीर्थ दुर्गाकुण्ड में हैं। स्कन्द पुराण, काशी रहस्य, शिव रहस्य, पुराणों और में वेदों में दुर्ग विनायक का वर्णन विस्तार से मिलता है। दुर्ग विनायक तीर्थाय नमः (तीर्थ दुर्गाकुंड है।)

२. दुर्ग विनायकायनमः [म० नं० बी० २७/२ में, मो० दुर्गाकुण्ड।]

दुर्गा विनायक के दर्शन पूजन करने वाले भक्तों के दैहिक, दैविक और भौतिक ताप शान्त होते हैं और दुख कष्ट विघ्न दूर होते हैं और सब कार्य सिद्ध होते हैं। दुर्गा गणेश जी के दर्शन से समस्त दुर्गतियों का नाश होता है और दुर्ग विनायक काशी के दक्षिण फाटक में रह कर काशी की रक्षा करते हैं। अन्य विवरण यहाँ काशी मोक्षनिर्णय, देवी भागवत और दुर्गा सप्तसती, रामायण आदि कथा, काशी माहात्म्य, काशी खण्ड, काशी रहस्य आदि कथा सम्मेलन होते हैं :

दुर्ग विनायक से भीम चण्ड विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है—

दुर्ग विनायक से पश्चिम पंचक्रोशी मार्ग से चितईपुर, कन्दवा में कर्दमेश्वर का दर्शन करके पश्चिम काशीपुर भीमचंडी होते हुए भीमचंडी विनायक। भीमचंडी देवी जी के फाटक के अन्दर भीमचंडी देवी के मन्दिर से सटा हुआ पूर्व बगल के गणेश मन्दिर में दरवाजे के अन्दर जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति उत्तराभिमुख है वही भीमचंडी विनायक हैं, तीर्थ पश्चिम बगल में कुँआ के रूप में है।

भीमचंड विनायक का प्रमाण वेदों में, स्कन्दपुराण में, पद्मपुराण में, देवी भागवत और ब्रह्मवैवर्त पुराण में, विस्तार से प्राप्त होता है।

३. भीमचंड विनायक तीर्थायनमः [मो० भीमचंडी]

भीमचंड विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के सब कार्य सफल होते हैं, दुख विघ्न-बाधा से बचाव होता है, परिवार में कलह नहीं होता तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। भीमचंड विनायक में गणेश, विष्णु शिव शक्ति आदि यज्ञ होते हैं। काशी रहस्य काशी खंड, वेदान्त, काशी मोक्ष निर्णय, देवी भागवत, रामायण आदि की कथा तथा सम्मेलन पहले होते थे और आज कल श्रृंगार, वार्षिकोत्सव होते हैं।

भीमचंडी देवी जी के दर्शन करके उस दिन भीमचण्डी में विश्राम करें। भोजन करके छप्पन विनायक के विषय में कथा श्रवण करें, कथा के पश्चात् कीर्तन करें और गणेश जी का स्मरण करते हुए रात्रि में शयन करें। प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर उसी प्रकार से दर्शन यात्रा प्रारम्भ करें। भीमचण्ड विनायक से देहली विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है--

भीमचंड विनायक से उत्तर, राजा तालाब और इससे उत्तर रामेश्वर जाने वाली सड़क से दीनदासपुर, जनसा, चौखंडी भटौली गांव होते हुए, देहली विनायक जायें। देहली विनायक तीर्थ दाहिनी तरफ विशाल कुण्ड (पक्का तालाब) है। तीर्थ के पूर्व तट में जो बड़ा गणेश मन्दिर का दर्शन होता है। उसके अन्दर विष्णु के बगल में सामने जो दिव्य गणेश जी का

बड़ी मूर्ति पूर्वाभिमुख है वही देहली विनायक हैं। इनका प्रमाण स्कन्द पुराण में, पद्म पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, शिव रहस्य में, काशी वार्षिक यात्रा में, काशी दर्शन में और मत्स्य पुराण में विस्तार से मिलता है। [पंच-क्रोसी दर्शन यात्रा में देहली विनायक के विषय में विस्तार से लिखा गया है।]

[देहली विनायक तीर्थायनमः।]

४. देहली विनायकायनमः (मो० भटौली गाँव में)

देहली विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के रिपु परास्त होते हैं। देहली विनायक अपने भक्तों के भविष्य में आने वाले समस्त विघ्नों और दुःखों, चिन्ताओं आदि को निःसन्देह निवारण करते हैं। देहली विनायक काशी के पश्चिम फाटक में अपने गणों के साथ रहकर काशी की रक्षा करते हैं।

देहली विनायक में विष्णु, रुद्र-शक्ति और गणेश यज्ञ होते हैं। वार्षिक श्रृङ्गारोत्सव तथा बिरहा आदि लोक कार्यक्रम होता है। देहली विनायक से उद्दण्ड विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है :—देहली विनायक से उत्तर लगभग दो किलोमीटर रामेश्वर से पहले भुइली गाँव से दाहिनी तरफ सड़कसे सटा हुआ गणेश मन्दिर में सामने जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति उत्तराभिमुख दिखाई पड़ती है वही उद्दण्ड विनायक हैं। उद्दण्ड विनायक तीर्थ बगल में कुँआ के रूप में अकलेश्वर से सटा हुआ दक्षिण बगल में है।

उद्दण्ड विनायक का वर्णन स्कन्द पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, शिव रहस्य में तथा काशी दर्शन में विस्तार से है।

उद्दण्ड विनायक तीर्थाय नमः।

५. उद्दण्ड विनायकाय नमः [मो० भुइली गाँव में]

उद्दण्ड विनायक के दर्शन पूजन जो भक्त करते हैं उनके विघ्न बाधा, दुःख-कष्ट दूर होते हैं और सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। धन, परिवार में सम्वृद्धि, नौकरी में पदोन्नति, विद्या में वृद्धि होती है।

उद्दण्ड विनायक के दर्शन-पूजन करके उस दिन रामेश्वर का दर्शन करें और दर्शन करके रामेश्वर में ही विश्राम करें। दूसरे दिन नित्य कर्म से निवृत्त होकर रामेश्वर से दक्षिण बगल से पूर्व लोहता जाने वाले मार्ग से उद्दण्ड विनायक से पाशपाणि विनायक जाने का पगडण्डी मार्ग है।

उद्दण्ड विनायक से पूर्व जाने वाली पगडण्डी मार्ग ७ किलोमीटर है। लोहता वाराणसी स्टेशन के पश्चिम गेट से रेलवे लाइन पार कर उत्तर बगल में सड़क से सटा हुआ बायीं तरफ पाशपाणि तीर्थ कुँआ के रूप में है। कुँआ के पश्चिम बगल में फाटक के अन्दर गणेश मन्दिर है जिसमें सामने ही जो दिव्य गणेशजी की मूर्ति है और वह मूर्ति पूर्वाभिमुख है। उन्हें ही पाशपाणि विनायक कहते हैं। पाशपाणि विनायक का प्रमाण सामवेद, काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव पुराण, लिंग पुराण और शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त है।

पाशपाणि तीर्थायनमः।

६. पाशपाणि विनायकायनमः। (मो० कैन्टूमेन्ट एरिया, सदर बाजार)

पाशपाणि विनायक बंधनों से मुक्त कराते हैं। इनके दर्शन-पूजन करने वाले मनुष्य को नौकरी में पदोन्नति, विद्या, सन्तान की वृद्धि होती है एवम् शत्रु मित्र बनते हैं। उसके सब कार्य सफल होते हैं।

काशी के उत्तर दिशा में अपने गुणों के साथ पाशपाणि विराजमान रहते हैं और काशी की सुरक्षा करते हैं।

पाशपाणि विनायक में गणेश विष्णु- शिव-शक्ति यज्ञ होते हैं। पहले यहाँ काशी खंड, वेदान्त, रामायण, गणेश आदि की कथा एवम् उत्सव-श्रृङ्गार, कीर्तन, अखंड रामायण होते थे। इसके साथ ही व्याकरण, न्याय, वेदान्त तथा मीमांसा आदि का शास्त्रार्थ होता था। यहाँ के शास्त्रार्थ में जो विजयी होता था वह सर्वत्र विजयी होता था।

पाशपाणि विनायक से खर्व विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है—

पाशपाणि विनायक से पूर्ण चौकाघाट, राजघाट, बसन्त कालेज आदि केशव होते हुए खर्व विनायक सड़क के दाहिनी तरफ नक्षत्रेश्वर के बगल में गणेश मन्दिर है जिसके अन्दर सामने जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति उत्तराभिमुख है वही खर्व विनायक हैं। खर्व विनायक तीर्थ बगल में कुंआ के रूप में है।

खर्व विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण में ब्रह्मवैवर्त पुराण में पद्म पुराण में, लिंग पुराण में, शिव पुराण में तथा शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

खर्व विनायक तीर्थायनमः।

७. खर्व जव विनायकाय नमः (म० नं० ए० ३७/५२ में, मो० आदि केशव, बसन्त कालेज।)

ये क्रोध करने वाले विनायकों में एक हैं। ये विघ्न नाशक और सिद्धि प्रदाता हैं।

जव खर्व विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को मनोवांछित फल देते और काशी वास में विघ्न नहीं आने देते हैं, नौकरी में पदोन्नति, लक्ष्मी और परिवार में वृद्धि होती है। ये अपने भक्तों के बड़े-बड़े विघ्न समूह को नष्ट कर देते हैं, शत्रु को शान्त कर देते हैं। खर्व विनायक में पहले शास्त्रार्थ होता था। इसमें भाग लेने के लिये काशी के विद्वान् अपने-अपने छात्रों को साथ में लेकर जाते थे।

खर्व विनायक में गणेश, विष्णु, रुद्र, देवी आदि के यज्ञ और गणेश पुराण, रामायण, भागवत, काशी खंड आदि की कथा-सम्मेलन होते थे। अब कीर्तन, अखंड रामायण और शृंगार, वार्षिकोत्सव और लोक कार्यक्रम के अन्तर्गत बिरहा आदि होते हैं।

जव खर्व विनायक से सिद्धि विनायक जाते हैं।

खर्व विनायक से दक्षिण प्रह्लाद घाट, पंचगंगा, मणिकर्णिका घाट से ऊपर सिद्धि विनायक गली में बायीं तरफ गणेश जी का मन्दिर है। मन्दिर

के अन्दर सामने जो दिव्य मूर्ति दिखाई पड़ती है जो पूर्वाभिमुख है उन्हीं को सिद्धि विनायक कहते हैं ।

सिद्धि विनायक का प्रमाण यजुर्वेद में, सामवेद में, अथर्ववेद में, ऋग्वेद में, उपनिषद् में, खण्डनखाद्य में, काशी खण्ड में और पुराणों में विस्तार से प्राप्त होता है ।

८. सिद्धिविनायक तीर्थ मणिकर्णिका घाट ।

सिद्धि विनायकाय नमः । (म० नं० सी० के १/६९ में, मो० मणिकर्णिका घाट ।)

सिद्धि विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के सब मनोरथ सिद्ध होते हैं, धन, पुत्र और द्रव्य की वृद्धि होती है । साधकों को अति शीघ्र ही सिद्धि देने वाले सिद्धि विनायक हैं ।

काशी के पूर्व फाटक में अपने गणों के साथ में रह कर सिद्ध विनायक काशी की रक्षा करते हैं ।

सिद्धि विनायक में गणेश, विष्णु, शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं । भूतकाल में यहाँ गीता, भागवत, वेदान्त, उपनिषद्, रामायण, काशी-मोक्ष-निर्णय आदि की कथा एवम् सम्मेलन होते थे । वर्तमान में कीर्तन, अखण्ड कीर्तन, अखण्ड रामायण आदि होते हैं । ध्यातव्य है कि वैशाख शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन बारह बजे के पश्चात् मणिकर्णिका घाटपर महायोग आता है । इस महायोग में स्नान-दान करने से सौ जन्म तक के पापों का नाश होता है । यहाँ सुख-शांति और भक्ति की प्राप्ति होती है । अन्त में मुक्ति मिलती है ।

यह आठ विनायक काशी पंचक्रोशी के प्रदक्षिणा में रहकर अपने गणों के सहित काशी की रक्षा करते हैं ।

छप्पन विनायक दर्शन यात्रा मद्धे प्रथम प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा पूर्ण होती है । ॥ हर हर महादेव ॥

सिद्धि विनायक के दर्शन करके घर में विश्राम करें और विश्राम करके तीसरे दिन प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर लम्बोदर विनायक तीर्थ, केदार घाट में स्नान करके दर्शन यात्रा पूर्ववत् प्रारम्भ करें ।

अब यहाँ दूसरे आवरण के अष्ट विनायकों का वर्णन किया जा रहा है। ये आठ विनायक आठों दिशाओं में रह कर वाराणसी महाक्षेत्र की रक्षा करते हैं। विश्वनाथ जी से दक्षिण लम्बोदर तीर्थ केदारघाट में स्नान करके पञ्चोपचार पूजन की सामग्री, गंगा जल साथ में लेकर, 'हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे।' कीर्तन,दर्शन-पूजन करते हुए,दर्शन-यात्रा पहले की भांति प्रारम्भ करें। केदारेश्वर का दर्शन करके, केदारेश्वर से पश्चिम पीताम्बरपुरा, सोनारपुरा चौराहा से पूर्व बगल में लम्बोदर चिन्तामणि विनायक के नाम से प्रसिद्ध हैं। दाहिनी तरफ फाटक के सामने जो दिव्य विशाल गणेश जी की मूर्ति, जो दक्षिणाभिमुख है वही लम्बोदर विनायक हैं। दूसरा तीर्थ बगल में कुंआ के रूप में है।

लम्बोदर विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण में, केदार माहात्म्य में और अन्य पुराणों में, स्मृतियों में और गणेशोपनिषद् में विस्तार से प्राप्त होता है।

लम्बोदर विनायक तीर्थाय नमः।

लम्बोदर विनायकाय नमः [म० नं० बी० ७/७६, मो० पीताम्बरपुरा-सोनारपुरा]

लम्बे उदर के कारण इन्हें लम्बोदर विनायक कहते हैं।

लम्बोदर विनायक के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके कार्यों में विघ्न नहीं आता और सब कार्य निर्विघ्न सफल होते हैं। इनके भक्तों के घरों में दुःख दारिद्र्य और कलह नहीं होता। लम्बोदर विनायक भक्तों के विघ्नों को दूर करते हैं। भक्तों के अन्तःकरण को शुद्ध करते हैं और अविमुक्त महाक्षेत्र की रक्षा करते हैं।

लम्बोदर विनायक में गणेश, विष्णु तथा शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं। गणेश, गीता, भागवत, काशी माहात्म्य और काशी मोक्ष निर्णय रामायण आदि कथा सम्मेलन पहले होते थे। आजकल वार्षिकोत्सव शृंगार और अखण्ड कीर्तन आदि होते हैं।

प्रत्येक चतुर्थी के दिन गणेश जी का दर्शन और यात्रा करनी चाहिए।

लम्बोदर विनायक से कूटदन्त विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है– लम्बोदर विनायक से दक्षिण शिवाला चौराहा से पश्चिम जाने वाली सड़क से आगे से बायीं तरफ दक्षिण मुड़ते ही सामने गणेश मन्दिर है जिसके अन्दर सामने ही जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति पश्चिमाभिमुख दिखाई पड़ती है, वही कूटदन्त विनायक हैं। कूटदन्त विनायक तीर्थ उत्तर बगल में विशाल पक्का कुण्ड (पोखरा) है। कूटदन्त विनायक तीर्थ का नाम काशी खण्ड में कृमि-कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है। कृमि-कुण्ड में स्नान करने और उसके दर्शन से रोग नष्ट होते हैं। यह कुण्ड रोगों को नष्ट करने वाला चमत्कारी तीर्थ है।

कूटदन्त विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण में, काशी दर्शन में विस्तार से मिलता है।

कूटदन्त विनायक तीर्थाय नमः।

१. कूटदन्त विनायकाय नमः (म० नं० बी० ३/३३५ में, मो० रविन्द्रपुरी कालोनी, कीनाराम बाबा जी के आश्रम में है।)

ये वृहद् दांत के कारण कूटदंत विनायक कहलाते हैं।

कूटदन्त विनायक के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उन्हें कार्य में सिद्धि और निर्विघ्न अर्थ सिद्ध होता है। कूटदन्त विनायक भक्तों के उपसर्ग, दुःख और कष्ट का संहार करते हैं। इस आनन्द कानन अविमुक्त क्षेत्र का वे सदा-सर्वदा रक्षा करते हैं। इन्हें लड्डू, लावा, गन्ना आदि चढ़ाया जाता है। कृमिकुण्ड तीर्थ सिद्ध कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है।

दूसरा तीर्थ गणेश जी के पश्चिम बगल में कुँआ के रूप में है। इस कुँआ के जल को पीने से पेट सम्बन्धी रोग अच्छा होता है। रविवार और चतुर्थी तिथि के दिन इनका दर्शन किया जाता है।

प्रत्येक रविवार के दिन सभी वर्ग के लोग बालक को लेकर जाते हैं। कृमिकुण्ड में स्नान करके दर्शन करते हैं और महात्मा से विभूति लेते हैं।

भूत-प्रेत, डाकिनी-साकिनी अनेक प्रकार के भूत-बाधा रोग शान्त होते हैं।

कूटदन्त विनायक से शालटंक विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है—

कूटदन्त विनायक से पश्चिम भेलूपुर, रथयात्रा, मडुआडीह रेलवे लाइन पार करके मडुवाडीह चौराहा से पश्चिम थाना के दक्षिण बगल में शालटंक विनायक गणेश मन्दिर में दरवाजा के अन्दर जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति है, जो उत्तराभिमुख है।

शालटंक विनायक का प्रमाण—

स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण और काशी दर्शन में विस्तार से वर्णन है।

शालटंक विनायकाय नमः (मो० मडुवाडीह)।

यह मडुवाडीह में तालाब के उत्तर भीमचण्डी विनायक से कुछ दूरी पर स्थित है।

शालटंक विनायक के दर्शन-पूजन-अर्चन करने वाले भक्तों के दुःख संकट और रोग दूर होते हैं और विघ्न, बाधा शान्त होते हैं। शारीरिक व्याधियों का नाश होता है। नौकरी में पदोन्नति तथा धन-सन्तति, भक्ति की वृद्धि होती है। मन्दिरों का जीर्णोद्धार और दर्शन करने वाले व्यक्ति के सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। यहाँ शिव शक्ति गणेश एवम् विष्णु आदि के यज्ञ होते हैं। पहले वेद-वेदान्त, पुराण और गीता, रामायण आदि सम्मेलन होते थे, अब कीर्तन रामायण होते हैं और बिरहा आदि होता है। शालटंक विनायक में वाराणसी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा में होता है। रात्रि में यात्री विश्राम करते हैं। शालटंक विनायक से कूष्माण्ड विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है—

शालटंक विनायक से उत्तर मडुवाडीह चौराहा, लहरतारा, वाराणसी रेलवे स्टेशन के पश्चिम रेलवे गेट से लाइन पार करके सड़क से उत्तर जौनपुर जाने वाली रेलवे लाइन पार करके, रेलवे लाइन के उत्तर बगल से

पश्चिम लाइन के किनारे से आगे रेलवे गेट से लाइन पारकर, दक्षिण फुलवरिया गांव जाने वाली सड़क से कूष्माण्ड विनायक गली में शंकर जी के मन्दिर का दर्शन होता है। डीह बाबा के मन्दिर के बगल में कूष्माण्ड तीर्थ कुंआ के रूप में है।

दरवाजा के अन्दर सामने जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति है और जो पूर्वाभिमुख है वही कूष्माण्ड विनायक हैं। इनका प्रमाण-स्कन्द पुराण में, गणेशोपनिषद् में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में और काशी दर्शन में विस्तार से प्राप्त होता है।

१२. कूष्माण्ड विनायकाय नमः (मो० फुलवरिया गांव में)।

कूष्माण्ड विनायक के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, संकट और दरिद्रता तथा भयंकर उत्पातों से रक्षा होती है। धन-सन्तति-सुख आदि की वृद्धि होती है। कूष्माण्डेश्वर एवम् विनायक के दर्शन से गांव वालों के कष्ट और रोग दूर होते हैं। यहाँ यज्ञ होते हैं, पहले रामायणादि की कथा और सम्मेलन होते थे। कूष्माण्ड विनायक से मुण्ड विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है--कूष्माण्ड विनायक से उत्तर उसी मार्ग से रेलवे लाइन पार करके सड़क से पाशपाणि विनायक के पश्चिम उत्तर दिशा में एक मन्दिर दिखाई पड़ता है, जो मुण्ड विनायक और चण्डी देवी का मन्दिर है। मुण्ड विनायक तीर्थ पश्चिम बगल में चण्डीश्वर के मन्दिर के बगल में है।

मुण्ड विनायकाय नमः (मो० शक्तिमार्ग कैंटूमेंट एरिया)।

चण्डीश्वर के मंदिर में मुण्ड विनायक की प्रतिमा है।

मुण्ड विनायक का शरीर तो पाताल में और मुण्ड काशी में है। मुण्ड विनायक के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके नौकरी में पदोन्नति होती है। भक्त लोग मुण्ड विनायक की मनोती मानते हैं।

चंडी देव्यै नमः (मो० शक्तिमार्ग, कैण्टूमेंट एरिया)।

कार्य सिद्ध या मनोरथ पूर्ण होने के पश्चात् लोग चण्डी देवी का दर्शन करने, बाजा बजाते हुए आते हैं और दर्शन कीर्तन करके प्रसाद पाते हैं, मन्दिरों का जीर्णोद्धार करते हैं।

यहाँ शिव शक्ति और विष्णु यज्ञ होते हैं। वेद, वेदान्त, पुराण, रामायण, भागवत आदि सम्मेलन होते थे। मुण्ड विनायक से विकटदन्त द्विज विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है :—

मुण्ड विनायक से पूर्व अंधरा पुल चौकाघाट चौराहा से पूर्व धूपचण्डी देवी की गली में बरगद के पास फाटक के अन्दर चण्डी देवी का मन्दिर है। इसमें मूर्ति पूर्वाभिमुख है। दूसरे मन्दिर के पीछे पश्चिमाभिमुख हैं। तीर्थ बगल में कुँआ के रूप में है, दूसरा रामघाट में है।

विकट द्विज विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, गणेश उप पुराण में और गणेशोपनिषद् में, गणेश सहस्रानाम में विस्तार से मिलता है।

१४. विकट दन्त द्विज विनायकाय नमः (म० नं० जे० १२/१३४ मो०, धूपचण्डी)।

विकटदन्त विनायक धूपचण्डी देवी के मंदिर के पीछे की ओर म० नं० जे० १२/१३४ में स्थित हैं।

बड़े-बड़े दाँतों के कारण इनका यह नाम प्रसिद्ध हुआ।

विकटदन्त द्विज विनायक के दर्शन से विघ्न-कष्ट दूर होते हैं। कार्य में विघ्न नहीं आता और सब मनोरथ पूर्ण होते हैं।

बुद्धिमान मनुष्य सर्व विघ्नों को नाश करने वाले, सिद्धि को देने वाले विकटदन्त द्विज विनायक के प्रतिदिन दर्शन करें। इनका दर्शन प्रत्येक चौथ को किया जाता है। यहाँ शिव-शक्ति और विष्णु आदि यज्ञ होते हैं और वेद, वेदान्त, पुराण तथा गीता, रामायण, काशी महात्म्य आदि पहले सम्मेलन होते थे।

धूपचण्डी देवी जी के दर्शन से रोग, संकट, भूत-प्रेत, डाकिनी-साकिनी और ग्रहों की पीड़ा आदि सब शान्त होते हैं और धन, द्रव्य, आयु तथा भक्ति ज्ञान की वृद्धि होती है। द्विज विनायक में उस दिन रात्रि में विश्राम करें, प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर यात्रा प्रारम्भ करें।

विकटदन्त द्विज विनायक से राजपुत्र विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है :—

विकटदन्त द्विज विनायक से राजघाट बसन्त कालेज होते हुए, बैंक के उत्तर बगल में बायीं तरफ गणेश मन्दिर है। उसमें दरवाजे के अन्दर दिव्य गणेश जी की मूर्ति है, जो पूर्वाभिमुख है। तीर्थ दक्षिण बगल में कुँआ के रूप में है। यह राजपुत्र विनायक के दक्षिण बगल में है, जो राजपुत्र विनायक तीर्थ सिद्ध कुँआ के नाम से प्रसिद्ध है। इस कुँआ के जल पीने से पेट सम्बन्धी रोग नष्ट होते हैं और शरीर स्वस्थ होता है। राजपुत्र विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, गणेशोपनिषद् और शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

१५. राजपुत्र विनायकाय नमः (म० नं० ए० ३७/४८ में, मो० बसन्त कालेज)।

सत्ताच्युत राजा पुनः राज्य प्राप्ति (वापसी) हेतु इनकी उपासना विशेष रूप से करते हैं। मान्यताओं के आधार पर इनका राजपुत्र विनायक नाम पड़ा यद्यपि सामान्यतया राजपुत्र विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के अनेक प्रकार के विघ्न, संकट, कष्ट एवम् दरिद्रता दूर होते हैं। द्रव्य, विद्या, सन्तान आदि की वृद्धि होती है, शत्रु मित्र बनते हैं। पहले यहाँ गणेश, विष्णु शिव-शक्ति आदि बड़े-बड़े यज्ञ होते थे और पहले यहाँ वेद-वेदान्त, पुराण, उपनिषद्, गीता, रामायण आदि सम्मेलन होते थे। यहाँ पहले राजाओं का राजमहल था।

राजपुत्र विनायक से प्रणव विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है—
राजपुत्र विनायक से दक्षिण राजघाट, प्रह्लाद घाट, त्रिलोचन होते हुए त्रिलोचनेश्वर जाना होता है। यहाँ की मूर्त्ति पूर्वाभिमुख है।

दूसरे घाट में हिरण्यगर्भेश्वर के मन्दिर में प्रणव विनायक पूर्वाभिमुख है। तीर्थ गंगा जी में है। प्रणव विनायक का वर्णन वेदों पुराणों, श्रुति-स्मृति और गणेशोपनिषद् में विस्तार से है।

१६. प्रणव विनायकाय नमः (म० नं० ए० २/८०, मो० त्रिलोचन घाट हिरण्यगर्भेश्वर मंदिर में स्थित हैं) ।

ये देवी आपदाओं से सुरक्षा करते हैं ।

प्रणव विनायक ज्ञान-स्वरूप हैं । इनके दर्शन पूजन करने वाले भक्तों के विघ्न, दुःख, कष्ट और रोग दूर होते हैं । अन्तःकरण शुद्ध होता है। मनुष्य पाप कर्म को छोड़कर सत्कर्म करता है, ज्ञान एवं भक्ति का साधन प्राप्त होता है । वेदान्त का श्रवण, मनन, निदिध्यासन और ध्यान, धारणा, समाधि का साधन प्राप्त होता है । प्रणव विनायक को प्रणाम करने वाले भक्तों को इस लोक में सुख का साधन प्राप्त होता है । अन्त में मुक्ति मिलती है । प्रणव विनायक काशी वासियों के अज्ञान और विघ्न को नष्ट कर देते हैं ।

प्रणव विनायक में प्रतिदिन कथा, कीर्तन होते हैं । यहाँ प्रत्येक मास शिवरात्रि के दिन रात्रि में जागरण, कीर्तन और पूजा-श्रृंगार होता है।

छप्पन विनायक यात्रा मद्धे द्वितीय प्रदक्षिणा पूर्ण हो गयी ।

"हर हर महादेव" ।

उस दिन यात्री अपने-अपने घर में विश्राम करें । तीसरे दिन पूर्ववत यात्रा प्रारम्भ करें ।

अब काशी क्षेत्र की तृतीय प्रदक्षिणा के विघ्नों को नाश करने वाले अष्ट विनायकों का वर्णन किया जाता है । वक्रतुण्ड विनायक तीर्थ चौसट्ठी घाट गंगा जी में स्नान करके गंगा जल, पूजा की सामग्री, लड्डू, दूर्वा, पैसा आदि साथ में लेकर कीर्तन करते हुए प्रतिदिन की भाँति दर्शन यात्रा प्रारम्भ करें ।

चौसट्ठी घाट के ऊपर चौसट्ठी देवी के मन्दिर से सटा हुआ उत्तर बगल में गणेश मन्दिर में जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति है, जो दक्षिणाभिमुख है । दूसरे चौसट्ठी देवी के मन्दिर में सरस्वती विनायक के नाम से प्रसिद्ध हैं । वक्रतुण्ड विनायक का प्रमाण काशी खण्ड में, शुक्ल यजुर्वेद में, काशी रहस्य में और काशी दर्शन यात्रा में विस्तार से प्राप्त होता है ।

१७. वक्रतुण्ड विनायकाय नमः (म० नं० डी० २/४ में, मो० चौसट्ठी घाट) ।

वक्रतुण्ड विनायक के जो भक्त दर्शन-पूजन करते हैं उनकी पीड़ा, विघ्न, कष्ट और दरिद्रता दूर होती हैं। लक्ष्मी, सन्तान एवम् भक्ति में वृद्धि होती है इसके साथ ही निर्विघ्न कार्य सिद्ध होते हैं। प्रत्येक चतुर्दशी तिथि को इनका दर्शन करना चाहिए।

वक्रतुण्ड विनायक भक्तों के पाप हिमालय जैसा विशाल होने पर भी हरण कर लेते हैं। यहाँ विष्णु, शिव, शक्ति आदि यज्ञ होते हैं। पूर्व में यहाँ वेद, वेदान्त, पुराण, काशी खण्ड, काशी माहात्म्य, रामायण आदि सम्मेलन होते थे। प्रत्येक अष्टमी, प्रतिपदा, मंगलवार के दिन दर्शन करने से सब विघ्न दूर होते हैं, दुःख, संकट, रोग आदि शान्त होते हैं एवम् मनोरथ पूर्ण होते हैं।

चौसट्ठी देवी का दर्शन पूजन करें।

वक्रतुण्ड विनायक से एक दन्त विनायक जाने का रास्ता इस प्रकार है—

वक्रतुण्ड विनायक से पश्चिम चौसट्ठी देवी की चौगली से पश्चिम बगल में आगे दाहिनी तरफ पातालेश्वर गली में पुष्पदन्तेश्वर का मन्दिर है। इन मन्दिर के अन्दर पुष्पदन्तेश्वर से सटा हुआ उत्तर की ओर ऊपर एक दन्त विनायक की दिव्य (गणेश जी की) मूर्ति है, जो दक्षिणाभिमुख है। तीर्थ बगल में कुँआ के रूप में है। एक दन्त विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण में, गणेश सहस्त्र नाम में विस्तार से दिया हुआ है।

१८. एकदन्त विनायकाय नमः (म० नं० डी० ३२/१०२ में, मो० पातालेश्वर गली, पुष्पदन्तेश्वर चौसट्ठी घाट) ।

एकदन्त विनायक के दर्शन-पूजा-उपासना करने वाले भक्तों के विघ्न, दुःख दूर होते हैं और यात्रियों के सब कार्य सिद्ध होते हैं, द्रव्य, परिवार, भक्ति आदि में वृद्धि होती है।

ये सर्वदा उपद्रवों से आनन्दवन काशी की रक्षा करते हैं। एकदन्त

गणेश जी में गीता, रामायण, भागवत, काशी माहात्म्य आदि का सम्मेलन पहले होता था और अब गणेश, शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं। काशीवासियों को पुष्पदन्तेश्वर का दर्शन करना चाहिए। चूंकि देवताओं पर चढ़ाया हुआ पुष्प, बिल्वपत्र, निर्माल्य गलियों में पैर के नीचे आते हैं, उनको पैर से कुचलने का जो पाप लगता है, उस पाप के प्रायश्चित्त के लिए पुष्प दन्तेश्वर का दर्शन पूजा करना चाहिए। दर्शन करते ही वह पाप शान्त होते हैं। एकदन्त विनायक से त्रिभुज विनायक जाने का रास्ता इस प्रकार है—

एकदन्त विनायक से पश्चिम की गली से गोदौलिया, दूसरा मार्ग उत्तर से दशाश्वमेध घाट, गोदौलिया, लक्सा रोड, रथयात्रा, सिगरा होते हुए शिवपुरवा का है। त्रिमुख विनायक सिगरा चौराहा से पश्चिम शिवपुरवा मोहल्ला में, बाँयीं तरफ सन्तोषी माई के बगल में विशाल टीला (मन्दिर) का दर्शन होता है। सीढ़ी चढ़कर ऊपर त्रिपुरान्तकेश्वर के मन्दिर में दाहिनी तरफ दरवाजा के अन्दर सामने ही दिव्य मूर्ति है जिन्हें त्रिमुख विनायक कहते हैं, मूर्ति पूर्वाभिमुख है। तीर्थ पश्चिम बगल में कुँआ के रूप में है। त्रिमुख विनायक के तीन मुण्ड (शिरि) हैं। एक मुख तो वन्दर का है, दूसरा सिंह (बाघ) का है और तीसरा हस्ति (हाथी) का है। त्रिमुख विनायक का प्रमाण काशी खण्ड, काशी दर्शन, काशी यात्रा में विस्तृत रूप से प्राप्त होता है।

१९. त्रिमुख विनायकाय नमः (म० नं० डी० ५९/६५ में, मो० सिगराशिवपुरवा)।

त्रिमुख विनायक के जो भक्त दर्शन-पूजन करते हैं, उनके भय को ये हरण करते हैं और अभय प्रदान करते हैं। मनोरथ पूर्ण होता है। धन एवम् पुत्र आदि के सुख प्रदान करते हैं। काशीवासियों की ये सदा रक्षा करते हैं।

त्रिमुख विनायक में विष्णु, शिव-शक्ति, गणेश आदि यज्ञ होते हैं और गीता, रामायण, भागवत तथा काशी खण्ड, शिव पुराण आदि की कथा

पहले होती थी। पहले यह मन्दिर मल्लिकार्जुन (आश्रम, के नाम से प्रसिद्ध था। इस आश्रम के महन्त शंकरानन्द सरस्वती थे। काशी में यह त्रिपुरान्तेश्वर (मल्लिकार्जुन) का मन्दिर सबसे ऊँचा है। उसके ऊपर से काशी (वाराणसी) नगर (शहर) का दर्शन होता है। ध्वनि-विस्तारक यन्त्र से चारों तरफ यज्ञ कथा कीर्तन और सम्मेलन आदि के कार्यक्रम की आवाज शहर में सुनाई पड़ती थी। ब्राह्म मुहूर्त में वेदों के मन्त्रों द्वारा भगवान की स्तुति, शान्ति-पाठ आदि होता था।

त्रिमुख विनायक से पंचास्य विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है :—

त्रिमुख विनायक से उत्तर सिगरा-चौराहा, पेट्रोल टंकी के उत्तर बगल से चेतगंज जाने वाली सड़क के आगे से पिशाच मोचन, गली में, पिशाच मोचन तीर्थ विशाल पक्का कुण्ड या पोखरा (तालाब) है। तीर्थ के पूर्व तट में कपर्दीश्वर से सटा हुआ उत्तर बगल में गणेश मन्दिर है। उसके अन्दर सामने जो दिव्य पंचमुखी मूर्ति है वही पंचास्य विनायक की मूर्ति है। मूर्ति पूर्वाभिमुख है। पंचास्य विनायक पंचमुखी विनायक के नाम से प्रसिद्ध हैं। पंचास्य विनायक तीर्थ पिशाचमोचन में है। पंचास्य विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण में, शिव पुराण में, पद्मपुराण में, मत्स्य पुराण में, उपपुराणों में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

पंचास्य विनायकाय नमः [म० नं० ए० १३/३९ में, मो० पिशाचमोचन)

पंचास्य विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख विघ्न संकट और रोग दूर होते हैं और भक्तों के मनोरथ पूर्ण होते हैं। पिशाच मोचन में पितृ, देव, ऋषि आदि यज्ञ होते हैं।

विश्वराष्ट्र के हिन्दू धर्म को माने वाले काशी में आते हैं, मणिकर्णिका घाट में स्नान करके देवऋषि पितृ तर्पण करते हैं, श्राद्ध करते हैं, ब्राह्मण को दक्षिणा देते हैं, अन्न वस्त्र एवम् द्रव्य दान करते हैं। दूसरे दिन प्रातः पिशाच मोचन तीर्थ में स्नान करके देव ऋषि पितृ तर्पण करते हैं और कपर्दीश्वर आदि देव मन्दिरों का दर्शन करते हैं। अन्न वस्त्र द्रव्य तथा मिष्ठान आदि यथा शक्ति दान अपने पितरों के कल्याण के लिए करते हैं।

जो यात्री पितृ-तर्पण और श्राद्ध नहीं करते हैं। उन यात्रियों को भी पिशाच मोचन में मार्जन और दर्शन करने जाना चाहिए। पिशाच मोचन से पितृ मुक्त हो जाते हैं, पिशाच योनि में उन यात्रियों का जन्म नहीं होता और पाप क्षीण होते हैं। इस लोक में सुख शान्ति की प्राप्ति होती है।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष चतुर्दशी तिथि के दिन पिशाच मोचन तीर्थ में स्नान संध्या पितृ तर्पण और श्राद्ध तथा कपर्दीश्वर विनायक, पंचास्य विनायक और पिशाचमोचनेश्वर पिशाचमेश्वर एवम् पिशाच मूर्ति और पितृश्वर के दर्शन करने से पिशाच योनि में जन्म हुए पितृ पिशाच योनि से मुक्त होते हैं और यात्रियों को पिशाच योनि में जाना नहीं पड़ता। जो कुछ भी दान दिया जाता है वह दान अनन्त गुणा फल होकर प्राप्त होता है और तीर्थों में जहाँ कहीं भी दान लिया हुआ दान का प्रायश्चित्त हो जाता है। प्रयत्न पूर्वक शिव योगी (शिव भक्त साधु) ब्राह्मण को भोजन या जलपान कराना चाहिये।

पंचास्य विनायक से हेरम्ब विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है:-

पञ्चास्य विनायक से उत्तर बगल में बाल्मीकि टीला जो इस समय बाल्मीकि कटरा के नाम से प्रसिद्ध है। लहुराबीर के पश्चिम बाल्मीकेश्वर का मन्दिर है। यह ऊँचे टीले पर स्थित है। मंदिर के अन्दर मूर्ति पूर्वाभिमुख है। काशी में यह भूमि बाल्मीकि ऋषि की तपोभूमि है। बाल्मीकि जी बाल्मीकिश्वर की स्थापना करके तपस्या करने लगे। तपस्या से विश्वनाथ प्रकट होकर राम भक्ति प्राप्त हो, सर्वशास्त्र का ज्ञान हो, और रामायण महाकाव्य लिखने का आदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गये। बाल्मीकि जयन्ती के दिन प्रयत्न पूर्वक दर्शन यात्रा करनी चाहिए। यहाँ वार्षिकोत्सव होता है। हेरम्ब विनायक तीर्थ बगल में कुआँ के रूप में होने की सूचना पञ्चगङ्गा में है। हेरम्ब विनायक का प्रमाण—स्कन्द पुराण में, काशी दर्शन में, काशी यात्रा में, गणेशोपनिषद में विस्तार से प्राप्त होता है।

२१—हेरम्ब विनायकायनमः (म० नं० ए० २१/२४ में, मोकाम पिशाच मोचन)।

हेरम्ब विनायक के दर्शन-पूजन करने से दुःख, रोग, कष्ट और दरिद्रता दूर होती है तथा सब कार्य निर्विघ्न सफल होते हैं। द्रव्य, सन्तान, भक्ति आदि में वृद्धि होती है। बाल्मीकेश्वर के दर्शन से सब मनोरथ पूर्ण होते हैं, निर्विघ्न कार्य सफल होते हैं और शत्रु मित्र बन जाते हैं।

पहले यहाँ बाल्मीकि मठ आश्रम के नाम से प्रसिद्ध था। यहाँ के महन्त रामानन्द सरस्वती थे। पहले यहाँ बड़े-बड़े यज्ञ होते थे और वेद, वेदान्त, पुराण उपनिषद्, रामायण आदि के सम्मेलन होते थे।

हेरम्ब विनायक से विघ्नराज विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है— हेरम्ब विनायक से उत्तर, लहुराबीर चौराहा से उत्तर, धूपचण्डी जाने वाली सड़क से धूपचण्डी चित्रकूट होते हुए विघ्नराज गणेश जी, धूपचण्डी देवी के मन्दिर के दक्षिण बगल में, रामलीला मैदान में, फाटक के अन्दर गणेश जी की मूर्ति है और वह उत्तराभिमुख है वही विघ्नराज विनायक हैं। विघ्नराज विनायक तीर्थ गणेश जी के मन्दिर से सटा हुआ कुआँ के रूप में है। दूसरा तीर्थ दक्षिण बगल में विशाल पोखरा है। विघ्नराज विनायक का प्रमाण काशी खण्ड, नारदपुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण शुक्ल-यजुर्वेद और शिवपुराण में देखा जा सकता है।

२२—विघ्नराज विनायकायनमः (म० नं० जे० १२/३२ में, मो० चित्रकूट धूपचण्डी)।

विघ्नराज विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के विघ्न को दूर करते हैं; और सन्तान, सम्पत्ति, भक्ति आदि में वृद्धि करते हैं इसके साथ ही पुरवासियों का कल्याण करते हैं।

चित्रकूट में गणेश, विष्णु, रुद्र और देवी यज्ञ और रामायण, गीता, पुराण आदि की कथा-सम्मेलन पहले होते थे। यहाँ रामलीला होती है।

चित्रकूट में राम मन्दिर, विघ्नहरण हनुमान, विष्णु आदि के मन्दिर हैं। आश्रम तुलसीदास जी के मठ के नाम से प्रसिद्ध है।

स्वामी तुलसीदास जी ने काशी में आकर काशी का सम्पूर्ण दर्शन यात्रा करने के पश्चात् चित्रकूट में निवास किया और कवितावली आदि (ग्रन्थ) पुस्तकें लिखीं।

विघ्नराज विनायक से वरद विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है:—

विघ्नराज विनायक से पूर्व मछोदरी, प्रह्लाद घाट, नया महादेव मोहल्ला में जहाँ सड़क का अन्त होता है और काली जी के मन्दिर से सटा हुआ पश्चिम बगल में बाँयीं तरफ गणेश जी का मन्दिर है उसमें दिव्य गणेश जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है वही वरद विनायक हैं। वरद विनायक तीर्थ बगल में कुँआ के रूप में है। वरद विनायक का प्रमाण काशी खण्ड, सामवेद, शिवपुराण में देखे जा सकते हैं।

२३. वरद विनायकाय नमः (म० नं० ए० १३/३९ में, मो० नया महादेव प्रह्लादघाट)।

वरद विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख को हरते हैं और धन वैभव देकर सुख का वरदान देते हैं। काशी वास में विघ्न नहीं आने देते। ये पुरवासियों के विघ्नों को दूर करते हैं।

वरद विनायक में पहले गणेश, शिव-शक्ति और विष्णु आदि यज्ञ होते थे। रामायण, गणेश पुराण, वेदान्त आदि का व्याख्यान एवम् सम्मेलन भी होते थे। इस समय कीर्तन होता है। वार्षिकोत्सव के समय विशेष श्रृंगार होता है और इस अवसर पर विविध सांस्कृतिक कार्य होते हैं। इनका प्रतिदिन दर्शन करना चाहिए। प्रत्येक चतुर्थी को अवश्य दर्शन करना चाहिए।

वरद विनायक से मोदक विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है:—

वरद विनायक के दक्षिण प्रह्लाद घाट, त्रिलोचन होते हुए आदि महादेव, पिलपिला तीर्थ के पूर्व बगल में दाहिनी तरफ गणेश जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है। मोदक विनायक तीर्थ त्रिलोचन घाट में है। मोदक विना-

यक का प्रमाण शुक्ल यजुर्वेद में, स्कन्द पुराण में, गणेशोपनिषद् में, काशी यात्रा में उपलब्ध होता है।

३४. मोदक विनायकाय नमः (म० नं० ए० १३।९२ में, मो० त्रिलोचन)।

मोदक विनायक के दर्शन-पूजन से भक्तों के पहाड़ के सामान विघ्न होने पर भी दूर होते हैं।

इनके दर्शन-पूजन से विद्या, धन, परिवार, भक्ति आदि में वृद्धि होती है। पहले यहाँ अनेक प्रकार के यज्ञ होते थे और रामायण, वेद, वेदान्त, पुराण आदि की कथाएँ और व्याख्यान हुआ करते थे।

आदि महादेव के दर्शन-पूजन करने से पुत्र की प्राप्ति होती है, धन, भक्ति, सुख और शान्ति आदि में वृद्धि होती है। मोदक विनायक के दर्शन करके अपने-अपने घर में विश्राम करें, तीसरे दिन प्रातः पूर्ववत् दर्शन यात्रा प्रारम्भ करें।

तृतीय प्रदक्षिणा यात्रा पूर्ण हुई।

"हर हर महादेव।"

अब मैं अविमुक्त क्षेत्र के आठ गणेशों का वर्णन करता हूँ।

छठे प्रदक्षिणा के आठ गणेशों के केवल नाम स्मरण करने मात्र से ही मनुष्यों को सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। प्रातः मणिकर्णिका तीर्थ में स्नान करके पूर्ववत् मणिकर्णिका विनायक से यात्रा प्रारम्भ करे। सतुवा बाबा के आश्रम के सीढ़ी के सामने के गणेश मन्दिर में जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति है और उत्तराभिमुख है वही मणिकर्णिका विनायक हैं। इन का प्रमाण काशी खण्ड में, शिव पुराण में और शिव रहस्य में विस्तार से मिलता है।

४१. मणिकर्णिका विनायकाय नमः (म० नं० सी० के १०/४८ में, मो० ब्रह्मनाल।)

इनके दर्शन पूजन से कष्ट, विघ्न दुःख दूर होते हैं और ये सिद्धि प्रदान करते हैं। मणिकर्णिका घाट में स्नान करके जो भक्त इनके दर्शन पूजन

करते हैं उनके स्थूल पाप शान्त होते हैं। इतना ही नहीं, विघ्न रहित धन-सम्पत्ति, स्त्री, पुत्र आदि सुख के साधन देकर धन्य करते हैं।

यहाँ गणेश, विष्णु और रुद्र शक्ति यज्ञ होते हैं। रामतापनीयोपनिषद्, रामायण, गीता तथा भागवत, काशी मोक्ष निर्णय आदि की कथा एवं सम्मेलन होते हैं। प्रतिदिन रामायण और अखण्ड रामायण होते हैं तथा कीर्तन, अखण्ड कीर्तन और वार्षिकोत्सव होते हैं।

आशा विनायक

मणिकर्णिका विनायक से आशा विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है—मणिकर्णिका विनायक से दक्षिण, ब्रह्मनाल, नीलकण्ठ चौमुहानी से दक्षिण मीरघाट के ऊपर आशा पूर्ण हनुमान जी से सटा हुआ पूर्व बगल में फाटक के अन्दर दाहिनी तरफ गणेश मन्दिर में जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति पश्चिमाभिमुख है वही आशा विनायक हैं। तीर्थ मीरघाट में है। आशा विनायक का प्रमाण काशी खण्ड, काशी वार्षिक यात्रा, काशी दर्शन यात्रा में विस्तार से मिलता है।

४२. आशा विनायकाय नमः (म० नं० डी० ३/७९ में, मो० मीरघाट)

आशा विनायक का दर्शन पूजा करने वाले भक्तों के मनोरथ पूर्ण होते हैं। ये दुःख, कष्ट आदि को दूर करते हैं। घर परिवार की रक्षा और दरिद्रता को दूर करते हैं।

आशा विनायक में गणेश, विष्णु, शिव और शक्ति यज्ञ होते हैं और काशी मोक्ष निर्णय, काशी रहस्य, रामायण और गीता-वेद, वेदान्त भागवत आदि सम्मेलन पहले होते थे। अब शृंगार और वार्षिकोत्सव होते हैं।

पूर्व इतिहास इस प्रकार है—यह मठ (आश्रम) तुलसी मठ से प्रसिद्ध है। यहाँ रहकर तुलसीदास जी ने रामायण लिखी थी।

सृष्टि विनायक

आशा विनायक से सृष्टि विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है—आशा विनायक के पश्चिम की गली से कालिका गली में शुक्रेश्वर के मन्दिर में जो

दिव्य गणेश जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है वही सृष्टि विनायक हैं। तीर्थ बगल में कुंआ के रूप में और शुक्र कूप के नाम से प्रसिद्ध है। सृष्टि खण्ड में, पद्म पुराण में, काशी खण्ड में, ब्रह्माण्ड पुराण आदि में विस्तार से इनका प्रमाण मिलता है।

४३. सृष्टि विनायकाय नमः (म० नं० डी० ८/३० में, मो० कालिका गली।)

सृष्टि विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को यमराज से वकालत करके पुनर्जन्म से बचाते हैं और कार्यों में विघ्न नहीं आने देते हैं। जीव सुख का साधन प्राप्त करके जीवन में निर्विघ्न सुखी रहता है। यहाँ गणेश, विष्णु, शिव शक्ति आदि यज्ञ होते हैं। काशी मोक्ष निर्णय, काशी महिमा, काशी महात्म्य, उपनिषद् और वेद-वेदान्त आदि की कथा एवं सम्मेलन पहले होते थे और इस समय कीर्तन, अखण्ड कीर्तन तथा अखण्ड रामायण वार्षिकोत्सव में विशेष शृङ्गार होते हैं। इस अवसर पर अनेक सांस्कृतिक कार्य प्रतिदिन और प्रत्येक चतुर्थी को किया जाता है। सृष्टि विनायक से यक्ष विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है—सृष्टि विनायक से पश्चिम की गली से, साक्षी विनायक और साक्षी विनायक गली से उत्तर ढुण्ढिराज चौमुहानी, चौमुहानी के पास सीढ़ी चढ़कर ऊपर गणेश मन्दिर है जिसके अन्दर दिव्य गणेश जी की विशाल मूर्ति पूर्वाभिमुख है। यही मूर्ति यक्षविनायक हैं। इस किस्म के चमत्कारी, विशाल और पंचमुखी विनायक अन्यत्र नहीं है। यक्ष विनायक तीर्थ बगल में कुआं के रूप में है। यक्ष विनायक का प्रमाण ब्रह्मपुराण तथा काशी खण्ड में विस्तार से है।

यक्ष विनायक में पूर्व में न्याय, व्याकरण वेदान्त आदि का शास्त्रार्थ होता था और जो यहाँ विजयी होते थे वह विद्वान माने जाते थे और सर्वत्र विजयी होते थे।

४४. यक्ष विनायकाय नमः (म० नं०सी०के० ३७/२९, मो० ढुण्ढिराज गली कोतवालपुरा)

यक्ष विनायक के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनको वह इस लोक में आज्ञाकारी स्त्री, नौकर और द्रव्य सम्पदा देकर निर्विघ्न सुख प्रदान करते हैं और उसकी जहाँ कहीं भी मृत्यु होती है वह यक्षलोक में जाकर निवास करता है।

गणेश, विष्णु, शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं। पहले यहाँ काशी मोक्ष निर्णय, वेद-वेदान्त, मनुस्मृति, निर्णय-सिन्धु आदि की चर्चा कथा एवं सम्मेलन होते थे और अब उस परम्परा में ह्रास हो गया है, उसके स्थान पर कीर्तन, अखंड कीर्तन तथा अखण्ड रामायण होते हैं। शृंगार वार्षिकोत्सव होते हैं। इस अवसर पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम और लोक कार्यक्रम होते हैं।

मेरे गुरुवर धर्मसम्राट् अनन्त श्री विभूषित करपात्री जी महाराज जब प्रथमा में पढ़ते थे तब काशी में आये। उन्होंने शिवशंकर पाण्डेय के साथ काशी दर्शन यात्रा की। एक दिन शिवशंकर पाण्डेय गुरुजी को यक्ष विनायक का दर्शन करने के लिए ले गये। गुरु जी को यक्ष विनायक की मूर्ति में दिव्य प्रकाश रूप में गणेश जी का दर्शन हुआ। उसी क्षण गुरुजी को ब्रह्म विद्या की प्राप्ति हुई उसी दिन से गुरु जी जो शास्त्र एक बार सुनते थे एक बार देखते थे उन्हें वह सब कंठस्थ (याद) हो जाता था। परमपूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज भारत दिग्विजय शास्त्रार्थ यात्रा में, गणेश जी की कृपा से ही किसी से परास्त नहीं हुए। हिमालय से कन्याकुमारी तक पूर्व बंगाल ढाका शहर से पश्चिम पाकिस्तान (लाहोर शहर) तक शास्त्रार्थ में दिग्विजय होते हुए सर्वत्र विजयी हुए।

यक्ष विनायक से गजकर्ण विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है—यक्ष विनायक से पश्चिम कोतवाल पुरा होते हुए दाहिनी तरफ सीढ़ी से सड़क पर पहुँचते ही सामने उत्तर के ईशानेश्वर गली में, ईशानेश्वर के मन्दिर में, दरवाजा के अन्दर, सामने गणेश मन्दिर में, जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है वही गजकर्ण विनायक हैं। यह ईशानेश्वर के बगल में है। गणेश तीर्थ बगल में कुँआ के रूप में है। गजकर्ण विनायक

का प्रमाण स्कन्दपुराण में, शिवपुराण में, मार्कण्डेपुराण में विस्तार से मिलता है।

४५. गजकर्ण विनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३७।४३ में, मो० बाँसफाटक)।

गजकर्ण विनायक के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके बल-तेज और बुद्धि, द्रव्य तथा भक्ति की वृद्धि होती है। गजकर्ण विनायक सबका कार्य मंगलमय तथा कार्य में सिद्धि प्रदान करते हैं।

यहाँ गणेश, विष्णु और शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं और गणेश, वेदान्त, काशी माहात्म्य तथा गीता, भागवत् आदि कथा सम्मेलन पहले होते थे। इस समय वार्षिकोत्सव वार्षिक शृंगार धूम-धाम से किया जाता है। गजकर्ण विनायक से चित्रघण्टा विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार— गजकर्ण विनायक से उत्तर सड़क से चौक थाना के उत्तर ढाल प्रारम्भ होते ही दाहिनी तरफ चित्रघण्टा-दुर्गागली में, दाहिनी तरफ चन्द्रचित्रघटा दुर्गाजी के मन्दिर में दिव्य गणेश जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है वही चित्रघंटा विनायक हैं। दुर्गा जी के बगल में तीर्थ कुंआ के रूप में है। चित्रघण्टा विनायक का प्रमाण काशी खण्ड, देवी भागवत और काशी दर्शन यात्रा में विस्तार से प्राप्त होता है।

४६. चित्रघण्टा विनायकाय नमः (म० नं० के० ३३।३४ में, मो० चित्रघण्टा दुर्गागली, चौक)

चित्रघण्टा विनायक के दर्शन-पूजन से भक्तों के कार्य में सिद्धि तथा लक्ष्मी की प्राप्ति और सद्बुद्धि की वृद्धि होती है इसके साथ ही धन, सन्तान, शक्ति की प्राप्ति होती है तथा कोई भी विघ्न नहीं आता।

चित्रघण्टा विनायक में गणेश, विष्णु तथा शिव-शक्ति यज्ञ होते हैं। गणेश, वेद उपनिषद् वेदान्त, गीता, रामायण, काशी, मोक्ष निर्णय आदि कथा सम्मेलन पहले होते थे। अब वार्षिकोत्सव वार्षिक शृंगार तथा कीर्तन अखण्ड कीर्तन, अखण्ड रामायण आदि होते हैं।

चित्रघण्टा विनायक से मंगल विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है— चित्रघण्टा विनायक से पूर्व पशुपति सिद्धेश्वरी मुहल्ला होते हुए आत्म विरेश्वर के मन्दिर में, वृहस्पतेश्वर के सामने, फाटक के अन्दर, आत्म विरेश्वर से सटा हुआ, पूर्व बगल में, बाहर दीवार में सटा हुआ, गणेश मन्दिर में, मंगल विनायक हैं।

मंगल विनायक का प्रमाण काशी खण्ड में, काशी दर्शन यात्रा में विस्तार से है।

४७. मंगल विनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ७।१५८ में, मो० सिन्धिया घाट)

मंगल विनायक के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनका मंगलमय जीवन व्यतीत होता है और धन की वृद्धि होती है। मंगल विनायक सबको सुख का साधन देकर पालन करते हैं और ये काशी (शिव पुरी) की रक्षा करते है तथा सबके विघ्न को हरते हैं।

प्रत्येक चतुर्थी, मंगलवार और प्रतिदिन मंगल विनायक के दर्शन करना चाहिए। गीता, रामायण, उपनिषद्, वेद-वेदान्त आदि कथा-कीर्तन एवं सम्मेलन पहले होते थे। कार्तिक शुक्ल पक्ष के द्वितीया प्रातः यमेश्वर घाट में स्नान यमेश्वर के दर्शन पूजन करने के लिए हजारों दर्शनार्थियों का मेला लगता है। काशी खण्ड में इस विषय में विस्तार से वर्णन है। बहन अपने भाइयों को धन, सम्पत्ति, चिरंजीवि निरोगता एवं पुत्र-प्राप्ति एवं भाई को स्वस्थ निरोग रखने के लिए यमेश्वर से प्रार्थना करती है। (यमेश्वर धर्मराज के कर कमलों से स्थापित हैं।)

मंगल विनायक से मित्र विनायक जाना चाहिए। वहाँ मंगल विनायक से सटा हुआ पूर्व बगल में मन्दिर है जिनमें दिव्य गणेश जी की मूर्ति उत्तराभिमुख है, वही मित्र विनायक हैं। मित्र विनायक तीर्थ बगल में कुंआ के रूप में है।

मित्र विनायक का प्रमाण गणेशोपनिषद् में स्कन्द पुराण में नारद पुराण में और कूर्मपुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

४८. मित्र विनायकाय नमः [सी० के० ७।१५८ में, मो० सिन्धिया घाट] मित्र विनायक का दर्शन-पूजन करने वाला मानव प्राणीमात्र में मैत्री भाव रखता है और उसके शत्रु भी मित्र होते हैं। वह सभी से प्रेम और मित्र जैसा व्यवहार करता है। उसके शुभ काम में विघ्न नहीं आता। इनके भक्तों को धन-सम्पत्ति और पुत्र की प्राप्ति होती है। ऐसे दयालु मित्र विनायक का प्रतिदिन अथवा प्रत्येक चतुर्थी को दर्शन यात्रा-करनी चाहिए। मित्र विनायक में गणेश, विष्णु, शिव और शक्ति आदि यज्ञ होते हैं और आत्मपुराण, काशी रहस्य और रामायण कथा सम्मेलन पहले होते थे और अब कीर्तन, अखण्ड कीर्तन, अखण्ड रामायण और चतुर्दशी के दिन विशेष श्रृंगार रात्रि में जागरण होता है।

आत्मा वीरेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को नष्ट कर देते हैं और अपनी भक्ति तथा ज्ञान देकर सुख प्रदान करते हैं। अन्त में मुक्ति देते हैं।

सप्तम प्रदक्षिणा

मित्र विनायक से मोद विनायक जाना चाहिए। मित्र विनायक से मणिकर्णिका घाट पर, मोद विनायक तीर्थ में मार्जन करके, घाट से पश्चिम ब्रह्मनाल, नीलकण्ठ, नेपाली खपड़ा मोहल्ला होते हुए मोद विनायक भीम शंकरेश्वर के मन्दिर में पूर्वाभिमुख हैं।

४९ मोद विनायकाय नमः [म० नं० सी० के० ३२।१२ में, मो० नेपाली खपड़ा] मोद विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख-विघ्न और चिन्ता दूर होती है तथा द्रव्य, व्यापार, मित्र और भक्ति आदि में वृद्धि होती है। यहाँ विष्णु, शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं। भीम शंकरेश्वर के दर्शन से सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं और यह ज्योतिर्लिंग में षष्ठम् क्रम में हैं।

मोद विनायक से प्रमोद विनायक जाना चाहिए। मोद विनायक के दक्षिण बगल में दाहिनी तरफ रबड़ी-दूध की दूकान के अन्दर मन्दिर है

जिसमें गणेश जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है। वही प्रमोद विनायक हैं। तीर्थ ज्ञानवापी में है। प्रमोद विनायक का प्रमाण स्कन्दपुराण में और काशी यात्रा में प्राप्त होता है। ५० प्रमोद विनायकाय नमः इनके [म०नं०सी०के० ३१।१] में इनके दर्शन पूजन से निर्विघ्न कार्य सिद्ध होते हैं और चिन्ता दूर होती है। परिवार और मित्र की वृद्धि होती है। गणेश मन्दिर में, जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति है जो दक्षिणाभिमुख है, वही सुमुख विनायक हैं। तीर्थ ललिता घाट पर है। सुमुख विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण में, शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

५१ सुमुख विनायकाय नमः [म० नं० सी० के० ३५।८ में, मो० नेपाली खपड़ा] सुमुख विनायक के दर्शन से सब कार्य निर्विघ्न सफल होते हैं। और धन, बुद्धि, भक्ति आदि में वृद्धि होती है।

सुमुख विनायक से दुर्मुख विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है—दक्षिण पश्चिम के बन्द गली में दाहिनी तरफ दरवाजा के अन्दर गणेश मन्दिर में गणेश जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है। दुर्मुख विनायक का प्रमाण काशी खण्ड में काशी यात्रा में विस्तार से मिलता है।

५२ दुर्मुख विनायकाय नमः [म० नं० सी० के० ३४।६ में मो० सरस्वती फाटक] दुर्मुख विनायक के दर्शन से भक्तों के सब कार्य निर्विघ्न सफल होते हैं, और सब दुःख दूर होते हैं।

दुर्मुख विनायक से गणनाथ विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है :— दुर्मुख विनायक से पश्चिम सरस्वती फाटक, अन्नपूर्णा गली होते हुए, गणनाथ विनायक फाटक के अन्दर अन्नपूर्णा जी के दक्षिण पश्चिम के कोने के गणेश मन्दिर में जो दिव्य गणेशजी की मूर्ति उत्तराभिमुख है, वही गणनाथ विनायक हैं। गणनाथ विनायक तीर्थ उत्तर बगल में कुँआ के रूप में है। जो अन्नपूर्णा शक्ति तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। गणनाथ विनायक का प्रमाण यजुर्वेद में, अथर्ववेद में, ऋग्वेद में, पुराणों में, उपनिषदों आदि में प्राप्त होता है।

५३ गणनाथ विनायकाय नमः [म० नं० डी० ७।१७ में मो० अन्नपूर्णा गली] गणनाथ विनायक के दर्शन-पूजन जो नर-नारी करते हैं, उनके जीवन में आने वाले दुःख, संकट, विघ्न, दूर होते हैं। ये काशी के मुख्य महाद्वारों की सुरक्षा और रक्षा करते हैं। पापियों को दण्ड देते हैं। सज्जनों की रक्षा करते हैं। गणेश जी को स्मरण करके जो भी कार्य किया जाता है। वह कार्य सफल होता है। इसीलिये सबसे पहले सर्वत्र गणेश जी की पूजा होती है।

मार्गशीर्ष मास में अन्नपूर्णा जी के दर्शन-पूजन करके गणनाथ विनायक में गणेश विष्णु और देवी रुद्र यज्ञ होते हैं, और काशी मोक्ष निर्णय तथा वेद, वेदान्त, काशी माहात्म्य, देवी भागवत, रामायण आदि की कथा एव सम्मेलन पहले होते थे। अब वार्षिकोत्सव होते हैं। श्री दुर्गासप्तसती का पाठ, अनुष्ठान तथा अखण्ड कीर्तन, अखण्ड रामायण आदि होते हैं।

गणनाथ जी से ज्ञान विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है—गणनाथ जी से उत्तर दण्डपाणि जी के सामने से पंच पाण्डवेश्वर खोवा बाजार होते हुए लार्गलीश्वर के मन्दिर में है। दिव्य गणेश जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है, वही ज्ञान विनायक हैं। ज्ञान विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण में और काशी दर्शन यात्रा में विस्तार से उपलब्ध है।

५४ ज्ञान विनायकाय नमः [म० नं० सी० के० २८।४ में मो० खोवा बाजार] जो व्यक्ति ज्ञान विनायक के दर्शन-पूजन करते हैं। उनके अज्ञान, अवगुण और दुर्गुणों को समूल समाप्त करते हैं। विद्या, लक्ष्मी, भक्ति और ज्ञान की वृद्धि होती है। कार्य में विघ्न नहीं आता तथा सब कार्य सफल होते हैं। शत्रु, मित्र बनते हैं और ज्ञान विनायक मे गणेश, विष्णु, देवी, शिव आदि यज्ञ होते हैं। पहले वेद, वेदान्त (ब्रह्मसुत्र) गीता, बृहदारण्यक उपनिषद् और काशी मोक्ष निर्णय आदि की कथा एव सम्मेलन होते थे। अब शृंगार, वार्षिकोत्सव होते हैं। कीर्तन; अखण्ड कीर्तन, अखण्ड रामायण होते हैं। ज्ञान विनायक से द्वार विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है—ज्ञान

विनायक से दक्षिण उसी मार्ग से ढुण्ढिराज गली, सावित्री फाटक होते हुए द्वार विनायक सावित्री देवी के सामने ऊपर गणेश मन्दिर में जो दिव्य पंचमुखी गणेश जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है, वही द्वार विनायक हैं। (दूसरे विनायक विश्वनाथ जी के फाटक के अन्दर विष्णु मन्दिर में हैं)। द्वार विनायक का प्रमाण काशी खण्ड में, काशी दर्शन यात्रा में विस्तार से मिलता है। द्वार विनायक तीर्थ काशी तीर्थ ललिता घाट पर है।

५५ द्वार विनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३५।२७ में, मो० सावित्री फाटक) द्वार विनायक के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके घर परिवार, पड़ोसियों और पट्टीदारों में कलह नहीं होता है तथा विघ्न नहीं आता है। और द्रव्य, परिवार, सम्मान और भक्ति आदि में वृद्धि होती है। द्वार विनायक में गणेश, विष्णु और शिव शक्ति आदि यज्ञ होते हैं।

द्वार विनायक से अविमुक्त विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है— द्वार विनायक से उत्तर ढुण्ढिराज गली में, दाहिनी तरफ पुतली शिवालय में अविमुक्तेश्वर के मन्दिर में फाटक के अन्दर जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है वही अविमुक्त विनायक हैं। ये अविमुक्तेश्वर के बगल में हैं। अविमुक्त विनायक तीर्थ बगल में कुंआ के रूप में है। यहाँ ठण्डा और मीठा जल है। इस कुंए के जल को पीने से पेट सम्बन्धी रोग शान्त होता है।

५६ अविमुक्त विनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३५।३१ में मो० ढुण्ढिराज गली) अविमुक्त विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को इस लोक में द्रव्य, सम्पत्ति, आज्ञाकारी स्त्री, पुत्र और मान-प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं और अन्त में अविमुक्तेश्वर से अविमुक्त विनायक प्रार्थना करके अपने भक्तों को मुक्ति दिलाते हैं। विश्वनाथ जी कहते हैं कि "मैं इस अविमुक्त काशी क्षेत्र में रहने वाले भक्त लोगों के समस्त कष्टों को दूर करता हूं। सभी प्राणियों की रक्षा करता हूं।" अविमुक्तेश्वर सभी मनुष्यों के दुःख, कष्ट तथा विघ्न को दूर करते हैं।

ये सबको सद्बुद्धि देते हैं अविमुक्त विनायक में गणेश विष्णु और शिव देवी यज्ञ होते हैं। वेद, वेदान्त, काशी मोक्ष निर्णय आदि कैवल्य मोक्ष के विषय में पहले सम्मेलन होते थे। अविमुक्तेश्वर का दर्शन पूजन ध्यान और उपासना करने वाला व्यक्ति जहाँ भी रहे वह जीवन मुक्त माना जाता है। काशी से बाहर जाने वाला व्यक्ति अविमुक्तेश्वर का दर्शन करके जो जाता है सब कार्य करके पुनः काशी आता है। जो कोई मनुष्य छप्पन विनायकों का स्मरण करेगा, वह दूर देशान्तर में मरने पर भी ज्ञान पायेगा। जो कोई मानव ढुंढिराज स्तोत्र और छप्पन विनायक की कथा को पढ़ेगा उसकी आत्मा पवित्र हो जायगी और उसकी पग-पग पर सिद्धियाँ मिलेगी।

वह जिस देश में रहे, जिस भेष में रहे, जिस वर्ण, आश्रम और जाति में रहे। गणेश और शंकर जी का स्मरण सदा और सर्वदा करता रहे। क्योंकि ये आसार संसार समुद्र से डुबे हुये मनुष्यों को उद्धार करते हैं।

ढुण्ढिराज महराज के प्रणवों छप्पन रूप।
काशीमाँहि बसाइये, ज्यों परौं भव-कूप॥

ढुण्ढिराज जी के स्तोत्र और कथा सुनने से कभी भी विघ्न बाधा नहीं आती और दैनिक मनवाणी से शरीर से जो पाप होते हैं वह नष्ट हो जाते हैं। अविमुक्त विनायक से साक्षी विनायक जाने का मार्ग इस प्रकार है— अविमुक्त विनायक से दक्षिण साक्षि विनायक गली में दाहिने तरफ दरवाजे के अन्दर जो दिव्य विशाल साक्षि विनायक की मूर्ति पूर्वाभिमुख है। वही साक्षी विनायक हैं। इस किस्म की चमत्कारी प्रत्यक्षफल देने वाले विशाल गणेश जी की मूर्ति अन्य जगह नहीं है। साक्षि विनायक पूर्वाभिमुख हैं। तीर्थ रुद्र सरोवर तीर्थ प्रयाग राज घाट पर है। साक्षि विनायक का प्रमाण वेदों में पुराणों में, स्मृतियों में, उपनिषदों में ब्रह्मसुत्रों में एवं वेदान्तों के ग्रन्थों में विस्तार से प्राप्त होता है।

साक्षि विनायकाय नमः (म०न०डी० १०।७ में मो० साक्षि विनायक)

साक्षि विनायक के जो भक्त दर्शन-पूजन करते हैं उनको इस लोक में कुशल; मंगल, स्वास्थ्य और निरोग तथा ऐश्वर्य प्रदान करके भक्तों को निर्विघ्न सुख और शान्ति प्रदान करते हैं और अन्त में अपने समस्त भक्तों को विश्वनाथ भगवान से प्रार्थना करके साक्षी विनायक सबको मुक्ति दिलाते हैं।

साक्षि विनायक में गणेश स्तोत्र, मन्त्र अनुष्ठान, गणेश सहस्त्रनाम, गणेश, विष्णु, और शिव शक्ति आदि यज्ञ होते हैं। पहले वृहदारण्यक् उपनिषद्, खण्डनखाद्य, अद्वैत सिद्धि आदि के वेदान्त, कथा एवं सम्मेलन होते थे। शृंगार वार्षिकोत्सव और जयन्ती के दिन लाखों की संख्या में दर्शनार्थी दर्शन करते हैं और कीर्तन अखण्ड कीर्तन तथा अखण्ड रामायण का पाठ किया जाता है।

साक्षी विनायक से ढुण्ढिराज जाने का मार्ग इस प्रकार है—साक्षी विनायक से उत्तर सावित्री फाटक में गणेश मन्दिर में दरवाजे के अन्दर सामने जो दिव्य गणेश जी की मूर्ति दक्षिणाभिमुख है वही ढुण्ढिराज गणेश जी हैं। ढुण्ढिराज तीर्थ मणिकर्णिका घाट गंगाजी में है। ढुण्ढिराज जी का प्रमाण यजुर्वेद में, स्कन्दपुराण में, ब्रह्मवैवर्तपुराण में, पद्मपुराण में, विस्तार से प्राप्त होता है।

ढुण्ढिराजाय नमः (म० न० सी० के० ३५।२७ में मो० सावित्री फाटक) ढुण्ढिराज जी के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके जीवन में जहाँ कहीं भी हो विक्षेप घबराहट और अशान्ति, कलह तथा विघ्न आदि उपद्रव नहीं आते और सबको सुख शान्ति तथा लक्ष्मी और विद्या देकर भक्तों को इस लोक में निरोग और नीविंघ्न सुख प्रदान करते हैं। काशी वासियों का कल्याण करते हैं। उनके भक्त का शत्रु कितना भी बलवान क्यों न हो वह परास्त होता हैं। ढुण्ढिराज जी के भक्त विश्व में जहाँ कहीं भी देह त्याग करें उसे शिवलोक प्राप्ति होती है। उनको दूसरे शब्दों में प्रेरणा कर काशी लाते हैं और अन्त समय में मुक्ति दिलाते हैं।

यात्रा करने का फल यात्रियों के भावना के अनुसार सबको प्राप्त होता है। मेरे साथ यात्रा करने वाले जो यात्री रोगी थे वे निरोग हो गये। जो यात्री दरिद्र थे उन्हें धन की प्राप्ति हुई जो दुःखी थे वह सुखी हो गये। जिनको पुत्र नहीं था वह पुत्रवान् हो गये। जिनका विवाह नहीं हुआ था उनका विवाह हो गया। जिनकी नोकरी नहीं लगी थी उनकी नोकरी लग गयी। जिनका व्यापार सही ढंग से नहीं चलता था उनका व्यापार सही ढंग से चलने लगा। भक्तों को धन, विद्या, पद, परिवार, सद्‌बुद्धि, और भक्ति तथा ज्ञान की वृद्धि होती है।

ढुण्ढिराज जी में गणेश, विष्णु, शिव और गौरी यज्ञ होते हैं। मुहूर्त-चिन्तामणि और भृगुसंहिता के कथा प्रवचन होते थे।

ढुण्ढिराज जी के दर्शन-पूजन करने के पश्चात्। (ज्ञानवापी से) स्वयं संकल्प छोड़कर, ब्राह्मण को यथाशक्ति दक्षिणा देकर, साधु, सन्त को जल-पान देकर, दरिद्र नारायण को पैसा, लाई, चना आदि देकर, छप्पन विनायक का स्मरण करते हुए यात्री अपने-अपने घर जायं। स्कन्द जी अगस्त ऋषि से कहते हैं कि—ढुण्ढिराज जी के ये सब ५६ नाम हैं, जिनके जप और स्मरण करने से मनुष्य सब मनोरथ को प्राप्त करता है। जो कोई मानव श्रद्धा-भक्ति से युक्त होकर गणेश जी के विषय में कथा सुनता है और गणेश जी का स्मरण और दर्शन करता है उन सबका विघ्न दूर होता है। यात्री के पास में जो वस्तु प्राप्त नहीं है वह वस्तु प्राप्त होती है तथा वह अभीष्ट पद प्राप्त करता है। (यह ५६ विनायक दर्शन यात्रा ३५ बार करने के पश्चात् लिखा गया है) काशी महापुरी में ढुण्ढिराज अपने छप्पन विनायक के रूप को प्रकट करके विभिन्न नाम से चारों दिशाओं में अपने गणों के साथ रहकर काशी की रक्षा करते हैं। पापी दुष्टों को विघ्न खड़ा करके काशी से भगाते हैं। ५६ विनायक (गणेश) जी की तर्पण-विधि यह है। दाहिनी हाथ में जल छोड़ते हुए नाम ले-लेकर तर्पण करना चाहिए। काशी प्रदक्षिणा के पंचकोशी दर्शन यात्रा में यह आठ विनायक हैं और यह आठों गणेश काशी की रक्षा करते हैं।

१. अर्कं विनायकाय नमः, २. दुर्गं विनायकाय नमः, ३. भीमचण्ड विनायकाय नमः, ४. देहुली विनायकाय नमः, ५. उदंड विनायकाय नमः। ६. पाशपाणि विनायकाय नमः, ७. खर्बविनायकाय नमः, ८. सिद्धि विनायकाय नमः, इन आठों विनायकों की वाराणसी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा करते हुए और देवताओं का पूजन करते हुए वाराणसी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा करना चाहिए।

९. लम्बोदर विनायकाय नमः, १०. कूटदन्त विनायकाय नमः, ११. शालटंक विनायकाय नमः १२. कूष्मांड विनायकाय नमः, १३. मुण्डविनायकाय नमः. १४. विकटद्विज विनायकाय नमः, १५. राजपुत्र विनायकाय नमः।

१६. प्रणव विनायकाय नमः, १७. बक्रतुण्ड विनायकाय नमः १८. एकदन्त विनायकाय नमः; १९. त्रिभुज विनायकाय नमः. २०. पंचायत विनायकाय नमः, २१. हेरंब विनायकाय नमः, २२. विघ्नराज विनायकाय नमः २३. वृहद् विनायकाय नमः, २४. मोदक विनायकाय नमः, २५. अभय विनायकाय नमः, २६. सिंहतुण्ड विनायकाय नमः, २७. कूणिताक्ष विनायकाय नमः, २८. क्षिप्रप्रसादन विनायकाय नमः, २९. चिन्तामणि विनायकाय नमः, ३०. दन्तहस्त विनायकाय नमः, ३१. पिचिण्डिल विनायकाय नमः ३२. उदण्ड विनायकाय नमः, ३३. यह आठ विनायक अविमुक्त की रक्षा करते हैं।

३४. स्थूल दंत विनायकाय नमः, ३५. कलाप्रिय विनायकाय नमः, ३६. चतुर्दन्त विनायकाय नमः, ३७. द्वितुण्ड विनायकाय नमः, ३८. ज्येष्ठ विनायकाय नमः, ३९. गज विनायकाय नमः, ४०. काल विनायकाय नमः; ४१. नागेश विनायकाय नमः, ४२. मणिकर्णिका विनायकाय नमः; ४३. आशा विनायकाय नमः, ४४. सृष्टि विनायकाय नमः, ४५. पक्षविनायकाय नमः ४६. गजकर्णं विनायकाय नमः, ४७. चित्रघण्टा विनायकाय नमः ४८. मंगल विनायकाय नमः, ४९. मित्र विनायकाय नमः ५०. मोद विनायकाय नमः, ५१. प्रमोद विनायकाय नमः, ५२. सुमुख विनायकाय नमः ५३.

दुर्मुख विनायकाय नमः, ५३. गणनाथ विनायकाय नमः, ५५. ज्ञान विनायकाय नमः, ५६. द्वारविनायकाय नमः, ५७. अविमुक्त विनायकाय नमः ।

इस छप्पन गणेश जी के प्रतिदिन तर्पण करने वाले नर-नारी के जीवन में विघ्न, दरिद्रता, दुःख और भयंकर आपत्ति आदि नहीं आते तथा विद्या, द्रव्य और परिवार, समाज में सम्मान, प्रतिष्ठा और भक्ति-ज्ञान आदि में वृद्धि होती है।

छप्पन गणेश जी का पाठ करके और गणेश जी का स्मरण करके जो नर-नारी जिस कार्य में जाते हैं वह कार्य सफल होता है।

काशी--परिक्रमा

काशी के अन्तर्गत सात परिक्रमा हैं। अविमुक्त यात्रा की सीमा इस प्रकार है-अविमुक्तेश्वर से पूर्व में आधा गङ्गा तक मणिकर्णिकेश्वर और अट्टहासेश्वर (गढ़वासीटोला) तक है। अविमुक्तेश्वर से दक्षिण में भूतधात्रेश्वर और ब्रह्मेश्वर (खालीसपुरा) है।

अविमुक्तेश्वर से पश्चिम की सीमा त्र्यम्बकेश्वर और गोकर्णेश्वर (कुदई की चौकी में) है। अविमुक्तेश्वर से उत्तर की सीमा भारभूतेश्वर और घण्टा कर्णेश्वर (रेशम कटरा में) है।

विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा की सीमा निम्नांकित है—विश्वनाथ जी से पूर्व की सीमा मणिकर्णिका घाट और मणिकर्णिकेश्वर (गढ़वासी टोला में) है, विश्वनाथ जी से दक्षिण की सीमा ब्रह्मेश्वर और अगस्तीश्वर (अगस्तकुण्डा) में है। विश्वनाथ जी से पश्चिम गोकर्णेश्वर और ध्रुवेश्वर सनातन इन्टर कालेज के पश्चिम दक्षिण के कोने में (मिश्र पोखरा में) है। विश्वनाथ जी से उत्तर की सीमा भारभूतेश्वर और चित्रगुप्तेश्वर (रेशम कटरा में) है।

केदारेश्वर अन्तर्गृही प्रदक्षिणा यात्रा की सीमा निम्नांकित हैं :- केदारेश्वर से पूर्व में आधागङ्गा जी तक है, केदारेश्वर से दक्षिण की सीमा अस्सी-गङ्गा-संगम शुष्क नदी तक एवं संगमेश्वर और दुर्गाजी तक है (स्कन्द पुराण से)।

केदारेश्वर से पश्चिम की सीमा (शंकुधारा) वैजनाथेश्वर (वैजनत्था में) है, केदारेश्वर से उत्तर की सीमा निम्नांकित है--

रामेश्वर (रामकुण्ड में) रमातीर्थ लक्ष्मीश्वर (लक्ष्मी कुण्ड में) और शूलटङ्केश्वर (प्रयागराज घाट में) हैं।

ओंकारेश्वर अन्तर्गृही प्रदक्षिणा यात्रा की सीमा निम्नांकित है- ओंकारेश्वर से पूर्व की सीमा आधा गङ्गा जी और त्रिलोचनेश्वर (त्रिलोचनेश्वर घाट) तक हैं। ओंकारेश्वर से दक्षिण की सीमा विश्वामित्रेश्वर (गोलागली) और परसुरामेश्वर (नन्दन साहू लेन में) है।

ओंकारेश्वर से पश्चिम की सीमा ज्येष्ठा गौरी एवं असाडेश्वर (भूत भैरव) और जागेश्वर तथा ईश्वरगङ्गी तीर्थ है। ओंकारेश्वर से उत्तर की सीमा शैलपुत्री एवं वरुणानदी और लाटभैरव हैं। पूर्व-उत्तर की सीमा आदि केशव हैं। ओंकारेश्वर अन्तगृही यात्रा का वर्णन स्कन्दपुराण, पद्मपुराण और शिवरहस्य तथा उपनन्दी पुराण के परिशिष्ट भाग में है। छप्पन विनायक यात्रा की सीमा निम्नांकित है—

ढुण्ढिराज-विश्वनाथ जी से दक्षिण लोलार्कघाट, लोलार्क कुण्ड के पूर्व बगल में गणेश मन्दिर है। इस मन्दिर से यात्रा प्रारम्भ होती है।

गणाध्यक्ष, अर्क विनायक और दुर्गा विनायक (दुर्गा जी में) है। ढुण्ढिराज गणेश से पश्चिम की सीमा भीमचण्ड विनायक, देहली विनायक और उद्दण्ड विनायक (भुइली गाँव में) है। ढुण्ढिराज गणेश जी से उत्तर में पाशपाणि और खर्वजवविनायक (आदि केशव में) हैं। ढुण्ढिराज जी से पूर्व की सीमा सिद्धिविनायक (मणिकर्णिका घाट में) है। काशी में छप्पन विनायक यात्रा सबसे बड़ी है। इस यात्रा में सात आवर्ण हैं। यह सात यात्रा करने के पश्चात् काशी के विषय में विशेष जानकारी के साथ काशी के गङ्गातट के तीर्थ और घाटों का वर्णन इस प्रकार है—

अस्सी घाट पर काशी में मायापुरी हरिद्वार तीर्थ है। जगन्नाथ तीर्थ अस्सी सङ्गमेश्वर तीर्थ है और यहाँ सिद्धेश्वरी और सिद्धेश्वर तीर्थ हैं।

अस्सी तीर्थ में स्नान, संध्या, देव-ऋषि और पितृ-तर्पण तथा पिण्ड-दान करने से पितृ तृप्त होते हैं। वे प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं। यथाशक्ति अन्न, द्रव्य, फल, मिष्ठान्न दान करके अस्सी संगमेश्वर, माया देवी, जगन्नाथ भगवान् और सिद्धेश्वर आदि देवमन्दिरों का दर्शन करने से तथा कथा-श्रवण करने से यात्रियों के मनोरथ पूर्ण होते हैं। मब कार्य निर्विघ्न सफल होते हैं। धन की वृद्धि होती है। यहाँ दण्डी स्वामियों का आश्रम है जहाँ प्रतिदिन कीर्तन और कथा होती है।

अस्सी घाट से उत्तर बगल के तुलसी घाट पर तुलसी तीर्थ और जनकेश्वर आदि तीर्थ हैं। यह भूमि तुलसीदासजी की तपोभूमि है। तीर्थ में स्नान करके सिद्ध हनुमान् त्रिविक्रमेश्वर और जनकेश्वर हैं। तुलसीघाट में (काशी में) गङ्गासागर है। इन सबका दर्शन करें। यात्री अन्न, पैसा दान देते हैं। यहाँ कृष्ण लीला होती है, और राम की कथा भी होती है। तुलसी घाट के उत्तर बगल में लोलार्क घाट पर पराशरेश्वर तीर्थ और अर्क विनायक तीर्थ है। यहाँ लोलार्क गङ्गा का सङ्गम स्रोत है। इस तीर्थ में स्नान कर अर्क विनायक, परासरेश्वर और लोलार्क सूर्य, अमरनाथेश्वर आदि के दर्शन करने से रोग, दरिद्रता और दुःख दूर होते हैं। लोलार्क घाट से उत्तर बगल के रामजानकी घाट तीर्थ में स्नान करके जानकीश्वर का दर्शन करने का महत्व है। जानकी घाट से उत्तर बगल के वच्छराजघाट, आनन्दमयी घाट में अक्रूरेश्वर और हयग्रीव ज्योति तीर्थ में स्नान करके, दर्शन-पूजन करने से शंकट दूर होते हैं, सुख-शान्ति, ज्ञान-भक्ति की प्राप्ति होती है। आनन्दमयी घाट से उत्तर बगल के चेतसिंह काशीराज घाट में शक्तिदेवी तीर्थ और राजेश्वर तीर्थ हैं। इस तीर्थ में स्नान करके श्रद्धा-भक्ति से युक्त होकर शक्ति देवी और राजेश्वर आदि मन्दिरों के दर्शन करने से शरीर में शक्ति और शूरवीरता की प्राप्ति होती है। वह व्यक्ति सभी कार्यों में विजयी होता है।

चेतसिंह घाट से उत्तर शिवाला घाट पर स्वप्नेश्वर तीर्थ का स्रोत है। यहाँ मीठा और ठण्डा जल है। स्वप्नेश्वरी देवी और

शिवेश्वर तीर्थ में स्नान करके दर्शन, पूजन कर अन्न, पैसा, फल आदि के दान करने से मनोवाञ्छित फल प्राप्त होते हैं।

शिवालय घाट के उत्तर हनुमान घाट पर काशी में अयोध्या और हनुमान गढ़ी है। यहाँ कामेश्वर तीर्थ, हनुमान तीर्थ, रामेश्वर तीर्थ भैरव तीर्थ हैं। पहले अवधगर्वी मुहल्ला में विशाल कुण्ड था। इस समय सरयू नदी का स्रोत हनुमान घाट में निकलता है। इसलिये इस घाट का विशेष महत्त्व है। स्नान दान करके दर्शन पूजन करने से अयोध्या के सरयू नदी में स्नान करने से जो फल मिलता है उसका दश गुणा अधिक फल मिलता है। सरयू तीर्थ हनुमान घाट में स्नान कर दर्शन-पूजन और अर्चना, कथाश्रवण करने से यात्रियों के विघ्न, दुःख, गरीबी दूर होते हैं और सब कार्य सफल होते हैं। भक्ति, ज्ञान एवं वैराग्य की वृद्धि होती है। हनुमान घाट से सटा हुआ उत्तर बगल के हरिश्चन्द्र घाट में हरिश्चन्द्र तीर्थ है। राजा हरिश्चन्द्र का श्मशान घाट यहीं था। इस समय यहाँ सब शवों का दाह-संस्कार होता है और बाहर से आये हुए अस्थियों तथा संन्यासियों के शव सब गंगा जी में पत्थर बाँधकर छोड़ा जाता है। काशी से बाहर मरे हुए भूत, पिशाच, डाकिनी और साकिनी तथा पितृ काशी में विश्वनाथ जी की कृपा से पिशाच योनि से मुक्त होते हैं। काशी लाने वाले को पुण्य मिलता है। जो अस्थि और शव यहाँ लाकर दाह-संस्कार करते हैं उन जीवों का पुनर्जन्म नहीं होता है। यह काशी का प्रभाव है इसलिए काशी तीनों लोकों से न्यारी मानी जाती है।

हरिश्चन्द्र घाट से उत्तर बगल के विजय नगर (करपात्री धाम घाट) में हरिहरेश्वर तीर्थ है। इस तीर्थ में स्नान करके हरिहरेश्वर के दर्शन करने से शिव और विष्णु जी की भक्ति प्राप्त होती है। यहाँ दण्डि-स्वामियों का आश्रम है। यहाँ कीर्तन और कथा होती है। यह भूमि स्वामी (करपात्री जी) हरिहरानन्द सरस्वती जी महाराज की तपोभूमि है।

हरिश्चन्द्र घाट से उत्तर बगल केदार घाट है यहाँ का वर्णन तो असीम है। केदारेश्वर तीर्थ, गौरी तीर्थ, मानधातेश्वर तीर्थ (आदि नौ तीर्थों का वर्णन केदार अन्तरगृही यात्रा में लिखा है।) में स्नान, संध्या, देव, ऋषि-पितृ तर्पण और पिण्डदान करने से पितृ मुक्त होते

हैं। स्नान करते समय तीन अंजलि जल सूर्य नारायण को अर्घ्य दें। तीन बार देव, ऋषि, पितृ को जल दें और तीन बार अंगुष्ठ से जल तर्पण पितरों के लिए करें यह विधान बाल, वृद्ध और स्त्री सबके लिए है। स्नान करके शिव-शिव नाम मन्त्र और शिवकाशी-शिवकाशी नाम जपते हुए "हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे।" इस प्रकार कीर्तन करते हुए ऊपर गंगेश्वर मन्दिर में गंगेश्वर, वैकुण्ठेश्वर, गौरी और आदि देव मन्दिर के दर्शन कर केदारेश्वर का दर्शन, पूजन करके निर्मल जल से मार्जन करते हैं। कुछ लोग आचमन करते हैं। केदारेश्वर पर चढ़ाया हुआ जल रोगी को पिलाने से रोगी के पाप एवं ग्रह शान्त होते हैं। रोगी को वाराणसी के अन्दर के अस्पताल में भर्ती करें। अस्सी और वरुणा के मध्य में किसी भी शिव लिङ्ग को स्नान कराया हुआ जल या गङ्गा जल पिलाते रहें। काशी मोक्ष निर्णय का कथा-श्रवण करायें। विश्वनाथ जी कृपा करके सभी रोगियों को निःसन्देह मुक्त कर देंगे। दर्शन के पश्चात् यथाशक्ति दान करें। कथा श्रवण करने से मनोरथ पूर्ण होते हैं। कार्य में विघ्न :नहीं आता इस सम्बन्ध में केदार माहात्म्य में विस्तार से लिखा है।

प्रत्येक सोमवार को केदारेश्वर के दर्शन-पूजन करने से पाप क्षीण होते हैं। सोमवार के दिन जब पूर्णमासी पड़े तो उन दिन केदारेश्वर का दर्शन अवश्य करें। केदारेश्वर से उत्तर बगल चौकीघाट में रुक्माङ्गदेश्वर तीर्थ, अम्बरीकेश्वर तीर्थ और चित्राङ्गदेश्वर तीर्थ स्रोत है। इसका जल ठण्डा और मीठा है। उस तीर्थ में स्नान करके दर्शन-पूजन करने से विद्या, ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। चौकी-घाट से उत्तर बगल के क्षेमेश्वर घाट में क्षेमेश्वर तीर्थ, सुरेश्वर तीर्थ है। वहाँ स्नान करके यथाशक्ति दान करने से मुक्ति और शान्ति तथा लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वहाँ मंडन मिश्र सुरेश्वराचार्य जी की तपोभूमि है।

क्षेमेश्वर से उत्तर बगल में नारद घाट पर नारदेश्वर तीर्थ, अत्री-श्वर तीर्थ है उसमें स्नान करके दर्शन-पूजन करने से अमित फल की प्राप्ति होती है। नारद घाट से उतर बगल में पाण्डेय घाट पर सर्वेश्वर और सोमेश्वर तीर्थ हैं। उस तीर्थ में स्नान करके दर्शन-पूजन करने से अनंत पुण्य फल की प्राप्ति होती है।

पाण्डेय घाट से उत्तर वगल में चौसट्टी घाट पर चतुष्ठी देवी तीर्थ और वक्रतुण्ड विनायक तीर्थ है। उस तीर्थ में स्नान करके देवी, गणेशजी का दर्शन-पूजन करने, यथा शक्ति (अन्न मिष्टान्न) दान से दरिद्रता-दुःख-विघ्नादि दूर होते हैं और अलौकिक शक्ति-भक्ति की प्राप्ति होती है। यहाँ दण्डी स्वामीजी का चौसट्टी मठ है। चौसट्टी घाट से उत्तर वगल में प्रयागराजघाट में गङ्गा-जमुना और सरस्वती तीर्थ है। यहाँ तीनों का संगम है। शीतला और दशाश्वमेधेश्वर बन्दि देवी तथा प्रयागेश्वर और प्रयागराजेश्वर तीर्थ है। शीतलाजी के मन्दिर के नीचे जमुना जी का संगम है जिसका ठण्डा-मीठा जल है और प्रयाग राजेश्वर के नीचे सरस्वती जी का सङ्गम है। यहाँ मुण्डन, स्नान, दान और दर्शन करने से पाप-ताप क्षीण होते हैं और संकट दूर होते हैं। यहाँ का दान अनन्त होकर प्राप्त होता है और अन्त में सद्गति की प्राप्ति होती है।

प्रयागराजघाट से उत्तर वगल में रुद्रसरोवर तीर्थ और शूलटंकेश्वर, वाराहेश्वर तथा ब्रह्मेश्वर तीर्थ है। यहाँ स्नान, संध्या, देव-ऋषि-पितृ तर्पण और पिण्ड दान, करके यथाशक्ति द्रव्य, फल, मिष्ठान्न और दरिद्र नारायण को दान आदि देने से स्थूल पाप नष्ट होते हैं, सद्बुद्धि विद्या और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। देव-मन्दिरों का दर्शन करने से कोई भी मरे वह व्यक्ति स्वर्गलोक में वास करता है। ब्रह्माजी ने काशी में आकर दशाश्वमेध घाट में स्नान करके संध्या देव-ऋषि-पितृतर्पण और श्राद्ध किया। अनेक प्रकार का दान देकर काशी के देव-मन्दिरों का दर्शन-पूजन करने के पश्चात् ब्रह्माजी ने, काशी पञ्च-क्रोशी की यात्रा के पश्चात् राजा दिवोदाससे सहयोग लेकर दशाश्वमेध घाट में दशाश्वमेध यज्ञ किया और खालिसपुरा में ब्रह्मेश्वर का मन्दिर बनाकर विश्वनाथजी की उपासना करने लगे। इसके पश्चात् वे विशाल आश्रम बनाकर काशी वास करने लगे। दशाश्वमेध घाट से उत्तर वगल में मानमन्दिर घाट में सोमनाथ दालभेश्वर और स्थूलदन्त विनायक तीर्थ है।

सोमनाथजी के नीचे स्रोत है। यहाँ स्नान, यथा शक्ति दान और देव-मन्दिरों में देवताओं के दर्शन करने से व्यक्ति संकट में नहीं फँसता। सदैव सुखी रहता है। मानमन्दिर घाट से उत्तर वगल के त्रिपुरा भैरवी घाट पर जरासंधेश्वर, बाराहीदेवी और

त्रिपुरा भैरवी तथा त्रिपुरेश्वर तीर्थ हैं। स्नान और मन्दिरों के दर्शन-पूजन करने से विघ्न, असत् और अज्ञान दूर होते हैं।

त्रिपुरा भैरवी घाट से उत्तर बगल में मीरघाट पर स्वामी करपात्री जी महाराज द्वारा स्थापित विश्वनाथ मन्दिर है। विश्वनाथजी धर्मेश्वर विशालाक्षी विशाल तीर्थ में स्नान करके पूजन की सामग्री साथ में लेकर "हरहर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे" कीर्तन और कुछ दान करते हुए मन्दिरों का दर्शन करने जाते हैं। कथा-श्रवण करते हैं। दर्शन करने से स्थूल पाप, अज्ञान, अविद्या क्षीण होती है तथा भक्ति की प्राप्ति होती है। मीरघाट से उत्तर बगल के घाट में गङ्गा केशव, गङ्गा तीर्थ, सूर्य और ललिता गौरी, काशी तीर्थ हैं। यहाँ स्नान करके शक्ति के अनुसार दान और देव-मन्दिरों का दर्शन करने से जल में डूबने और विघ्नों से बचाव होता है। यहाँ काशी तीर्थ में भक्ति और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

गङ्गाकेशव से उत्तर बगल के ललिता घाट में राजराजेश्वरी तीर्थ हैं। इनका दर्शन-पूजन करने से शक्ति-भक्ति और सम्मान की प्राप्ति होती है। ललिता घाट से उत्तर बगल के श्मशान के सटा हुआ दक्षिण बगल के घाट पर भागीरथी तीर्थ है। इस तीर्थ में स्नान करके भागीरथीश्वर का दर्शन करने से शिवजी और गङ्गा जी की भक्ति मिलती है।

भागीरथी तीर्थ के उत्तर बगल में मणिकर्णिका घाट है यहाँ विश्वनाथ तीर्थ, विष्णु तीर्थ, महेश्वर तीर्थ, तारकेश्वर, सिद्धि विनायक तीर्थ है। मणिकर्णिका तीर्थ को शास्त्रों में सर्वश्रेष्ठ तीर्थ कहा गया है। मणिकर्णिका में पुष्करणी ब्रह्मकुण्ड है। यहाँ स्नान, संध्या, देव-ऋषि और पितृ-तर्पण करके यथाशक्ति दरिद्रनारायण को अन्न-भोजन आदि दान और यज्ञ करने वाले व्यक्तियों के पितृ तृप्त और प्रसन्न होते हैं।

यहाँ लोग यज्ञ करते हैं। श्रीराम लीला होती है और रामायण सम्मेलन तथा श्रीराम की कथा होती है। तीर्थ में जो भी शुभ कर्म किया जाता है वह सब अनन्त गुण होकर प्राप्त होता है। यहाँ पूजा की सामग्री साथ में लेकर कीर्तन करते हुए दर्शन करने जाते हैं। दर्शन, पूजन कर कथा-श्रवण करने से असंभव कार्य भी सिद्ध

होते हैं। सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। मणिकर्णिका घाट से उत्तर बगल में आत्मावीरेश्वर, कात्यायनी दुर्गा, बृहस्पतीश्वर और बासुकीश्वर तथा पर्वतेश्वर आदि तीर्थ हैं। तीर्थघाट पर आत्मवीरेश्वर स्रोत है इसका ठण्डा और मीठा जल है।

तीर्थ में स्नान करके मन्दिरों के दर्शन करने, अन्न-पैसा और कुछ परोपकार, निष्काम सेवा करने से विघ्न-दुख, अशान्ति दूर होती है। सिन्धिया घाट से सटा हुआ उत्तर बगल के घाट पर वशिष्ठ-वाम देव और अरुन्धती तीर्थ है। इस तीर्थ में स्नान करके वशिष्ठ आदि के दर्शन करने से स्त्री को पति से वियोग नहीं होता और पुरुष को स्त्री से वियोग नहीं होता है, लक्ष्मी और सुख शांन्ति की प्राप्ति होती है।

बशिष्ठ घाट से सटा हुआ उत्तर वगल संकटा घाट पर क्षेमेश्वर और संकटा तीर्थ हैं जिसमें स्नान करके यमेश्वर और संकटा देवी के दर्शन करने से दुःख, संकट दूर होते हैं और यमेश्वर के दर्शन कर यथाशक्ति दान करने से यम-यातना नहीं होती। यहाँ कार्तिक भ्रातृ द्वितीया के दिन स्नान करके माताएँ अपने भाई को नर्क से बचाने के लिए, भाइयों की आयु की वृद्धि करने के लिए यमेश्वर की पूजा-प्रार्थना करती हैं।

संकटा घाट से सटा हुआ उत्तर वगल के भोसला घाट में कौसलेश्वर शान्तेश्वर तीर्थ है। तीर्थ में स्नान करके कौशलेश्वर और शान्तेश्वर के दर्शन करने से यात्रियों को मनोवांछित फल प्राप्त होता है। इनके दर्शन का काशी खण्ड में विस्तार से वर्णन मिलता है।

भोसला घाट से सटा हुता उत्तर वगल के रामघाट पर वीररामेश्वर तीर्थ है।

काल विनायक तीर्थ में स्नान करके यथाशक्ति (अन्न, द्रव्य, वस्त्र और मिष्ठान्न आदि) दान करने के पश्चात् वीररामेश्वर तथा महावीर हनुमान जी के दर्शन और अर्चना से असाध्य रोग दूर होते हैं और असम्भव कार्य सफल होते हैं।

वीररामेश्वर तीर्थ से सटा हुआ उत्तर वगल में मंगलागौरी घाट

में वाला जी के नीचे कीर्णा नदी बहती है गभस्तीश्वर वहीं संगम है। (सूर्यतीर्थ) तीर्थ में स्नान करके बाला जी, मङ्गला गौरी और गभस्तीश्वर सूर्य का दर्शन-पूजन और यथा शक्ति दान देने से मङ्गलमय कार्य सिद्ध होते हैं।

मङ्गला गौरी घाट से विन्दुमाधव घाट तक पञ्चगङ्गा माना जाता है। विन्दुमाधव घाट में धूपपापा नाम का स्रोत है। कीरणा और धूपपापा के बीच में पञ्चगङ्गा है। पञ्चगङ्गा में स्नान और विन्दु माधव का दर्शन-अर्चन तथा यथाशक्ति दान करने वाले व्यक्ति के पाप क्षीण होते हैं, वह इस लोक में सुख, शान्ति तथा धन को प्राप्त करता है।

रामानन्द आश्रम में रामानन्दाचार्य जी की तपोभूमि है।

विन्दुमाधव घाट में विन्दुमाधव तीर्थ है। इस तीर्थ में स्नान कर संध्या-तर्पण के पश्चात् विन्दुमाधव गणेश जी, विन्दुमाधवेश्वर और लक्ष्मी तथा विन्दु माधव विष्णु भगवान के दर्शन-पूजन करने से लक्ष्मी, विद्या और बुद्धि की तथा अनन्य भक्ति की प्राप्ति होती है। इनकी कृपा से निर्विघ्न काशीवास सफल होता है।

विन्दुमाधव घाट से सटा हुआ उत्तर बगल के दुर्गा घाट में स्नान करके ब्रह्मचारिणी दुर्गा देवी और कपिलेश्वर के दर्शन-पूजा करने से और कथा-श्रवण करने से शक्ति-भक्ति और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

दुर्गा घाट से सटा हुआ उत्तर बगल के ब्रह्मा घाट में स्नान करके यथाशक्ति दान करके ब्रह्मेश्वर और ब्रह्माणी देवी की पूजा करने से बुद्धि और ब्रह्म-विद्या की प्राप्ति होती है।

ब्रह्मा घाट से सटा हुआ उत्तर बगल के शीतला घाट पर गोप्रेक्षेश्वर और शीतला तीर्थ में स्नान करके शीतला देवी और गोप्रेक्षेश्वर तथा गोपी गोविन्द का दर्शन करने से और ब्राह्मण को यथाशक्ति अन्न पैसा आदि दान देने से बल, बुद्धि, विद्या की प्राप्ति होती है।

शीतला घाट से सटा हुआ उत्तर बगल के गायघाट में स्नान करके कथा-श्रवण के पश्चात् यथाशक्ति दान और गाय की पूजा करके कृष्णेश्वर और नन्दीकेश्वर के दर्शन करने से सब कार्य निर्विघ्न सफल होते हैं। सम्पत्ति सुख तथा शान्ति की प्राप्ति होती है।

गायघाट से उत्तर बगल के बद्रीनारायण घाट पर बद्रीनारायण तीर्थ में स्नान करके बद्रीनारायण विष्णु का और संहार भैरव जी का दर्शन-अर्चन करने से कार्य में विघ्न नहीं आता, सब कार्य सफल होते हैं और भक्ति की प्राप्ति होती है। बद्रीनारायण घाट से उत्तर बगल के त्रिलोचन घाट पर त्रिलोचनेश्वर कामेश्वर तीर्थ (मछोदरी और गङ्गा से सङ्गम स्रोत घाट में) है इसमें स्नान करके पूजा की सामग्री साथ में लेकर दर्शन-कीर्तन करते हुए प्रणव विनायक, हिरण्यगर्भेश्वर विष्णु और त्रिलोचनेश्वर कामेश्वर के दर्शन-पूजन करके कथा-श्रवण करने से रोग, कष्ट और दरिद्रता दूर होती है। त्रिलोचन घाट से उत्तर प्रह्लादघाट में प्रह्लाद तीर्थ में स्नान करके प्रह्लाद केशव, प्रह्लादेश्वर पिचिंडिल विनायक और प्रह्लाद नृसिंह भगवान का दर्शन और कथा-श्रवण करने से यात्रियों के मनोरथ पूर्ण होते हैं, द्रव्य और सन्तति की वृद्धि होती है। प्रह्लाद घाट से उत्तर बगल के नया महादेवघाट में महादेव श्र्वलिनीश्वर तीर्थ है। इस तीर्थ में स्नान करके श्र्वलिनीश्वर महादेव एवं बद्री विनायक गणेश जी का दर्शन करने से सब विघ्न दूर होते हैं।

महादेव तीर्थ से उत्तर बगल के राजघाट में राजेश्वर तीर्थ और नारद तीर्थ हैं। इस तीर्थ में स्नान करने से और यथाशक्ति दान करने से विघ्न नहीं आते एवं अकाल मृत्यु नहीं होती।

राजघाट से उत्तर वरुणा-गङ्गा सङ्गमपर आदिकेशव तीर्थ में स्नान करके वरुणा सङ्गमेश्वर, आदिकेशव, आदिकेसवादित्य सूर्य और ज्ञान केशव आदि के दर्शन करने से पाप-रोग दुःख क्षीण होते हैं, भक्ति एवं शान्ति की प्राप्ति होती है। यहाँ के विशेष महत्व की बात एक यह है कि विष्णु भगवान् काशी में आकर वरुणा सङ्गम में स्नान किया और वरुणा सङ्गम में आदिकेशवेश्वर को स्थापित किया और आदिकेशवेश्वर को वरदान दिया उसके पश्चात् विष्णु भगवान ने मणिकर्णिका घाट में स्नान करके विश्वनाथ अविमुक्तेश्वर का दर्शन किया।

इन सब मन्दिरों का मकान-नम्बर पता-सहित काशी के अन्दर जितने तीर्थ हैं उन सबका महत्व और फल मकान-नम्बर सहित काशी दर्शन में लिखा गया है।

वरुणा सङ्गम में माहावारुणी पर्व के दिन स्नान करने से पाप क्षीण होते हैं, धन विद्या और सुख शान्ति की प्राप्ति होती है।

तीर्थों में स्नान करने का विधान इस प्रकार है—घर में ही नित्य क्रिया से निवृत्त होकर और हल्का स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर तीर्थों के दर्शन होते ही नमस्कार करें। समीप में जाकर मार्जन करें। तत्पश्चात् सङ्कल्प करके स्नान करें। मन्त्र याद न हो तो 'नमः शिवाय' जपे। 'श्री सूर्याय नमः' कहकर जल से अर्घ्य दे, अन्न पैसा आदि दान दे और अपने से बड़े, ब्राह्मण, साधु संन्यासी आदि को प्रणाम करें।

प्रयत्न करके गङ्गा और तीर्थ में स्नान करना चाहिए।

तीर्थ-यात्रा में जाने वाले को सुविधा और सहयोग देने वाले को पुण्य होता है। तीर्थ-यात्रा और यज्ञ, कीर्तन एवं दान करने वालों को मना और विरोध करने वाले को पाप लगता है। प्रयत्न करके जीर्णोद्धार समिति बनाकर मन्दिर-तीर्थ का उद्धार करना चाहिए। जीर्णोद्धार करने वाले को धर्म-अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इन तीर्थों के अतिरिक्त काशी में लगभग तीन सौ (३००) तीर्थ हैं। इन सब तीर्थों का माहात्म्य काशी दर्शन में लिखा गया है।

काशीखण्डोक्त तीर्थ-कुण्ड

काशी में काशीखण्डोक्त तीर्थ और कुण्ड इस समय जो सुरक्षित हैं उनका वर्णन करते हैं। विश्वनाथ जी से दक्षिण के तीर्थ लोलार्क सूर्य तीर्थ कुण्ड का प्रमाण स्कन्द पुराण के काशी खण्ड में, काशी रहस्य, शिव रहस्य, उप सूर्य पुराण में और काशी दर्शन में विस्तार से है। लोलार्क कुण्ड में स्नान करके सूर्य नारायण और लोलार्केश्वर के दर्शन-पूजा करने से स्थूल पाप-ताप नष्ट होते और चर्म रोग अच्छे होते हैं। यहाँ दान करने से हजारों गुणा होकर प्राप्त होता है। यात्रियों की मनौतियाँ और मनोरथ पूर्ण होते हैं। सब कार्य सिद्ध होते हैं। प्रत्येक रविवार के दिन स्नान और दर्शन करने वाले यात्रियों की ताता लगी रहती है। काशी रहस्य में प्रत्येक रविवार को स्नान के पश्चात् मिष्ठान्न दुग्ध तथा फल ब्राह्मण को यथा शक्ति दान देने से (यज्ञ करने से) अनन्त फल की प्राप्ति होती है। भाद्र शुक्ल षष्ठी के दिन लगभग सात लाख लोग स्नान-दर्शन करते हैं। अन्त में मुक्ति मिलती है। स्नान पूजन करने के बाद कीर्तन, अखण्ड

कीर्तन तथा गीता रामायण का पाठ करने या करवाने से भी फल मिलता है।

अस्सी मुहल्ला में पुष्कर तीर्थ विशाल कुण्ड है। काशी में पुष्कर क्षेत्र है। तीर्थ का प्रमाण स्कन्ध पुराण, पद्म पुराण और काशी खण्ड में प्राप्त होता है। पुष्कर तीर्थ में स्नानकर ब्रह्मा जी की मूर्ति और पुष्करेश्वर का दर्शन-पूजन करने से पाप क्षीण होते हैं। बुद्धि, विद्या तथा धन की प्राप्ति होती है। दरिद्रता दूर होती है। प्रत्येक पूर्णमासी के दिन स्नान करने का विशेष महत्व है और मन के अनुसार फल मिलता है। कुण्ड पश्चिम वगल के आश्रम में राम मन्दिर के वगल में है। मध्य प्रदेश के पुष्कर क्षेत्र में जाकर स्नान-दर्शन करने से जो फल फिलता है उससे दश गुना ज्यादा फल यहाँ स्नान-दर्शन करने से मिलता है। पुष्करेश्वर के मन्दिर का और पुष्कर क्षेत्र का जीर्णोद्धार करने वाले भक्तों को यहाँ सुख और अन्त में ब्रह्म लोक की प्राप्ति होती है।

भदैनी मुहल्ला में सोनभद्र, भद्रवन तीर्थ कुण्ड है। सोनभद्रेश्वर भद्रवन तीर्थ का प्रमाण स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, काशी रहस्य में प्राप्त है। सोनभद्रवन तीर्थ में स्नान करके सोनभद्रेश्वर जी का दर्शन पूजन करने से रोग-कष्ट दूर होते हैं। अन्न पैसा फल आदि का दान करने से द्रव्य, परिवार आदि की वृद्धि होती है। इस तीर्थ में अमावस्या के दिन स्नान करने का विशेप महत्व है। सोनभद्र वनेश्वर सोनभद्र कुण्ड के दक्षिण वगल में साधु बेला से सटे हुए पूर्व वगल के विशाल मकान के अन्दर शिव मन्दिर में है।

कुरुक्षेत्र में रविन्द्रपुरी कालोनी मुहल्ला में कुरुक्षेत्र तीर्थ विशाल कुण्ड है। कुरुक्षेत्र तीर्थ का प्रमाण स्कन्ध पुराण, काशी खण्ड और काशी रहस्य में प्राप्त है। कुरुक्षेत्र तीर्थ में स्नान करके स्थाणु लिङ्गेश्वर और कुरुक्षेत्रेश्वर जी का दर्शन-पूजन करने से नेत्र रोग और अन्य रोग भी शान्त होते हैं। सन्तान, धन और व्यापार की वृद्धि होती है तथा शुभ कार्य में विघ्न नहीं आता।

मनोवाञ्छित फल मिलता है। सूर्य ग्रहण में अन्य तीर्थ में स्थान करने से जो फल मिलता है, सूर्य ग्रहणके समय इस तीर्थ कुण्ड में स्नान करने से पाप का नाश और पुण्य की वृद्धि होती है। स्थाणु लिङ्गेश्वर, कुण्ड से सटे हुए कुरुक्षेत्रेश्वर कुण्ड के पश्चिम वगल के शिव मन्दिर में है।

दुर्गाकुण्ड मुहल्ला में दुर्गा-तीर्थ-कुण्ड विशाल कुण्ड है। दुर्गाकुण्ड और दुर्गा जी का प्रमाण स्कन्ध पुराण में, शिव पुराण में, पद्म पुराण तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण में विस्तार से प्राप्त है। दुर्गाकुण्ड में स्नान करके शुष्केश्वरी देवी और दुर्गा जी का दर्शन-पूजा करने वाले यात्रियों का दुःख, संकट, दरिद्रता तथा विघ्न दूर होते हैं। ग्रहों की पीड़ा शान्त होती है। भक्त दुर्गति में नहीं पड़ते। प्रत्येक मंगलवार और शनिवार के दिन लगभग पाँच लाख यात्री स्नान-दर्शन या मार्जन करते हैं। नवरात्र और प्रत्येक श्रावण महीने में भी प्रति-दिन दर्शन करने का विधान है तथा शुष्केश्वर का दर्शन तथा कुट्टे-श्वर जी का दर्शन सोमवार के दिन करना चाहिए। दर्शन-पूजन करने के पश्चात् यथाशक्ति अन्न-पैसा आदि दान देते हैं। यात्री अपने घर जाते हैं। जिनके पास दान करने के साधन न हो वह कीर्तन, अखण्ड कीर्तन करें।

रविन्द्रपुरी कालोनी में कीनाराम बाबाजी के आश्रम में कूटदन्त विनायक क्रीम् तीर्थ है जो क्रीं कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है। प्रमाण काशी खण्ड में प्राप्त है। कूटदन्त विनायक तीर्थ में स्नान कर कूटदन्त विनायक के दर्शन-पूजन करने से रोग अच्छे होते हैं। तथा चर्म रोग शान्त होता है। स्नान दर्शन करने वाले भक्तों के उपसर्ग दुःख और कष्ट का संहार होता है। क्रीम् कुण्ड तीर्थ सिद्ध कुण्ड के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस सिद्ध कुण्ड का चमत्कार यह है कि प्रत्येक रविवार के दिन सभी वर्ग के लोग—स्त्री-पुरुष छोटे-छोटे बालक को लेकर आते हैं और क्रीं-कुण्ड में स्नान कराते हैं। महन्त जी से विभूति लेते हैं, दर्शन करते हैं। यह क्रीम् कुण्ड का चमत्कार है। दुर्गाकुण्ड गुहावाई, कबीर नगर मुहल्ला में मुकुटेश्वर और वाराहाका देवी तीर्थ कुण्ड है। वाराहाका देवी तीर्थ का प्रमाण काशी खण्ड में, काशी रहस्य और काशी वार्षिक यात्रा में, केदार अन्तर्गृही यात्रा में है। यह भूमि काशी में वाराहाका देवीजी का सिद्ध पीठ है। जो दर्शनार्थी वाराहाका देवी तीर्थ में स्नान या मार्जन करके मुकुटेश्वर वाराहाका देवी जी का दर्शन करते हैं उनके आने वाले विघ्न दुःख-दरिद्रता और ग्रह जनित पीड़ा दूर होते हैं। यहाँ अन्न आदि दान देते हैं। मन्दिर का जीर्णोद्धार करने वाले व्यक्ति को भाग्यवान पुत्र और पौत्रों एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है तथा अन्त में विश्वनाथ जी मुक्ति देते हैं।

सङ्कुधारा मुहल्ला में काशी में द्वारिकानाथ तीर्थ कुण्ड है। द्वारिकानाथ तीर्थ का प्रमाण स्कन्ध पुराण, केदार माहात्म्य और काशी रहस्य में प्राप्त है। द्वारिका तीर्थ में स्नान करके सङ्कुरेश्वर द्वारिका नाथ का दर्शन करने से यात्रियों के मनोरथ पूर्ण होते हैं और धन, बुद्धि एवं भक्ति की समृद्धि होती है। द्वारिका पुरी में जाकर द्वारिका नाथ जी का दर्शन से जो फल मिलता है इस द्वारिका पुरी तीर्थ में स्नान-दर्शन से मिलता है। अन्त में मुक्ति मिलती है। रामायण, गीता तथा कीर्तन, अखण्ड कीर्तन करने या ब्राह्मणों से कराने से भगवान प्रसन्न होते हैं।

सूर्य कुण्ड मुहल्ला में संवादित्य सूर्य तीर्थ विशाल कुण्ड के रूप में है जो सूर्य कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है। सम्वादित्य सूर्य का प्रमाण काशी रहस्य, स्कन्द पुराण, शिव पुराण, लिङ्ग पुराण में प्राप्त है। सम्बादित्य सूर्य तीर्थ में स्नान या मार्जन करें। दर्शन से नेत्र रोग, अन्य रोग तथा स्थूल पाप शान्त होते हैं। दर्शन करके मिष्ठन, द्रव्य और फल दुग्ध आदि (ब्राह्मण) को दान देने से रोग, दरिद्रता, कल्मष पाप आदि दूर होते हैं और धन सन्तान की वृद्धि होती है। अपुत्री को पुत्र की प्राप्ति होती है। सम्वादित्य सूर्य देव का उपासना से सब कार्य सिद्ध होते हैं। चैत्र के प्रथम रविवार के दिन दर्शन-पूजन करने से रोग आदि नष्ट होते हैं। यहाँ गीता, रामायण आदि सम्मेलन होते हैं। कीर्तन, यज्ञ, महायज्ञ, अखण्ड कीर्तन करने से रोग, पाप और ग्रह शान्त होते हैं।

लक्ष्मी कुण्ड मुहल्ले में महालक्ष्मीश्वर और शिखिचण्डी देवी, रमा लक्ष्मी तीर्थ विशाल कुण्ड है जो महालक्ष्मी तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। स्कन्ध पुराण, केदार माहात्म्य, ब्रह्म वैवर्तपुराण, पद्मपुराण तथा शिव रहस्य में इसके प्रमाण प्राप्त हैं। महालक्ष्मी रमा तीर्थ लक्ष्मी कुण्ड में स्नान करके महालक्ष्मीश्वर शिखिचण्डी देवी और कुणिताक्ष विनायक एवं महालक्ष्मी देवी जी आदि के दर्शन पूजा कर देव-ऋषि, पितृ-तर्पण करके और यथाशक्ति अन्न (सीधा) द्रव्य, फल, दुग्ध आदि के दान करते हैं। इससे रोग, दुःख और विघ्न दूर होते हैं। महालक्ष्मी के दर्शन पूजा से सम्पत्ति, धन, सद्बुद्धि और विद्या की प्राप्ति होती है। सन्तान की वृद्धि होती है। यहाँ कीर्तन, अखण्ड कीर्तन, रामायण, गीता आदि सम्मेलन होते हैं।

रामकुण्ड मुहल्ला में रामेश्वर तीर्थ विशाल कुण्ड है जो रामकुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है। राम तीर्थ का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य एवं लिङ्ग पुराण में प्राप्त है। रामेश्वर तीर्थ राम कुण्ड में स्नान करके रामेश्वर हनुमान जी का दर्शन करने से दुःख, दरिद्रता और विघ्न दूर होते हैं। भक्ति प्राप्त होती है। यह तीर्थ केदार अन्तर्गृही यात्रा में है। तीर्थ और मन्दिरों के जीर्णोद्धार करनेवाले और करानेवाले सबको ऐश्वर्य, पुत्र सुख तथा शान्ति की प्राप्ति होती है। यहाँ कीर्तन, अखण्ड कीर्तन, रामायण, गीता आदि का सम्मेलन होता है।

हड़हा मुहल्ला में हाटकेश्वर तीर्थ बेनियाबाग बस स्टेशन के पूर्व बगल में विशाल कुण्ड है। हाटकेश्वर तथा कुण्ड का स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, काशी रहस्य, काशी दर्शन में प्राप्त है। कुण्ड में स्नान या मार्जन करके हाटकेश्वर के पूजन करने वाले के रोग तथा हृदय के रोगी को इनके दर्शन से रोग दूर होते हैं। सीधा, पैसा तथा फल मिष्ठान दान देने से पाप क्षीण हो जाते हैं और परिवार की वृद्धि होती है। मन्दिरों के जीर्णोद्धार करने या कराने वाले को बुद्धिमान, ऐश्वर्यमान, धनवान पुत्र की प्राप्ति होती है। अन्त में सद्गति मिलती है। विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा में इसका विस्तृत वर्णन है।

काशी में पितरकुण्डा मुहल्ला में पितृश्वर पितृतीर्थ पितरकुण्डा के नाम से प्रसिद्ध है। पितृश्वर तीर्थ का प्रमाण स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य में प्राप्त है और मत्स्य पुराण में पितृश्वर का नाम आया है। पितृतीर्थकुण्ड में स्नान कर पितृश्वर पितरों के ईश्वर का दर्शन पूजा करने से तथा मिष्ठान्न तथा अन्न, वस्त्र, दूध, फल आदि दान करने से एवं देव-ऋषि-पितृ-तर्पण करने से यात्रियों के यश, सन्मान, धन और सुख की प्राप्ति होती है। पितृतीर्थ का महत्व विशेष यह है कि पिताजी जिस तिथि को मरे हैं उसी तिथि के दिन प्रातः पितृतीर्थ में स्नान कर पितृ-तर्पण और श्राद्ध करने से और ब्राह्मणों को मिष्ठान्न दान देने से तथा भोजन कराने से पितर तृप्त हो जाते हैं और मुक्त हो जाते हैं। उनका पुनः जन्म नहीं होता है।

पितरकुण्डा के पश्चिम बगल में मातृकुण्डा नाम का मुहल्ला है जहाँ मातृदेवी तीर्थ कुण्ड है। मातृ-तीर्थ-कुण्ड का प्रमाण स्कन्ध पुराण,

काशी खण्ड में है। पितरकुण्ड के पश्चिम बगल में मातृश्वर हैं। मातृश्वरी मोहल्ला में मातृश्वरी तीर्थ कुण्ड है। माता जी की मृत्यु के दिन प्रातः मातृतीर्थ में स्नान और पितृ-तर्पण-श्राद्ध करके सपत्नि, ब्राह्मण को सपत्नि भोजन कराने का विधान है। यथा शक्ति मिष्ठान आदि दान करने से किसी भी योनि में यात्रियों की माताजी होंगी वह मुक्त हो जायँगी। आश्विन कृष्ण पक्ष की मातृनवमी तिथि के दिन मातृ-कुण्ड में मार्जन एवं स्नान करने से, मातृश्वर के दर्शन-तर्पण पिण्डदान करने से मातृ (माता) मुक्त होती है। काशी में पिशाचमोचन मुहल्ला में पिशाचमोचनेश्वर कपर्दीश्वर पञ्चास्या पञ्चमुखी विनायक तीर्थ का प्रमाण स्कन्ध, पुराण, काशी खण्ड अ० ५४ श्लोक ८० से और लिङ्ग पुराण, शिव पुराण, काशी रहस्य में विस्तार से मिलता है। पिशाचमोचन तीर्थ में स्नान कर तर्पण, पिण्डदान करके ब्राह्मण को भोजन कराने का विधान है। यथा शक्ति दान करने से तथा दरिद्र नारायण को लाई, चना, वस्त्र आदि देने से यात्रियों के पितृ-माता मामा आदि के कुल के पितृ जो पिशाच योनि में होते हैं, वे मुक्त होते हैं। स्वयं पितरों के उद्धार के लिए यज्ञ करने वाला पिशाच योनि में नहीं पड़ता और उसके सब कार्य सफल होते हैं। मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १४ चतुर्दशी के दिन पिशाचमोचन तीर्थ में स्नान करके तर्पण-श्राद्ध करके शिव-योगी शिव-भक्त को भोजन कराने का विधान है। तीर्थ मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराने से महापाप का नाश होता है।

कम्पनी बाग नाम मुहल्ला में मध्यमेश्वर तीर्थ विशाल पक्का कुण्ड है। स्नान कर मध्यमेश्वरी देवी का दर्शन-पूजा करने से यात्रियों के स्थूल पाप क्षीण होते हैं, विघ्न एवं संकट दूर हो जाते हैं तथा सब कार्य निर्विघ्न सिद्ध होते हैं।

प्रत्येक प्रदोष के दिन श्रावण में स्नान-दर्शन का विशेष महत्व है और प्रतिदिन का भी महत्व है।

लाट भैरव मुहल्ला में कपालमोचन नाम का तीर्थ विशाल पक्का कुण्ड है। कपालमोचन तीर्थ का प्रमाण काशी खण्ड अ० ९७ श्लोक ६४ से, स्कन्द पुराण, काशी रहस्य, पद्म पुराण और मत्स्य पुराण में भी वर्णन प्राप्त है। कपालमोचन तीर्थ में स्नान करके कपाल भैरवेश्वर, लाट भैरव के दर्शन-पूजा और दान करने से अश्वमेध यज्ञ

करने का फल प्राप्त होता है। भाद्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा के दिन प्रातः कपालमोचन तीर्थ में स्नान करके कपाल भैरव, लाट भैरव एवं कपालेश्वर के दर्शन-पूजन, श्रृंगार एवं रात्रि में कीर्तन करते हुए रात्रि जागरण करने से एक वर्ष भर काशी में किये हुए पाप शमन होते हैं तथा भैरवाष्टमी के दिन यहाँ स्नान और दर्शन-पूजन करने से भैरव जी की कृपा से दुःख-दरिद्रता, विघ्न दूर होते हैं। सुख और शान्ति की प्राप्ति होती है।

नाटी इमली रामकटोरा मुहल्ला में रामकटोरा नाम का कुण्ड प्रसिद्ध है, शिव प्रसाद जी ने अपने काशी यात्रा नाम की पुस्तक में लिखा है कि राम कटोरा में स्नान करके विश्वनाथ जी का दर्शन करने से धर्म, अर्थ और सम्मान की प्राप्ति होती है।

बकरिया कुण्ड मुहल्ला में उत्तरार्क सूर्य तीर्थ विशाल कुण्ड बकरिया कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है। सूर्य नारायण मन्दिर के पश्चिम बगल में कुण्ड तीर्थ उत्तरार्क सूर्य तीर्थ का काशी खण्ड अ० ४ श्लोक ७२ में वर्णन है। तीर्थ में स्नान या मार्जन, दर्शन-पूजा करने से रोग, संकट, दुःख दूर होते हैं। साथ ही द्रव्य, व्यापार सन्तान और भक्ति की वृद्धि होती है।

पापमोचनेश्वर नोवा पोखरा मुहल्ला में पापमोचनेश्वर पापमोचन तीर्थ विशाल कुण्ड है। कुण्ड के पश्चिम तट के शंकर जी के मन्दिर में पापमोचनेश्वर एवं पाप मोचन तीर्थ का प्रमाण काशी खण्ड, ब्रह्मवैवर्त पुराण में है। लिंग पुराण में भी पापहर तीर्थ का नाम आया है। पापमोचनेश्वर पापहर तीर्थ में स्नान करने से पाप क्षीण होते हैं। द्रव्य, अन्न और सन्तान की वृद्धि होती है। मन्दिरों के जीर्णोद्धार करने वाले भक्तों के सभी कार्य (सिद्ध) सफल होते हैं और शत्रु परास्त होते हैं।

मच्छोदरी मुहल्ला में ओंकारेश्वर मच्छोदरी तीर्थ विशाल कुण्ड के रूप में है। ओंकारेश्वर तीर्थ का प्रमाण स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, काशी रहस्य पद्म पुराण में प्राप्त है। ओंकारेश्वर (छित्तवन पुरा टीला में है) ओंकारेश्वर मच्छोदरी तीर्थ में स्नान कर ओंकारेश्वर रूपात्मनेश्वर का दर्शन-पूजन-अर्चना करने से पाप नष्ट होते हैं। अन्न, द्रव्य (पैसा) दान देने से नरक में नहीं पड़ता और मनोवाञ्छित फल पाता है। ओंकारेश्वर के दर्शन-पूजन का फल अनन्त है।

वाराणसी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा के तीर्थ कुण्ड (तालाब) का वर्णन करते हैं। मडुवाडीह मुहल्ला में शालटङ्क विनायक तीर्थ विशाल कुण्ड

के रूप में है। शालटङ्क विनायक तीर्थ का प्रमाण स्कन्द पुराण, काशी खण्ड और काशी रहस्य में है।

तीर्थ में स्नान करके शालटङ्केश्वर और शालटङ्क विनायक के दर्शन, पूजा और मुट्ठी अन्न और पैसा तथा सीधा आदि दान देने से कष्ट, विघ्न और गरीवी आदि दूर होते हैं और सब कार्य सफल होते हैं। यहाँ कीर्तन, गीता और रामायण आदि सम्मेलन होते हैं।

लहरतारा मुहल्ला में च्यावनेश्वर तीर्थ (सड़क के पश्चिम पटरी में) विशाल तीर्थ कुण्ड है। च्यावनेश्वर तीर्थ में स्नान करके च्यावनेश्वरी, च्यावनेश्वर का दर्शन, पूजा अन्न आदि दान करने से स्थूल पाप क्षीण होते हैं और धन, आयु एवं पुण्य की वृद्धि होती है। यहाँ यज्ञ, कीर्तन, रामायण आदि सम्मेलन होते हैं।

काशी पञ्चक्रोशी यात्रा में जो तीर्थ कुण्ड हैं उनका वर्णन करते हैं। आदि कर्दमेश्वर तीर्थ कंदवा गाँव में—आदि कर्दमेश्वर तीर्थ विशाल (तालाव) कुण्ड है। आदि कर्दमेश्वर तीर्थ में स्नान करके नीलकण्ठ आदि देव-मन्दिरों के दर्शन कर कर्दमेश्वर के दर्शन-पूजन, कीर्तन, अन्न, द्रव्य एवं सीधा आदि दान करने से चिन्ता, कष्ट और स्थूल रोग दूर होते हैं। विद्या-भक्ति की वृद्धि होती है। तीर्थ-मन्दिरों के जीर्णोद्धार करने वाले भक्त सब कार्य में विजयी होता है। इस लोक में सुख और शान्ति प्राप्त करता है एवं अन्त में मुक्ति प्राप्त करता है।

भीमचण्डी गाँव में—भीमचण्ड गन्धर्व सागर तीर्थ विशाल कुण्ड है। भीमचण्डी गन्धर्व सागर तीर्थ का प्रमाण काशी खण्ड, शिव पुराण काशी रहस्य में प्राप्त हैं। स्नान करके चण्डविनायक आदि देव-मन्दिरों के दर्शन कर भीमचण्डी देवी के दर्शन-पूजा, अन्न, पैसा, सीधा आदि दान करने से रोग, संकट और दरिद्रता एवं विघ्न दूर होते हैं। शक्ति, भक्ति और विद्या की वृद्धि होती है। भीमचण्डी में यज्ञ होते हैं, कीर्तन-भागवत और रामायण आदि सम्मेलन होते हैं।

दीनदासपुर गाँव लंगोटिया हनुमान में सोमनाथ सिन्धु सरोवर तीर्थ है। तीर्थ का प्रमाण स्कन्द पुराण और काशी रहस्य में प्राप्त होता है। सोमनाथ सिन्धु सरोवर तीर्थ में स्नान कर हनुमान आदि देव-मन्दिरों का दर्शन कर सोमनाथेश्वर जी के दर्शन-पूजा, अन्न, द्रव्य एवं सीधा आदि दान करने से सम्पत्ति-विद्या की प्राप्ति होती है और धनवान पुत्र की प्राप्ति होती है। यहाँ यज्ञ होते हैं, कीर्तन, रामायण आदि सम्मेलन होते हैं।

भटौली गाँव में देहली विनायक विन्दु सरोवर तीर्थ है। देहली विनायक विन्दु तीर्थ का प्रमाण स्कन्ध पुराण, काशी रहस्य और लिङ्ग पुराण में भी मिलता है। देहली विनायक विन्दु तीर्थ में स्नान करके गिरि नृसिंह विष्णु शोडष विनायक आदि मन्दिरों के दर्शन कर देहली विनायक गणेशजी के दर्शन-पूजन करने से दुःख-विघ्न दूर होते हैं। तीर्थ-मन्दिरों के जीर्णोद्धार कराने वाले व्यक्ति सब जगह विजयी होता है और सुख शान्ति को प्राप्ति करता है।

दीनदयालपुर गाँव में पूपसरोवरेश्वर और पूपसरोवर तीर्थ सोना-तालाव के नाम से प्रसिद्ध है और कपिलधारा से पहले है। पूपसरोवर सोना तालाव का प्रमाण काशी खण्ड और काशी रहस्य में प्राप्त है। सरोवरयूप तीर्थ में स्नान कर पूपसरोवरेश्वर के दर्शन, पूजन करने से सुख एवं शान्ति की प्राप्ति होती है। तीर्थ और मन्दिरों का जीर्णोद्धार करने वाले व्यक्ति के रोग, विघ्न दूर होते हैं और पदोन्नति होती है तथा शत्रु मित्र वनते हैं। यहाँ यज्ञ और कीर्तन-रामायण आदि सम्मेलन होते हैं।

कपिलधारा मुहल्ला में वृषभध्वजेश्वर कपिलधारा नाम का विशाल कुण्ड तीर्थ है। वृषभध्वजेश्वर कपिलधारा तीर्थ का स्कन्द पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, पद्म पुराण और शिव पुराण में वर्णन मिलता है। काशी खण्ड के ६२वें अध्याय में कपिल तीर्थ का विस्तार से वर्णन है। वृषभध्वजेश्वर कपिलधारा तीर्थ में स्नान कर छाङ्गव-क्रेश्वरी और कपिलेश्वर गणेश जी के दर्शन करके वृषभध्वजेश्वर के दर्शन-पूजा करने से स्थूल रोग, चर्म रोग आदि अच्छे होते हैं। संकट और विघ्न दूर होते हैं तथा स्नान दर्शन से मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

काशी खण्ड के ६२वें अध्याय के अनुसार कपिलधारा तीर्थ में स्नान, संध्या, देव-ऋषि और पितृ-तर्पण, श्राद्ध तथा यथा शक्ति मिष्ठान्न, द्रव्य, दूध एवं वस्त्र आदि दान और ब्रह्मणों को भोजन कराने का विधान है। यह सब कार्य करने से पितृ प्रसन्न होते हैं, आशीर्वाद देते हैं और जिस योनि में पितृ हों उस योनि से वे मुक्त हो जाते हैं।

श्री १००८ श्री डॉ० लक्ष्मण चैतन्य ब्रह्मचारी
जी महाराज के द्वारा लिखित
ग्रन्थ इस प्रकार हैं—

१. प्रवचन रत्नाकर पाटल
२. प्रवचन रत्नाकर
३. प्रवचन दिवाकर
४. रुद्राक्ष मीमांसा
५. प्रवचन सुधाकर
६. सनाद्यन्ते धात्वर्थ विमर्श : (शोध प्रबन्ध)

काशीवास का फल

शिव जी भवानी जी से कहते हैं कि हे भवानी ! मृत्युलोक के प्राणियों के लिए काशी कैलाश के समान है। काशी में मरे हुए यूका (जूँ) डांस, खटमल और मृगादि जीव, कीट एवं चींटी, सर्पादि और बिच्छू, सूकर आदि काशी में मरकर शिव को प्राप्त होते हैं।

अतः काशी में मरे हुए प्राणियों को पृथ्वी पर पुनः जन्म लेना नहीं पड़ता है।

इस असार संसार में सार पदार्थ चार हैं। यथा—काशीवास, सज्जन का संग, गङ्गाजल का सेवन तथा शिव-पूजन।

अपने जीवन काल में जीव से अनेक प्रकार के पाप और पुण्य हो जाते हैं, पर काशी में मरते ही वे सब कर्मों के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं। प्राणों के छूटते ही क्षण भर में उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। अतः बड़े-बड़े पापों को शान्त करने वाली अनेक पुण्यों को उत्पन्न करने वाली अनेक प्रकार के सुखों को देकर अन्त में मोक्ष देने वाली काशी का ऐसा कौन बुद्धिमान होगा जो सेवन न करे ?

जैसे स्वाती नक्षण में मेघ से जितनी बूँदे शुक्ति में गिरती हैं, वे सब मुक्ता (मोती) बन जाती हैं। ठीक उसी प्रकार काशी में रहने वाले और वहीं शरीर का परित्याग करने वाले सभी जन्तु मुक्त हो जाते हैं। इस प्रकार काशी वास का अनन्त गुण फल होता है।

महादेव जी पार्वती जी से कहते हैं कि—

हे देवि ! मेरी इस काशी में ऐसी कोई सुई भर भी जगह नहीं है जिसमें मरने पर जीव को मुक्ति न मिले। चाहे भूमि पर मरे, चाहे जल में मरे, चाहे आकाश में मरे, पवित्र स्थान पर मरे, चाहे अपवित्र स्थान पर मरे, उस जीव को मुक्ति अवश्य ही मिल जाती है। जो लोग सर्प काटने से, अग्नि में जल जाने से, वज्र के गिरने से अथवा चोरों के द्वारों असमय में मारे जाते हैं, उनकी अकाल मृत्यु कही

जाती है और उन्हें सद्गति नहीं मिलती, परन्तु काशी में किसी प्रकार भी मरने वाले को मुक्ति अवश्य ही मिलती है।

काशी में स्वयं वास करने वाले, काशी वास कराने वाले को (करोड़) कोटि गुना पुण्य अधिक होता है। क्योंकि काशी वास करने वाले तो केवल अपने ही को तारता है पर काशीवास कराने वाले को सहयोग देकर काशीवास करने वाला अपने को तथा जिसे काशी वास कराता है उसे दोनों ही का उद्धार कर देता है। (यही बात यात्रा के विपय में भी समझनी चाहिए।)

शङ्कर जी पार्वती जी से कहते हैं कि हे पार्वती! काशी जी में पृथ्वी, जल और आकाश आदि में किसी भी जगह भगवान विश्वनाथ जी के तारक मन्त्रोपदेश को प्राप्त होते ही सभी प्राणी मोक्ष पद को प्राप्त करते हैं। वे पुन: माता के गर्भ में नहीं आते हैं।

विश्वनाथ जी अन्नपूर्णा जी से कहते हैं कि हे देवि! मृत्युलोक में मेरी काशी शिवलोक है। यहाँ मरे हुए जीव कीट, पतंग और मच्छर, वृक्ष, एवं जलचर, तथा थलचर आदि सभी प्राणी काशी में अपना शरीर छोड़कर कल्याण मोक्षपद को प्राप्त करते हैं और काशी में मरने वाले सभी प्राणियों का पुनर्जन्म नहीं होता है।

हे अन्नपूर्ण! 'काशी' मन्त्र के दो अक्षर को जो मानव जपता है। वह दोनों लोकों में जीवित रहता है। इसमें संशय नहीं है।

हे देवि! काशी में वास करने वाले जीव-जन्तुओं को मैं सदैव अपने गर्भ में रखता हूँ। और यह मेरी प्रतिज्ञा है कि मैं अन्त में काशी में वास करने वाले जीव जन्तुओं को मुक्ति देता हूँ।

काशी-काशी ऐसा कहने वाली रसना (जीभ) मुक्ति प्रदान करती है इसमें संशय नहीं है।

विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे भवानी! काशी में नित्य किया हुआ क्षुद्र पाप गङ्गा स्नान और शिव मन्दिरों के दर्शन से ही नष्ट होते हैं और जानबूझ कर जो पाप करते हैं वह प्रायश्चित्त करने से ही पाप नष्ट होते हैं। हे भवानी! काशी का कौतुक महत्व देखो

कि काशी में स्थूल देह को धारण करने वाले को मैं अमृत पद मुक्त कर देता हूँ। तुम्हारी भक्ति काशी वासियों के लिए पाप कर्मों से रहित करने वाली है।

हे पार्वती ! श्रुति-स्मृति-पुराण और सभी शास्त्रों में काशी ब्रह्म के रूप में विख्यात है।

काशी के दर्शन मात्र से मानव निष्पाप हो जाता है तथा पाप का नाश करके पुण्य प्रदान करने वाली (काशी) है।

अण्डज, पिण्डज, उष्मज, स्थावर जो जीव हैं, वे सभी काशी में मुक्ति को प्राप्त करते हैं, भले ही वह स्थावर, जङ्गम क्यों न हों।

मनुष्य जन्म दुर्लभ और काशी भी दुर्लभ है। दोनों प्राप्त कर व्यक्ति मुक्त हो जाता है।

वीजाक्षर के योग से काशी में आकर जो कर्मवीज हृदय को धारण करता है, वही लोग कर्मब्रीज कहलाते हैं।

जो काशी में धर्मनिष्ठा से निवास करते हैं वह अपनी आत्मा को तार करके गत जन्मपूर्व के पूर्वजों को भी तार देते हैं।

बार-दर्शन-यात्रा

मङ्गलवार

काशी में मंगलवार से सोमवार तक की दैनिक वार दर्शन यात्रा— यह वार दर्शन यात्रा, तिथि दर्शन यात्रा में सम्मिलित होकर प्रतिदिन व जिस दिन जहाँ कहाँ जाना है, दर्शन यात्रा करें। दैनिक यात्रा नियत वारों में होनी चाहिये।

मंगलेश्वर दर्शन यात्रा—

मंगलवार के दिन संकठा घाट में मंगल विनायक के वगल में और दूसरे आत्मा वीरेश्वर के मन्दिर में है।

१—मंगलेश्वराय नमः। सिन्धियाघाट म. नं. सी. के. ७।१५८

प्रत्येक मंगलवार को मंगलेश्वर का दर्शन पूजन करने से ग्रह-जनित पीड़ा नहीं होती और अन्त में मंगल लोक में निवास होता है। बुधेश्वर से सटा हुआ पूर्व वगल का 'शिवलिंग' मंगलेश्वर का है। मंगलवार के दिन दुर्गा दर्शन यात्रा—

२—दुर्गादिव्यै नमः। दुर्गाकुण्ड म. नं. बी. २७।२ में।

अष्टमी, चतुर्दशी, मंगलवार, रविवार एवं शनिवार को दुर्गति के नाश करने वाली दुर्गाजी की विशेष कर पूजा, अर्चना उपासना करनी चाहिए। दुर्गाकुण्ड में स्नान या मार्जन कर दुर्गाविनायक का दर्शन करके दुर्गा जी का दर्शन, पूजन करना चाहिए। प्रतिदिन नियम से श्रद्धा, भक्ति से युक्त होकर दुर्गा दर्शन पूजन करने से मनोरथों की पूर्ति होती है; धन, सम्पत्ति और सुख शान्ति मिलती है।

मंगलवार के दिन काल भैरव का दर्शन यात्रा करने से कार्य की सिद्धि होती है। काल भैरव अपने दर्शन करने वाले भक्तों के पाप को नाश कर संकट को दूर करते हैं और पाप हर लेते हैं और सुख पूर्वक काशी वास कराते हैं।

३—कालभैरवाय नमः। मं. नं. के. ३२।२ में, मो०—कालभैरव।

कालभैरवजी (और सभी भैरवों) का दर्शन करने का विशेष महत्व है। वटुक भैरव जी का प्रयत्न पूर्वक दर्शन करें। दर्शन का दिन मंगलवार, रविवार है। अष्टमी और चतुर्दशी को श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर काल भैरव का दर्शन करने से पाप, ताप, भूत और प्रेत, डाकिनी, साकिनी और शारीरिक, मानसिक चिन्ता दूर होती है। अनेक प्रकार के रोग नष्ट होते हैं और मनोकामना की पूर्ति होती है। धन, सम्पत्तियों की प्राप्ति होती है। वस्त्र, भोजन, रहने की व्यवस्था काल भैरवजी की कृपा से स्वतः प्राप्त होती है और अन्त में काल भैरव पापों से मुक्ति देते हैं।

मंगलवार के दिन वन्दीदेवी दर्शन यात्रा—

४—वन्दीदेव्यै नमः। मं. नं. डी. १७।१०० प्रयागराज घाट।

मंगलवार को व्रत रहकर श्रद्धा से युक्त होकर श्री वन्दीदेवी का दर्शन, पंचोपचार से पूजन करने से कैसा भी अपराधी क्यों न हो जेल में वन्द कैदी जेल से छूट जाता है। प्रयागराज घाट के ऊपर प्रयागेश्वर के मन्दिर में वन्दीदेवी पूर्वाभिमुख हैं।

अग्नीश्वर दर्शन यात्रा-जागेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है।

५—अग्नीश्वराय नमः। जागेश्वर मठ नरहरीपुर, ईश्वरगंगी।
मं. नं. के. ६६।४ में।

मंगलवार संयुक्त चतुर्थी के दिन अग्नीश्वर के दर्शन, पूजन और प्रणाम करने से मनुष्यों को कभी कहीं कोई ग्रह जनित बाधा, पीड़ा नहीं होती।

मंगलवार के दिन मंगलवार युक्त चौथ को पूर्व काल में गणेश जी उत्पन्न हुये अतः मंगलवार युक्त चौथ का पर्व पुण्य समृद्धि के लिए कहा गया है। उस दिन बड़े गणेश, ढुण्ढिराज और साक्षीविनायक का दर्शन करें।

६—महाराज गणेशाय नमः। बड़ा गणेश, लोहटिया
मं. नं. के. ५८।१०।

मंगलवार युक्त चौथतिथि को इस पर्व को बुद्धिमानलोग ग्रहण के समान मानते हैं। मंगलवार को जब चौथ पड़े तो बड़े गणेश जी का

दर्शन-पूजन करना चाहिए। वड़े गणेश जी के सामने दान, हवन, जप और यज्ञ, पूजापाठ आदि जो कुछ भी शुभ कर्म किया जाता है वह अनन्त होकर प्राप्त होता है और सब अक्षय होता है। श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर श्राद्ध करने से इस एक ही श्राद्ध से पितृगण बारह वर्ष पर्यन्त तृप्त रहते हैं।

७—यमेश्वराय नमः। संकठाघाट।

मंगलवार तथा भरणी नक्षत्र युक्त चतुर्दशी को यमतीर्थ में स्नान, पिण्ड-दान, तर्पण, यमेश्वर दर्शन, पूजन, प्रणाम करने से मनुष्य पितरों के ऋण से छूट जाता है। यदि काशी के यमतीर्थ पर उक्त योग में श्राद्ध कर यमेश्वर का दर्शन पूजन करके यमादित्य को नमस्कार करके वसिष्ठेश्वर आदि समीपी देवों का दर्शन कर लिया जाय तो गया जाने तथा विशेष दक्षिणा के श्राद्ध का कौन प्रयोजन है!

८—केदारेश्वराय नमः। केदार जी मं. नं. बी. ६।१०२ में।

मंगलवार जब अमावस्या तिथि को पड़े तब केदार तीर्थ में स्नान कर केदार घाट में जो कोई स्थिर चित्त से तर्पण, श्राद्ध, पिण्डदान करे तो उनके एक सो एक पितृगण पुरुष भवसागर से पार हो जाते हैं। फिर गया श्राद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। केदारेश्वर का दर्शन कर उनके समीप में स्थित देवों का दर्शन करना चाहिए।

बुधवार

बुधेश्वर दर्शन यात्रा—

९—बुधेश्वराय नमः। सिन्धिया घाट, मं.नं. सी. के. ७।१५८ में।

बुधवार, बुधेश्वर (आत्मावीरेश्वर के मन्दिर) का दर्शन पूजन, करने से बुद्धि की प्राप्ति होती है। इनका दर्शन करने वाला अगाध भवसागर में गिर कर गोता नहीं खाता और साधु जनों के नेत्रों में चन्द्रमा के तुल्य कान्तिमय सुन्दर वदन होकर अन्त में बुधलोक में निवास करता है।

वृहस्पतिवार

वृहस्पतीश्वर दर्शन यात्रा— सिन्धियाघाट आत्मवीरेश्वर के बगल में

१०—वृहस्पतीश्वराय नमः । मं. नं. डी. १७।२२ में डेढ़सीपुल

वृहस्पतिवार को वृहस्पतीश्वर का दर्शन, पूजन करने से मनुष्य अन्त में वृहस्पति लोक में निवास पाता है और पुष्य नक्षत्र युक्त, वृहस्पतिवार को वृहस्पतीश्वर का दर्शन, पूजन, दान, हवन, जो कुछ भी शुभकर्म करेंगे वह सब सिद्धि को प्राप्त होते हैं और सभी मनोरथ सफल होते हैं। ज्ञानवापी दर्शन यात्रा—

ज्ञानवाप्यै नमः ।

वृहस्पतिवार पुष्यनक्षत्र, शुक्लाष्टमी, व्यतिपात योग इन सबके एकत्र होने पर ज्ञानवापी में स्नान, श्राद्ध करने से गया श्राद्ध से कोटि गुणा अधिक फल प्राप्त होता है; पितृ प्रसन्न होते है और दर्शनार्थियों के मनोकामना की पूर्ति होती है ।

शुक्रवार

शुक्रेश्वर दर्शन यात्रा—

११—शुक्रेश्वराय नमः (कालिका गली में म०नं० डी० ८।१०)

शुक्रवार को शुक्रकूप में स्नान कर तर्पण आदि करके शुक्रेश्वर का दर्शन-पूजन करने से सब कार्य सफल होता है तथा एक वर्ष पर्यन्त प्रति शुक्रवार को व्रत रहकर दर्शन पूजन करने से पुत्रवान् और पुण्यवान तेजस्वी पुरुषत्व मिलता है और स्त्री को पतिव्रता का पूर्ण फल प्राप्व होता है और अन्त में शुक्रलोक में सुख भोगता है ।

शनिवार

शनैश्चरेश्वर दर्शन यात्रा—

१२—शनैश्चरेश्वराय नमः । [अन्नपूर्णा गली, म०नं० डी० ९।१]

शनिश्चर की मूर्ति उत्तराभिमुख है । इनका दर्शनपूजा करना चाहिए । शनिवार को शनैश्चरेश्वर का दर्शन, पूजन करने से किसी भी स्थान में वैठा हुआ शनिग्रह कष्ट, पीड़ा या कोई बाधा नहीं देता ।

कामेश्वर दर्शन यात्रा—

१३—कामेश्वराय नमः। [मच्छोदरी कामेश्वर गली में]

शनिवार युक्त प्रदोष (शनिप्रदोष) के दिन प्रातः गंगा स्नान कर कामेश्वर का दर्शन पूजन करने से कामजनित अनेक पापों का, स्त्री, पुरुष समागम का जो पाप है उस पाप का प्रायश्चित्त शनिवार, शनि प्रदोष में कामेश्वर का दर्शन करने से यम यातना नहीं सहनी पड़ती।

रविवार

गभस्तीश्वर दर्शन यात्रा—

१४—गभस्तीश्वराय नमः। [मंगलागौरी म० नं० के० २४।३४]

प्रत्येक रविवार को गभस्तीश्वर मयूखादित्यसूर्य का दर्शन, पूजन करने से पापों का नाश होता है; धन, सम्पत्ति की प्राप्ति होती है और मनोकामना की पूर्ति होती है।

कमलेश्वर दर्शन यात्रा—

१५—कमलेश्वराय नम। [गढ़वासी टोला म०नं०सीके० ८।१४]

प्रत्येक रविवार को कमलेश्वर का दर्शन, पूजन करने से ग्रहों की शान्ति होती है और मनोकामना की पूर्ति होती है।

मणिकर्णिकेश्वर दर्शन यात्रा—

१६—मणिकर्णिकेश्वराय नमः। [गढ़वासी टोला म० नं० सी० के० ८।१२]

प्रत्येक रविवार को शुभ गंगा स्नान कर मणिकर्णिकेश्वर का दर्शन पूजन करने से पापों का नाश होता है और ज्ञान की प्राप्ति होती है तथा मनोवांछित फल मिलता है।

साम्बादित्यसूर्य दर्शन यात्रा—

१७—साम्बादित्यसूर्याय नम। [सूर्यकुण्ड म० नं० डी० ५१।१०]

रविवार को अरुणोदय के समय सूर्य कुण्ड में स्नान कर साम्बादित्य सूर्य का दर्शन पूजन करने से अनेक प्रकार के रोग नष्ट होते हैं। कुष्ठ आदि रोग छूट जाते हैं और स्त्री को विधवा नहीं होना पड़ता। वन्ध्या स्त्री को रूप-गुण-विद्या सम्पन्न पुत्र की प्राप्ति होती है और धन, सम्पत्ति एवं मनोकामना की पूर्ति होती है।

सोमवार

ज्ञानवापी दर्शन यात्रा—

१८—ज्ञानवाप्यै नमः, विश्वनाथाय नमः। [ज्ञानवापी]

सोमवार के दिन ईशान तीर्थ ज्ञानवापी में स्नान करके देव ऋषि और पितरों का तर्पण करने के पश्चात् और अपनी शक्ति के अनुसार दान दें. श्री विश्वेश्वर शिव लिंग की पूजा करें, पूजा के अनंतर दान देने वाला व्यक्ति कृतकृत्य हो जाता है। ज्ञानवापी के जल से संध्या कालातिक्रम के कारण जो पाप उत्पन्न होते हैं वे नष्ट हो जाते हैं और द्विज को ज्ञान की प्राप्ति होती है। ज्ञानवापी तीर्थ के जल से जो मनुष्य विश्वेश्वर शिवलिंग को स्नान कराता है वह समस्त तीर्थों से स्नान कराने के समान फल पाता है।

सोमवार के दिन शिवलिंग का दर्शन पूजन करना चाहिए। सोमवार को व्रत रहकर दर्शन, कनैल के फूल से जो कोई करुणेश्वर का पूजन करता है उसको करुणेश्वर कभी काशी क्षेत्र से बाहर नहीं करते और जो वर्ष भर प्रति सोमवार को उक्त रीति से पूजन करता है उस पूजन करने वाले भक्त को ये मनोवांछित फल देते हैं।

सोमवार अमावस्यायुक्त चन्द्रकूप स्नान, उपवास, संध्या तर्पण श्राद्धकर सोमवती अमावस्था युक्त ऐसे योग में एक दिन पहले अर्थात् चतुर्दशी के दिन उपवास व्रत रहकर रात्रि में जागरण सत्संग, कीर्तन, जप, रुद्राभिषेक आदि से जागरण करना, प्रातः काल (सोमवती अमावस्या योग में) चन्द्रकूप के जल से स्नान, संध्या आदि से निवृत्त होकर चन्द्रकुण्ड तीर्थ के नजदीक सविधि श्राद्ध करने से सब पितरों का पूर्ण रूप से उद्धार हो जाता है अर्थात् गया में पिण्ड दान करने से पितरों की जैसी तृप्ति होती है वैसी ही तृप्ति चन्द्रकूप में पिण्डदान करने से भी होती है।

२१. वृषभध्वजेश्वराय नमः। [मो० कपिलधारा]

कपिलधारा तीर्थाय नमः।

शंकर जी कहते हैं—सोमवार युक्त अमावास्या तिथि में कपिलधारा तीर्थ में श्राद्ध करने से अक्षय फल प्राप्त होता है। प्रलय काल

में समुद्र के भी जल सूख जाते हैं परन्तु सोमवती अमावस्था में इस कपिलधारा तीर्थ पर अनुष्ठान श्राद्ध का कभी क्षय नहीं होता। सोमवती अमावस्था में कपिल धारा में श्राद्ध अनुष्ठान करने का क्या प्रयोजन है ? वहुत क्या कहूँ, स्वर्ग, अन्तरिक्ष और भूमण्डल के जितने भी तीर्थ हैं सब सोमवती अमावास्या पर्व को कपिलधारा तीर्थ पर विराजमान रहते हैं। कपिलधारा में सोमवती अमावास्या के दिन सूर्य ग्रहण के समान (कुरुक्षेत्र, नैमिपारण्य और गंगा सागर के संगम में पिण्डदान करने से जो) फल मिलता है वह फल इस वृषभध्वज तीर्थ कपिलधारा में भी मिलता है किन्तु सोमवती अमावास्या को कपिल धारा तीर्थ में श्राद्ध करने से गया श्राद्ध के आठ गुना अधिक पुण्य होता है और जो लोग उक्त पर्व पर पितरों की तृप्ति हो इस मनोकामना से कपिल धारा में साधु, ब्राह्मण को यथा शक्ति भोजन कराते हैं। उन भक्तों का किया हुआ श्राद्ध अनन्तफलदायक होता है। जो सज्जन काशीवास कर काशी क्षेत्र में संन्यास लेकर काशीवास करते हैं उनको चन्द्रकूप में स्नान, पितृ-तर्पण-श्राद्ध, यज्ञ जो कुछ भी शुभ कर्म करेंगे कपिल धारा से अधिक चन्द्र कूप में फल मिलता है।

फाल्गुन मास से चैत्र मास तक की यात्रा

चैत्र मास कृष्णपक्ष—

पुण्यात्मा महापुरुष को काशी क्षेत्र के विघ्नों की शान्ति के लिए चैत्र कृष्ण प्रतिपद को चतु पष्ठी योगिनी यात्रा प्रयत्न पूर्वक अवश्य करनी चाहिए।

चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी तिथि के दिन शीतला देवी दर्शन-यात्रा म०नं० डी १८।१९ में, मो० प्रयागराज घाट।

चैत्रकृष्ण चतुर्दशी के दिन—केदार तीर्थाय नमः (केदार घाट गङ्गा जी में) स्नान करके केदारेश्वर जी का दर्शन करें।

केदारेश्वराय नमः। (म०नं०बी० ६।१०२ में, मो० केदारघाट)

चैत्रकृष्ण चतुर्दशी को उपवास करके प्रातःकाल केदार तीर्थ में स्थान तथा केदारेश्वर का दर्शन करने के पश्चात् केदार तीर्थ का तीन चुल्लू जल स्त्री व पुरुषों को पीना चाहिए। इसमें संशय नहीं है कि वह भगवान् केदारेश्वर का सेवक हो जाता है। अतः काशी में प्रयत्न

पूर्वक केदारेश्वर का दर्शन करना चाहिए। केदारेश्वर दर्शन यात्रा करने वाले मनुष्य को यह बता देना चाहिए कि काशी में केदार जी का स्पर्श करने मात्र से कृतकृत्य हो जाओगे।

श्मशानघाट के दक्षिण बगल के घाट पर भागीरथी तीर्थ है। भागीरथी तीर्थ में स्नान करके भागीरथीश्वर का दर्शन करें।

भागीरथीश्वराय नमः (मणिकर्णिकाघाट, म० नं० सी० के० ११।११)।

ब्रह्मनाल से दक्षिण भागीरथी तीर्थ है। जिसके पूर्वज (पितर) अशुभ गति को प्राप्त हो चुके हैं, उनको प्रत्यन पूर्वक अपने पितरों का उस भागीरथी तीर्थ पर विधि पूर्वक तर्पण, श्राद्ध तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। इससे पितृगण ब्रह्मलोक में पहुँच जाते हैं।

सूर्य कुण्ड तीर्थ में स्नान करके साम्बादित्य सूर्य का दर्शन करें। साम्बादित्य सूर्याय नमः। (म० नं० डी० ५१।९० में, मो० सूर्यकुण्ड)

चैत्रमास कृष्ण पक्ष के रविवार के दिन साम्बादित्य सूर्य की सांवत्सरिक यात्रा होती है। विधि पूर्वक कुण्ड में स्नान करके साम्बादित्य सूर्य का दर्शन तथा अशोक, पुष्प और पत्तों से पूजन करने से मनुष्य चिन्ता रहित हो जाता है। नेत्र रोग एवं चर्म रोग नष्ट होते हैं। नेत्र की ज्योति बढ़ती है।

मंगला गौरी दर्शन यात्रा

मङ्गला गौरी तीर्थाय नमः। मङ्गला गौरी घाट पर गङ्गा जी में स्नान करके मन्त्र का जाप करें।

मंगलागौरी देव्यै नमः (म० नं० ३४।३४ पंचगंगाघाट)।

चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन उपवास कर दुपट्टा, आभूषण इत्यादि पंचोपचारों से मङ्गला गौरी का पूजन करके रात्रि में भजन, कीर्तन, कथादि के माध्यम से जागरण करें। प्रातःकाल दुपट्टा इत्यादि से बारह कुमारियों का पूजन करके कुमारियों तथा अन्यों को भी सुन्दर (अन्न से) भोजन कराकर दक्षिणा देकर—"ॐ जात-

वेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहानि वेदः सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः" इस मन्त्र से १०८ आहुति देना चाहिए।

मंगला गौरी की एक प्रदक्षिणा भी समस्त पृथ्वी की परिक्रमा का फल देती है। ९ या १०८ परिक्रमा करें। श्रद्धा से द्विज दम्पति को आभूषणों से अलंकृत करके भोजन कराने पर भगवान् शंकर तथा भगवती मंगला गौरी प्रसन्न होते हैं। भोजन कराने के पश्चात् 'मंगलेश्वरो प्रीयेताम्' कहना चाहिए।

इस तरह करने पर वह ऐश्वर्यहीनता तथा दारिद्रय को कभी प्राप्त नहीं करता, इसलिये समस्त विघ्नों की शान्ति के लिए काशी निवासियों को सदा दर्शन यात्रा करना चाहिए।

पार्वतीश्वराय नमः (मं० मं० ए १३।९२ में आदि महादेव के बगल में, मो० त्रिलोचनघाट)

चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन पार्वतीश्वर का पूजन करने पर व्यक्ति इस लोक में सौभाग्य को प्राप्त करता है तथा परलोक में शुभ गति को प्राप्त करता है।

स्त्री अथवा पुरुष जो कोई पार्वतीश्वर महादेव की आराधना करता है, उसको फिर गर्भ में नहीं आना पड़ता तथा वर्तमान काल में सौभाग्य का पात्र हो जाता है।

चित्रगुप्तेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ९७।७७ में, मो० रेशम कटरा—मच्छर हट्टा)

चन्द्रचित्रघण्टा दुर्गायै नमः (म० नं० सी० के ३३।३४ में, मो० चित्रघण्टा—दुर्गा चौक)

चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन यात्रा करनी चाहिए तथा महामहोत्सव उच्च कोटि का बड़े से बड़ा उत्सव मनाना चाहिए। इस दिन रात्रि में जागरण करना चाहिए। महापूजा के उपकरणों से भगवती चित्रघण्टा की अर्चना करें।

स्त्री अथवा पुरुष जो चित्रघण्टा की अर्चना करता है उसको काशी में पग-पग पर हजारों उपस्थित होने वाले विघ्न नष्ट हो जाते हैं।

विचित्र फल देने वाले चित्रकूप में स्नान करके चित्रगुप्तेश्वर का दर्शन तथा चित्रघण्टा का पूजन करने पर धर्म मार्ग से रहित, बहुत से पातकों से युक्त रहने पर भी चित्रगुप्त को यह लिखना पड़ता है कि यह चित्रघण्टार्चक है।

हे मुनि ! मैं ३० कच्छपरूप, २० मत्स्यरूप, १०८ गोपालरूप, हजारों वृद्धरूप, ३७ परशुरामरूप, १०१ रामरूप, विष्णुरूप से अकेले मुक्ति मण्डप में प्रसन्न श्री विश्वेश द्वारा कृपा पात्र होकर निवास करता हूँ।

लक्ष्मी कुण्ड में स्नान तथा पितरों का तर्पण और विविध वस्तुओं का दान देकर प्राणी कभी लक्ष्मीहीन नहीं होता है। यह लक्ष्मी जी का महाक्षेत्र है यहाँ साधक सिद्धि प्राप्त करते हैं।

महालक्ष्मी देव्यै नमः (म०नं० डी० ५२।३८ में, मो० लक्ष्मीकुण्ड)

पूर्णमासी के दिन प्रातः कपालमोचन तीर्थ में स्नान करके कपालेश्वर लाटभैरव का दर्शन करें। कोटीश से अग्निकोण पर महाश्मशान रूप स्तम्भ है, उसमें उमा सहित महारुद्र रूप से निवास करते हैं। उस स्तम्भ को उपचारों से अलंकृत कर प्राणी महारुद्र पद को प्राप्त करता है। वहीं पर कपाल मोचन तीर्थ में स्नान करने से प्राणी अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करता है।

आश्विन मास

(कृष्ण पक्ष पितृ-तर्पण और श्राद्ध प्रारम्भ)

आश्विन शुक्ल पक्ष

अष्टमी, चतुर्दशी तथा भौमवार के दिन काशी में दुर्गतिनाश करने वाली दुर्गा की नित्य पूजा करनी चाहिए। प्रतिवर्ष दुर्गा दर्शन यात्रा प्रयत्न पूर्वक करना चाहिए। शुभ चाहने वाले लोगों को कुटुम्ब के साथ शारदीय नवरात्र में भी यात्रा करनी चाहिए। नवरात्र में प्रतिदिन पूजी गयी दुर्गा विघ्न समूहों को नाश करती हैं और सुमति प्रदान करती हैं। समस्त दुर्गति को हरने वाली दुर्गा का विधिवत् पूजन के

लिए दुर्गाकुण्ड में स्नान करके पूजन करने से नवजन्म के पाप छूट जाते हैं।

आश्विन शुक्ल नवरात्र भर दुर्गाजी की दर्शन यात्रा

ॐ दुर्गादेव्यै नमः (म० नं० बी० २७।२ में, मो० दुर्गाकुण्ड)

आश्विन शुक्ल पक्ष पंचमी तिथि के दिन नागेश्वरी दर्शन यात्रा (मो० जैतपुरा) आश्विन शुक्ल पंचमी को भक्तों के विघ्न नष्ट करने वाली महामुण्डा चण्डी देवी को नारियल व पेठा से वलिदान तथा अन्य उपचारों से अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिए पूजा करनी चाहिए और महाष्टमी को दर्शनार्थ यात्रा करनी चाहिए।

महामुण्डा वागीश्वरी दुर्गादेव्यै नमः (म० नं० जे० ६।३३ में, मो० जैतपुरा)

वागेश्वरी दुर्गा के दक्षिण दिशा में पितृ तीर्थ है, पितृकुण्ड है। वहाँ श्राद्ध करने वाले पुरुष के प्रपितामह आदि तुष्ट होते हैं।

पितृकुण्ड में स्नान तथा तर्पण श्राद्ध करना चाहिए। क्षिप्रप्रसादन विनायक के मन्दिर में पित्रीश्वर हैं।

पित्रीश्वराय नमः (म०नं०ए १८।४७ में, मो० पितरकुण्डा)

सर्वत्र लालित्य तथा सम्पूर्ण सम्पत्ति प्राप्ति के लिए प्रयत्न पूर्वक ललिता तीर्थ में स्नान करके ललिता गौरी की पूजा करने से कभी कोई विघ्न नहीं होता है। ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को नर या नारी ललिता गौरी की पूजा करके मनोवाञ्छित पद को प्राप्त करते हैं।

ललिता तीर्थ में स्नान और दर्शन

ललितागौरीदेव्यै नमः (म० नं० डी० १।६७ में मो० ललिताघाट)

पित्रीश्वर के पश्चिम वगल में मातृतीर्थ है। मातृ तीर्थ में स्नान करने वाले नर-नारी को भय नहीं होता है। और वहाँ स्नान तप करने से नर-नारी को अभीष्ट फल प्राप्त होता है। आश्विनकृष्ण मातृनवमी के दिन मातृ तीर्थ में स्नान कर मातृ देवी का दर्शन करें।

मातृदेव्यै नमः। (पितरकुण्डा के पश्चिम वगल मे है)

मनुष्य दुर्गाकुण्ड में स्नान करके समस्त दुःखहरण करने वाली दुर्गा की विधिवत् पूजा करे तो नौ जन्म के अघ (पाप) दूर हो जाते हैं। वेद व्यास जी पद्म पुराण में लिखते हैं कि शनिवार के दिन दुर्गा जी का दर्शन करने से पाप नष्ट होते हैं और भक्ति की प्राप्ति होती है।

दुर्गादेव्यैनमः। (म० नं० बी० २७।२ में, मो० दुर्गाकुण्ड)

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से आश्विन शुक्ल नवमी तक जो प्राणी पूजा करें तो निश्चित मनोरथ प्राप्त करते हैं।

चतुष्पट्टी देव्यै नमः (म०नं०डी० २२।१७० में, मो० चौसट्टीघाट)

नवदुर्गा भर चौसट्टी घाट पर स्नान और चतुष्पट्टी देवी दर्शन यात्रा करने से पाप एवं दुःख विघ्न दूर होते हैं भक्ति की प्राप्ति होती है।

आश्विन शुक्ल पूर्णमासी के दिन वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा।

कार्तिक मास

तीनों लोकों में प्रसिद्ध पंचनद तीर्थ में स्नान तर्पण करने से पुनः पंचभौतिक शरीर नहीं ग्रहण करना पड़ता है। अघ-समूल नष्ट करने वाली किरणा-धूतपापा, गंगा-यमुना-सरस्वती मिश्रित पंचनदी (पंचगंगा तीर्थ) में स्नान करने मात्र से ब्रह्माण्ड-मण्डप का भेदन कर ब्रह्मलोक में प्राणी चला जाता है।

माघ महीने में प्रयाग राज में सम्यक् स्नान करने से जो फल होता है निश्चित वही फल काशी पंचगंगा में स्नान करने से होता है। पंचगंगा में स्नान-पितृतर्पण, श्री विन्दुमाधव के दर्शन पूजन करने से पुनर्जन्म नहीं होता है। तर्पण में जितने तिल दिये जाते हैं उतने वर्ष पर्यन्त पितरों की तृप्ति होती है।

कार्तिक मास भर पञ्चगंगा स्नान और पंचगंगेश्वर मंगला गौरी आदि का दर्शन करना चाहिए।

(म० नं० २२।३३ में, मो० पंचगंगा)

विन्दुमाधव विष्णवे नमः।

पंचगंगेश्वराय नमः (तैलंग स्वामी जी के मठ में)।

गभस्तीश्वराय नमः (म० नं० के० ४।३४ में, मो० मंगला गौरी)

यमराज द्वारा स्थापित यमेश्वर और यमादित्य को नमस्कार करता हुआ यम तीर्थ में स्नान करने वाला प्राणी यमराज के लोक का दर्शन नहीं करता।

यमेश्वराय नमः (सी० के० ५।९८ में, मो० संकठा घाट)

भारभूतेश्वर महादेव का अर्चन तथा नमस्कार करे उसके बाद चित्रगुप्तेश्वर महादेव का दर्शन पूजन करें।

भारभूतेश्वर लिंग के उत्तर पाप नष्ट करने वाले चित्रगुप्तेश्वर शिवलिंग का दर्शन-पूजन करना चाहिए।

चित्रगुप्तेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ५७।७७ में, मो० रेशम कटरा मच्छर हट्टा)

जो प्राणी कार्तिक शुक्ल अष्टमी तिथि में धर्मेश्वर जी की यात्रा करेंगे और दर्शन उपवास पूर्वक महोत्सव मनाते हुए रात्रि में जागरण करेंगे उन प्राणियों का पुनर्जन्म नहीं होगा। पत्र, पुष्प, जल, दूर्वा और विधिवत् मिष्ठानों और मन्दार पुष्पों से पूजा करेंगे उनका परम कल्याण होगा। कार्तिक शुक्ल अष्टमी के दिन पंचगंगा स्नान करके विन्दुमाधव विष्णु की जो महाफलाकांक्षी प्रयत्नपूर्वक यात्रा करता है वह एकादशी के दिन शंखोद्धार तीर्थ में स्नान करने का फल प्राप्त करता है। तीर्थराज प्रयाग में स्नान करने से जो फल मिलता है उससे सहस्र गुना अधिक धर्मकूप में स्नान मात्र से प्राप्त होता है। जैसे गया में पिण्डदान करने से पितामह आदि तृप्त होते हैं। धर्मतीर्थ में पिण्डदान करने से उतना ही फल प्राप्त होता है। पितरों को हर्ष देने वाले धर्मकूप में स्नान करके यदि तर्पण करते हैं तो उससे अधिक गया में कुछ भी अधिक नहीं है। जो यहाँ ब्राह्मणों और तपस्वियों को भोजन देता है उसे प्रति चावल के हिसाब से एक-एक वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

कार्तिक शुक्ल अष्टमी के दिन पंचगंगा स्नान, विन्दुमाधव दर्शन और धर्मकूप स्नान, धर्मेश्वर दर्शन।

धर्मेश्वराय नमः (म० नं० डी० २।२९ में, मो० धर्मकूप-मीरघाट)

सर्वत्र चक्र पुष्करिणी तीर्थ में स्नान करके देवता, पितर, ब्राह्मण और याचकों को तृप्त करके आदित्य, द्रौपदी, विष्णु दण्डपाणि, महेश्वर को नमस्कार करके तब ढुण्ढिराज गणेश का दर्शन करना चाहिए। ज्ञानवापी में आचमन करके नन्दीकेश्वर की अर्चना करनी चाहिए फिर तारकेश्वर का पूजन करके महाकाल का दर्शन करें। और पुनः दण्डपाडि का दर्शन करें। यह शिवलिंग दर्शन की पंचतीर्थी यात्रा कही जाती है।

नन्दिकेश्वराय नमः (म०नं० सी०के० ३५।१९ में, मो० ज्ञानवापी)

कार्तिक की चतुर्दशी के दिन उत्तर वाहिनी गंगा में स्नान करके जो विश्वनाथ का दर्शन करता है उसका पुनः जन्म नहीं होता। कार्तिकी पूर्णिमा के दिन बहुत पुण्य देने वाली यात्रा है।

मार्गशीर्ष मास

मार्गशीर्षमास कृष्ण पक्ष अष्टमी के दिन धर्मकूप स्नान और धर्मेश्वर दर्शन यात्रा भैरवाष्टमी के दिन भैरव दर्शन यात्रा।

जो मेरी मुक्तिपुरी काशी है वह सबसे श्रेष्ठ है। भैरव महामन्त्री हैं और यहाँ सदा कालराज जी का राज्य है।

मार्गशीर्ष कृष्ण भैरवाष्टमी के दिन भैरव जयन्ती होती है उस दिन प्रयत्न पूर्वक काल भैरव और सभी मन्दिरों के दर्शन-पूजन आठ प्रदक्षिणा तथा रात्रि जागरण वार्षिकोत्सव श्रृङ्गार करने से एक वर्ष तक विघ्न, कष्ट और संकट नहीं आते एवं सम्पत्ति, पुत्र, भक्ति और ज्ञान की प्राप्ति होती है। काशी में समस्त सम्पत्ति के लिए इनकी पूजा करनी चाहिए।

अगहन की शुक्ल अष्टमी के दिन काशी भैरव के सान्निध्य में उपवास और जागरण करने से महापाप छूट जाते हैं। वहाँ सामग्री लेकर विस्तार से कालभैरव की पूजा करें तो उसके वार्षिक विघ्न छूटते हैं। विश्वेश्वर के जो भक्त हैं और भैरव के नहीं वे

काशी में विघ्न प्राप्त करते हैं। जो कालोदक तीर्थ में स्नान करके तर्पण करता है और कालराज का दर्शन करता है उसके पितर नरक से उद्धार पाते हैं। वह जो-जो कामना करता है, नरियल, वलि पूजा और उपहार देने से सब कुछ मिलता है।

षडंग योग यात्रा

विश्वनाथ, विशालाक्षी, गंगा, कालभैरव, ढुण्ढिराज, दण्डपाणि ये काशी दर्शन के षडंग हैं। ओंकार, कृत्तिवासेश्वर, केदारेश्वर, त्रिविष्टप, वीरेश्वर, विश्वेश्वर ये दूसरे षडंग हैं।

इन दोनों षडंगों का योग नित्य काशी निवास करते हैं और योग निद्रा प्राप्त करके अमृत पान करते हैं।

कालभैरव के सान्निध्य में कालमाधव नाम से मैं निवास करता हूँ। मेरे भक्त को कलिकाल स्पर्श नहीं कर सकता। मार्गशीर्ष की शुक्ल एकादशी में व्रत रहने वाले और जागरण करने वाले मनुष्य यमराज को नहीं देखते।

मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी को कपर्दीश्वर के पास पिशाच मोचन में स्नान करने से अन्यत्र भी मरने पर पिशाच नहीं होता। इस महापुण्य तीर्थ में जो मनुष्य स्नान करते हैं और सन्ध्या तर्पण पूर्वक पिण्डदान करते हैं वे अपने कर्म से दैवात् पिशाच बने हुए अपने पितृ-पितामहों का उद्धार करते हैं और परमगति दिलाते हैं। पिशाच मोचन तीर्थ में शिवयोगी (शिवजी के भक्तों) को भोजन देने से एक-एक योगी के स्थान पर कोटि-कोटि योगियों के भोजन का फल मिलता है। इस वार्षिक यात्रा को जो मनुष्य करते हैं, तीर्थ में दान लेने के पाप से छुटकारा पाते हैं। अन्न, वस्त्र, द्रव्य एवं मकान जमीन और जो भी दूसरे से पदार्थ लिया जाता है उससे उत्पन्न पाप नष्ट होते हैं।

कपर्दीश्वराय नमः (म०नं० ए१३।३८ में, मो० पिशाच मोचन)।

पंचास्यविनायकाय नमः (म०नं० ए १३।३९ में)।

पिशाचगणाय नमः (म०नं० ए १३।३९ में)।

पिशाचमूर्तिभ्यो नमः।

गिशाच मूर्ति से सटा हुआ उत्तर बगल के शिवालय में पिशाच-मोचनेश्वर की मूर्ति है।

पिशाचमोचनेश्वराय नमः (म० नं० ए १३।३९ में, मो० पिशाच मोचन)

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष चतुर्दशी को (लोटा-भण्टा दर्शन मेला) पिशाचमोचन तीर्थ में स्नान करके दर्शन करें।

गोपी गोविन्द तीर्थ में गोपी गोविन्द नाम के भगवान् की पूजा करने से माया का स्पर्श भी नहीं प्राप्त करता।

गोपी गोविन्दाय नमः (म०नं० के० ४।२४ में, मो० लालघाट)

गोप्रेक्षेश्वराय नमः (म० नं० के० ४।२४ में, मो० लालघाट)

पौषमास

उत्तरार्क सूर्य में पौषमास के रविवार के दिन यात्रा करने से उन्हें काशीवास का फल प्राप्त होता है। सड़क के दक्षिण बगल में पहलवानों के अखाड़ा में उत्तरार्क सूर्य का और हनुमान जी का चमत्कार यह है— पहले शिवाल मंदिर तोड़कर (विजातियों ने) एक दिन में ही पाट दिया था। हनुमान जोगीवीर और सूर्य के मन्दिर टूटते ही गाँव में हैजा का रोग फैल गया; घर-घर में हाहाकार मच गया, जो शेष बचे थे वह सब भाग खड़े हुए। दो वृद्ध मुसलमानों ने जाकर हनुमान जी से प्रार्थना की और निवेदन किया कि—हे प्रभो! हम जोगीवीर—सूर्य और हनुमान जी का मन्दिर पुनः बनायेंगे—कहकर क्षमा माँगी। तत्पश्चात् रोग तत्काल शान्त हुआ और सभी सुखी हुये। बड़े हनुमान जी के नाम से बकरिया कुण्ड के पूर्व तट में १ बीघा जमीन था। यह प्रसंग शिवप्रसाद पाण्डेय जी ने अपने काशी यात्रा नाम की पुस्तक में लिखी है। १९४९ में पुनः हनुमान मन्दिर को कूड़ा, मिट्टी और पत्थर आदि से ढक दिया गया। पुनः हैजा का रोग आया। फिर सबने मिलकर प्रार्थना की और क्षमा माँगी। इसके उपरान्त शीघ्र ही रोग शान्त हुआ। यह सूर्य भगवान और हनुमान जी का चमत्कार है।

उत्तरार्क सूयार्य नमः (म० नं०जे० १७।१३२ में, मो० बकरिया कुण्ड पूर्वतट में बड़े हनुमान की गली में, दूसरे जोगी वीर के मन्दिर में।)

नर नारायण तीर्थ में नर नारायण भगवान हैं। उनकी पूजा करने वाले भक्त नर नारायण हो जाते हैं। नर नारायण तीर्थ शुभ देने वाला है। इसमें स्नान करने वाले को गर्भवास नहीं पड़ता।

नर-नारायणेश्वराय नमः (म.नं. ए १।७३ मो. बद्रीनारायणघाट)

बद्रीनारायण विष्णवे नमः (म. नं. ए. १।७२ में)

माघ मास का फल

माघ की रथ सप्तमी और रविवार के दिन आदिकेशव के निकट पादोदक तीर्थ में मौन होकर उषा काल में स्थान करने वाला व्यक्ति केशवादित्य के पूजन से सात जन्मों के पापों से तत्काल छुटकारा प्राप्त करता है।

केशवादित्यसूर्याय नमः (म० नं० ए० ३७।५१ में, मो० आदिकेशव चौमुहानी)

आदिकेशव विष्णवे नमः (म० नं० ए० ३७।५१ में)।

आदिकेशवेश्वराय नमः (म०नं०ए० ३७।५१ में, मो० आदिकेशव)

आदिकेशव पादोदक तीर्थ घाट पर स्नान करके दशाश्वमेघ से प्रयाग तीर्थ में माधव का दर्शन करने से पाप से छुटकारा मिलता है। काशी में माघ मास में जो नियमपूर्वक स्नान करता है वह दश अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करता है। मनोकामना पूर्ण करने वाले प्रयागेश्वर की प्रयाग तीर्थ में स्नान करके जो पूजा करते हैं वे धन्य हैं। वे परम आनन्द का भोग प्राप्त करते हैं और मुक्त हो जाते हैं। माघ में प्रयागेश्वर के समीप प्रातः स्नान करके जो पूजन करता है वह सर्व तीर्थ स्नान का फल प्राप्त करता है। वहाँ बाल बनवाकर पिण्डदान करना चाहिए और दान देना चाहिए। इसका महाफल है। माघ में प्रयाग गमन का जो फल लिखा है उससे दस गुना अधिक फल काशी के प्रयागराज तीर्थ में होता

है। गंगा, यमुना के संगम पर स्नान करने वालों को जो पुण्य मिलता है वह काशी में प्रयागराजघाट पर स्नान करने से उसके दस गुना फल मिलता है। सूर्य ग्रहण के दिन दान का जो फल होता है कुरुक्षेत्र में स्नान करने से उससे दस गुना अधिक फल काशी में मिलता है। काशी में अथवा प्रयाग में मकर के सूर्य में अरुणोदय वेला में उन्हें निःक्षेयस् कहाँ मिल सकता है।

माघ मास पर प्रयागराज घाट में स्नान करके दर्शन करें।

प्रयागेश्वराय नमः (म० नं० १७।१०० में, मो० प्रयागराजघाट)

प्रयागमाधवाय नमः (वेणीमाधव के नाम से प्रसिद्ध है)

वन्दिदेव्यै नमः (म० नं० डी० १७।१०० में प्रयागराजघाट)

दशाश्वमेधेश्वराय नमः

प्रति चतुर्थी को विघ्नेश गणेश यात्रा करनी चाहिए और उनकी प्रसन्नता के लिए ब्राह्मणों को लड्डू देना चाहिए। इससे सब विघ्न दूर होता है।

महाराज बड़े गणेशाय नमः (म० नं० के० ५८।१०० में, मो० लोहटिया, बड़ा गणेश)

माघकृष्ण चतुर्दशी के दिन अविमुक्तेश्वर के पास जागरण करने से योगियों की गति मिलती है। ऐ धीरों! किये हुए पापों से क्यों डरते हो। अविमुक्तेश्वर दर्शन करने वाले को देखकर दूर से ही यमराज हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं। भगवान् विश्वनाथ से अधिष्ठित अविमुक्त क्षेत्र में हैं। माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन अविमुक्त तीर्थ में स्नान और अविमुक्तेश्वर दर्शन करना चाहिए।

अविमुक्तेश्वराय नमः (म०नं०सी०के०३५।३१ में, मो०ढुण्ढिराजगली)

माघकृष्ण चतुर्दशी को उपवास और जागरण करके कृत्तिवशेष के पूजन करने से अमर गति प्राप्त होती है।

कृत्तिवासेश्वराय नमः (म० नं० के० ४६।३३ में, मो० हरतीरथ, मृत्युंजय चौराहा से उत्तर बगल में।)

कहा जाता है कि वह कृत्तिवास स्वर जगत की रक्षा करती है। महाकालेश्वर अमृत तीर्थ कुण्ड में स्नान कर महाकालेश्वर का दर्शन करें।

महाकालेश्वराय नमः (म० नं० के० ५२।३९ में, मो० मृत्युंजय)

फाल्गुन मास

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी महाशिवरात्रि के दिन समस्त शिव मन्दिर दर्शन-यात्रा।

विश्वनाथ जी के निकट प्रीतिकेश्वर हैं। मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ। वहाँ एक दिन के उपवास से १०० वर्ष उपवास का फल मिलता है। एक जागरण और उपवास से वह व्यक्ति भगवान का गण हो जाता है।

प्रीतिकेश्वराय नमः (म. नं. डी. १०।५ में, मो० साक्षीविनायक)

गया में फल्गुनदी के किनारे पितामहादि के तर्पण से जो फल मिलता है वह यहाँ श्राद्ध करने से मिलता है, जब गुरुवार पुष्य नक्षत्र फाल्गुन शुक्ल अष्टमी के दिन ज्ञानवापी में व्यतिपात योग हो तब श्राद्ध का कोटिगुणा फल मिलता है उससे कोटि गुणा अधिक फल यहाँ तिलोदक देने से मिलता है।

ढुण्ढिराज विनायक गणेश जी की स्तुति

जय विघ्न कृतामाद्य ! भक्त निर्विघ्नकारक ! ।
अविघ्न ! विघ्नशमन ! महाविघ्नैकविघ्न कृत् ॥
जय सर्वगणाधीश ! जय सर्वगणाग्रणीः ! ।
गणप्रणतपादाब्जगणनातीतसद्गुण ! ॥
जय सर्वग ! सर्वेश सर्वबुद्ध्येकशेवधे ।
सर्वमायाप्रपञ्चज्ञ सर्वकर्माग्रपूजित ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्य ! जय त्वं सर्वमङ्गल ।
अमङ्गलोपशमन ! महामङ्गलहेतुक ! ॥
जयसृष्टिकृतां वन्द्य ! जय स्थितिकृतानत ! ।
जय संहृतिकृत्स्तुत्य ! जय सत्कर्मसिद्धिद ! ॥
सिद्धवन्द्यपदाम्भोज ! जय सिद्धिविधायक ! ।
सर्वसिद्ध्येकनिलयमहासिद्ध्यृद्धिसूचक ! ॥
अशेषगुण निर्माणगुणातीतगुणाग्रणीः ! ।
परिपूर्णचरित्रार्थ ! जय त्वं गुणवर्णित ॥
जय सर्वबलाधीश ! बलारातिबलप्रद ! ।
बलाकोज्ज्वलदन्ताग्रबालाबालपराक्रम ! ॥
अनन्तमहिमाधार ! धराधर विदारण ! ।
दन्ताग्रप्रोतदिङ्नाग ! जयनागविभूषण ! ॥

ये त्वां नमन्ति करुणामयदिव्यमूर्ते ! सर्वेनसामपि भुवोभुवि मुक्तिभाजः ।
तेषां सदैव हरसीह महोपसर्गान्स्वर्गापवर्गमपि संप्रददासितेभ्यः ॥
ये विघ्नराज भवता करुणाकटाक्षैः सम्प्रेक्षिताः क्षितितले क्षणमात्रमत्र ।
तेषां क्षयान्त सकलान्यपिकिल्बिषाणि लक्ष्मीः कटाक्षयतितान्पुरुषोत्तमान्हि ।
ये त्वां स्तुवन्ति नतविघ्नविशात दक्षदाक्षायणीहृदयपङ्कजतिग्मरश्मे ! ।
भूयन्त एव त इह प्रथिता न चित्रं चित्रं तदत्रगणपा यदहोत एव ॥

ये शीलयन्तिसततं भवतोऽङ्घ्रियुग्मं ते पुत्र पौत्र धन धान्यसमृद्धिभाजः।
संशीलिताङ्घ्रिकमलाबहुलाबहुभृत्यवर्गैर्भूपालभोग्यकमलां विमलां लभन्ते।
त्वं कारणं परमकारणकारणानां वेद्योऽसिवेदविदुषां सततं त्वमेकः।
त्वं मार्गणीयमसिकिञ्चनमूलवाचां वाचामगोचर चराचरदिव्यमूर्ते॥
वेदाविदन्ति न यथार्थतया भवन्तं ब्रह्मादयोऽपि न चराचरसूत्रधार!।
त्वं हंसि पासि विदधासि समस्तमेकः कस्तेस्तुतिव्यतिकरोमनसाप्यगम्य!।
त्वद्दुष्टदृष्टिविशिखैर्निहतान्निहन्मि दैत्यान्पुरान्धकजलन्धरमुख्यकांश्च।
कास्यास्ति शक्तिरिहयस्त्वदृतेपितुच्छ वाञ्छेद्विधातुमिह सिद्धिद् कार्यजातम्।
अन्वेषणे ढुढिरयंप्रथितोऽस्तिधातुः सर्वार्थढुण्डितया तव ढुण्ढिनाम।
काशीप्रवेशमपिकोलभतेऽत्रदेही तोषं विनातव विनायक ढुण्ढिराज!॥
ढुण्ढे प्रणम्य पुरतस्तव पादपद्मं यो मां नमस्यति पुमानिह काशिवासी।
तत्कर्णमूलमधिगम्य पुरादिशामि तत्किञ्चिदत्र न पुनर्भवताऽस्ति येन॥
स्नात्वा नरः प्रथमनोमणिकर्णिकायामुद्धूलिताङ्घ्रियुगलस्तुसचैलमाशु।
देवर्षिमानवपितॄनपि तर्पयित्वा ज्ञानोदतीर्थमभिलभ्य भजेत्ततस्त्वाम्॥
सामोदमोदकभरैर्वरधूपदीपैर्माल्यैः सुगन्धबहुलैरनुलेपनैश्च।
सम्प्रीण्य काशिनगरीफलदानदक्ष प्रोक्तत्वाऽत्रमांकइह सिध्यतितैवढुण्ढे!॥
तीर्थान्तराणि च ततः क्रमवर्जितोऽपिसंसाधयन्निह भवत्करुणाकटाक्षैः।
दूरीकृतस्वहितघात्युपसर्गवर्गो ढुण्ढे! लभेदविकलं फलमत्र काश्याम्॥
यः प्रत्यहं नमति ढुण्ढिविनायकं त्वां काश्यां प्रगेप्रतिहताखिलविघ्नसङ्घः।
नो तस्य जातुजगतीतलवर्तिवस्तु दुष्प्रापमत्र चापरत्र च किञ्चनापि॥
योनाम ते जपति ढुण्ढिविनायकस्यतं वैजपन्त्यनुदिनं हृदि सिद्धयोऽष्टौ॥
भोगान्विभुज्य विविधान्विबुधोपभोग्यान्निर्वाणया कमलया व्रियते सचान्ते।
दूरेस्थितोऽप्यहरहस्तवपादपीठं यः संस्मरेत्सकल सिद्धिद! ढुण्ढिराज॥
काशीस्थितेर विकलं सफलं लभेत नैवान्यथा न वितथा मम वाक्कदाचित्॥

जानेविघ्नान संख्यातान्विनिहन्तुमनेकधा।
क्षेत्रस्यास्य महाभागनानारूपैरिहस्थितः॥ (का० खं० ५७)

(ढुण्ढिविनायक स्तुति समाप्त)

दण्डपाणि जी की स्तुति

रत्नभद्राङ्गजोद्भूत ! पूर्णभद्रनुतोत्तम ! ।
निर्विघ्नं कुरु मे यक्ष ! काशीवासं शिवाप्तये ॥
धन्योयक्षः पूर्णभद्रो धन्याकाञ्चन कुण्डला ।
ययोर्जठरपीठेऽभूर्दण्डपाणे ! महामते ! ॥
जययक्षपते ! धीर जय पिङ्गल लोचन ! ।
जय पिङ्ग ! जटाभार ! जय दण्ड ! महायुध ! ॥
अविमुक्त महाक्षेत्र सूत्र धारोग्र तापस ! ।
दण्डनायक ! भीमास्य ! जय विश्वेश्वरप्रिय ! ॥
सौम्यानां सौम्यवदन भीषणानां भयानक ! ।
क्षेत्रपापधियां कालमहाकालमहाप्रिय ! ॥
जय प्राणद ! यक्षेन्द्र ! काशीवासान्नमोक्षद ! ।
महारत्नस्फुरद्रश्मिचयर्चितविग्रह ! ॥
महासम्भ्रान्तिजनक ! महोद्भ्रान्ति प्रदायक ! ।
अभक्तानां च भक्तानां सभ्रान्त्युद्भ्रान्तिनाशक ! ॥
प्रान्तनेपथ्य चतुर ! जय ज्ञाननिधिप्रद ! ।
जय गौरी पदाब्जाले ! मोक्षेक्षण विचक्षण ॥
यक्ष राजाष्टकं पुण्यमिदं नित्यं त्रिकालतः ।
जपामिमैत्रा वरुणे ! वाराणस्याप्तिकारणम् ॥
दण्पाण्यष्ट कंश्रीमान् जपन्विघ्नैर्न जातुचित् ।
श्रद्धया परिभूयेत काशीवास फलं लभेत् ॥
प्रादुर्भावं दण्डपाणेः शृण्वन् स्तोत्रमिदं गृणन् ।
विपत्तिमन्यतः प्राप्य काशीं जन्मान्तरे लभेत् ॥
श्रुत्वाध्यायमिमं पुण्यं दण्डपाणिसमुद्भवम् ।
पठित्वा पाठयित्वाऽपिनविघ्नैर भिभूयते ॥

(का० खं० अ० १२)

(दण्डपाणि स्तुति समाप्त)

विन्दुमाधव विष्णु जी की स्तुति

ॐ नमः पुण्डरीकाक्ष वाह्यान्त शौचदायिने।
सहस्रशीर्षपुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥२५॥
नमामितेपदद्वन्दं सर्वद्वन्द्वनिवारकम्।
निर्द्वन्द्वयाधियाविष्णोजिष्ण्वादिसुरवन्दित ॥२६॥
यंस्तोतुंनाधिगच्छन्तिवाचो वाचस्पतेरपि।
तमीष्टेकइहस्तोतुं शक्तिस्त्वलीयसी ॥२७॥
अपियो भगवानीशो मनः प्राचामगोचरः।
समादृशैरल्पधीभिः कथंस्तुत्यो वचः परः॥२८॥
यं वाचोनविशन्तीशंमनतीहमनोनयम्।
मनोगिरामतीतं तं कः स्तोतुंशक्तिमान्भवेत् ॥२९॥
यस्य निःश्वसितं वेदाः सषडङ्गपदक्रमाः।
तस्य देवस्य महिमामहान् कैरवगम्यते ॥३०॥
अतन्द्रितमनोबुद्धोन्द्रियायं सनकादयः।
ध्यायन्तोपिहृदाकाशेनविन्दन्तियथार्थतः ॥३१॥
नारदाद्यैमुनिवरैरावालब्रह्मचारिभिः ।
गीयमानचरित्रोऽपि नसम्यग्योऽधिगम्यते ॥३२॥
तं सूक्ष्मरूपमजमव्ययमेकमाद्यं
ब्रह्माद्यगोचरमजेय मनन्तशक्तिम्।
नित्यं निरामयममूर्तमचिन्त्यमूर्ति
कस्त्वां चराचर चराचरभिन्न! वेत्ति ॥३३॥
एकैकमेव तव नाम हरेन्मुरारे!
जन्मार्जिताघमघिनां च महापदाढ्यम्।
दद्यात्फलं च महितं महतोमखस्य
जप्तं मुकुन्द मधुसूदनमाधवेति ॥३४॥

नारायणेति नरकार्णवतारणेति
दामोदरेति मधुहेति चतुर्भुजेति ।
विश्वम्भरेति विरजेति जनार्दनेति
क्वास्तीह जन्मजपतांक्व कृतान्तभीतिः ॥

ये त्वां त्रिविक्रम ! सदाहृदि शीलयन्ति
कादम्बिनीरुचिररोचिषमम्बुजाक्षम् ।
सौदामनीविलासितां शुकवी तमूर्ते ! तेऽपि
स्पृशन्ति तव कान्तिमचिन्त्यरूपाम् ॥

श्रीवत्सलाञ्छन ! हरेऽच्युतकैटभारे !गोविन्द !
तार्क्ष्यरथ ! केशव ! चक्रपाणे ! ।
लक्ष्मीपते ! दनुजसूदन ! शार्ङ्गपाणे !
त्वद्भक्तिभाजि नभयं क्वचिनस्ति पुंसि ।।

यैरर्चितोऽसि भगवंस्तुलसी प्रसूनै-
र्दूरीकृतैणमदसौरभ दिव्यगन्धैः ।
तानर्चयन्ति दिवि देवगणाः समस्ता
मन्दारदामभिरलं विमलस्वभावान् ।

यद्वाचिनाम तवकामदमब्जनेत्र
यच्छ्रोत्रयोस्तवकथा मधुराक्षराणि !
यच्चित्तभित्तिलिखितं भवतोऽस्ति रूपं
नीरूपभूप पदवी नहितैर्दुरापा ॥

ये त्वां भजन्ति सततं भुवि शेषशायि-
स्ताञ्छ्रीपतेपितृ पतीन्द्रकुबेर मुख्याः ।
वृन्दारका दिवि सदैव सभाजयन्ति
स्वर्गापवर्ग सुखसन्ततिदानदक्ष ॥

ये त्वां स्तुतवन्ति सततं दिवि तांस्तुवन्ति
सिद्धाप्सरो मरगणालसदब्जपाणे ! ।

विश्राणयत्यखिलसिद्धिद को विना त्वां
निर्वाणचारु कमलां कमलायताक्ष ! ॥
त्वं हंसि पासि सृजसि क्षणतः स्वलीला
लीलावपुर्धर विरिञ्चिनताङ्घ्रियुग्म ! ।
विश्वं त्वमेव परविश्वपतिस्त्वमेव
विश्वस्यबीजमसि तत्प्रणतोऽस्मिनित्यम् ॥
स्तोतात्वमेव दनुजेन्द्ररिपोस्तुतिस्त्वं
स्तुत्यस्त्वमेव सकलं हि भवानिहैकः ।
त्वत्तो न किञ्चिदपि भिन्नमवैमि विष्णो
तृष्णां सदा कुणुहि मे भवजाम्भवारे ! ॥
इति स्तुत्वा हृषीकेशमग्निविन्दुर्महातपाः ।
तस्थौ तूष्णीं ततो विष्णुरुवाच वरदो मुनिम् ॥
(विन्दुमाधव स्तुति समाप्त)

श्री शिवपञ्चाक्षर स्तोत्रम्

गत्वा गत्वा निवर्तन्ते,
चन्द्रसूर्यादयो ग्रहाः ।
यद्गता न निवर्तन्ते,
पञ्चाक्षरमन्त्रचिन्तकाः ॥
नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय,
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥१॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दन चर्चिताय
नन्दीश्वर प्रामथनाथ महेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥३॥

वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानर लोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः
पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति
शिवेन सहमोदते ॥६॥

इति श्री मच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षर स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

॥ कालभैरवाष्टकम् ॥

काल भैरव जी की स्तुति

देवराजसेव्यमानपावनांघ्रिपङ्कजम्,
व्यालयज्ञ-सूत्रमिन्दु-शेखरं कृपाकरम् ।
नारदादि-योगिवृन्द वन्दितं दिगम्बरम्,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
भानुकोटि भास्वरं भवाऽब्धितारकं परम्,
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।

करालकालमम्बुजाक्ष-भक्षशूलमक्षरम्,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
शूलटङ्क कालदण्ड पाणिमादिकारणम्,
श्यामकायमादि देवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्र ताण्डव प्रियम्,
काशिकापुराधिनाथ काल भैरवं भजे ॥
भुक्ति-मुक्तिदायकं प्रशस्तचारु-विग्रहम्,
भक्तवत्सल स्थितं समस्त लोक विग्रहम् ।
विनिक्वणन् मनोज्ञहेम किङ्किणीलसत्कटिम्,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
धर्मसेतुपालकं त्वधर्म मार्ग नाशकं,
कर्मपाश-मोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्ण वर्ण शेषपाश शोभिताङ्ग मण्डलं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
रत्नपादुका प्रभाभिराम - पादयुग्मकम्,
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् :
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
अट्टहास भिन्नपद्मजाण्डकाशसन्ततिम्,
दृष्टिपात नष्टपाप जालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
भूतसङ्घ नायकं विशालकीर्तिदायकं,
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं,
ज्ञानमुक्ति साधनं विचित्रपुण्यवर्द्धकम् ।
शोक मोह-दैन्य लोभ-पाप-तापनाशनं,
ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिध्रुवम् ॥

॥ श्री विश्वनाथाष्टकम् ॥

गङ्गातरङ्गरमणीयजटाकलापं, गौरीनिरन्तरविभूषितवामभागम् ।
नारायणप्रियमनङ्गमदापहारं, वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥१॥

वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं,
वागीश-विष्णु सुरसेवित-पादपीठम् ।
वामेनविग्रहवरेणकलत्रवन्तं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥२॥

भूताधिपं भुजग-भूषण-भूषिताङ्गं
व्याघ्राजिनाम्बधरं जटिलं त्रिनेत्रम् ।
पाशाङ्कुशा-भयवरप्रद-शूलपाणिं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥३॥

शीतांशु-शोभित-किरीट-विराजमानं
भालेक्षणानल-विशोषित-पञ्चबाणम् ।
नागाधिपा-रचित-भासुरकर्णपूरं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥४॥

पञ्चाननं दुरितमत्त-मतङ्गजानां
नागान्तकं दनुजपुङ्गव-पन्नगानाम् ।
दावानलं मरणशोक-जराटवीनां
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥५॥

तेजोमयं सगुण-निर्गुणमद्वितीय—
मानन्द कन्दमपराजितमप्रमेयम् ।
नागात्मकं सकल-निष्कलमात्मरूपं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥६॥

रागादि दोष रहितं स्वजनानुरागं
वैराग्यशान्ति निलयं गिरिजासहायम् ।
माधुर्य-धैर्य-सुभगं गरलाभिरामं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥७॥

आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां
पापेरतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ ।
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥८॥

वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य
व्याख्यातमष्टकमिदं पठतेमनुष्यः ।
विद्यां श्रियं विपुल-सौख्यमनन्तकीर्ति
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥९॥

विश्वनाथाष्टकमिदं यः पठेच्छिवसंन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥१०॥

अन्नपूर्णा स्तोत्रम्
(अन्नपूर्णा जी की स्तुति)

ध्यानम—

सिन्दूराऽरूण-विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य-मौलिस्फुरत्
तारानायक-शेखरां स्मितमुखीमापीन-वक्षोरूहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्णं-रत्नचषकं रक्तोत्पल विभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थ-रक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम् ॥

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलं-घोर पावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।
प्रालेयाचल-वंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥

नानारत्न-विचित्र-भूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोज कुम्भान्तरी।
काश्मीराऽगुरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता ऽन्नपूर्णेश्वरी।। २ ।।

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थं निष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्य रक्षाकरी।
सर्वैश्वर्यं-समस्त-वाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।। ३ ।।

कैलासाचल-कन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी
कौमारी निगमार्थ गोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।। ४ ।।

दृश्याऽदृश्य-प्रभूतवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्र भेदनकरी विज्ञान दीपाङ्कुरी।
श्री विश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।। ५ ।।

उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी
वेणीनील-समान-कुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी।
सर्वानन्दकरी दृशां शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।। ६ ।।

आदिक्षान्त-समस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुराशर्वरी
कामाकांक्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।। ७ ।।

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामस्वादु-पयोधर-प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ८ ॥
चन्द्रार्कानल कोटिकोटि सदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्नि-समान-कुन्तलहरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
माला-पुस्तक-पाश-साङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ९ ॥
क्षत्रत्राणकरी महाभयकरी माता कृपा सागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥१०॥
अन्नपूर्णे सदा पूर्णे शङ्कर प्राणवल्लभे ! ।
ज्ञान-वैराग्य-सिद्धर्थं भिक्षां देहि च पार्वती ॥११॥
माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिव भक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम ॥१२॥
(इति श्री मच्छङ्कराचार्य विरचितम् अन्नपूर्णा स्तोत्रं सम्पूर्णम्)

महिम्नस्तोत्र

(महादेव जी की स्तुति)

श्री पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥१॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो
रतद्व्यावृत्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥
मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवतस्
तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
ममत्वेतां वाणीं गुणकथन पुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥४॥
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षा प्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विन्हतुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥०॥
किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवन जनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥
त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिददः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥
महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहिताम्
न हि स्वात्मारामं विषय मृग तृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं ।
परोध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्त विषये,
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मितइव ।
स्तुवन् जिह्रेमित्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः,
परिच्छेतुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्ति श्रद्धा भर गुरु गृणद्भ्यां गिरिश यत्,
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥१०॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं,
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः,
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं,
बलात् कैलाशेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि,
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१२॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरदपरमोच्चैरपि सतीम्,
अधश्चक्रेवाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरित्वच्चरणयोर्,
न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकित देवासुरकृपा,
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुतेन श्रियमहो,
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥१४॥

असिद्धार्थानैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे,
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।

स पश्यन्नीशत्वामितरसुरसाधारणमभूत्,
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥

महीपादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं,
पदं विष्णोर्भ्राम्यद् भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यंयात्यनिभृत जटाताडिततटा,
जगद्रक्षायैत्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद् गमरुचिः,
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि,
त्यनेनैवोन्नेयंधृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रोधनुरथो,
रथाङ्गे चन्द्रार्कौरथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडवरविधि,
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥१८॥

हरिस्ते साहस्रं कमलवलिमाधाय पदयो,
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौचक्रवपुषा,
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगेक्रतुमतां,
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं,
श्रुतौ श्रद्धां वद्ध्वा कृतपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृताम्,
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतु भ्रंशस्त्वतः क्रतुफलविधानव्यसनिनो,
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचारायहिमखाः ॥२१॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं,
गतं रोहिद्‌भूतां रिरमयिषुमृश्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुम्,
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्,
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत ! देहार्धघटना,
दवैतित्वामद्धा वत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं,
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥२४॥

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं हृद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्वं किमपि यमिनस्तत्किलभवान् ॥२५॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमुधरणिरात्मा त्वमति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्वं वयमिह तु यत्वं न भवसि ॥२६॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तिस्त्रिभुवनमथोत्रीनपिसुरा
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधात्त विकृतिः ।
तुरीयं ते धाम ध्वनि भिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥२७॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देवा श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥२८॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर ! महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन ! यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति सर्वाय च नमः ॥२९॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदम्
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद ! चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥३१॥

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥३२॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथित-गुण-महिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥३३॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥३४॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३५॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३६॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलुनिजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३७॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैक हेतुम्
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३८॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वर वर्णनम् ॥३९॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥४०॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥४१॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ! ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥४२॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥४३॥

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव ! प्रसीद परमेश्वर ! ॥४४॥

काशी पञ्चकम्

मनोवृत्तिः परमोपशान्ति सा तीर्थवर्या मणिकर्णिका च ।
ज्ञानप्रवाहा विमलादिगङ्गा सा काशीकाऽहं निजबोधरूपा ॥१॥

यस्यामिदं कल्पितमिन्द्रजालं-
चराचरं भाति मनोविलासम् ।
सच्चित्सुखैका परमात्मरूपा
सा काशिकाऽहं निजबोधरूपा ॥२॥

कोशेषु पञ्चस्वधिराजमाना-
बुद्धिर्भवानी प्रतिदेहगेहम् ।
साक्षी शिवः सर्वगतोऽन्तरात्मा
सा काशिकाऽहं निजबोधरूपा ॥३॥

काश्यां हि काशते काशी
काशी सर्वप्रकाशिका ।
सा काशी विदिता येन
तेन प्राप्ता हि काशिका ॥४॥

काशी क्षेत्रं शरीरं त्रिभुवनजननी व्यापिनी ज्ञानगङ्गा
भक्तिः श्रद्धा गयेयं निजगुरुचरणध्यानयोगः प्रयागः ।
विश्वेशोऽयं तुरीयः सकलजनमनः साक्षिभूतोऽन्तरात्मा
देहे सर्वं मदीये यदि वसति पुनस्तीर्थमन्यत्किमस्ति ॥५॥

(इति आदिशंकराचार्य कृतं काशीपञ्चकम्)

॥ शिव स्तवनम् ॥

सदाशिवं नमाम्यहं सदाशिवं भजाम्यहम् ।
सदाशिवं जपाम्यहं सदाशिवार्चयाम्यहम् ॥
सदाशिवं मृडहरं दधाम्यहं महर्निशम् ।
सदाशिवं सुचिन्तनं सदाशिवं सुवन्दनम् ॥
सदाशिवं त्रिशूलिनं नमाम्यहं भजाम्यहम् ।
सदाशिवैव शान्तिदं सदाशिवैव श्रेयदम् ॥
सदाशिवं शुभावनं सुवाञ्छितफलप्रदम् ।
नमामि तं सदाशिवं भजामि तं सदाशिवम् ॥

सुफलप्रदं नमामि तं सदाशिवं भजामि तम् ।
सदाशिवं नमाम्यहम् सदाशिवं भजाम्यहम् ॥

शंकर जी की स्तुति

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं ।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं ।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥१॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं ।
गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकालकालं कृपालं ।
गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥२॥
तुषाराद्रि संकाशगौरं गभीरं ।
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगंगा ।
लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥३॥
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं ।
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं ।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥४॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं ।
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयः - शूल - निर्मूलनं शूलपाणिं ।
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥५॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी ।
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानंद संदोह मोहापहारी ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥६॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं ।
भजंतीहलोके परे वा नराणां ॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं ।
प्रसीद प्रभो सर्वं भूताधिवासं ॥ ७ ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां ।
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
जरा - जन्म - दुःखौघ तातप्यमानं ।
प्रभो पाहि आपन्नमामीशशंभो ॥८॥
श्लोक-रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥९॥

(तुलसीकृत रामायण, उत्तर काण्ड दो०-१०७ [ख] से)

श्रीमद्भगवद्गीता पञ्चदशोऽध्याय श्री भगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥१॥
अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः ।
अधश्च मूलान्यनुसंततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥२॥
न रूपमस्येह तथोपलभ्यते
नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा ।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलम-
सङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा ॥ ३ ॥
ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं
यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः ।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये
यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥ ४ ॥
निर्मान मोहा जितसङ्गदोषा
अध्यात्मनित्या विनिवृत्त कामाः ।

द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञै-
र्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥ ५ ॥
न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ ६ ॥
ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ ७ ॥
शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥ ८ ॥
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥ ९ ॥
उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम् ।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥१०॥
यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् ।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः ॥११॥
यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥१२॥
गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा ।
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥१३॥
अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥१४॥
सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥१५॥
द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥१६॥
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥१७॥
यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः ।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥१८॥

यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम् ।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ॥१९॥
इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत ॥२०॥

नवग्रहस्तोत्रं

नवग्रहों की स्तुति

जपाकुसुम संकाश काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोरि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मिदिवाकरम् ॥ १ ॥

अर्थ—जपा (अढ़ौल) के फूल की तरह जिनकी कान्ति है, कश्यप से जो उत्पन्न हुए हैं, अन्धकार जिनका शत्रु है। जो सब पापों को नष्ट कर देते हैं ऐसे सूर्य भगवान को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
नमामिशशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम् ॥ २ ॥

अर्थ—दही, शंख अथवा हिम के समान जिनकी दीप्ति है, जिनकी उत्पत्ति क्षीर समुद्र से है। जो शिवजी के मुकुट पर अलंकार की तरह विराजमान रहते हैं, मैं उन चन्द्रमा को प्रणाम करता हूं ॥ २ ॥

धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥

अर्थ—पृथ्वी के उदर से जिनकी उत्पत्ति हुई है, विद्युतपुञ्ज (बिजली) के समान जिनकी प्रभा है। जो हाथों में शक्ति धारण किए रहते हैं, ऐसे मङ्गल देव को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ३ ॥

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥

अर्थ—प्रियङ्गु की कली की तरह जिनका श्याम वर्ण है, जिनके रूप की कोई उपमा ही नहीं है। ऐसे सौम्यगुणों से युक्त बुध देव को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥ ५ ॥

अर्थ—जो देवताओं और ऋषियो के गुरु जी हैं, काञ्चन के समान जिनकी प्रभा है। जो बुद्धि के अखण्ड भण्डार और तीनों लोकों के प्रभु हैं, उन बृहस्पति गुरु जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥ ६ ॥

अर्थ—तुषार कुन्द अथवा मृणाल के समान जिनकी आभा है, जो दैत्यों के परम गुरुजी हैं ऐसे सब शास्त्रों के अद्वितीय वक्ता शुक्राचार्य जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छाया - मार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥ ७ ॥

अर्थ—नील अञ्जन के समान जिनकी दीप्ति हैं, जो सूर्य भगवान् के पुत्र तथा यमराज के बड़े भ्राता है। सूर्य की छाया से जिनकी उत्पत्ति हुई है, ऐसे शनैश्चर देवता को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहु प्रणमाम्यहम् ॥ ८ ॥

अर्थ—जिनका केवल आधा शरीर है, जिनमें महान् पराक्रम है। जो चन्द्र और सूर्य को भी परास्त कर देते हैं। सिंहिका के गर्भ से जिनकी उत्पत्ति हुई है ऐसे राहु देवता को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतु प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥

अर्थ—पलाश के फूल की तरह जिनकी लाल दीप्ति है, जो समस्त तारकाओं में श्रेष्ठ माने जाते हैं। जो स्वयं रौद्र रूप और रौद्रात्मक हैं, ऐसे घोर रूपधारी केतु को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥

इति व्यास मुखोद्‌ गीतं यः पठेत्सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्न शान्तिर्भविष्यति ॥१०॥

अर्थ—वेदव्यासजी के मुखारविन्द से निकले हुए इस स्तोत्र का जो सावधान होकर पाठ करते हैं। दिन में या रात्रि में जो व्यक्ति पाठ करता है, उनकी सभी विघ्न बाधायें शान्त हो जाती हैं ॥ १० ॥

नरनारीनृपाणां च भवेद्‌ दुःस्वप्ननाशनम्‌ ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्द्धनम्‌ ॥११॥

अर्थ—संसार के साधारण स्त्री और पुरुष तथा राजाओं के भी दुःस्वप्न जन्य दोष दूर हो जाते हैं। इस का पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य तथा आरोग्य प्राप्त होता है और पुष्टि की वृद्धि होती है।

ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्नि समुद्‌भवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रुते न संशयः ॥१२॥

अर्थ—किसी भी ग्रह, नक्षत्र, चोर तथा अग्नि से जायमान पीडायें शान्त हो जाती हैं। इस प्रकार स्वयं वेद व्यास जी कहते हैं। इसलिए इसमें कोई संशय नहीं करना चाहिए ॥ १२ ॥

श्री वेदव्यास विरचित नवग्रहादि स्तोत्रं सम्पूर्णम्‌ । नवग्रहार्पणमस्तु ।

शुभकार्य के प्रारम्भ में इस श्लोक का पाठ करें—

विश्वेश्वं माधवं ढुण्ढि दण्डपाणिं च भैरवम्‌ ।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्‌ ॥

ग्रहों की शान्ति के लिए इस श्लोक का पाठ करें—

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

जय विश्वेश्वर ! विश्वात्मन् ! काशीनाथ ! जगन्गुरो ! ।

शिव-महिमा

—दोहा—

अज अनादि अविगत अलख, अकल अतुल अविकार।
वन्दौं शिव-पद-युग-कमल अमल अतीव उदार ॥
आर्तिहरण सुखकरण शुभ भक्ति-दातार।
करो अनुग्रह दीन लखि अपनो विरद विचार ॥
परयो पतित भवकूप महँ सहज नरक आगार।
सहज सुहृदय पावन पतित सहजहिं लेहु उबार ॥
पलक-पलक आशा भरयो रह्यो सुबाट निहार।
ढरो तुरंत स्वभाववश नेक न करो अबार ॥

॥ श्री शिवचालीसा ॥

जय शिव शंकर औढ़र दानी।
जय गिरितनया मातु भवानी ॥ १ ॥
सर्वोत्तम योगी योगेश्वर।
सर्वलोक - ईश्वर - परमेश्वर ॥ २ ॥
सब उर प्रेरक सर्वनियन्ता।
उपद्रष्टा भरता अनुमन्ता ॥ ३ ॥
पराशक्ति-पति अखिल विश्वपति।
परब्रह्म परधाम परमागति ॥ ४ ॥
सर्वातीत अनन्य सर्वगत।
निज स्वरूप महिमा में स्थितरत ॥ ५ ॥

अंगभूति - भूषित श्मशानचर।
भुजंगभूषण चन्द्रमुकुटधर ॥ ६ ॥
वृषवाहन नंदीगणनायक।
अखिल विश्वके भाग्य-विधायक ॥ ७ ॥
व्याघ्र चर्म परिधान मनोहर।
रीछचर्म ओढे गिरिजावर ॥ ८ ॥
कर त्रिशूलडमरूवर राजत।
अभय वरद मुद्रा शुभ साजत ॥ ९ ॥
तन कर्पूर - गौर - उज्ज्वलतम।
पिंगल जटाजूट सिर उत्तम ॥१०॥
भाल त्रिपुण्ड्र मुण्डमालाधर।
गले रुद्राक्ष - माल शोभाकर ॥११॥
विधि हरि - रुद्रत्रिविध वपुधारी।
बने सृजन - पालन - लयकारी ॥१२॥
तुम हो नित्य दया के सागर।
आशुतोष आनन्द - उजागर ॥१३॥
अति दयालु भोले भण्डारी।
अग - जग सबके मंगलकारी ॥१४॥
सती पार्वती के प्राणेश्वर।
स्कन्द-गणेश-जनक शिव सुखकर ॥१५॥
हरि - हर एक रूप गुणशीला।
करत स्वामि - सेवक की लीला ॥१६॥
रहते दोउ पूजत पुजवावत।
पूजा - पद्धति सबन्हि सिखावत ॥१७॥
मारुति बन हरि सेवा कीन्हीं।
रामेश्वर बन सेवा कीन्हीं ॥१८॥
जग हित घोर हलाहल पीकर।
बने सदाशिव नीलकंठ वर ॥१९॥

असुरासुर शुचि वरद शुभंकर।
असुरनिहन्ता प्रभु प्रलयंकर ॥२०॥
नमः शिवाय मन्त्र पञ्चाक्षर।
जपत मिटत सब क्लेश भयंकर ॥२१॥
जो नर-नारि रटत शिव शिव नित।
तिनको शिव अति करत परमहित ॥२२॥
श्री कृष्ण तप कीन्हों भारी।
है प्रसन्न वर दियो पुरारी ॥२३॥
अर्जुन संग लड़े किरात बन।
दियो पाशुपत-अस्त्र मुदित मन ॥२४॥
भक्तन के सब कष्ट निवारे।
दे निज भक्ति सबन्हि उद्धारे ॥२५॥
शङ्खचूड़ जालन्धर मारे।
दैत्य असंख्य प्राण हर तारे ॥२६॥
अन्धल को गणपति पद दीन्हों।
शुक्र शुक्र पथ बाहर कीन्हों ॥२७॥
तेहि सजीवनि विद्या दीन्हीं।
बाणासुर गणपति - गति कीन्हीं ॥२८॥
अष्टमूर्ति पंचानन चिन्मय।
द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग ज्योतिर्मय ॥२९॥
भुवन चतुर्दश व्यापक रूपा।
अकथ अचिन्त्य असीम अनूपा ॥३०॥
काशी मरत जंतु अवलोकी।
देत मुक्ति-पद करत अशोकी ॥३१॥
भक्त भगीरथ की रुचि राखी।
जटा बसी गंगा सुर साखी ॥३२॥

गुरु अगस्त्य उपमन्यू ज्ञानी।
ऋषि दधीचि आदिक विज्ञानी ॥३३॥
शिव रहस्य शिव ज्ञान प्रचारक।
शिवहिं परम प्रिय लोकोद्धारक ॥३४॥
इनके शुभ सुमिरन ते शंकर।
देत मुदित ह्वै अति दुर्लभ वर ॥३५॥
अति उदार करुणा वरुणालय।
हरण दैन्य दारिद्रय दुःख भय ॥३६॥
तुम्हरो भजन परम हितकारी।
विप्र शूद्र सब हीं अधिकारी ॥३७॥
बालक वृद्ध नारि-नर ध्यावहिं।
ते अलभ्य शिवपद को पावहिं ॥३८॥
भेद शून्य तुम सबके स्वामी।
सहज सुहृद सेवक अनुगामी ॥३९॥
जो जन शरण तुम्हारी आवत।
सकल दुरित तत्काल नशावत ॥४०॥

॥ श्री शिव चालीसा समाप्त ॥

शिव चालीसा पाठ करने से सब कार्य सफल होते हैं और दुःख संकट एवं आपत्ति काल में पाठ करने से संकट काल दूर होते हैं। एक से ग्यारह तक पाठ करना चाहिए विशेष संकट में एक सौ आठ बार पाठ करने से सब संकट दूर होते हैं।

काशी की महिमा

तीनों ही लोक से न्यारी त्रिशूल की,
नोक पै शंभु सजाये हैं काशी।
भागीरथी अघ नासति भेद हैं,
विम्ब निहारे सदा अविनासी ॥

देवन में जहाँ होड़ लगी,
नभयान चढ़े निरखें सुखरासी।
धन्य हैं जो निसिवासर सेवने,
देवता तुल्य यहाँ के निवासी॥
काशी सदा राजधानी थी धर्म की,
मानवता नहिं फूली समाती।
ज्ञान की ज्योति मिली जग को,
तप पूत ने ऐसी जलाई है बाती॥
केते यहाँ मठ पीठ बने,
जन रक्षित हैं जहाँ धर्म की थाती।
काशी की क्या महिमा कहिए,
गुण गाती है वाणी कभी न अघाती॥

त्रिपुण्डं मस्तके धृत्वा वर्तुलं रक्त चन्दनम्।
निधने याति वैकुण्ठं मुक्तो भवति वै जनः॥

—श्लोक—

शिवः काशी, शिवः काशी, काशी काशी शिवः शिवः।
पंचवारं जपेत् नित्यं, काशी वा सुफलं लभेत्॥

(कल्प सूत्र)

१—मानसोपचारैः संम्पूज्य ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्ध समर्पयामि,
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।
ॐ वाय्यात्मकं धूपं समर्पयामि।
ॐ रं तेजसात्मकं दीपं समर्पयामि।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।
ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। मन्त्रं जपेत्।

महामृत्युञ्जय मन्त्रः

ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्द्धनं।
उर्व्वारुकमिव वन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मा मृतात् भूर्भुवः स्वः जूंसः ह्रौं ॐ॥

शिवरात्रि व्रत माहात्म्यम्

परात्परतरं नास्ति शिवरात्रिपरात्परम्।
ये नार्चन्ति भक्तेशं रुद्रं त्रिभुवनेश्वरम् ॥ १ ॥
जन्तु जन्म सहस्रेषु भ्रमन्ते नात्र संशयः।
वर्षे वर्षे महादेव नरो नारो पतिव्रता ॥ २ ॥
शिव रात्री महादेवं नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्।
अर्णवा यदि वा शुष्णेत् क्षीयते हिमवानधि ॥ ३ ॥
चलत्यन्ते कदा चिद्वै निश्चलं हि शिवव्रतम्।
शिव उवाच मम भक्तस्तु यो देवि शिवरात्रिमुपोषकः।
गणत्वम् क्षयं दिव्यं लभते शिवशासनम्।
सर्वान् भुक्त्वा महाभोगान् ततो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

प्रतिष्ठा—ॐ ब्रह्मा विष्णु-रुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि।
ऋग्यजुः सामच्छन्देभ्यो नमो मुखे। प्राणाख्ये देवतायै नमः हृदि।
ओं बीजाय नमो गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे। इति

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं हं सः सोहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः।
आं ह्रीं क्रौं यं रं शिवस्य जीव इह स्थितः।
ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक चक्षुः श्रोत्रा घ्राण जिह्वापाणि पादपायूपस्थानि इहागत्यं सुखं चिरं तिष्ठन्ति स्वाहा।

अथारिष्टशान्तये—
आचम्य
प्राणानायम्य
शान्तिपाठं
सुमुखश्चेत्यादि
गणेशस्मरणम् च कृत्वा

संकल्पः—अमुक मासीयाऽमुक पक्षीयाऽमुकतिथौअमुक वासरे स्वस्य (यजमानस्य) शरीरे-उत्पन्नोत्पत्य मानाऽखिलारिष्ट निवृताये, प्रासादाद्दीर्घा पुष्प सत आरोग्यता वाप्त्तये महामृत्युञ्जय मन्त्र जपमहं करिष्ये।

यजमान हितार्थाय, पुनरागमनाय च।
गच्छन्तु च सुरश्रेष्ठाः स्वस्थानं परमेश्वरः॥

आचम्य प्राणानायम्य देशकालाद्युच्चार्या गोत्रः प्रवरः [शर्मा] (वर्मा) (शुद्राः) (दासः) अहम् श्री साम्बसदाशिव देवता सुप्रसन्नता द्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकसर्वाभीष्टाभीष्ट लक्ष्मीसर्वसौख्यप्राप्त्यर्थं श्री साम्बसदाशिवपूजनं करिष्ये।

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्।
रत्नाकल्पोज्वलाङ्गं परशुमृगवरा भीति-हस्तं प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममर-गणैर्व्याघ्रकृत्ति वसानम्।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

आवाहनम्—

ॐ नमस्ते रुद्रेत्यादिना।

त्रिपुरान्तकारं देवं चूड़ा-चन्द्र-महाद्युतिम्।
गजचर्मपरीधानं शिवमावाहयाम्यहम्॥
—भगवते श्री साम्बसदाशिवमावाहयामि

आसनम्—

ॐ याते रुद्रेत्यादिना—

विश्वेश्वर! महादेव! महेशान! परात्पर!।
मया समर्पितं रम्यममासनं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पाद्यम्—

ॐ याभिषुमित्यादिना।

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वं सौगन्ध-संयुतम्।
पाद-प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—

ॐ शिवेन क्वसेत्यादिना ।

नमस्ते देव-देवेश ! नमस्ते करुणाम्बुधे ! ।
करुणां कुरु मे देव ! गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥

भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनम्—

ॐ अध्यवोचदित्यादिना ।

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । आचमनं समर्पयामि ।

मधुपर्कम्—

ॐ यन्मधुनो मधव्यमित्यादिना ।

आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्र-युग्म समन्वितम् ।
मधुपर्कं गृहाणत्वं प्रसन्नो भव शङ्कर ! ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । मधुपर्कं समर्पयामि ।

स्नानम्—(जल)

ॐ असौ यस्ताम्र इत्यादिना ।

गङ्गाः - सरस्वती - रेवा-पयोष्णी-नर्मदा-जलैः ।
स्नापितोऽसि मया देव ! ततः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । स्नानीयं जलं समर्पयामि ।

पयः स्नानम्—(दूध)

ॐ पयः पृथिव्यामित्यादिना ।

कामधेनु-समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावकं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । पयः स्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नानीयं दत्वा —

दधि-स्नानम्—(दही)

ॐ दधि क्राणोऽकारिषमित्यादिना ।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । दधि स्नानं समर्पयामि ।

पुनः शुद्धोदक-स्नानीयजलं दत्वा —

घृत-स्नानम्—(घी)

ॐ घृतं मिमिक्ष इत्यादिना ।

नवनीत-समुत्पन्नं सर्व-सन्तोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । घृतस्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नानं दत्वा —(गंगा जल)

मधुस्नानम्—

ॐ मधुवाता ऋतायत इत्यादिना ।

दिव्यैः पुष्पैः समुद्भूतं सर्वगुणसमन्वितम् ।
मधुरं मधुनामाढ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । मधु स्नानं समर्पयामि । (शहद)

शुद्धोदकस्नानं दत्वा—

शर्करा स्नानम्—(चीनी)

ॐ अपा १० रस मुद्वयस २० सूर्ये इत्यादिना ।

इक्षु-रस-समुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ।

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । शर्करा स्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नानं दत्वा—

पञ्चामृत स्नानम्—गंगाजल, दूध, दही, घी, शहद, चीनी, पाँच प्रकार का होना अनिवार्य है ।

ॐ पञ्चनद्य इत्यादिना ।

पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधि घृतम्मधु ।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदक स्नानम्—(गङ्गाजल)

ॐ शुद्धवाल इत्यादिना ।

गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा ।
सरस्वती तीर्थजातं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

आचमनीयं जलं दत्वा महाभिषेकस्नानम् रुद्रसूक्तेन ।

गन्धोदकस्नानम्—(चन्दन से स्नान)

ॐ त्वां गन्धर्वेत्यादिना ।

मलयाचल—सम्भूतं चन्दनाऽगुरुसम्भवम् ।
चन्दनं देव देवेश ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । गन्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नानं दत्वा आचमनीयं जलम्

वस्त्रम्—(कपड़ा)

ॐ असौ यो व सर्वतोत्यादिना ।

शीत वातोष्ण सन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।
देहालङ्करणं वस्त्रमता शान्तिं प्रयच्छ मे ।

भगवते श्री साम्ब सदा शिवाय नमो वस्त्रं परिधापयामि ।

आचमनीयं दत्वा—

यज्ञोपवीतम् (जनेऊ)

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवायेत्यादिना ।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ! ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमो । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

आचमनीयं जलं दत्वा—

उपवस्त्रम्—दो वस्त्र भी होना अनिवार्य

ॐ सुजातो ज्योतिर्येत्यादिना।

उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
भक्त्या समर्पितं देव! प्रसीद परमेश्वर!॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। उपवस्त्रम् समर्पयामि।

आचमनीय जलं दत्वा—

चन्दनम् (चन्दन)

ॐ प्रमेञ्च धन्तृन इत्यादिना।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। चन्दनेन अनुलिम्पामि।

भस्म—(राखी)

ॐ प्रसद्य भस्मनेत्यादिना।

सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिसमप्रभम्।
सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर!॥

भस्म समर्पयामि।

अक्षतान् (चावल)

ॐ अक्षन्न भीमदन्तेत्यादिना

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ! कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥ १॥

अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पम् मालाश्च—(फूल-माला)

ॐ ओषधी रित्यादिना।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर!॥

भगवते श्रीसाम्वसदाशिवाय नमः। पुष्पमालां परिधापयामि ॥

बिल्वपत्राणि—(वेलपत्र)

ॐ नमो बिल्मिन इत्यादिना।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रञ्च त्रियायुधम् ॥

त्रिजन्मपापसंहारं बिल्व-पत्रं शिवार्पणम्।

भगवते श्रीसाम्वसदा शिवाय नमः। बिल्वपत्राणि समर्पयामि ॥

दूर्वाम्—(दूब)

ॐ काण्डात् काण्डादित्यादिना।

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् ॥

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर !।

भगवते श्रीसाम्वसदाशिवाय नमः। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ॥

नाना परिमल द्रव्याणि—(गुलाल, हरदी, अबीर)

ॐ अहिरिव भोगैरित्यादिना।

अबीरञ्च गुलालं च हरिद्रादि परमेश्वर !॥

नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर !।

भगवते श्रीसाम्वसदाशिवाय नमः। नाना परिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥

सिन्दूरम्—(सिन्दूर)

ॐ सिन्धोरिवेत्यादिना।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्य-सुख-वर्धनम् ॥

शुभदं चैव मङ्गल्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।

भगवते श्रीसाम्वसदाशिवाय नमः। सिन्दूरं समर्पयामि ॥

सुगन्धि द्रव्यम् (सेन्ट)

ॐ त्र्यम्बकं यजामह इत्यादिना।

दिव्य गन्ध-समायुक्तं महा परिमलाद्भुतम्।

गन्ध-द्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शङ्कर !॥

भगवते श्रीसाम्वसदाशिवाय नमः। सुगन्धि-द्रव्य समर्पयामि ॥

अथाङ्ग-पूजा—(अङ्ग पूजा शरीर का)

ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि। ॐ शङ्कराय नमः जङ्घे पूजयामि।
ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि। ॐ शम्भवे नमः कटी पूजयामि।
ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि। ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि।
ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि। ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि।
ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि। ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि :
ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि। ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि।
ॐ नाग-भूषणाय नमः शिरः पूजयामि। ॐ देवाधि देवाय नमः सर्वाङ्ग पूजयामि।

आवरण पूजा—

ॐ उग्राय नमः। ॐ पशुपतये नमः। ॐ शिवाय नमः। ॐ विरूपाय नमः।
ॐ विश्वरूपाय नमः। ॐ त्र्यम्बकाय नमः। ॐ भैरवाय नमः।
ॐ कपर्दिने नमः। ॐ शूलपाणये नमः। ॐ ईशानाय नमः।
ॐ महेशाय नमः।

एकादश शक्ति पूजा—(११)

ॐ उमायै नमः। ॐ शङ्कर प्रियायै नमः। ॐ पार्वत्यै नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कालिन्द्यै नमः। ॐ कोटर्यै नमः। ॐ विश्वधारिण्यै नमः ॐ ह्रां नमः ॐ ह्रीं नमः। ॐ गङ्गादेव्यै नमः

एकादशरुद्र पूजा—(११ शंकर के रूप)

ॐ अघोराय नमः। ॐ पशुपतये नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ विरूपाक्षाय नमः। ॐ विश्वरूपिणे नमः। ॐत्र्यम्बकाय नमः। ॐकपर्दिने नमः। ॐभैरव नमः। ॐ शूलपाणये नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ महेश्वराय नमः।

अथ पञ्चवक्त्र पूजा—(पाँच)

श्वेताय ॐ पश्चिम वक्त्राय नमः। गौरपीताय ॐ उत्तर वक्त्राय नमः
कृष्णाय ॐ दक्षिण वक्त्राय नमः। रक्ताय ॐ पूर्वक्ताय नमः।
रक्ताय ॐ ऊर्ध्वं वक्त्राय नमः।

धूपम्—

ॐ याते हेतिरित्यादिना।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्ध्याढ्यो गन्ध उत्तमः॥

आघ्रेयः सर्व-देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।

भगवते ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। धूपम् आघ्रापयामि॥

दीपम्—

ॐ परिते धन्वन इत्यादिना।

साज्यञ्च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्य-तिमिरापहाम्॥

भगवते ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। दीपं प्रदर्शयामि।

(जलेन हस्त-प्रक्षालनम्)

नैवेद्यम्—

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वमित्यादिना।

नैवेद्यं गृह्यतां देव! भक्ति मे ह्यचलां कुरु।

ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥

शर्कराखण्ड-खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च।

आहारो भक्ष्य-भोज्यञ्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि॥

नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

नैवेद्ये बिल्वपत्र-तुलसीपत्राणि प्रक्षिपेत्:—

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा।

ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ उदानाय स्वाहा। ततः आचमनीय जलं दद्यात्।

मुखप्रक्षालनार्थे हस्तप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि।

ऋतुफलम्—

ॐ या फलिनीरित्यादिना ।

नाना विधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि च ।

भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेश्वर ! ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । नाना विधानि ऋतुफलानि समर्पयामि ॥

धत्तूर-फलानि—

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्येत्यादिना ।

धीर धैर्य परीक्षार्थं धारितं परमेष्ठिना ।

धत्तूरं कण्टकाकीर्णं गृहाण परमेश्वर ! ॥

श्री भगवते साम्बसदा शिवाय नमः । धत्तूर - फलं समर्पयामि ॥

ताम्बूलम्—(पान)

ॐ नमस्ते आयुधायेत्यादिना ।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम् ॥

एलादि चूर्ण-सहितं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।

भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः । मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि ॥

दक्षिणा द्रव्यम्—(पैसा या रुपया)

ॐ मानो महान्तमित्यादिना ।

दक्षिणास्वर्णसहिता यथाशक्ति समर्पिता ।

अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर ! ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि ॥

आरार्तिक्यम्—(आरती)

ॐ ये देवासो दिव्येकादशस्थेत्यादिना ।

ॐ इद ठं० हविः । ॐ आरातिं पार्थिव । ठं रजः ।

ॐ अग्निर्देवतेत्यादिना ।

आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, ॐ जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धाङ्गी धारा ॥ १ ॥
ॐ हर हर हर महादेव

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै ॥ २ ॥
ॐ हर हर हर महादेव

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-मन मोहै ॥ ३ ॥
ॐ हर हर हर महादेव

अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद चन्दा माले शुभकारी ॥ ४ ॥
ॐ हर हर हर महादेव

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे ॥ ५ ॥
ओऽम् हर हर हर महादेव

करमध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धरता।
जगकर्ता जगभर्त्ता जगपालन कर्त्ता ॥ ६ ॥
ओऽम् हर हर हर महादेव

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनो एका ॥ ७ ॥
ओऽम् हर हर हर महादेव

काशी में विश्वनाथ विराजै नन्दी ब्रह्मचारी।
नित उठ दर्शन पावै महिमा अति भारी ॥ ८ ॥
ओऽम् हर हर हर महादेव

त्रिगुण स्वामि की आरती जो कोई नर गावै।
भनत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावै॥ ९॥
ओऽम् हर हर हर महादेव

ॐ जय शिव ओंकारा, हो मन भज शिव ओंकारा, हो मन रट शिव ओंकारा, हो शिव गले रुण्ड माला हो शिव ओढ़त मृगछाला, हो शिव पीते भंग प्याला, हो शिव रहते मतवाला, हो शिव पार्वती प्यारा—

हो शिव ऊपर जल धारा।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धङ्गी धारा॥१०॥
हर हर हर महादेव

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी-सहितं नमामि॥
कर्पूर-पूरेण मनोहरेण सधातु-पात्रोपरि संस्थितेन।
प्रदीप्तमासा सह सङ्गतेन नीराजनं ते जगदीश कुर्वे॥
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरन्तु प्रदीपितम्।
आरार्तिक महं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। कर्पूरार्तिक्यं समर्पयामि।

मन्त्र-पुष्पाञ्जलिम्—(हाथ जोड़कर फूल चढ़ावें)
ओऽम् मानस्तोके तनये……। ओऽम् यज्ञेन यज्ञम……।
ओऽम् राजाधिराजाय……। ओऽम् स्वस्ति साम्राज्यम्……।
ओऽम् विश्वतश्चक्षुः……। इत्यादिना।

असित-गिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे-
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमूर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं-
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥
कर चरण कृतम्वा कायज कर्मजम्वा
श्रवणनयनजम्वा मानसम् वाऽपराधम्।
विदितमविदितम्वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे! श्रीमहादेव शम्भो॥

प्रदक्षिणा—(परिक्रमा)

ओऽम् येतीर्थानि प्रचरन्ति………… ।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वर मेधादि फलं ददाति ।
तां सर्वं पापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणान्ते परितः करोमि ॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणे – पदे पदे ॥
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । प्रदक्षिणं करोमि ।

क्षमा प्रार्थना—(हाथ जोड़कर)

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद् भवेत् ।
तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ! ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥
अनेन यथा लब्धोपचार पूजनेन भगवान्
श्री साम्ब सदा शिवः प्रीयतां न मम ।

॥ शिवम् ॥

गङ्गामें-अस्थि-प्रक्षेप

दशाहाभ्यान्तरे यस्य गंगायामस्थि मज्जति ।
तावत् स्वर्णे वसेत् प्रेतो, यावत्तत्रास्थि तिष्ठति ॥

—गरुड़ महापुराण

जिस मृत व्यक्ति की (अस्थि) हड्डी मृत तिथि से १० दिन के भीतर (काशी) गङ्गा में डाल दी जाय, वह स्वर्ग में तब तक निवास करता है जब तक गङ्गा में उसकी हड्डी रहती है ।

स्कन्द पुराण में लिखा है बाहर से सव (मृतक) का काशी में दाह संस्कार होता है उस व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं होता और मृतक व्यक्ति की अस्थि बाहर से लाकर काशी में गङ्गा जी में छोड़ी जाती है वह मृतक मनुष्य स्वर्ग में वास करता है । काशी में यदि मृतक का दर्शन हो जाय,

तो 'विश्वनाथाय नमः' कहना चाहिए। चूंकि वह मृतक मनुष्य मुक्त हो गया काशी में सब का दर्शन होते ही शुभ और मङ्गलमय माना जाता है। इस लिए उत्सव मनाते हुए बाजा बजाते हुए सब को श्मशान में ले जाते हैं इस प्रसंग में काशी मोक्ष निर्णय देखिये।

पार्थिव शिव-पूजन-विधिः

जहाँ शंकर का पूजन अभीष्ट हो वहाँ पूजनकर्ता गंगा की मिट्टी लेकर 'शिवलिङ्ग बनावे तदनन्तर शिवलिङ्ग को बाएँ हाँथ पर रख कर ॐ शिवाय नमः इस मन्त्र से पूजनादि सब कार्य करें। किसी आचार्य का मत है कि "मृदा हरण सघट्ट प्रतिष्ठाह्लमेव स्वरान् पूजन चैव विराजंनमतो परम हरोमहेश्वरवरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक।

रुद्र पशुपतिश्चैव महादेव इतिक्रम।

ॐहराय नमः इस मन्त्र से मिट्टी लेकर

'ॐ महेश्वराय नमः' इस मन्त्र से पानी डाल कर सानें और गोल बनावें।

बाद में 'ॐ शूलपाणये नमः' मन्त्र से प्रतिष्ठा करें। 'ॐ रुद्राय नमः' से स्नान तथा 'ॐ पशुपतये नमः' से पूजन और 'ॐ महादेवाय नमः' से विसर्जन कर मूर्ति को बहते हुए जल में छोड़ देवें।

शिव पार्थिव पूजा-विधि नित्यकर्म पद्धति में विस्तार से लिखा है।

शिव पूजाका फल

कवित्त—

जल के चढ़ाये यमलोक से उबार लेत,
चन्दन के चढाये चक्रवर्ती करि देत हैं।
चावल के चढाये लोक चौदहों बकसि देत,
दीप के दिखाए सातों द्विप देइ देत हैं॥

भांग और धतूर के चढ़ाये निज पुरी देत,
बेल के चढ़ाए सदा संग करि लेत हैं ॥
हर हर कहते हर हरत कलेश सदा
गाल के बजाये तो निहाल करि देत हैं ॥

भारतीय पर्व तथा व्रत और उपवास

चैत्र शुक्ल पक्षे

(१) नव गौरी दर्शन नवरात्र प्रारम्भ
(२) श्री रामनवमी (रामजयन्ती)
(३) महावीर जयन्ती (हनुमान जयन्ती)
(४) मेखसंक्रान्ति (वैसाख)
(५) वट सावित्री व्रत (अक्षय तृतीया पक्षाक्षती)
(६) गंगा दशहरा (गंगेश्वर दर्शन गंगा स्नान)
(७) निर्जला एकादशी
(८) रथयात्रा
(९) हरी सयनी एकादशी (व्रत)
(१०) गुरू पूर्णिमा (गुरू पूजा)
(११) नाग पंचमी
(१२) श्रावणी (रक्षाबन्धन, राखी बन्धन)
(१३) कजली तीज
(१४) ऋषि पञ्चमी
(१५) बहुला गणेश चतुर्थी व्रतम्
(१६) जन्म अष्टमी (हलषष्टी ललहीछठ)
(१७) हरतालिका व्रत
(१८) लोलार्क षष्टी लोलार्क स्नान दर्शन
(१९) महालक्ष्मी व्रत आरम्भ (अष्टमी) लक्ष्मी दर्शन
(२०) अनन्त चतुर्दशी

(२१) महालय नवरात्र प्रारम्भ (नव दुर्गा प्रारम्भ)
(२२) जीवत्पुत्रिका व्रत
(२३) महाअष्टमी व्रतम्
(२४) विजयादशमी (दशहरा)
(२५) शरद पूर्णिमा
(२६) धन त्रयोदशी (धनतेरस)
(२७) नरक चतुर्दशी
(२८) दीपावली (दिवाली)
(२९) अन्नकूट (गोवर्धन पूजन)
(३०) भ्रात्री द्वितीया (भैयादूज)
(३१) सूर्य षष्टी (छठ व्रत)
(३२) अक्षयनवमी (दान आदि)
(३३) पर्वबोदनी एकादशी व्रतम् बड़ी
(३४) कार्तिक पूर्णिमा यथा शक्ति दान
(३५) पिचासमोचन स्नान दर्शन
(३६) मकरसंक्रान्ति माघ अमावस्या
(३७) गणेश चौथ (ढुण्ढीराज दर्शन)
(३८) वसंत पञ्चमी
(३९) माघ पूर्णिमा
(४०) महाशिवरात्री व्रतम्
(४१) होलिका दहन (होली)
(४२) सोमवती अमावस्या

"नर" नाम जल का है। "अयन" कहते हैं निवास स्थान को तो नार और अयन को मिलाने से "नारायण" होता है। अर्थात् जल में ही जिनका घर है उनको नारायण कहते हैं। जो मनुष्य मन्दिर और जलाशय का जीर्णोद्धार करते हैं उनके रोग पाप, ताप और कष्ट नाश होते हैं और पितृगण (पितर) प्रसन्न होते हैं। महादेव जी बोले—जीर्ण मन्दिर

और जलाशय जीर्णोद्धार करने वाले व्यक्ति के पाप लेश मात्र भी शेष नहीं रहते।

भवानी शिवजी से प्रश्न करती हैं हे विभो! आपने यह कहा कि वाराणसी में मन्दिर (शिवालय) कूप तड़ाग, बावली और पोखरा आदि जीर्णोद्धार करने से काशी से बाहर और काशी में किये गये महापाप भी नष्ट होते हैं। यथा—

शिव उवाच—

वापी कूप तडागादि जीर्णोद्धारं प्रजल्पयेत्।
क्षेत्रे कृतानां पापानां प्रायश्चित्तं-गतं मम ॥७२॥

भावार्थ—विष्णु जी ने मन्दिर जलाशय, कूप पोखरा तीर्थ और कुण्ड आदि का जीर्णोद्धार करने वाले को विष्णु भगवान ने वर प्रदान किया है।

प्यारे जरा तो मन में विचारो,
क्या साथ लाये अरु ले चलोगे,
जावे यही साथ सदा पुकारो
गोविन्द दामोदर माधवेति ।२१।
हे कृष्ण हे माधव हे सखेति ॥

× × ×

नारी धराधाम सुपुत्र प्यारे
सुमित्र सद्वान्धव द्रव्य सारे
कोई न साथी हरि को पुकारो
गोविन्द दामोदर माधवेति ।२२।
हे कृष्ण हे माधव हे सखेति ॥

× × ×

नाता भला क्या जगत् से हमारा?
आये यहां क्यों? कर क्या रहे हैं?

सोचो विचारो हरि को पुकारो
गोविन्द दामोदर माधवेति ।२३।
हे कृष्ण हे माधव हे सखेति ॥

× × ×

सच्चा सखा हैं हरि ही हमारे
माता-पिता शील सुबन्धु प्यारे ।
भुलो न भाई दिन रात गाओ
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे माधव हे सखेति ॥

× × ×

क्यों अटके मझधार में
हो भव सागर पार
शील पड़े जो प्रेम से
प्रति दिन प्रेम पुकार ॥